BHOJPURI JUNCTION-DELBHO/2021/81811

Title Code - DELBHO00011

http://humbhojpuria.com/ https://twitter.com/bhojpurijuncti2/ https://www.facebook/com/bhojpurijunct2

पाक्षिक पत्रिका | 1 फरवरी - 31 मार्च, 2024 | मूल्य - ₹ 20

भोजपुरी जंक्शन

राम विशेषांक

लोक में राम : राम में लोक

500 बरिस के इंतज़ार...

6 दिसम्बर 1992 के ऊ दिन...

राम रसायन तुम्हरे पासा

अगिला अंक

BHOJPURI JUNCTION-DELBHO/2021/81811

Title Code - DELBHO00011

http://humbhojpuria.com/ https://twitter.com/bhojpurijuncti2/ https://www.facebook/com/bhojpurijunct2

पाक्षिक पत्रिका | 1- 30 अप्रैल, 2024 | मूल्य - ₹ 20

भोजपुरी जंक्शन

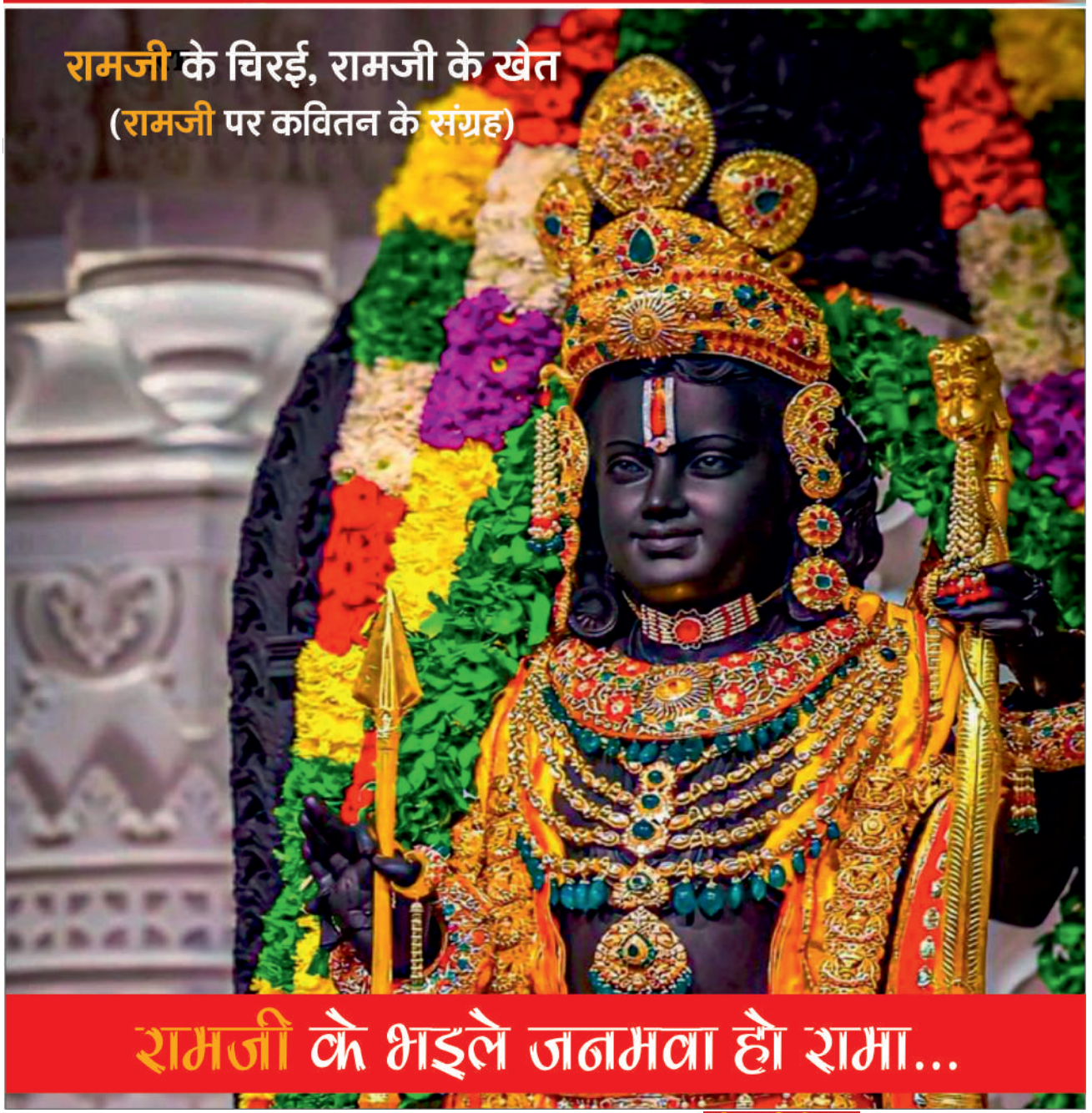

वर्ष :4, अंक : 11-14 | 1 फरवरी - 31 मार्च, 2023

भोजपुरी जंक्शन

पाक्षिक पत्रिका

अध्यक्ष आ प्रधान संपादक
रवीन्द्र किशोर सिन्हा

संपादक
मनोज भावुक

उप संपादक
अखिलेश मिश्र, अनिल कुमार दुबे 'अंशु'
मनीषा श्रीवास्तव, परिधि जैन

कला अउर सज्जा
ज्योति सिन्हा

सोशल मीडिया
सुमित रावत

विपणन विभाग

सहायक उपाध्यक्ष
विशाल सिन्हा (मो.- 8853531208)
जनसंपर्क अधिकारी: संदीप द्विवेदी (मो. 9868317507)
क्षेत्रीय प्रबंधक : बिहार-झारखंड
मनीष किशोर (मो.-9334919888)

संपादकीय कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
editor.humbhojpuria@gmail.com

पंजीकृत कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
http://humbhojpuria.com/
https://twitter.com/bhojpurijuncti2
https://www.facebook.com/bhojpurijunct2/

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक रवीन्द्र किशोर सिन्हा द्वारा ई - 1, ईस्ट ऑफ़ कैलाश, नई दिल्ली - 110065 से प्रकाशित अमर उजाला लिमिटेड, सी - 21/22, सेक्टर - 51, नॉएडा 201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित । संपादक - रवीन्द्र किशोर सिन्हा ।

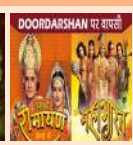

सिनेमा.....81
मर्यादा पुरुषोत्तम से आदिपुरुष ले ... फिल्मी राम

एह अंक में

सुनीं सभे

देश खातिर रामलला के प्राण प्रतिष्ठा एक गौरवशाली क्षण.....6

आवरण कथा

भगवती प्रसाद द्विवेदी / लोक में रामः राम में लोक.....8
डॉ. ब्रज भूषण मिश्र / भोजपुरी साहित्य में श्रीराम.....11
चंद्रेश्वर / भारतीय काव्य में राम के महानायकत्व.....17
प्रेमशीला शुक्ल / लोक में राम.....20
मंजूश्री / राम नाम के महिमा.....23
डॉ. ज्योत्स्ना प्रसाद / जब-जब होई धरम की हानि.....25
डॉ. संध्या सिन्हा / भोजपुरी लोकगीतन में राम.....33
डॉ. यश्वी मिश्रा / कबीर, तुलसी आ लोक के राम.....39

आलेख

डॉ. जयकान्त सिंह 'जय'/ राम काव्य परंपरा में मानस 41
विनय बिहारी सिंह / रामजी से प्रेम.....44
रविनंदन सिंह / भारतीय संस्कृति कs आदर्श स्वाभिमानः श्रीराम.....45
सियाराम पांडेय 'शांत'- संजय सिंह / रामलीला सार्वदेशिक हो चुकल बा.....50
बनवारी / रामराज्य के आदर्श.....55
हरेन्द्र पाण्डेय / बंगाल में राम.....60
एस डी ओझा / मा निषाद प्रतिष्ठां शाश्वती समाः.....63
डॉ. मंजरी पाण्डेय / कैकेयी के राम.....64
डॉ० मन्नू यादव 'कृष्ण' / बिरहा में श्रीराम.....67
बिनोद सिंह गहरवार / राम मनुज कस रे सठ बंगा.....68
ऋचा वर्मा / 'राम' से भी बढ़ के बा 'राम के नाम'.....70
अमित दूबे / हमनी के राम.....72

भाषांतर

राकेश कुमार / रामे समाधान हखिन.....74

संगीत

उदय नारायण सिंह / राम में सउनाइल भोजपुरिया बधार.....78

कहानी

मनोज भावुक / कहानी के प्लॉट.....85

प्रकाशन

रामजी पर प्रकाशित भोजपुरी किताब.....93

हलचल

दिल्ली विश्वविद्यालय के 'हंसराज कॉलेज' में सम्मान-समारोह.....105
दिल्ली विश्वविद्यालय के 'रामानुजन कॉलेज' में व्याख्यान.....106

आईं भोजपुरी जंक्शन के सोशल अड्डा पs

https://humbhojpuria.com

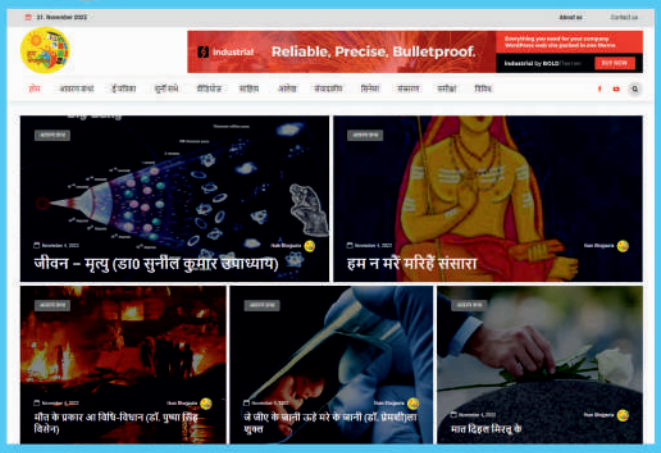

YouTube

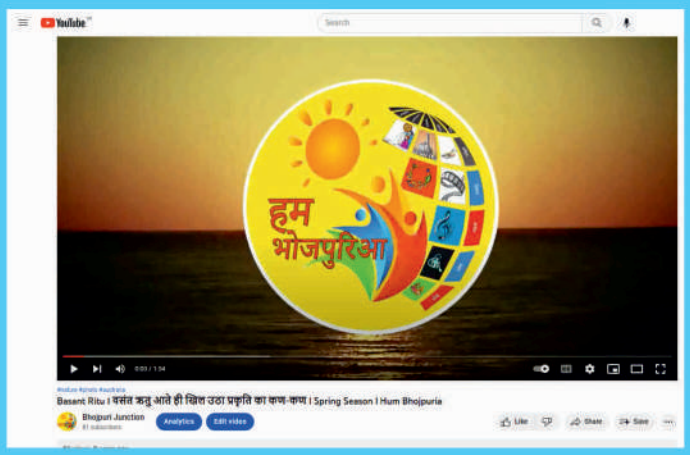

https://facebook.com/humbhojpuriaa/

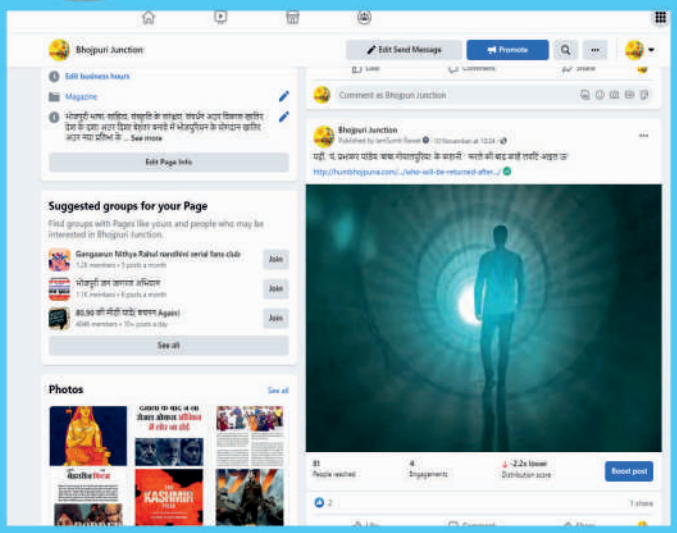

https://twitter.com/humBhojpuria

संपादकीय

राम रसायन तुम्हरे पासा

एह साल 22 जनवरी के लेके बेसी उत्साह बा काहे कि रामजी टेंट से मंदिर में अइहें। तीन दशक से टेंट में बाड़ें। बिआह के तुरंत बाद राज्याभिषेक के जगह बनवास भइल रहे, तवन अलगे। लव-कुश के जनम भइल आ ओकरा बाद जवन संघर्ष भइल, तवन अलगे। सीता मइया के अग्निपरीक्षा के पीड़ा अलगे।

अवतारी पुरुष राम के पास हर समस्या के छूमंतर रहे बाकिर ऊ आम मनुष्य के तरह संघर्ष कइलें आ बतवलें कि संघर्षे से जिनगी निखरेला, चमकेला। राम के पूरा जीवन समाधान के विकीपीडिया बा, एनसाइक्लोपीडिया बा।

बाकिर राम के देश में रामे पर अनगिनत सवाल होता जबकि साँच ई बा कि राम के कहानी में आम आदमी के जीवन-संघर्ष के अनगिनत सवालन के जबाब बा। एह से राम पर सवाल करे से अच्छा बा कि राम से समाधान लिहल जाय। राम उत्तम समाधान हउवें।

जीवन रट्टामार उत्तर से ना चले, विचारपूर्ण चेतना से चलेला, दुख आ सुख में सहज रहे के कला से चलेला। ईहे जादूगरी राम सिखावेलें। राज्याभिषेक के घोषणा के बाद वनवास के आदेशो राम के विचलित भा कमजोर नइखे करत। राम हमनी के मजबूत बनावेलें, जीवन जीए के वास्तविक तरकीब सिखावेलें।

कोरोना महामारी के समय लॉकडाउन में आदमी के आत्मविश्वास के बढ़ावे खातिर दूरदर्शन पर सुबह-शाम रामानंद सागर कृत रामायण के प्रसारण भइल काहे कि दुनिया के मालूम बा कि जीवन के संजीवनी हउवें राम, हर दुख से मुक्ति के बीजसूत्र हउवें राम।

ओही राम के मूर्ति के प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी 2024 के अयोध्या में होता। अब रामलला भव्य मंदिर में आ जइहें। 6 दिसंबर 1992 के बाबरी ढाँचा ध्वस्त भइला के बाद रामलला टेंट में आ गइल रहलें, तिरपाल के गर्भगृह में। 22 जनवरी के मंदिर में मूर्ति के प्राण-प्रतिष्ठा होई। प्रधानमंत्री मोदी व्रत रखिहें। एकरा पहिलहूँ 5 अगस्त 2020 के जब राम मंदिर के भूमि पूजन समारोह भइल रहे त ऊ व्रत रखले रहलें। 500 साल से भी अधिक समय के बाद भगवान राम मंदिर में विराजमान होइहें। एह खुशी में पूरा देश राममय भइल बा।

राम के प्रभाव त अइसन बा कि जे लोग अपना कवनों तरे के लाभ के लोभ में समय-समय पर राम के विरोध करत रहल, उहो लोग एह ऐतिहासिक अवसर पर राम-राम कइले बा। कुछ राम विरोधी लोग जे अपना के गाँधी जी के भक्त बतावेला, ऊ समय-समय पर राम के अस्तित्व पर ही सवाल उठा दिहल बाकिर ओकरा चेतना में ई बात ना आइल कि गाँधियो जी जीवन भर राम-राम कहलें आ मरहूँ के बेर 'हे राम' कहलें। त भाई हो, ए जग में राम के बिना कवनों काम चले वाला नइखे।

आज पूरा देश प्राण-प्रतिष्ठा के एह पल के गवाह बने खातिर उत्साहित बा। अइसन समय में हमरा लागल कि राम पर केंद्रित एगो अंक निकालल जाय।

आखिर, राम से बड़ा नायक के बा? जेतना राम पर लिखाइल बा, कहाइल बा, गवाइल बा आ मंचन भइल बा, सीरियल-सिनेमा बनल बा, ओतना कवना नायक पर काम भइल बा ?... आ बात खाली भइला के नइखे भावना के बा। जवना भावना से लोक में राम के स्वीकार कइल गइल बा, ऊ भाव दोसरा कवनो नायक के नइखे भेंटाइल। साँच कहीं त जीवन के हर भाव में राम बाड़ें। राम हर काल में प्रासंगिक बाड़ें।

लोक में राम, भोजपुरी साहित्य में राम, भोजपुरी कविता में राम, सिनेमा में राम, लोकगीतन में राम, हमनी के जीवन में राम, जीवन शैली में राम, अयोध्या में राम अउर हमनी के धड़कन में राम। हमनी के रोंआ-रोंआ में राम बाड़ें, ईहे एह अंक के प्रधान सुर बा। राम के एही तरे के मौजूदगी कोरोना होखे चाहे दोसर कवनो आफत ओकरा से उबरे खातिर धैर्य, सबल अउर सकारात्मक सोच के दिशा सुनिश्चित करेला।

हमनी किहाँ त राम जनम से लेके मृत्यु तक बाड़ें। सोहर से लेके 'राम नाम सत्य' तक। हमनी के हर संस्कार में, व्यवहार में, गणना-गणित में आ भोजन-भजन में राम बाड़ें। साँच पूछीं त राम रसायन आजो सब समस्या के समाधान बतावे में सक्षम बा।

रामजी के अनुकंपा सभ पर बनल रहे।

प्रणाम!
मनोज भावुक

सुनीं सभे

आर. के. सिन्हा

देश खातिर रामलला के प्राण प्रतिष्ठा एक गौरवशाली क्षण

हिंदुत्व आ सनातन धर्मावलंबी खातिर अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण अउर भगवान रामलला के प्राण प्रतिष्ठा एक गौरवशाली क्षण बा अउर वर्तमान पीढ़ी बेहद भाग्यशाली बा, जवन एह ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बनल बा। बरिसन से प्रभु श्री राम जन्मभूमि के विवाद न्यायालय के समक्ष लंबित रहे जेमें प्रभु श्री राम एक वादी के रूप में रहनीं। दीर्घकाल के वनवास के पश्चात प्रभु श्री राम के अयोध्या में उहाँ के आपन स्थान प्राप्त भइल बा।

अयोध्या चाहे भारते ना, पूरा संसार में राम के चर्चा बा। 22 जनवरी के प्राण-प्रतिष्ठा के साथ ही पूरा भारत राममय हो गइल बा। लगभग 500 वर्ष के दीर्घकालीन वनवास के पश्चात प्रभु श्री राम फेर से विधि विधान के साथे अपना जन्म स्थान में विराजमान भइल बानीं।

भगवान राम फेर अयोध्या लौटल बानीं। लेकिन, उहाँ ओह जन्मस्थान पर आखिर सब पंथ, सब संप्रदाय के लोग समय-समय पर काहे आवत जात रहेलें? काहे कि राम जी कवनों संकीर्ण विचारधारा से नइखीं बँधल। राम भारत के प्राणशक्ति हईं। राम ही धर्म हईं। मानव शरीर के श्रेष्ठता आ उदात्तता के सीमांत राम से हीं बनेला। हर व्यक्ति के जीवन में हर कदम पर जे भी अनुकरणीय बा, ऊ राम हीं बा। एही से त इहाँ सिख गुरु नानकदेव भी अइलन आ अयोध्या में पैदा भइल पांच जैन तीर्थंकर भी अपना के राम के वंश-परंपरा से हीं जोडलें। बनारस से दलित संत रविदास त दक्षिण से आलावर संत भी राम दर्शन खातिर अयोध्या अइलें।

द्वैत सिद्धांत माने वाला आचार्य भी। अद्वैत के प्रवर्तक शंकराचार्य अउर विशिष्टाद्वैत के बल्लभाचार्य भी अयोध्या आके जन्मस्थान पर अपना साधना में लीन रहलें। निर्गुण कबीर भी राम के भजलें अउर सगुण तुलसी भी। भवभूति भी राम के जपलें।

तुकाराम से तिरुवल्लुवर ले राम जी पीड़ित, शोषित आ वंचित के अभिव्यक्ति बाड़ें। श्रीराम के अयोध्या कइसन बा? अयोध्या लोकतंत्र के जननी ह। आराधिका ह। संरक्षिका ह। अयोध्या के लोकतंत्र संविधान चाहे परंपरा से ना आचरण के श्रेष्ठता से चलेला। अयोध्या के लोकतंत्र लोकमंगल से चलेला। आ उहवाँ बनल राम मंदिर ? का जन्मस्थान पर बनल ई नया इमारत राजस्थान के बंसी पहाड़पुर के पत्थर अउर कंक्रीट के महज एक मंदिर ह? ना। ई बदलत भारत के प्रतीक ह, जेमें कवनों अन्याय के प्रतिकार के ताकत बा। एह मंदिर से हमनी के परंपरा, संस्कृति, धर्म, सभ्यता, मान-सम्मान के गर्भनाल के रिश्ता बा। अयोध्या के मंदिर श्रीराम के ह। ये बीच, एक बात कहे के बा कि अयोध्या में रामलला के मंदिर आ प्राण प्रतिष्ठा के जवना तरह से तइयारी उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निगरानी में भइल ओके जेतना प्रशंसा कइल जाए कम बा। योगी आदित्यनाथ राज्य सरकार के कामकाज के साथ-साथ मंदिर निर्माण के काम भी देखलें। ऊ रोज काम के प्रगति के जानकारी लेत रहलें आ जरूरी निर्देश अपना मंत्रिमंडल के साथी अउर अफसरन के देत रहेले। उनके पैनी नजर के चलते हीं राम मंदिर में चल रहल निर्माण कार्य वक्त रहते पूर्ण भइल।

बहरहाल, अयोध्या श्रीराम के रहे, श्रीराम के ह आ श्रीराम की हीं रही। श्री राम भारत के कण-कण में बानीं। हमरा भाव के हर हिलोर में श्री राम जी बानीं। राम जी यत्र-तत्र, सर्वत्र बानीं। जेमें रम गइनी उहे राम ह।

सबके आपन-आपन राम बानी। गांधी के राम अलग बानीं, लोहिया के राम अलग। बाल्मीकि अउर तुलसी के राम में भी फर्क बा। भवभूति के राम दुनू से अलग बानीं। कबीर राम के जनलें, तुलसी मनलें, निराला बखान कइलें। राम एक हीं बानीं, पर राम के बारे में दृष्टि सबकर भिन्न बा। त्रेता युग के श्री राम त्याग, शुचिता, **मर्यादा**, संबंध अउर ये संबंधन से ऊपर मानवीय आदर्श के प्रतिमूर्ति बानीं, जिनकर दृष्टांत आधुनिक युग में भी अनुसरण करे खातिर दिहल जाला।

सबके आपन-आपन राम बानी। गांधी के राम अलग बानीं, लोहिया के राम अलग। बाल्मीकि अउर तुलसी के राम में भी फर्क बा। भवभूति के राम दुनू से अलग बानीं। कबीर राम के जनलें, तुलसी मनलें, निराला बखान कइलें। राम एक हीं बानीं, पर राम के बारे में दृष्टि सबकर भिन्न बा। त्रेता युग के श्री राम त्याग, शुचिता, मर्यादा, संबंध अउर ये संबंधन से ऊपर मानवीय आदर्श के प्रतिमूर्ति बानीं, जिनकर दृष्टांत आधुनिक युग में भी अनुसरण करे खातिर दिहल जाला।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम आदर्श पुत्र, आदर्श राजा, आदर्श भाई हीं ना आदर्श पति भी हईं, जे आजीवन एकपत्नी व्रती रहल। भगवान श्री राम राजा हो के भी त्याग, संयम, धैर्य, सहयोग आ प्रजा के प्रति सेवा भाव के सर्वोत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करत पत्नी वियोग के साथ नाना प्रकार के कष्ट सहनीं। ईश्वरीय अवतार भइला के बावजूद मनुष्य रूप में अनेक कष्ट सहला के बावजूद इतिहास भी उनके साथ कम अन्याय नइखे कइले। माता सीता पर मिथ्या दोषरोपण के कारण राम द्वारा सीता के परित्याग एक मात्र अइसन प्रसंग रहल, जेकरा चलते आजो प्रभु श्रीराम नारीवादियन के कटघरा में खड़ा दिखाई देनीं।

हालाँकि, मूल वाल्मीकि रामायण में सीता जी के त्याग के अइसन कवनों प्रसंग नइखे मिलत। अइसन मानल जाता कि ई प्रसंग बाद में तत्कालीन लेखक आ कवि लोग राम कथा के दिशा मोड़े चाहे ई कहीं राम के छवि के धूमिल करे आ सनातन संस्कृति के नष्ट भ्रष्ट करे खातिर जोड़लें। अइसनो कह सकेनीं कि भविष्य में नारी के **मर्यादा** आ शुचिता के कड़ा मानदंड स्थापित करे खातिर बाद में ई प्रसंग जोड़ दिहल होखे। लंका विजय के पश्चात अग्नि के साक्षी मान सीता माता के पूरा मन से अपनावे वाले प्रभु श्री राम माता सीता के परित्याग करेके बजाय उनके साथ फेर से वनवास लिहल अधिक श्रेयस्कर समझलन।

लेकिन, ई अनर्गल प्रसंग प्रभु श्री राम के निरपराध कटघरा में खड़ा क दिहलस। वाकई सीता माता के साथ अन्याय भइल कि ना ई त अतीत के गर्भ में बा परंतु यदि श्रीराम पर मिथ्या दोष लगावल गइल बा, त वाकई एह सूर्यवंशी महान प्रतापी आ मर्यादित राजा के साथ हर युग में अन्याय भइल बा।

एही बीच, कुछ अइसन कथित ज्ञानी भी बाड़ें जे श्रीराम के काल्पनिक मानेलें। ओइसे उनका कहला से कब फर्क पड़ेला। फर्क तब पड़ित, अगर ऊ हजारन वर्ष से जे तरे जीवित बाड़ें, साक्षात बाड़ें, ना होइते। ऊ केवल जीवित हीं नइखन, उनके नाम मात्र ने मुर्दा बना दिहल गइल राष्ट्र के अइसन सजीव कर दिहल गइल कि ऊ विश्व सत्ता के आपन स्थान वापस कर देले बाड़ें, जइसे वामन अवतार राजा बलि के। उनके नाम मात्र धर्म के पर्याय बन गइल। दशरथ पुत्र श्रीराम से अधिक, कई गुना अधिक काम त राम नाम मात्र से भइल बा। गांधी जी साफ-साफ कहलें कि ऊ एह बात में पड़हीं के नइखन चाहत कि राम ऐतिहासिक बाड़ें कि ना। उनका खातिर राम नाम हीं उनकर शक्ति आ उनकर प्रेरणा बा। खैर, हिंदुत्व आ सनातन धर्मावलंबी खातिर अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण अउर भगवान रामलला के प्राण प्रतिष्ठा एक गौरवशाली क्षण बा अउर वर्तमान पीढ़ी बेहद भाग्यशाली बा, जवन एह ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बनल बा। बरिसन से प्रभु श्री राम जन्मभूमि के विवाद न्यायालय के समक्ष लंबित रहे जेमें प्रभु श्री राम एक वादी के रूप में रहनीं। दीर्घकाल के वनवास के पश्चात प्रभु श्री राम के अयोध्या में उहाँ के आपन स्थान प्राप्त भइल बा।

परिचय- लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार अउर पूर्व सांसद हईं।

भगवती प्रसाद द्विवेदी

लोक में राम: राम में लोक

जब सर्वोच्च न्यायालय के फैसला अयोध्या राम मंदिर के पच्छ में आइल आ पछिला पांच अगस्त के मंदिर निरमान के दिसाईं भूंइ पूजन भइल, राम के चरचा फेरु से जन-जन के जबान पर आ गइल। प्रान-प्रतिष्ठा भइल त अइसन लागल, जइसे बरखा में भींजत, वने-वने भटकत राम घरे आ गइल होखसु।

जब सर्वोच्च न्यायालय के फैसला अयोध्या राम मंदिर के पच्छ में आइल आ पछिला पांच अगस्त के मंदिर निरमान के दिसाईं भूंइ पूजन भइल, राम के चरचा फेरु से जन-जन के जबान पर आ गइल। प्रान-प्रतिष्ठा भइल त अइसन लागल, जइसे बरखा में भींजत, वने-वने भटकत राम घरे आ गइल होखसु। ई कइसन संजोग बा कि एगो लोकगीत में राम के मुकुट, लछुमन के पटुकवा (दुपट्टा) आ सीता के मांग के सेनुर भींजे के चरचा बा, फेरु त राम के घरे लवटे के जिकिर होत बाः

मोरे राम के भींजे मुकुटवा,
लछुमन के पटुकवा,
मोरी सीता के भींजे सेनुरवा
कि राम घरे लवटहिं।

एक बेरि फेरु दूरदर्शन पर रामायण के लवटानी का भइल कि सउंसे लोक राममय हो गइल।

हमनीं के लोक राम से बड़हन राम के नांव के मानेला आ ओकर भरपूर आस्था बा कि एह कलजुग में जोग, जगि आ धेयान से बढ़िके राम-गुन गवला के महातम बा। एही से गांव से लेके नगर-महानगर ले दुर्गा पूजा आ दशहरा का बादो रामलीला के अभिभूत करेवाली परिपाटी रहल बा। काशी में रामनगर के रामलीला ओइसहीं मशहूर बा, जइसे मीरजापुर के कजरी-

'लीला रामनगर के भारी,
कजरी मीरजापुर सरनाम!'

दरअसल भोजपुरी लोक के कन-कन में राम बेयापेलन। होत फजीरे एक-दोसरा से हाथ जोरिके 'राम-राम' होला। आखिरी सांस ले इहे अरज कइल जाला- **'राम के नाम हृदय में धरो, न सरै, न गलै, नहिं होत पुराना!'** हरदम चिरनवीन रहेला ई राम नाम। तबे नू मरला का बादो इहे आवाहन कइल जाला-- 'राम नाम सत है!'

हमनीं के लोक राम से बड़हन राम के नांव के मानेला आ ओकर भरपूर आस्था बा कि एह कलजुग में जोग, जगि आ धेयान से बढ़िके राम-गुन गवला के महातम बा। दरअसल भोजपुरी लोक के कन-कन में राम बेयापेलन। होत फजीरे एक-दोसरा से हाथ जोरिके 'राम-राम' होला। आखिरी सांस ले इहे अरज कइल जाला- 'राम के नाम हृदय में धरो, न सरै, न गलै, नहिं होत पुराना!' हरदम चिरनवीन रहेला ई राम नाम। तबे नू मरला का बादो इहे आवाहन कइल जाला-- 'राम नाम सत है!'

जन-जन में जवन राम रमल बाड़न, ऊ महाराजाधिराज का रूप में राज करेवाला राम ना हउवन। ऊ त वने-वने भटकत राम के पूजेला, सीता का वियोग में रोवे-कलपे वाला राम के देखिके लोर बहावेला। लोक के नायक हउवन रावन समेत तमाम दईतन के सरबनास करेवाला राम। ताड़का के बध आ अहिल्या के उद्धार करेवाला राम। सबरी के जूठ बइर खाए वाला राम। दलित निषाद से दोस्ती निबाहेवाला राम। हरेक परानी में ऊ ओही राम के जोहेला। तबे नू गोसाईं जी के कहनाम रहे-

'सियाराममय सब जग जानी, करहु प्रणाम जोरि जुग पानी।'

एही पानी से भरल-पुरल परानी के लखिके संत रैदास बेरि-बेरि गोहरवले रहलन-

प्रभु जी, तुम चंदन, हम पानी!
प्रभु जी, तुम दीया, हम बाती।

बेगर पानी में रगरले ना चंदन से गमक मिली, ना बाती बिना दीया से अंजोर। एही से राम लोक में रमल बाड़न आ लोक अपना भीतर पइसल राम में रमल रहेला।

ओही लोक के प्रतीक रहलन मंगनी बाबा। टीका-फाना कइले आ कांख में झोरी दबले ऊ भीखि मांगसु। हरेक दुआर पर जाते ऊ शुभकामना देसु-

'राम मड़इया गह-गह करे, चारो कोन दरब से भरे, लाख कोस पर दीया जरे!'

उन्हुकर मए तुकबंदी रामे से शुरू होत रहे आ जिनिगी के सभे किछु ऊ रामे के निछावर कऽ देत रहलन। जइसहीं ऊ आवसु, लोग-लरिका चारू ओरि से घेरि लऽ स। ऊ झूमि-झूमिके गावे लागसु-

'राम नाम लड्डू, गोपाल नाम घीव, हरि नाम मिसिरी, घोरि-घोरि पीव!'

ई चिरई रूपी जीव त रामे के हऽ आ ई खेत रूपी संसारो रामे के। फेरु का पूछेके बा-

'रामे के चिरई, रामे के खेत, खा लऽ चिरई भरि-भरि पेट!'

मंगनी बाबा जवन किछु मांगसु, रामे के नांव पर। जवन किछु कहसु, रामे से जोड़िके। उन्हुका अधिका ना, खाली पेट भरे के परवाह रहत रहे। ऊ इहो कहसु-

ना मांगिले हाथी-घोड़ा, ना मांगीं अशरफी,
रामजी के नांव मांगीं पेटवा के खरची!

मंगनी बाबा नियर सउँसे भोजपुरी लोक राममय रहल बा आ ओकरा जिनिगी के आधार राम गुन गावल रहल बा। तबे नू ऊ नित नवीन राम के नांव हिरदया में बसवले राखेला-

राम के नाम हृदय में धरो, न सरै, न गलै, नहिं होत पुराना!
उलटा नाम जपत जग जाना, बाल्मीकि भए ब्रह्म समाना।

कहल जाला कि 'मरा-मरा' जपत-जपत डकइत बाल्मीकि 'रामायण'

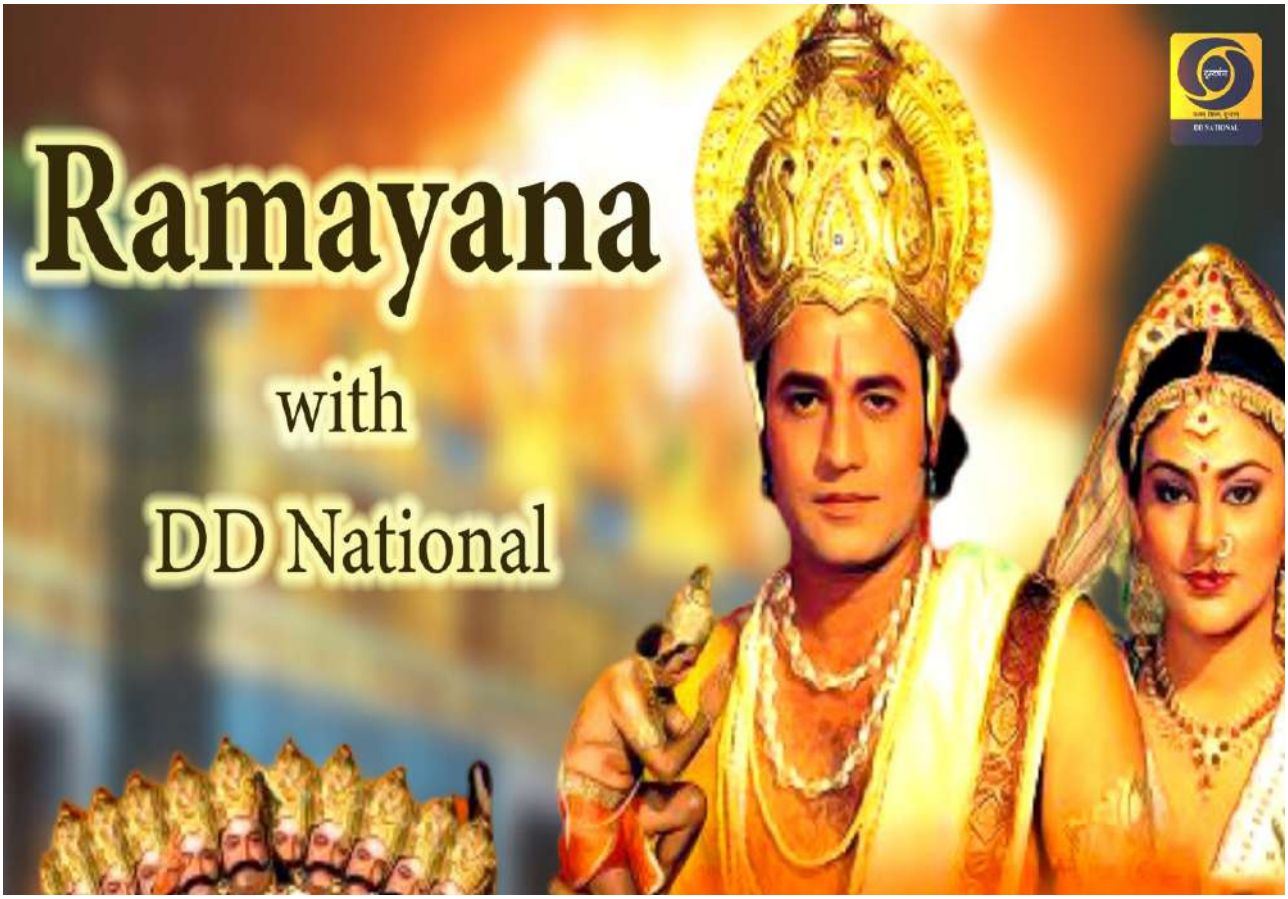

रचिके अमर महाकवि हो गइलन। भोजपुरिया समाज कबो मरण से ना त डेराला, ना अमरता का पाछा भागेला। एही से ओकर जिनिगी जियतार बनल रहेला–

'मरण को जिसने बरा है, उसी ने जीवन भरा है।'

शक्ति के आराधना रामोजी ओह घरी कइले रहलन, जब रावन का संगें उन्हुकर निरनायक लड़ाई होत रहे आ राम–रावन के महासमर अनिर्णित रहि गइल रहे। राम रात में दैवीय शक्ति के आराधना शुरू कऽ दिहलन। देवी के चरन में एक–एक कऽके सइ गो फूल चढ़ावे के रहे, बाकिर एगो फूल कम परि गइल। रात में सूतल कुदरत से कइसे फूल तूरल जा सकत रहे? गुनावन में परल राम के मन परल कि माई कोशिला उन्हुका के 'राजीव नयन' कहत रहली। जरूर उन्हुकर आंखि कमल लेखा होई। सोचिके ऊ एगो आंखि निकालिके देवीमाई के समर्पित कइल चहलन। जइसहीं ऊ आंखि निकाले खातिर तलवार उठवलन, एकाएक परगट होके माई भगवती उन्हुका जीत के वरदान देत उन्हुके में समा गइली।

महाप्राण निराला के अमर रचना 'राम की शक्ति–पूजा' एही भाव–भूइं प रचाइल रहे, जवना के आधुनिक रामचरितमानस मानल जाला। ओह में देवी के राम खातिर उद्गार रहे–

साधु साधु साधक! धीर धर्म धन्य राम!
कह लिया भगवती ने राघव का हस्त थाम
होगी जय, होगी जय हे पुरुषोत्तम नवीन !
कह माता शक्ति राम के बदन में हुई लीन।

आजुओ नवरात्र में शक्ति–साधना के परंपरा कायम बा। जब राजघराना के बात आवेला त खंजड़ी बजावत बालक राम के आवाज सुनिके ऊ हिरनी बेयाकुल हो जाले, जवना के संतान मिरिगा शावक के शिकार कऽके ओकरे सुकवार चाम से खंजड़ी बनावल गइल रहे। नवरात्र में कोरोना के महामारी के दौरान भलहीं रामलीला के मंचन ना भइल,बाकिर दूरदर्शन रामायण आ रामलीला जरूर देखवलस। आजुओ धनुर्धर वनवासी रामे लोकमानस के राजाराम बाड़न। तुलसियो बाबा 'कानन' के 'शत अवध समाना' कहले रहलन। लोक खातिर समर्पित लोक में रचल–बसल राम जब ले सृष्टि के अस्तित्व बरकरार रही, जन–जन में एही तरी रचल–बसल रहिहन आ आपन लोक आधारित भारतीय संस्कृति अइसहीं जियतार बनल रही, राममड़इया गह–गह करत रही।

परिचय- हिन्दी आ भोजपुरी के लब्धप्रतिष्ठ कथाकार, कवि, समालोचक आ लोकसाहित्य के अध्येता। बालसाहित्य के समर्पित रचनाकार। हिन्दी आ भोजपुरी में एकइस–एकइस आ बाल साहित्य के शताधिक कृति प्रकाशित,कई राज्य के पाठ्यक्रम में शामिल आउर विभिन्न भारतीय भाषा आ अंग्रेजी में अनूदित।

आवरण कथा

डॉ. ब्रज भूषण मिश्र

भोजपुरी साहित्य में श्रीराम

अगर अयोध्या से बक्सर, बक्सर से जनकपुर आ जनकपुर से अयोध्या के बीच सीधी रेखा खींचल जाय त एगो त्रिभुज बन जाई। एह त्रिभुज के भीतर भोजपुरिआ इलाका के बेसी भाग पकड़ा जात बा। अवध आ मिथिला जइसन दू गो महाशक्तियन के दू गो महासंस्कृतियन के मेल करावे के काम भोजपुरिआ संस्कृति कइले बाटे। सोभाविक बा कि भोजपुरिअन के ऊपर रामजी के प्रभाव पड़ल।

अवतारी पुरुष श्री राम के आदर्श चरित के जगत पर व्यापक प्रभाव बा। ना खाली आपन देस भारत उनकर गाथा गावत आ नाम जपत आ रहल बा बलुक दुनिया के हरेक भाषा में उनकरा चरित के लेके, उनकरा से जुड़ल कथा के लेके विविध विधा के साहित्य सिरजल जात रहल बा। भला अवध के पड़ोस के भूंई एह में काहे पाछा रह जाइत। अइसहूं रामजी भोजपुरी भूंई धंगलहू कम नइखीं। अयोध्या से बक्सर, बक्सर से जनकपुर आ जनकपुर से अयोध्या ले जाए में भोजपुरिआ इलाका के बेसी भाग घेराइये जात बा। अब अगर अयोध्या से बक्सर, बक्सर से जनकपुर आ जनकपुर से अयोध्या के बीच सीधी रेखा खींचल जाय त एगो त्रिभुज बन जाई। एह त्रिभुज के भीतर भोजपुरिआ इलाका के बेसी भाग पकड़ा जात बा। अवध आ मिथिला जइसन दू गो महाशक्तियन के दू गो महासंस्कृतियन के मेल करावे के काम भोजपुरिआ संस्कृति कइले बाटे। भोजपुरी के केन्द्र बक्सर में बइठल कौशिक मुनि एहमें बड़हन भूमिका निभावत बाड़ें–

गिनत गूंथत रहलें कौशिक मन में जइसे तइसे
मिथिला के माटी में साटीं अगिन अवध से कइसे

– कौशिकायन (अविनाश चंद्र विद्यार्थी)

सोभाविक बा कि भोजपुरिअन के ऊपर रामजी के प्रभाव पड़ल। बाल्मीकि आ तुलसी रामगाथा के बड़हन लिखवइया–गवइया बाड़ें आ एहू लोग के लगाव जुड़ाव भोजपुरिआ इलाका से रहल बा। एही से हरवाही–चरवाही से लेके विद्वत मंडली तक राम के भजल जाला। भोजपुरिया इलाका में हरेक अवसर पर, हर एक कार–बार में रामजी के नाम लेके शुरूआत होला। ऊ चाहे नाप–जोख–तउल होखे, ऊ चाहे जीवन–मरन होखे, परब–तेवहार होखे, दुख–सुख होखे, आफत–विपत होखे; रामजी के नाम लिहल जाला। रामे रामे, रामे हो रामे, रामे जी के नइया हो। राम जी के नमवा बेड़ा पार लगावेला। काहे कि मानल जाला कि रामे जी खेवइया बाड़ें। भला भोजपुरिआ एह खेवइया में काहे ना सरधा राखी। हमनी किहां कहाउत बा–'अन्हरी गइया के राम रखवइया'। जेकर केहू ना ओकर राम जी रखवार बाड़ें। एही से भोजपुरी लोक हर संस्कार–व्यवहार में राम जी के गावेला। जनम से लेके–मरन तक के संस्कार में राम जी के गीत गाइये के जेकर संस्कार होत रहेला ओकर गीत गवाला, संस्कार कइल जाला। दू गो उदाहरण से एह बात के पुहुट कइल जा सकेला–

सोहर

कोशिला के भइले राजा रामचंदर,
केकयी के भरत नू हो।
ए ललना ! सुमित्रा के भइले बबुआ लछुमन,
त तीनू घरे सोहर हो।।

बिआह-

कंचन कलश धरे वेदिअन पर, जहां मानिक दीप धराई। राम वर पाई ।।
भयहु विआह देवलोक हरखे , भइल कोहवर तइयारी।।

वन गमन प-

आज राम की सुधि आई ।
राम बिना मोर शून्य अयोध्या, लछुमन बिना ठकुराई
सीता बिना मोर सून रसोइया, के मोरा भोजन बनाई
महल उदासी छाई ।
आज राम की सुधी आई।।

मरला पर त भोजपुरी लोक मानस 'रामनाम सत्य आ माटी में गत' कहके रंथी निकालेला। अब जहां भोजपुरी लोक में राम चरित अतना गहिरे पइठल बा, त सोभाविक बा कि साहित्यिक रचना में ऊ विषय वस्तु बनिहें आ उनका चरित के जरिये समाज के राह देखावल संवारल जाई। भोजपुरी के संतकाव्य में राम निर्गुण आ सगुण दुनों रूप में विषय बनल बाड़न। भोजपुरी में निर्गुण काव्य परम्परा के विकास बेसी भइल बा आ उहे दरियादासी, शिवनारायणी, बावरी, सरभंग आ सखी सम्प्रदाय के रूप में विकसित भइल बा। एह सब में प्रायः राम निर्गुण ब्रह्म बाड़न। सगुण भक्ति के धारा भोजपुरिओ में मिलेला, बाकिर कम। ई सगुण भक्ति धारा रसिक संप्रदाय के बा, जवना में राम के मोहिनी छवि आ दुलहा रूप विषय बनल बा। उदाहरण देखल जा सकत बा–

राम राम राम जपे सेई तपसी
सीता जी माता हैं जगत सकल बालक हैं,
पालक श्री राम चंद्र सबन्हि के बसी।
-शंकरदास

आये मिथिलेश के बगिया हो नृप युगल किशोर।
बांधे बसंती के पगिया हो दिनकर छवि छोर।
मारे नजर के कोरवा हो सुधि हर लिन्हो मोर।
चितवन बढ़ी जोरवा हो हिया सालत मोर।
- रामाजी

साजि लेली भूसन संवारी लेली बसन से हाथ लेली री।
कनक थार आरती से हाथ लेली री।।
ओढ़ि पहिरी सुन्दर, सहेली सखी सहचारी, ओही बीचे री।
से बिराजे श्री किसोरीजी ताही बीचे री।।
- रूपकला जी

सुन्दर पलकिया के कामदार छंहिया, सुनबे सजनी।
सुन्दर लागल बा कहार, सुनबे सजनी।।
ताही पर चढ़ल बाटीं रामचंद्र दुलहा, श्रीलखनलाल दुलहा, भरत लाल दुलहा, शत्रुघनलाल दुलहा, सुनबे सजनी। सोभा अमित अपार सुनबे सजनी।।
- रामाजी

सखी संप्रदाय के प्रवर्तक संत लछिमी सखी के काव्य में निर्गुण, सगुण आ सरभंग सम्प्रदाय के दर्शन के समन्वय बा। उहां का सगुण राम के अपना काव्य में स्थान देले बानी –

होरी खेलत अवध नरेशा
गगन गोफा जाहां त्रिकुटी के देसा
सादर सेस में बरसत रंग झराझर टेसा
जे तनिको ना भींजेला मोरा केसा।
- लछिमी सखी (अमर सीढ़ी)

ए हमारे प्रभु अजर अमर अविकारी।
जब जब संत पर परत गाढ़ी, तब तब धरी अवतारी।
दसरथ नन्दन अवधबिहारी, सखन सहित भैयाचारी।
असुरसंघारी सुरन हितकारी, स्रुजस भुअन दस चारी।
- लछिमी सखी (अमर कहानी)

पूरबी पुरोधा महेन्दर मिसिर **'अपूर्व रामायण'** के रचना कइले रहीं। ओहमें अधिकांश कवित्त आ पूरबी गीत खांटी भोजपुरी में रहे। एह रामायण के जनकपुर प्रसंग के गीत सब बड़ा सोहावन बनल बा–

कइसे के तूड़िहें रामजी शिव के धनुहिया
से अबहीं त छोटे दुनों भइया हो लाल।
× × ×
मंड़वा में अइलें रामजी चारों भइया
हाय रे संवरियो लाल।
अंगना भइले उजियार हाय रे संवरियो लाल।
× × ×
कहां मिलिहें मोरा अवध बिहारी हो।
खान पान कुछ निको ना लागे तन मन दसा बिसारी हो।

भोजपुरी के राष्ट्रगीत 'बटोहिया' के कवि बाबू रघुवीर नारायण सगुण रसिक संप्रदाय के संत कवि रूपकला जी के शिष्य रहीं आ उहां के इष्टदेव श्री राम रहीं। रघुवीर नारायण जी के भक्तिपरक रचनन में आ 'विजयी नायक रामायण' में राम जी के गोहरावल गइल बा आ रामकथा कहल गइल बा। संकीर्त्तन के एगो पद देखीं–

लगन कब लगिहें राम सिया से।।
कब कृपालु मोह आपन करिहें, छूटब द्वन्द्व बला से।
प्रतिदिन बिनवों चारुशिला से, विमला चन्द्रकला से।
जन 'रघुवीर' युगल दर्शन हित, जांचल रूपकला से।

अब **'कुंवर विजयी रामायण'** से रामकथा के बरनन के सोआद लिहल जाए जवन युद्ध के प्रसंग पर बा–

राम यहि ठैयां भीम भय भरना हो ना।
राम मारि डरलीं दैत्य कुम्भकरना हो ना।
राम यहि ठैयां कैलीं घोर रनवां हो ना।
राम मारि डरलीं विकट रवनवा हो ना।
राम रावन निशाचर के रनवां हो ना।

राम दानव देव दुष्ट सिरजनवां हो ना।
राम देह गिरले विशद पहरवा हो ना।
राम हरखित भइले सारा सनसरवा हो ना।

भोजपुरी के लोकनाटक के बड़ा कैनवास देवेवाला भिखारी ठाकुर रामचरित मानस आ रामकथा से बड़ा प्रभावित रहलीं। उहां का नाच के शुरूआत में सुमिरन में जवन मानस के चौपाई गावत रहीं, ओह के राम लगा के सम्पुट करत रहीं। भिखारी ठाकुर मूलतः रामभक्त रहीं। उहां का शुरू में रामलीला करत रहीं। 'भिखारी ठाकुर रचनावली' के संपादक श्री नागेन्द्र प्र. सिंह के अनुसार ठाकुर जी राम नाम के ही मुक्ति के मार्ग मनले बानी। राम के विविध रूपन के विशद् प्रसंग उनका काव्य में मिलेला। 'रामलीला गान' में उहां के राम से संबंधित रचना कइले बानी।

विश्वामित्र जी के साथ राम लछुमन जी के बक्सर आ के मुनि यज्ञ के रक्षा, असुरन के संहार आ अहिल्या के उद्धार वाला प्रसंग से पांति देखीं–

रामजी-लछुमन तजि के अवध नगरवा हो
डगरवा धइ के ना,
चलत-चलत में पहुंचलन बक्सरवा हो,
डगरवा धइ के ना।
× × ×
दूनों भइया मारी मारी के जरवा ओरववलन हो,
महातमा भरवा ना,
बोले लागल जय-जयकरवा हो, महातमा भरवा ना।

राम सीता विआह के बाद मिथिला नारी लोग विवाह–गारी गावत बाड़ी। सात्विक भाव के गारी के पांति देखीं–

हंसत देखि नख शिख रिस ब्यापी,
राम तोर भ्राता बड़ पापी।
सुनहु राम दुलह मनभावन
पावन रूप तिहारी जी।
पर एक बात सुनीं हम अइसी
माई तोहार छिनारी जी।

हरवाही-चरवाही से लेके विद्वत मंडली तक राम के भजल जाला। भोजपुरिया इलाका में हरेक अवसर पर, हर एक कार-बार में रामजी के नाम लेके शुरूआत होला। ऊ चाहे नाप-जोख-तउल होखे, ऊ चाहे जीवन-मरन होखे, परब-तेवहार होखे, दुख-सुख होखे, आफत-विपत होखे; रामजी के नाम लिहल जाला। रामे रामे, रामे हो रामे, रामे जी के नइया हो। राम जी के नमवा बेड़ा पार लगावेला। काहे कि मानल जाला कि रामे जी खेवइया बाड़ें। भला भोजपुरिआ एह खेवइया में काहे ना सरधा राखी। हमनी किहां कहाउत बा- 'अन्हरी गइया के राम रखवइया'। जेकर केहू ना ओकर राम जी रखवार बाड़ें। एही से भोजपुरी लोक हर संस्कार-व्यवहार में राम जी के गावेला। जनम से लेके-मरन तक के संस्कार में राम जी के गीत गाइये के जेकर संस्कार होत रहेला।

एगो चौपाई में राम भक्ति से तर गइला के संदेस ठाकुरजी देले बानी–

राम नाम के भक्त जगत से तरि जालन तत्काल।
कुतुबपुर के कहत 'भिखारी', बूढ़ जवान बाल।।

महेन्दर मिसिर, रघुवीर नारायण आ भिखारी ठाकुर के समकालीन बसुनायक सिंह भइलें जे नाटक करत रहलें आ रामकथा आधारित प्रबंध काव्य के रचना कइले रहलें, बाकिर उनका रामकथा काव्य के भाषा निखालिस भोजपुरी नइखे। ओह में ब्रजभाषा, अवधी, हिन्दी सरमेर बा। सन 1941 ई. में सिद्धनाथ सिंह 'विनयी' के हिन्दी आ भोजपुरी रचनन के संग्रह 'केवट अनुराग' छपल रहे। एह में रामचरित मानस के केवट प्रसंग पर आधारित हिन्दी के साथ भोजपुरिओ के गीत सामिल रहे।

भोजपुरी प्रबंध काव्यन में ऊ चाहे महाकाव्य होखे चाहे खंडकाव्य, रामकथा खूब फरल–फुलाइल बाटे। भोजपुरी में प्रबंधकाव्य के सिरजन आ प्रकाशन सुचिंतित ढंग से 1954 ई. में शुरू भइल। रामकथा पर आधारित पहिला रचना बाबू दुगार्शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ' के 'साहित्य रामायण' बा। 'साहित्य रामायण' तीन खण्ड– किष्किंधा आ सुंदर कांड (1964 ई.), लंका कांड (1965 ई.) आ अयोध्या और अरण्य कांड (1967 ई.) में छपल बा, जे कथाक्रम के सिलसिला में नइखे। बालकांड लिखे भा छपे के पहीलहीं कवि के हत्या हो गइल। एह तरह रामकथा के क्रम से देखल जाए त अयोध्या से ले के लंकाकांड के कथा एह में बा। राम के रूप के के जान सकत बा, कवि बतवले बाड़न–

उमा राम नर ऊ पहिचनलें ।
धरम करत जे प्रेम उमतलें।।
परम विवेक हृदय जे अनलें।
उहे रूप प्रभु राम के जनलें ।।
– अरण्यकाण्ड

अविनाश चन्द्र 'विद्यार्थी' के 'कौशिकायन' 1973 ई. में छपल। राछसी उत्पात से तंग विश्वामित्र का अवध से राम लछुमन के मांग के ले अइला, ताड़का बध, अहिल्या उद्धार, जनकपुर गमन, धनुष भंग, राम सीता विवाह आ विदाई के कथा समेटल गइल बा। राम लछुमन के चरित्र के बारे में कवि कहत बाड़ें–

राम लछुमन के कहे रच्छक सभे संसार के
पांव पूजे जोग बा 'नरसिंघ' रूप लखार के

कुंज बिहारी 'कुंजन' के 'सीता के लाल' में निर्वासित सीता के दुनों बेटन लव–कुश के द्वारा अश्वमेघ यज्ञ के घोड़ा रोकल, राम के सेना से युद्ध, राम से परिचय आ सीता पाताल प्रवेश के कथा के प्रबंधत्व दिहल गइल बा। काव्य के विलक्षणता ओकरा संवाद के भाषा में बा। उदाहरण देखीं–

भोजपुरी भाषा में पहिला समीक्षा-आलोचना के पुस्तक रामेकथा से जुड़ल रहे, जब कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' रामचरित मानस पर 'रामकथा परम्परा में मानस' नामक ग्रंथ 1978 ई. में लिखलीं। ई ग्रंथ 36 उपशीर्षकन में बंटल बा। भारतीय परम्परा में कवना कवना ग्रंथ में रामकथा आइल बा, ओह सबसे विप्रजी परिचय करावत बानी आ रामकथा से संबंधित मानस सहित तुलसी के राम साहित्य पर विमर्श कइले बानी।

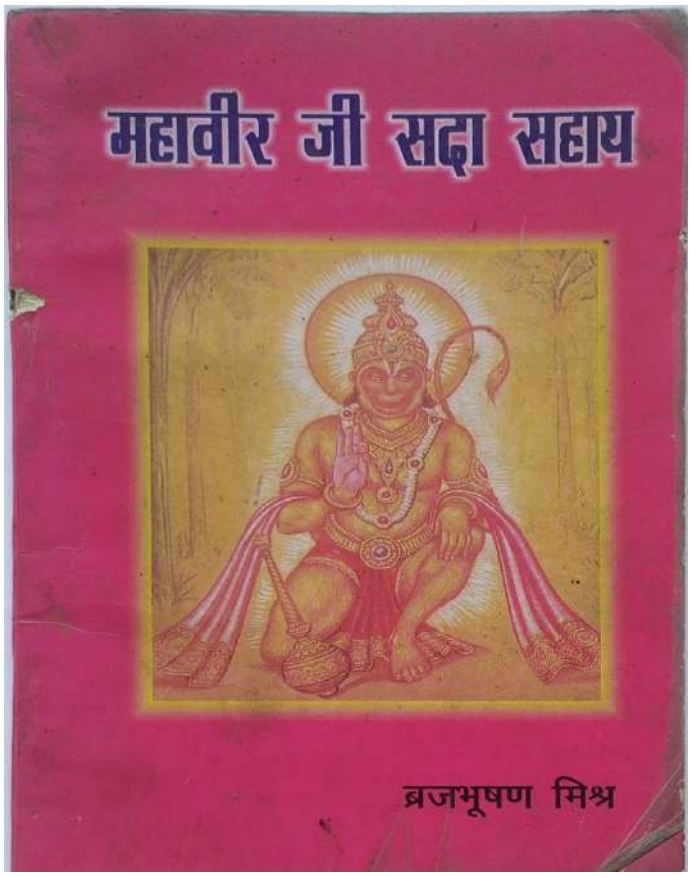

लाल लाल मुंह कइले बा, बा
बड़ा जोर खिसिआइल।
चलत पसेना बड़हिस जइसे
डूबकी मार नहाइल।।
× × ×
अच्छा ! त सरकारे राम हईं
धरती के योद्धा ।
रउवे धरती के सपूत रउरे बा
गांव अयोध्या?
रउवे काल्हे से इहंवा
किरकिन्ह करववले बानी?
कतना मूड़ी कटववलीं सब
रउरे ह करदानी?

'बनवासी की शक्ति साधना' (राम बचन लाल श्रीवास्तव) में राम रावन-युद्ध में रावन पर दुर्गा के किरपा से आ राम के वार खाली गइला से दुखी हनुमान जी द्वारा दुर्गा जी के लील जाय के संकल्प, शंकर भगवान के द्वारा बीच बचाव आ राम के पूजा से देवी के खुश होके राम के साथ देवे के घोषणा कथा रूप मे आइल बा-

धन्य श्री राम धन्य आप क विजय होई
हरे अकाम धन्य आप क विजय होई

रामबृक्ष राय 'विधुर' रचित 'सीता स्वयंवर' (1978 ई.) में जनकपुर में धनुषभंग, परशुराम क्रोध, राम के नारायण के अवतार जान प्रसन्नता आ जनकपुर में उछाह के कथा प्रबंध के कथा तत्व बा। राम के रूप पर जनकपुर के लोग कइसे मोहाइल बा एगो छंद देखीं-

पातर ओठ कि पान के पत्ता
आ बोली बुझाला कि बोलेले मैना
सोहत माथ का ऊपर बार
कि काग खड़ा खोले आपन डैना
केदली जस जांघि बड़ी सुघरी
कटि सिंह समान हिय मन खींचे
राखे का लायक हरो घरी सखी
राम के मूरत आंखिन बीचे

तारकेश्वर मिश्र 'राही' के 'लव कुश' (1982 ई.) में सीता निर्वासन, बाल्मीकि आश्रम में लव कुश शिक्षा-दीक्षा, अश्वमेघ यज्ञ के घोड़ा रोकला, रामसेना से युद्ध, सीता, लवकुश आ बाल्मीकि के अयोध्या गमन, सीता के फेरु से अग्नि परीक्षा के तैयारी आ सीता पाताल-प्रवेश तक के कथा समेटाइल बा। कवि मार्मिक छंदन के सिरजन में माहिर बाड़ें-

डूबे जब लगली अंगूरी वाली अंगूठी
त केवट के साथ याद आई हनुमान क,
डूबते उदर याद आवे बनवास,
तीन देवर तीन सास तीन वरदान क।
डूबल जो वक्ष तब भरि अइली अंखिया,
आ याद आवे युगल अबोध संतान क,
कंठ जब डूबलें त याद आई देवरों की,
डूबलें सोहाग तब याद आई राम क।

कृष्ण कथा से संबंधित दूधनाथ शर्मा 'श्याम' रचित खंडकाव्य 'द्रौपदी' (1982 ई.) में अवांतर कथा के माध्यम से सीता निर्वासन से लेके पाताल प्रवेश तक के कथा आइल बा। विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा' रचित 'रावण-अंगद संवाद' (1982 ई.) में शांतिदूत बनला आ गोड़ रोप के रावण आ उनका दरबार के वीर लोग के बेइज्जत कइला के कथा लिहल गइल बा।

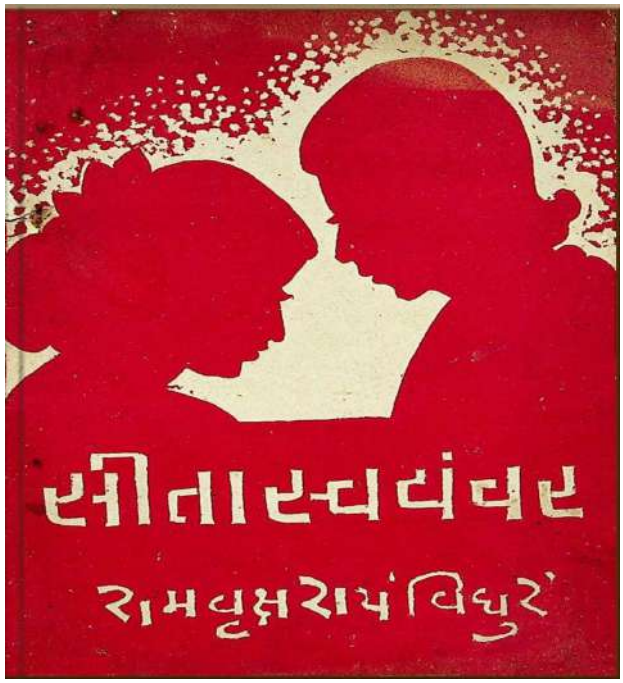

'सेवकायन' (1984 ई.) में अविनाश चंद्र 'विद्यार्थी' रामचरित मानस के किष्किंधा कांड से ले के लंका कांड के कथा के आधार बनावत हनुमान जी द्वारा रामकाज कइला के कथा के प्रबंधात्मकता दिहले बानी। हनुमान जी के चरित के बखान रामजी से कवि करवइले बाड़न–

सोर बा झूठ हमरा धनुस तीर के
गोड़ सांचो गुनी बा महावीर के
बे सवारथ सबल जे संघाती भइल
बाप भाई निअन जे हितारथ कइल
मोह से ओढ़ि लीहल फिकिर जोह के
का करीं हम जिकिर छूंछ पर छोह के
मोल कम ना कहाई लखन लाल से
भाव अपने सभे के लड़ी काल से

श्री वीरेश्वर तिवारी के प्रबंधकाव्य 'लंका विजय' (1986 ई.) के जानकारी मिलत बा। इहो रामकथा पर आधारित बा। रामकथा पर आधारित महाकाव्य–'श्री रामकथा' (1993 ई.) श्रद्धा नंद पांडेय के रचना ह, जवना में राम जनम से लेके सीता पाताल प्रवेश आ राम जलसमाधि तक के कथा के महाकाव्यात्मक बनावल गइल बा। श्रीराम के सरबस मानेवाला एगो छंद देखीं-

रामचंद्र बाप मोर, रामचंद्र माई हवें,
रामचंद्र अग्रज अनुज आ बहीनियां।
रामचंद्र भरतार, रामचंद्र प्रेमिका आ
सीतापति रामचंद्र मोरे दुलहनियां ।।
रामचंद्र पूत धिया, रामचंद्र हीत मीत,
चेला अरु गुरु रामचंद्र के चरनियां।
हम रामचंद्र दास, दास रामचंद्र मोर,
नाता सब आन झूठ, झूठ सब दुनियां।।

व्रतराज दूबे 'विकल' के 'केकई माई' (1992 ई.) में बनवास के बाद अयोध्या वापसी के बरनन से ले के राम द्वारा माता केकई के कलंक मेटावे तक के कथा आइल बा। अनिरुद्ध त्रिपाठी 'अशेष' रचित 'प्रेमायन' अइसे त भरत के प्रधान चरित्र बना के लिखल गइल महाकाव्यात्मक कृति बा, जवना में परम्परागत कथा के उपजीव्य बनावल गइल बाटे। एह महाकाव्य में कवि राष्ट्रप्रेम आ मानव प्रेम के गंगा जमुनी धारा बहावे के सफल प्रयास कइले बाड़ें। ऊ लिखत बाड़न–

सगरी नर-नारिन में प्रेम आकर्सन बनि ललचावेला
हर ओर सृष्टि में इहे प्रेम बहुरंगी रास रचावेला।।
प्रेमे योगिन के भाषा में सुख ब्रह्मानंद कहावेला।
प्रेमे जब जीवन बनि जाला मानव भगवान कहावेला।।

हीरा ठाकुर रचित 'अंजनी के लाल' (1997 ई.) में राम चारो भाई के साथे हनुमान जी के जनमकथा से शुरू करके कृष्णावतार तक हनुमान जी के वीरता आ शौर्य के कथा समेटल गइल बा। अमर सिंह रचित प्रबंधकाव्य **'मर्यादा** पुरुषोत्तम' (2000 ई.) में जनकपुर में बिआह के बाद सीता के घर गृहस्थी सम्हरला के कथा से शुरू करके वन गमन, सीताहरण, राम के द्वारा सैन्य संगठन, राम रावण युद्ध, अयोध्या वापसी आ राम राज्याभिषेक तक के कथा आइल बा। अमर सिंह जी के दूसर प्रबंध 'विश्वामित्र' (1999 ई.) में प्रसंगवश बक्सर प्रसंग आ जनकपुर प्रसंग आइल बा। अनिरुद्ध त्रिपाठी 'संयोग' विरचित 'रामप्रिया बनवासिनी' (2000 ई.) में सीता के केन्द्रीय पात्र बनावत जनकपुर के फुलवारी में सीता राम मिलन, प्रेम प्रस्फुटन, राम संग सीता वन गमन आ सीता के अयोध्या से निष्कासन वाला प्रसंगन के अलग अलग शीर्षक से उठावल गइल बा। एह सब के अलावे रामकथा आधारित अउर प्रबंधकाव्य बा– ब्रजभूषण मिश्र के 'महावीर जी सदा सहाय' (2002 ई.), जवना में हनुमान गाथा आल्हाछंद में गावल गइल बा। एह में रामकाज में हनुमत योगदान वाला प्रसंग सोभाविक रूप से आइल बा। हीरालाल हीरा के 'केने बाड़ी सीता' (2005 ई.) में सीता खोज वाला प्रसंग के उठावल गइल बा। कवि ई बतावत बाड़न की शक्ति आ भक्ति के प्रतीक सीता के खोज के कर सकत बा–

जो न घमंड रहे मन में,
बल, बुद्धि-विवेक से काम में लागे
का करिहें सुरसा सिहंनी,
ओह वीर का राह में आइ के आगे

कुंज बिहारी 'कुंजन' के कुंजन रामायण 2007 ई. में छपल। गीत आ लोकधुन में लिखाइल एह रामायण के सरस बनावे में कवि बड़ा सफल बाड़न। राम वन गमन का अवसर के पांति देखीं–

जब घर के चक्कर में आ जाला अदिमी
कुल वेद शास्तर भुला जाला अदिमी
पुत्र के वियोग चाहे दौलत के शोग से
मान मरजाद भा मुहब्बत के रोग से
नांव नियन डोल डगमगा जाला अदिमी

कुल्ह वेद शास्तर भुला जाला अदिमी

एह सब के अलावे राम सुरेश पांडेय रचित 'रावन चरित मानस'- दू भाग (1972 आ 1976 ई.), श्री भगवान मिश्र 'श्रीदास' रचित 'बालकांड रामायण' (2013 ई.), बद्रीनारायण दूबे 'बक्सरी' रचित 'राम रसायन' (2002, 2008, आ 2013 ई.), शिव भजन राय 'वैरागी' के 'कवित रामायण' आ 'भजन रामायण' (2010ई.), भगवान सिंह 'भास्कर' के 'भास्कर लोक रामायण' (2003 ई.), रामलाल गजपुरी के 'रामचरित दर्शन' (1993 ई.), रामप्रवेश शास्त्री के 'रामभक्त हनुमान' ; हीरा प्रसाद ठाकुर के 'सबरी' (2000 ई.) आ 'रामजी के बिआह'; बद्री नारायण दूबे के 'श्री राम चालीसा'; गोरखनाथ शर्मा के 'सीताहरण' आ व्रतराज दूबे 'विकल' के 'सती उरमिला' (2016 ई.) के चरचा मिलत बा। बाकिर, दू गो प्रबंधकाव्य के चर्चा हम विशेष रूप से करब। पहिला व्रतराज दूबे 'विकल' के 'सिरिमद करुणाकर रामायण' (2014 ई.) आ युवा कवि सुशांत शर्मा के 'जटायु' (2018 ई.)। 'सिरिमद करुणाकर रामायण' बृहदकाय ग्रंथ बा जवन पारंपरिक ढंग से दोहा-चौपाई-सोरठा आदि छंदन में पाठ महात्म्य आ आरती के साथ दिहल गइल बा। 'किष्किंधा कांड' से बाली के प्रसंग में कवि के काव्य के उत्कर्ष के दर्शन देखीं-

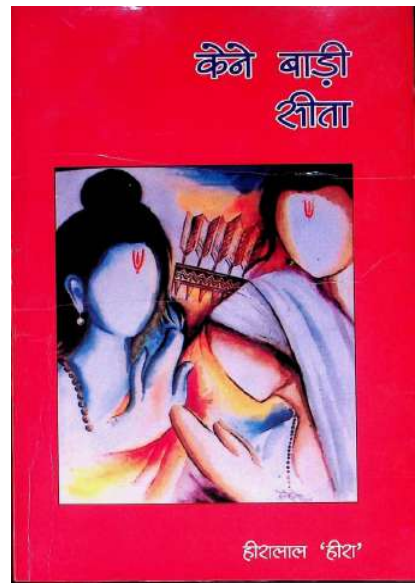

फाटल दूध दही ना होखे।
बिगड़ल मन में ना सुधार सोखे।।
बल के गरमी तब खतमाला।
जब ओकर जोड़ा मिल जाला।।
ठीक - ठाक जब लागे जोड़ा।
तब मानेला मन के घोड़ा।।
घोड़ा के त कोड़ा चाहीं।
नाहीं दोसर तोड़ा चाहीं।।

रामकथा के सबसे छोट मगर महत्वपूर्ण चरित्र जटायु के ऊपर सुशान्त शर्मा के खंडकाव्य 'जटायु' सबकर ध्यान खिंचले बा। दलित चरित के आगे करत भारतीय जनमानस के बदले के उद्देश्य से नारीशील रक्षा खातिर आपन जान अरपित करे के प्रेरित करत बा। भोजपुरी के विविध क्षेत्रीय रूपन के साथे अवधी ब्रजभाषा के छांही में काव्य सौष्ठव खूबे बनल बा। जटायु के चरित पर कवि के उक्ति देखीं-

रोवत बाड़े जटायु के नैन,
आ रोवत बाड़ी सीता मृगनैनी।
रोवत बा कविताई हमार,
की रोवत बाड़ी गिरा मृद बैनी।
नारीके लाज के राखे बदे,
कटवउलेसि रे गिद्धवा दुनु डैनी।
रोवत बाड़ी जी भारत माई ,
कि का रहनी अरू का बनि गइनी।

ई त रहल पद्य रचना के बात, समय समय पर गद्य में रामकथा पर आधारित सृजनात्मक भा ओह कथा के समीक्षात्मक, शोधात्मक अध्ययन भोजपरी में होत रहल बा। जहां तक सृजनात्मक साहित्य के बात बा, शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी के नाटक बा, जवन ओही नाम से भवभूति के संस्कृत नाटक 'उत्तर राम चरित' के अनुवाद बा आ जवन 1978 ई. में छपल रहे। सन 1982 ई. में छपल 'रावन उवाच' गणेश दत्त 'किरण' रचित उपन्यास ह, जवन आत्मकथात्मक शैली में बा। रावन का मरइला समय के बरनन देखीं-

"देखलीं कि राम बान चढ़ा के मंतर पढ़े लगलन आ तुरन्त कराल अस लहकत बान सनसनात चलल आ पलक झपकावते हमरा नाभी में धंस गइल। तुरंत हमरा आंखि के आगा अन्हार हो गइल। धनुस हमरा हाथ से छूटि के गिरि गइल। आ हम अचेत हो के गिरि गइलीं। कुल्हि लस्कर तबले मरा गइल रहे।"

भोजपुरी लोकगीतन आ अवधी लोकगीतन, जवना में रामकथा बरनन बा, के शोधपूर्ण अध्ययन डॉ. किरण मिश्रा (मराली) कइली आ ऊ शोध प्रबंध लखनऊ विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. खातिर स्वीकृत भइल।

भोजपुरी भाषा में पहिला समीक्षा-आलोचना के पुस्तक रामेकथा से जुड़ल रहे, जब कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' रामचरित मानस पर 'रामकथा परम्परा में मानस' नामक ग्रंथ 1978 ई. में लिखलीं। ई ग्रंथ 36 उपशीर्षकन में बंटल बा। भारतीय परम्परा में कवना कवना ग्रंथ में रामकथा आइल बा, ओह सबसे विप्रजी परिचय करावत बानी आ रामकथा से संबंधित मानस सहित तुलसी के राम साहित्य पर विमर्श कइले बानी। हम अपना एह लेख के विराम विप्रजी के एही ग्रंथ के पहिला आलेख से एक अंश देके, देवे के चाहत बानी-

"श्रीराम जी अनंत हईं। उहां के कथा अपार बा। अनेक कल्प में अनेक हेतु से उहां के अवतार भइल बा। संत लोग अनेक विधि से रामकथा गवले बा। बाल्मीकि रामायण आ अनेक निगम आगम में रामकथा के मजगर बरनन भइल बा। त भला भोजपुरी अपना अवकात भर कहां चूके वाला रहल बा।"

परिचय- डॉ० ब्रज भूषण मिश्र। भोजपुरी के साहित्यिक-सांस्कृतिक-सांगठनिक आंदोलन में चौआलीस बरिसन से लागल। भोजपुरी-हिंदी में साहित्यिक, अकादमिक आ जनशिक्षा के लगभग डेढ़ दर्जन पुस्तक प्रकाशित। वर्तमान में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर।

चंद्रेश्वर

भारतीय काव्य में राम के महानायकत्व

भारतीय सभ्यता आ संस्कृति में राम एगो अइसन महानायक बाड़न जेकरा प हरेक बोली-भाषा में सबसे ज्यादा महाकाव्य, खंडकाव्य, लमहर कविता आ फुटकर गीत के सिरिजना होत आइल बा, हर कालखंड अवरू हर जुग में। उन्हुकर चरित आ लीला के लिखित आ वाचिक दूनों परंपरा में तरह-तरह से लिखल-गावल-सुनावल गइल बा। संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, तमिल, तेलुगू, मलयालम, कन्नड़, बंगला, मराठी, कोंकणी, सिंधी, गुजराती, उड़िया, असमिया, अरबी-फारसी, हिन्दी, उर्दू से ले के अवधी, ब्रजभाषा, बुन्देली, राजस्थानी, मैथिली, भोजपुरी, मगही, अंगिका आदि में।

भारतीय सभ्यता आ संस्कृति में राम एगो अइसन महानायक बाड़न जेकरा प हरेक बोली-भाषा में सबसे ज्यादा महाकाव्य, खंडकाव्य, लमहर कविता आ फुटकर गीत के सिरिजना होत आइल बा, हर कालखंड अवरू हर जुग में। उन्हुकर चरित आ लीला के लिखित आ वाचिक दूनों परंपरा में तरह-तरह से लिखल-गावल-सुनावल गइल बा। संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, तमिल, तेलुगू, मलयालम, कन्नड़, बंगला, मराठी, कोंकणी, सिंधी, गुजराती, उड़िया, असमिया, अरबी-फारसी, हिन्दी, उर्दू से ले के अवधी, ब्रजभाषा, बुन्देली, राजस्थानी, मैथिली, भोजपुरी,मगही, अंगिका आदि में। 'रामचरित मानस' के रचनाकार गोस्वामी तुलसीदास जी त लिखलहीं बानीं कि 'रामायन सतकोटि अपारा।' अने कहे के मतलब कि उन्हुकर हिसाब से शत कोटि (एक अरब) रामायण के रचना भइल बा। ई बात कहे के महाकवि के एगो लहजा भी हो सकेला। ई बात त केहू मान ली कि राम के नायकत्व आ गुन के बारे में सर्वभाषा भारतीय साहित्य में सबसे ज्यादा लिखल गइल बा। जे भी होखे संस्कृत में आदिकवि महर्षि वाल्मीकि के रचल महाकाव्य 'रामायण' के एक तरह से आदि महाकाव्य के दरजा हासिल बा। संस्कृत में वाल्मीकि के 'रामायण' के अलावा महामुनि व्यास के 'अध्यात्म रामायण', कालिदास के 'रघुवंशम', भवभूति के नाटक 'उत्तर रामचरित', बंगला में 'कृतिवास रामायण', तमिल में 'कंब रामायण' आदि के भी एगो अलग तरह के लोकप्रिययता आ पाठकीय समाज बनल रहल बा। एह सब

के तुलनात्मक अध्ययन बहुते दिलचस्प भा मजगर हो सकेला। बाकी ओह विस्तार के गुंजाइश एह लेख में नइखे।

हम एह लेख में रामकथा प आधारित कुछ कृतियन के आधार प एह बात के बतावल चाहत बानी कि हर काल में उत्तरोत्तर कवियन के कृतियन में राम के चरित आ लीला के बखान बदलत गइल बा। कुछ नया प्रसंग जुड़त गइल बा त कुछ पुरान प्रसंग छूटत गइल बा। सब लोग अपना-अपना जुगधरम के आवश्यकतानुसार राम के रचले-गढ़ले बा। एह रचना प्रक्रिया में राम के मूल कथा बरकरार रहल बा। जे होखे, महाकवि वाल्मीकि राम के अपना समकालीन समय में देखले-परखले रहलन आ उन्हुकरा में एगो आदर्श राजा के अन्वेषित कइले रहलन। हम एह संदर्भ में कहल चाहब कि वाल्मीकि के राम '**मर्यादा** पुरुषोत्तम' के विशेषण से विभूषित कइल गइल बाड़न। एहिजा '**मर्यादा**' शब्द के डिकोड कइला प पता चल सकेला कि वाल्मीकि के राम आपन युगीन पारंपरिक सामंती जीवन आ सामाजिक मूल्यन से बन्हाइल रहलन। ऊ वर्णाश्रम व्यवस्था आ धर्म के रक्षक-पोषक रहलन। ओह समय में वर्ण व्यवस्था में शूद्र समाज के लोग के तप-तपस्या के अधिकार ना रहे। एही से शूद्र समाज के शूद्रक जब तप करे लगलन त ऋषि-मुनि लोग दुःखी होके राम के पास चहुंपल कि एकर केवनो उपाय करीं ना त अनर्थ हो जाई। एह पापकर्म के रोकीं। एकरे बाद राम शूद्रक के बध क दिहले, जेवना से ओहघरी के जुगधरम के रइछा भइल। एही तरह से वाल्मीकि के राम सीता के अग्नि परीक्षा लेले बाड़न। कहे के गरज ई बा कि वाल्मीकि के राम के उत्तमता ईहो रहे कि ऊ आपन युगीन सामाजिक मान-**मर्यादा** से बंधल रहलन। ओह समय के ईहे चलन आ रीति रहे। आजु भले कोई कह सकेला कि वाल्मीकि के राम दलित आ नारी के विरोध कइले रहलन बाकिर ओह घरी के ऊहे मरजादा रहे। जदपि वाल्मीकि रामायण में राम के शूद्रक बध वाला प्रसंग के कई बिदमान लोग क्षेपको मानेला आ कहेला कि राम लेखा मरजादा वाला नायक ई काम ना कर सकत रहंन। एह मुद्दा प तरह-तरह के मत आ विचार रहल बा। बहरहाल, अगर वाल्मीकि के राम आ तुलसी के राम में मिलान क के देखल जाई त पता चली कि तुलसी के राम के छवि बदल गइल बा। तुलसी शूद्रक आ सीता के अग्नि परीक्षा के मए प्रसंगे हटा दिहले बाड़न। ई तुलसी के रचनाधर्मिता प अपना समय के दबाव रहे। हमनी के हिन्दी में भक्ति काव्य के आगाज कबीर से भइल रहे। तुलसी से पहिले कबीर आ रैदास के निर्गुण भक्ति काव्य सामने आ चुकल रहे। निर्गुण भक्ति काव्य के माध्यम से वर्ण व्यवस्था में नीचे के, हाशिया के समाज के जगावे आ ओकरा भीतर आत्म सम्मान पैदा करे के एगो लमहर आंदोलन चल चुकल रहे। एह आंदोलन के दबाव तुलसी प जरूर रहल होई। ऊ जब 'रामचरित मानस' के रचना कइले त अप्रासंगिक आ कमजोर संदर्भन के हटा दिहले। तुलसी के राम के दू गो धरातल बा। एगो प राम के ब्रह्म के छवि गढ़ल गइल बा त दोसर प ऊ एगो साधारण मनुष्य के रूप में दिखाई परत बाड़न। तुलसी के राम अधिक समन्वयकारी आ मानवीय बाड़न। ऊ आदर्श स्थितियन के मूर्तिमान रूप में गढ़ाइल बाड़न। तुलसी के राम के चरित तुलसी के काव्य विवेक आ उन्हुकरा समय के हिसाब से गढ़ाइल बा। हरेक कवि आ रचनाकार प आपन समय के दबाव आ तात्कालिकता के गहिरारे असर दिखाई पड़ेला। तुलसी के राम हर सम्बन्ध के ले के, चाहे ऊ पारिवारिक होखे भा सामाजिक, राष्ट्रीय होखे भा वैश्विक एगो अजगुत बेमिसाल मानक गढ़ले बाड़न। ऊ करुणा से भरल करुणाकर बाड़न। मध्य काल में भक्त कवि लोग चाहे सगुण धारा के होखसु चाहे निर्गुण धारा के- सब लोग करुणा, दया, सेवा भावना में, त्याग-तप में ईश्वरत्व के ढूंढे के कोशिश कइले बा।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल आपन निबंध 'श्रद्धा-भक्ति' में लिखले बानीं कि 'हमनी के देश के संस्कृति में जेवन रीढ़ के हड्डी बनल बा ओकरा में राम आ किसुन के लीला आ चरित के मुख्य भूमिका रहल बा।' एह दूनों महानायकन के हटा देला प देश के सवंसे ढांचा भहरा के गिरे लागी। एह दूनों महानायकन के चरित हर काल में गवाइल बा। आगे चल के हिन्दी कवि निराला के लमहर कविता 'राम की शक्ति पूजा' में राम के एगो अवरू नया छवि गढ़ाइल बा जेवना में एह कवि के काव्य विवेक शामिल बा।

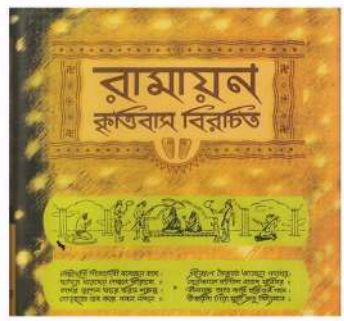

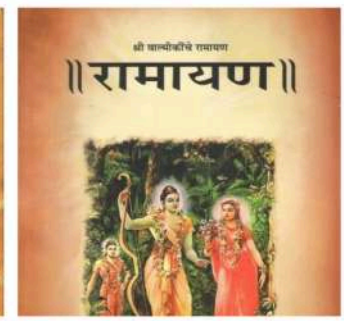

हिन्दी में राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान सन १९३१ में जब राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के 'साकेत' प्रबंध काव्य के रचना आ प्रकाशन भइल त उन्हुका रामकथा प महात्मा गांधी के विचारधारा के असर पड़ल। ई तत्कालीन जुगीन परभाव कहल जा सकेला। हिन्दी के एगो सेसर आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल आपन निबंध 'श्रद्धा-भक्ति' में लिखले बानीं कि 'हमनी के देश के संस्कृति में जेवन रीढ़ के हड्डी बनल बा ओकरा में राम आ किसुन के लीला आ चरित के मुख्य भूमिका रहल

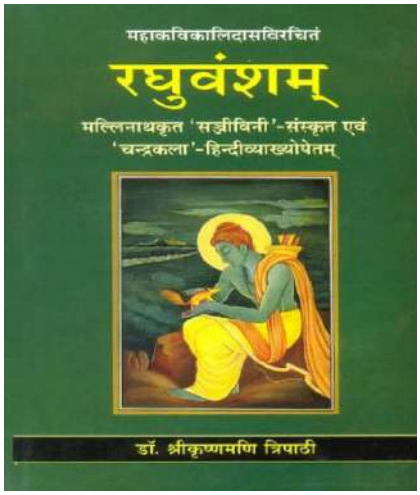

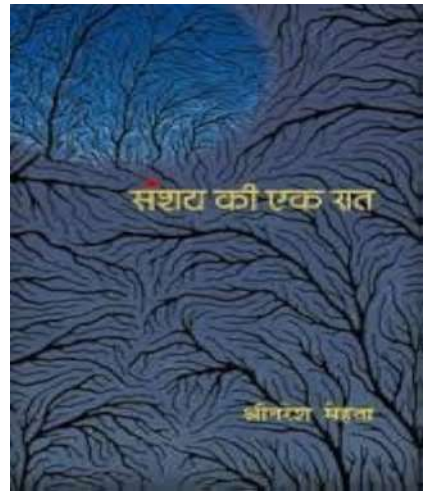

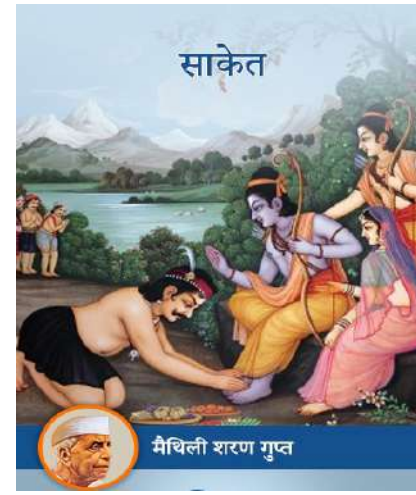

बा।' एह दूनों महानायकन के हटा देला प देश के सवंसे ढांचा भहरा के गिरे लागी। एह दूनों महानायकन के चरित हर काल में गवाइल बा। आगे चल के हिन्दी कवि निराला के लमहर कविता 'राम की शक्ति पूजा' में राम के एगो अवरू नया छवि गढ़ाइल बा जेवना में एह कवि के काव्य विवेक शामिल बा। निराला के राम के आंखिन में बात-बात प लोर भरि जात बा- 'भावित नयनों से गिरे सजल दो मुक्ता दल।'' फेरु ईहो कि 'रह-रह उठता जग जीवन में रावण जय भय।' तमाम संगठन, सेना, संकल्प आ विकल्प के बादो राम रावण से सशंकित बाड़न। बाद में ऊ अंदर से व्यथित हो के कह रहल बाड़न-'अन्याय जिधर, हैं उधर शक्ति।' ई कहते फेरु उन्हुकर आंखि छलछला जात बाड़ी सन। अंत में ऊ भल्लपति जाम्बवान के सलाहियत प (''छोड़ दो समर जबतक सिद्धि न हो रघुनंदन।'') बीच में लछुमन प युद्ध के नेतृत्व सौंप के बीच समर से बाहर आ के शक्ति के आराधना में लाग जात बाड़न। अंत में जब साधना पूरन होखे वाला बा त मां दुर्गा उन्हुकर १०८ नीलकमल में से एगो नील कमल चोरी कर लेता बाड़ी त राम कह रहल बाड़न कि हमार माई हमरा के राजीव नयन कहत रहली। अबहीं हमरा पास त दूगो नीलकमल बा। ऊ जइसे आपन लकलक करत कटार से एगो आंखि निकाल के मां दुर्गा के चरनन प अरपित कइल चाहत बाड़न ऊ सामने आ के उन्हुका के रोक लेले बाड़ी आ भविष्यबानी कइले बाड़ी- ''होगी जय, होगी जय हे पुरुषोत्तम नवीन! कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।''

एह साधना आ वरदान के बाद राम के रावण अस आततायी प विजय सुनिश्चित हो जात बा। राम अब नवीन हो जात बाड़न-नव संकल्प से भरल। ऊ शक्ति के मौलिक संधान क लेत बाड़न। निराला के राम कथा प बंगला के 'कृतिवास रामायण' के भी प्रभाव मानल जाला। निराला के 'राम की शक्ति पूजा' में सीता के रावण अस आततायी से मुक्त करावे के संघर्ष के हिन्दी लेखक प्रो.दूधनाथ सिंह भारत के स्वाधीनता आंदोलन से जोड़ के विवेचना कइले बाड़न। सीता एहिजा आजादी के रूपक में बदल जात बाड़ी आ रावण अत्याचारी गोरन के रूपक में त राम स्वाधीनता आंदोलन के अगुवा के रूपक में बदल जात बाड़न। ई निराला प आपन समय के प्रभाव कहल जा सकेला।

आगे चल के नयी कविता के एगो प्रमुख कवि नरेश मेहता राम प एगो खंड काव्य- 'संशय की एक रात' के सिरिजना कइले बाड़न। ई चार सर्ग में बा। एह कृति के नायक राम युद्ध विरोधी आ अहिंसक विचार के बाड़न। ऊ रावण के लंका प हमला के ले के आखिरी रात में संशय में परि जात बाड़न। ऊ कहत बाड़न कि हमरा युद्ध कइ के सीता के जरूरत नइखे। युद्ध मानवता के पच्छ में कबो ना हो सकेला। ई केवनो समस्या के स्थायी समाधान ना हो सके। ऊ अंत में आपन परिषद के निर्णय मान के युद्ध खातिर तैयार होत बाड़न। परिषद में लछुमन, विभीषण, हनुमान आदि युद्ध के पच्छ में बा लोग। राम के मन अंतिम समय तक दुविधा में परल रहत बा। नरेश मेहता के एह कृति के सिरिजना भइल रहे दू-दू गो विश्व जुद्ध के बाद। ओह समय के प्रभाव एह कृति प सहजे लक्षित कइल जा सकत बा।

उपरोक्त परिचर्चा कवियन के कल्पना, काव्य विवेक से युगानुसार राम के बदलत नायकत्व के अवधारणा के एगो बानगी भर बा। राम आ रावण दूनों हमार समाज में महज पौराणिक कथा के पात्र के रूप में लोकप्रिय नइखन, बलुक प्रवृत्तियन के रूप में विद्यमान रहल बाड़न। राम अच्छाइयन के प्रतीक मानल जालें त रावण बुराइयन के। एगो नायक हवंन त एगो खलनायक हवंन। आजु के समकालीन समय में ई बात केवनो माने नइखे राखत कि राम कवियन के विवेक आ कल्पना से रचल-गढ़ल महानायक हवंन कि पौराणिक महानायक,कि वास्तविक आ ऐतिहासिक महानायक। राम भारत के समाज आ संस्कृति के रग-रग में, कन-कन में रचल आ बसल बाड़न। हर भारतीय भाषा के समर्थ कवि लोग आपन-आपन समय के सच्चाइयन के लिहाज से आपन-आपन राम के नया तरीका से गढ़े के कोशिश कइले बाड़न। एह दिसाई रामकथा के तुलनात्मक अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण हो सकेला।

परिचय- बक्सर, बिहार में जनमल आ एम.एल.के.पी.जी.कालेज, बलरामपुर में हिन्दी विभागाध्यक्ष अवरू प्रोफेसर के पद से सेवानिवृत्त भइला के बाद लखनऊ में रह के लेखन कार्य। अबतक हिन्दी-भोजपुरी में कविता आ स्मृति आख्यान के आठ गो पुस्तक प्रकाशित।

आवरण कथा

प्रेमशीला शुक्ल

लोक में राम

लोक में राम का छवि में जेतना घट-बढ़ भइल बा, सगुण रुप से जुड़ल बा। एहूमें जहां राम अवतारी पुरुष बाड़ें, उहों परम पूज्य बाड़ें। आदमी का कष्ट के निवारण करे वाला, पाप से उद्धार करे वाला बाड़ें। बाकी लोक राम के खाली एतने रूप में नइखे देखत। लोक मानेला कि जब राम शरीर धारण कइलें, आदमी बनलें तऽ ऊ आदमी के समानधर्मा भइलें। उनहूं का सुख दुख ओइसे भोगे के पड़ल जइसे कवनो आम आदमी भोगेला। इहे शरीर धरम हऽ, भोग हऽ।

ऋग्वेद में राम शब्द चार बेर आइल बा। ऋग्वेद में इक्ष्वाकु वंश के उल्लेख भी मिलेला लेकिन राम के चरित्र के प्रतिस्थापित करे वाला पहिलका काव्य 'वाल्मीकि रामायण' ह। महर्षि वाल्मीकि राम के महापुरुष मनले बाड़ें। 'वाल्मीकि रामायण' में एक जगह राम खातिर 'ब्रह्म' शब्द के प्रयोग भी भइल बा। मतलब, महर्षि वाल्मीकि के राम सगुण-निर्गुण दूनूं हवें। महर्षि बाल्मीकि परम ज्ञानी आ शास्त्रवेत्ता रहलें। 'वाल्मीकि रामायण' में राम का चरित्र निरूपण में पग-पग प ए रूप के झलक मिलेला। इहां ध्यान रखे के चाहीं कि एतना बड़हन

शास्त्रवेत्ता लव कुश के राम का दरबार में खड़ा कइलन। राम का दरबार में अकेले राम ना रहलन, दरबार भरल रहल, लोक उपस्थित रहल। भरल दरबार में लव कुश राम के गाथा गावल लोग। राजा का साथे-साथे मंत्री, दरबारी आ सामान्य जन सुनत रहे लव कुश के गावल गाथा। एह तरह से वाल्मीकि खाली काव्य में राम के चरित्र ना उकेरलें, ओके जन-जन तक पहुंचा दिहलें। तबे से राम लोक में भीनल बाड़ें-कबो कवनो रूप में, कबो कवनो रूप में। ई जरूर बा कि लोक के रुचि चिंतन प्रधान ना होला, एह से राम का सगुण रूप के चर्चा लोक में जादा भइल बा।

गुप्त काल में, जब अवतार के अवधारणा के जादा प्रचार-प्रसार भइल, राम के सगुण रूप जन-जन का मानस में उतर गइल। अवतार के अवधारणा के आधार रहल-धरती पर भगवान विष्णु के अवतरण। भिन्न-भिन्न समय में भिन्न-भिन्न रूप में शरीर धारण क के भगवान विष्णु पृथ्वी प भक्तन के रक्षा खातिर उतरलें। त्रेता युग में भगवान विष्णु राम का रूप में राजा दशरथ के बेटा बनके उतरलें। लोक नायक कवि गोस्वामी तुलसीदास राम का चरित्र में सौंदर्य, शक्ति आ शील के समन्वित छवि गढ़ी के लोकमन में रचा-बसा दिहलें। तुलसी के राम गृहस्थ जीवन के सगरो संबंध के आदर्श रूप हवें, राजा का रूप में राम प्रजा पालक हवें, लोक के चिंता करे वाला हवें। राम के ए छवि के निरूपण का साथे-साथ गोस्वामी तुलसीदास बेर-बेर कहेलें कि राम कवनो साधारण आदमी ना हवें, ऊ परम ब्रह्म हवें, धरती प उनुकर चरित्र लीला ह। समाज, संस्कृति, धर्म, दर्शन, भक्ति, काव्य-जइसन अनेक स्तर प महत्वपूर्ण प्रयोजन के सामने रखके गोस्वामी तुलसीदास 'रामचरितमानस' में राम के चरित्र निरूपण कइलें।

लोक के विशेषता ई बा कि जहां ऊ राम के अवतारी मनलस, उनकर पूजा कइलस आ जहां मनुष्य मनलस उहवाँ उनका आचरण में मीन-मेख निकलस। दूनूं में कहीं कवनो घालमेल ना कइलस। ए सबका बावजूद राम लोक में आदर्श रूप में प्रतिष्ठित बाड़ें। ओकरा राजा चाहीं तऽ राम अइसन, बेटा चाहीं तऽ राम अइसन, भाई चाहीं तऽ राम अइसन, पति चाहीं तऽ राम अइसन। राम लोक का रग-रग में बसल बाड़ें। बिना राम के लोक जीवन के बात सोचल ना जा सकेला।

गोस्वामी तुलसीदास के प्रभाव लोक पर बहुत अधिक पड़ल। उनुकर गढ़ल राम के छवि के लोक अपना हृदय में बसा लिहलस। उठत-बइठत, सूतत-जागत लोक का मुंह में राम बइठि गइलें। कथा-वार्ता से लेके गीत-गवनई तक राम का सगुण रूप के यशोगान होखे लागल। निर्गुण रूप के चर्चा कुछ भजन तक सीमित हो गइल। अइसन भजन निर्गुनिया भजन कहइलें। ये भजनन में जीवन आ संसार के छनभंगुरता के चरचा करत राम का निर्गुण रूप के आराधना करे के सीख दिहल गइल। जइसे नीचे वाला भजन में बा-

गुरु दिहलें सीख निरगुन राम जपेके।
ना रहिहें धरती, नाहीं असमनवां,
रही जइहें एके हो राम निरगुनवां। गुरु दिहलें सीख...
ना रहिहें देहियां, नाहीं परनवां,
रही जइहें एक हो राम निरगुनवां। गुरु दिहलें सीख...

सगुण रूप से जुड़ल अनेक भजन लोक जीवन में गावल जालें। ए भजनन में राम का कृपालु भक्त वत्सल रूप का वर्णन का साथे-साथे राम का जीवन के विविध प्रसंगन के वर्णन कइल बा। उदाहरण खातिर कुछ भजन लिखल जा सकेला-

भजु राम जी के नाम भइया रे, अति सुखदाई।
एगो उहे अइहे काम भइया रे, अति सुखदाई।
भगत बछल रूप अति सुनर,
ऊ तऽ हउवें छविधाम, भइया रे, अति सुखदाई।

अंगनवां में ढूंढी रहे दशरथ लाल।
कइसन राम कइसन बाबू लछुमन,
कइसन बाड़न भरत मुवाल। अंगनवां में ढूंढी रहे दशरथ लाल।

सांवर राम, गोर बाबू लछुमन,
गोरे-गोरे बाड़न भरत मुवाल। अंगनवां में ढूंढी रहे दशरथ लाल।

रोवती कोसिला रानी, राम बने जइहें हो।
आगे-आगे राम जइहें, पिछवों से सीता,
ताही पीछे लछुमन कुंवर जइहे हो।
रोवती कोसिला रानी।

अवध लागेला उदास, अब ना अवध मे रहब।

भजन का अलावा दूसरे तरह के गीतन में भी राम के जीवन के प्रसंग चित्रित भइल बा। राम के बिआह के वर्णन बिआह का गीत में खूब भइल बा-

राजा जनक जी गजब प्रण ठाने मेरो हरिवाले रे बरने।
मेरो हरि वाले रे बरने
अब सिवजी के धनुष मड़उवा ओरुन्धावे रे बरने।
जे इहे धनुष करिहें नव खंड मेरो हरि वाले रे बरने।
अब ऊहे जे सीता बिअहि लेइ जाई रे बरने।
उत्तर से दल साजि चलें हरि वाले रे बरने।
अब राम जी चले अगुवानी मेरो हरि वाले रे बरने।
तूरेलें धनुष करेलें नव खंड हरि वाले रे बरने।
अब सीता बिअहि लेईं जाई मेरो हरि वाले रे बरने।

साजी बरात चलेलें राजा दशरथ
गगन गरद उड़ि जाए।
आजु देखों कोसिला के गोद, रामचंद्र दूलहा बनें।

ऋतु गीतन में, खासकर कजरी आ फगुवा में राम अपना पूरा वैभव के साथे-

होरी खेलें रघुवीरा अवध में,
होरी खेलें रघुवीरा
केकरे हाथ कनक पिचकारी,
केकरे हाथ अबीरा।

अवध में होरी खेलें रघुवीरा...
राम के हाथ कनक पिचकारी,
लछुमन हाथ अबीरा।
अवध में होरी खेलें रघुवीरा ...

शास्त्र बतावेला कि कठिन तपस्या का बाद मनु शतरूपा राम के पुत्र का रूप में पवलें। तपस्या के उल्लेख एगो सोहर में देखल जाए-

मचिया ही बइठल कोसिला
रानी, सिंहासन राजा दशरथ हो,
रानी कवन-कवन तप कइलू रमइया पुत्र पावेलू।
भूखल रहनी एकादसी, दवादसी के पारन हो,
राजा बिधि से करिलें अवतार, रमइया पुत्र पाइलें।
पुतवा तऽ पवलों राजा रामचंद्र, पतोहिया सीतलि रानी हो,
राजा, नतिया के जोड़िया जो पवतों, अजोधिया लुटाइ दीतों।

रानी का नाती के जोड़ा मिलल बाकी जवने रूप में मिलल, ओमें अजोधिया लुटवले के कवनो अवसर ना रहे। इहे बहुत रहे कि सीता नाती भइला के खबर कोसिला रानी आ राजा दशरथ के भेजली। सोहर में गावल जाला-

सीता के राम उदबसलें तऽ गरुहे- गंभीर कई हो,
आरे सीता जे रोवेली बनहिं बीचे, बन पात झरि गइलें।
के मोरी आगे पाछे होइहें, बान्हल जुड़वा खोलिहन हो,
आरे के होइहें बन धगरिनिया बाबुल नार कटिहनि।
बन में से निकसे बन सपतिनि सीता समुझावाले हो,
सीता हम होइवों बन धगरिनिया बाबुल नार काटबि।
धरी रात बीतली, पहर राति अउरी पहर राति हो,
आरे आधे राती लव कुश जनमलें बनहिं उठे सोहर।

सोहर के एक-एक शब्द नगीना जड़ल बाड़ें। सोहर में सीता का दुख आ प्रकृति की सदाशयता के वर्णन बा। लेकिन एहू से ज्यादा सीता का आक्रोश, प्रतिशोध आ राम की आंतरिक पीड़ा के वर्णन बा। सीता का गर्भ के कारण बाड़ें राम (सीता के राम उदबसलें कि गहुर्वे गंभीर कई)। किंबदंती का अनुसार लोक (धोबी) का प्रतिवाद का कारण राम सीता के वनवास दिहलें। सीता राम का ए अन्याय का प्रतिशोध में नाऊ के मना क देताड़ी कि राम लव कुस का जनम के सूचना मत सुने पावस। प्रतिरोध के ई चरम बा। कवनो पुरुष के पुत्र जनम के बात ना बतावल जाए-एसे बड़हन प्रतिरोध ना हो सकेला। राम मुंहें-मुंहें लव-कुस का जनम के बात सुनलें। उनुका आंखि से आंसू गिरे लागल। ऊ आंसू खुसी के ना, अपना कइल के पछतावा के रहल।

रामचरित मानस में लव-कुस प्रसंग नइखे। लोक में महर्षि बाल्मीकि के परंपरा आगे बढ़ल बा आ ऊहो महर्षि के शास्त्रीय विधि से अलग स्वछन्द दंड-ढंग में। लोक के आपन गति-मति होला। कब, के ओकरा सिरे बइठी, कब कवना गलती पर उतार दीहल जाई-ई लोके जानेला। जवना लोक का प्रतिवाद के कारण राम सीता के बनवास दीहलें, ओही राम का सामने सीता के प्रतिरोधी का रूप में लोक खड़ा क दिहलस। लोक एतना तटस्थ होला।

लोक में राम का छवि में जेतना घट-बढ़ भइल बा, सगुण रुप से जुड़ल बा। एहूमें जहां राम अवतारी पुरुष बाड़ें, उहों परम पूज्य बाड़ें। आदमी का कष्ट के निवारण करे वाला, पाप से उद्धार करे वाला बाड़ें। बाकी लोक राम के खाली एतने रूप में नइखे देखत। लोक मानेला कि जब राम शरीर धारण कइलें, आदमी बनलें तऽ ऊ आदमी के समानधर्मा भइलें। उनहूं का सुख दुख ओइसे भोगे के पड़ल जइसे कवनो आम आदमी भोगेला। इहे शरीर धरम हऽ, भोग हऽ। फेर से एगो भजन देखल जाए-

धरू मन धीर, कबहूं ना सुख तन से।
दशरथ सुत, तिहूं लोक के राजा,
उन्हूका दुख भए सीता हरण से। धरू मन धीर...

इहां कहल जाता कि भले राम तीनू लोक के राजा (अवतारी पुरुष) होखस शरीर धारण कऽ के जब दशरथ सुत (साधारण आदमी) बनलें तऽ उनुका दुख झेले के पड़ल। लोक के विशेषता ई बा कि जहां ऊ राम के अवतारी मनलस, उनकर पूजा कइलस आ जहां मनुष्य मनलस उहवाँ उनका आचरण में मीन-मेख निकलस। दूनूं में कहीं कवनो घालमेल ना कइलस। ए सबका बावजूद राम लोक में आदर्श रूप में प्रतिष्ठित बाड़ें। ओकरा राजा चाहीं तऽ राम अइसन, बेटा चाहीं तऽ राम अइसन, भाई चाहीं तऽ राम अइसन, पति चाहीं तऽ राम अइसन। राम लोक का रग-रग में बसल बाड़ें। बिना राम के लोक जीवन के बात सोचल ना जा सकेला।

परिचय- प्रेमशीला शुक्ल। वरिष्ठ कथाकार आ निबंधकार। सेवा निवृत्त एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी, बी.आर. डी.पी.जी. कॉलेज देवरिया, उ.प्र।

आवरण कथा

मंजूश्री

राम नाम के महिमा

राम के 'करिअई' उनका यश से एतना दीप्त भइल कि गांव के कवनो कनिया से ओकरा 'वर' के करिया कह के देखीं- ऊ तमक के कही- भगवानो त करिये रहनीं। राम के कवनो रूप में देखीं बेटा-शिष्य-भाई-पति-राजा आ मित्र राम के अनुपम रूप में ही पायेब। इहां ले कि शत्रु रूप में भी देखीं- 'राम' जेकर-जेकर वध कइले सबके सब अपना के 'धन्य' महसूस कइले। केहू मरे के वक्त क्षुब्ध ना भइल। ऊ आपन मरण राम के हाथे ही चाहल, 'मरीं त राम के हाथें।' आ ई सब जब भावरूप में बदलल तब जे आदिकवि भइलें ऊ राम के हीं 'रूप', 'जय', 'यश', के गान कइलें रामायण महाकाव्य रचलन।

राम! दू अच्छर! ई दू अच्छर जवन कबो 'क्षय' ना होला आ ना कबो होई। ए रामे में राम बा, हमनी के भाषा में राम होला, आराम ना। आराम आयातित आ राम जद्दी। राम भोजपुरी के प्राण ह। हमनी के गिनती राम से शुरू होला-खलिहान यज्ञस्थल ह, जहां राशि तउलाला। रामे-राम, दूई राम दू, तीने राम तीन...। एही से हमरा बोध भइल कि हमनी के शुभारंभ 'राम' ह। ई राम नैनो कण से लघु आ ब्रह्मांड से व्यापक शब्द ह। एगो हरवाह हरवाही में हरिकीर्तन क के 'राम' पावेला आ त्रिलोक के कल्याण करेवाला 'हर' माने भगवान शिव ('राम-राम रामेति रमे रामे मनोरमे सहस्त्र नाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने।') गा के पार्वती जी के संगे राम पाइले। कहे के माने कि 'राम' के सिवा एह जगत में दूसर कुछो नइखे, जवना खातिर एगो हरवाह आ भगवान के शिव के आस्था एक बराबर होखे।

हमनी भोजपुरिअन के जीवन के प्राण राम हउवन। ई जनजीवन में कइसे बराइल-पूराईल-गुहाइल बाड़ें एकर एनालाइसिश नइखे हो सकत। परब्रह्म राम जब कौशिल्या के कोरा में अवतार लेहले तब सोहर गायिका गा उठली-

भल कइलु भल कइलु कौशिला
रानी सुतल अयोध्या जगवलु मुदईया निहसवलु।

आ ई बात समय पा के सांच भइल-देश धर्म के जे भी शत्रु भइल ओकर हिम्मत 'राम' के सामने टूट गइल। तब गांवा गाई के माई के एके गो लालसा भइल कि पुत्र होखि त राम जइसन। हर बाप के अरमान भइल कि अगर पहचान बने त राजा दशरथ के जइसन जे राम के नाम से जानल जाले। राम के 'करिअई' उनका यश से एतना दीप्त भइल कि गांव के कवनो कनिया से ओकरा 'वर' के करिया कह के देखीं-ऊ तमक के कही-भगवानो त करिये रहनीं। राम के कवनो रूप में देखीं बेटा-शिष्य-भाई-पति-राजा आ मित्र राम के अनुपम रूप में ही पायेब। इहां ले कि शत्रु रूप में भी देखीं-'राम' जेकर-जेकर वध कइले सबके सब अपना के 'धन्य' महसूस कइले। केहू मरे के वक्त क्षुब्ध ना भइल। ऊ आपन मरण राम के हाथे ही चाहल, 'मरीं त राम के हाथें।' आ ई सब जब भावरूप में बदलल तब जे आदिकवि भइलें ऊ राम के हीं 'रूप', 'जय', 'यश', के गान कइलें आ रामायण महाकाव्य रचलन।

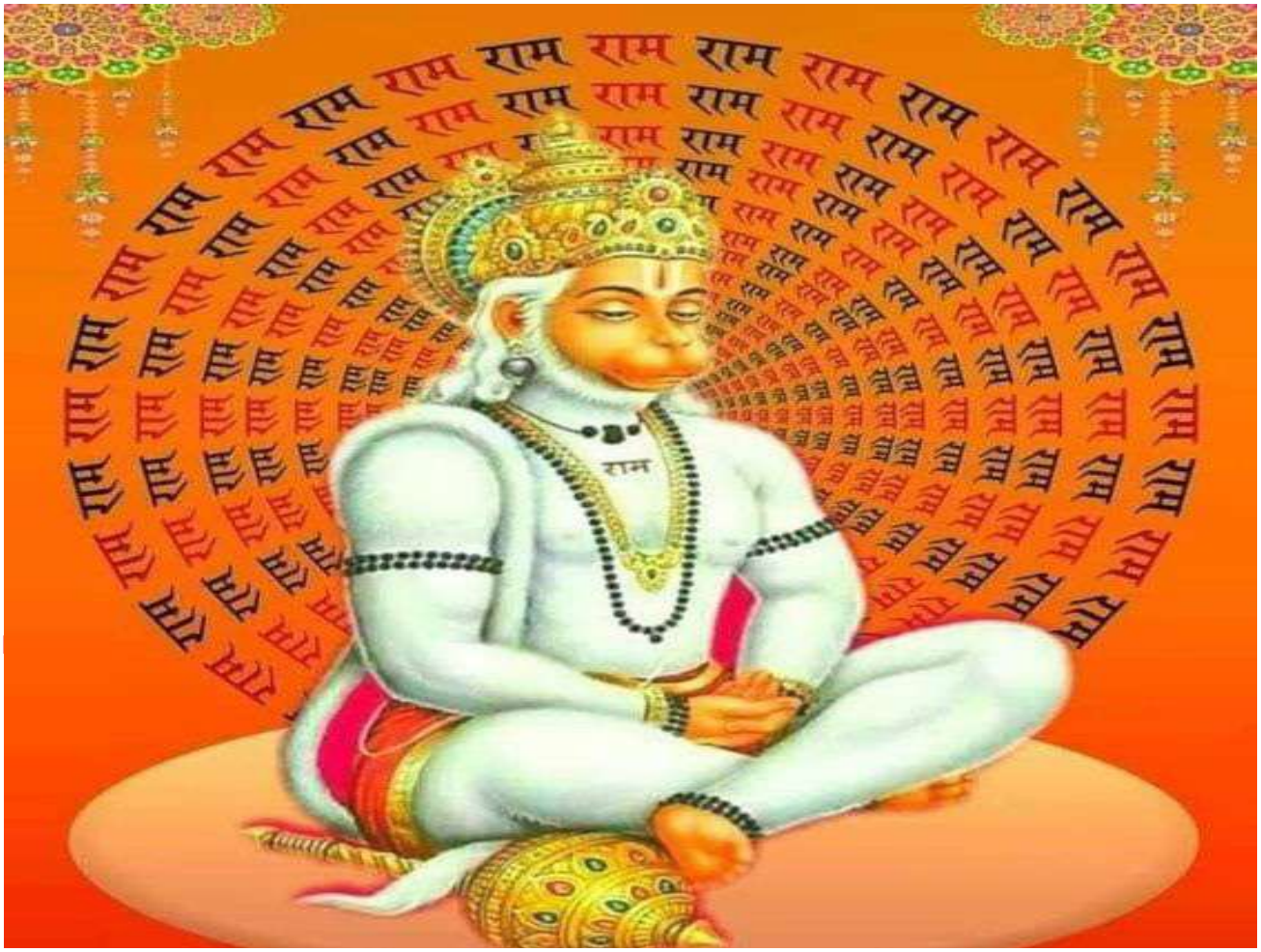

अब आज के समय में अइसन कवनो विधा नइखे, कवनो शिल्प नइखे जवना में राम ना होखस। इहां ले कि 'खरह बरुआ' से दउरी बीने वाली पूरा दउरी में राम-राम बीन देली। अपना देश के सब भाषा-सब साहित्य रामकथा से आपन श्रृंगार कइले बा। चाहे 'कंब्बन' होखस, चाहे बाबा तुलसीदास। राम महिमा से सभे ओत-प्रोत भइल बा। इहां ले कि बदनाम विधा सिनेमा भी एह होड़ में आगे-आगे बा। सिने जगत के एगो समय रहे जब राम आधारित बहुत फिल्म बनल आ ऊ खूब चलबो कइल। एगो स्टंट फिल्म बनावे वाला व्यक्ति-रामानंद सागर-'रामायण' सीरियल बना के आपन नाम सार्थक क लेहले। ई 'राम' शब्द मात्र के ही महिमा ह। जे केहू भी अपना कलम से राम नाम के रौशनाई भरल ऊ जरूर रौशन भइल आ जब ऊ राम लिखल त अपने आप सुन्दर लिखाइल। ऊ चाहे चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य होखस, चाहे नरेन्द्र कोहली ए लोग के राम में राम मिलल।

कवनो समाज-साहित्य से फुहरई ओरवावे के होखे त ओ में राम लिखे-पढ़े के शुरू क दीं। जरूर सौम्यता, सुघड़ता आ स्वच्छता आई। गांधी जी एगो अति साधारण बच्चा रहले बाकिर रामनाम जप के महात्मा बन गइलें। अइसन बहुत उदाहरण बा जेकर जटिल-जटिल उलझन 'राम' से सुलझल बा। समय के संगे-संगे एकर परिशीलन होत रहे के चाहीं जवना से एकर प्रवाह बनल रहो। 'रत्नाकर' 'बाल्मीक' तबे बनीहें-जब राम के विलोम अनुलोम करीहें। अगर आज के पारिवारिक जीवन में के ही लिहल जाव त बड़ भाई के अंदर से 'पितृत्व' चूक गइल बा आ छोट भाई के आस्था 'रित' गइल बा। रावण जहिया विभिषण के लाते मरलस तहिये-'विभवहीन हुआ अभागा।'

एह बात के कम से कम सुन्दरकांड के पाठ करे वाला ही समझ जाइत त घर-परिवार बहुत से विसंगति से बांच जाइत। बाकिर रामायण पाठ चाहे प्रवचन व्यापार बन गइल बा, जवना वजह से लोग टाइम-पास त करता बाकिर जीवन में उतारत नइखे।

एमे एगो बड़हन वजह इहो बा कि राम नाम के 'राजनीतिक झाल' त खूब बाजता बाकिर ओकरा के शुद्धरुप से अपना जीवन में उतारल बंद बा। अगर हमनी के अपना देश जाति से प्रेम बा एह पर गर्व बा आ संसार में स्वाभिमान से जीये के बा, त राम के 'परिशीलन' जरूर करे के चाहीं आ क्षेपक से बचे के चाहीं।

परिचय-मंजूश्री। बरौली, गोपालगंज, बिहार के हिन्दी-भोजपुरी के वरिष्ठ लेखिका।

डॉ. ज्योत्स्ना प्रसाद

जब-जब होई धरम की हानि

भगवान विष्णु के दशावतार मानल जाला। जवना में भगवान विष्णु समय-समय पर परिस्थिति के अनुरूप मनुष्य ही ना बल्कि मनुष्येतर प्राणी के रूप में भी अवतार लेलें। उनका एह अवतारन में से प्रसिद्ध पाँच अवतारन पर क्रमशः 'मत्स्य पुराण', 'कूर्म पुराण', 'वाराह पुराण', 'वामन पुराण' आ 'नृसिंह पुराण' लिखल गइल बा। एह सब पुराणन में 'नृसिंह पुराण' उप-पुराण के श्रेणी में आवेला जबकि अन्य चारों पुराण महापुराण मानल जाला। शेष अवतारन में भगवान परशुराम आ श्रीराम के विषय में अलग से कवनों पुराण नइखे। काहेकि एह लोगन के लीला के वर्णन 'वाल्मीकि रामायण' आ 'महाभारत' में विशेष रूप से कइल गइल बा। श्रीकृष्ण आ बलराम के वर्णन 'महाभारत' के साथ ही 'भागवत' आ 'हरिवंश पुराण' में भी कइल गइल बा। भगवान विष्णु के अंतिम अवतार के कल्कि अवतार के नाम से जानल जाला। कल्कि अवतार भगवान विष्णु के अभी भइल नइखे, लेकिन भविष्य में होखे वाला बा।

एह धरती पर जब-जब धर्म के हानि होला, अधर्म के वृद्धि होला, आसुरी प्रवृत्ति के लोग साधु-सज्जन के प्रताड़ित करेला, तब-तब ईश्वर धर्म के प्रचार-प्रसार करे खातिर, साधु-सज्जन के सहारा देबे खातिर आ आसुरी प्रवृत्ति के नाश करे खातिर आपन रूप के रचे लें, अर्थात साकार रूप धारण करेलें। तुलसीदास एही बात के 'रामचरित मानस' में एह तरह से कहतारन-

"जब-जब होई धरम की हानि,
बारहिं असुर अधम अभिमानी।
तब-तब धर प्रभु विविध सरीरा,
हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।।"

'श्रीमद्भगवद्गीता' में भगवान श्रीकृष्ण भी एही बात के एह तरह से कहतारन कि जब-जब धर्म के हानि होला तब-तब अपना साकार रूप से लोगन के रक्षा करे खातिर हम आइले, दुष्टन के विनाश करे खातिर हम आइले। धर्म के स्थापना करे खातिर हम आइले आ युग-युग में आइले-

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम।।"

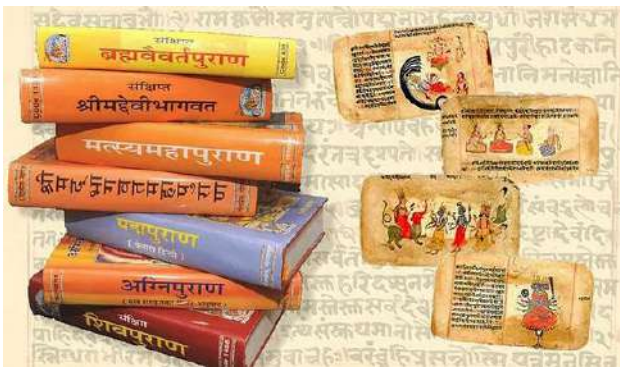

भगवान विष्णु के दशावतार मानल जाला। जवना में भगवान विष्णु समय-समय पर परिस्थिति के अनुरूप मनुष्य ही ना बल्कि मनुष्येतर प्राणी के रूप में भी अवतार लेलें। उनका एह अवतारन में से प्रसिद्ध पाँच अवतारन पर क्रमशः 'मत्स्य पुराण', 'कूर्म पुराण', 'वाराह पुराण', 'वामन पुराण' आ 'नृसिंह पुराण' लिखल गइल बा। एह सब पुराणन में 'नृसिंह पुराण' उप-पुराण के श्रेणी में आवेला जबकि अन्य चारों पुराण महापुराण मानल जाला। शेष अवतारन में भगवान परशुराम आ श्रीराम के विषय में अलग से कवनों पुराण नइखे। काहेकि एह लोगन के लीला के वर्णन 'वाल्मीकि रामायण' आ 'महाभारत' में विशेष रूप से कइल गइल बा। श्रीकृष्ण आ बलराम के वर्णन 'महाभारत' के साथ ही 'भागवत' आ 'हरिवंश पुराण' में भी कइल गइल बा। भगवान विष्णु के अंतिम अवतार के कल्कि अवतार के नाम से जानल जाला। कल्कि अवतार भगवान विष्णु के अभी भइल नइखे, लेकिन भविष्य में होखे वाला बा।

जवन घटना अभी घटित नइखे भइल, ओह घटना पर भी सनातन धर्म में चर्चा कइल गइल बा। एह अवतार पर विस्तृत चर्चा 'भविष्य पुराण' आ 'कल्कि उप-पुराण' में भइल बा।

हालाँकि भगवान विष्णु के दशावतार के कल्पना मात्र से ही हमनी के रोमांचित हो जानीं। बाकिर भगवान विष्णु के सब अवतारन में रामावतार आ कृष्णावतार पर विशेष रूप से चर्चा भइल बा। एह से भगवान विष्णुजी के ई दुनु अवतारन के उनका अन्य अवतारन से अधिक प्रसिद्धि भी मिलल बा। एह दुनु अवतार के प्रसिद्धि के सबसे प्रमुख कारण ई बा कि **मर्यादा** पुरुषोत्तम श्रीराम आ श्रीकृष्ण के जीवन-संघर्ष एक साधारण मानव के जीवन-संघर्ष ही रहे। एह से एह दुनु लोगन के जीवन-चरित्र मानवीय संवेदना के बहुत निकट लागेला। साथ ही हमनी के आस्था आ संस्कृति से जुड़ल दुगो प्रमुख आ बड़ा ग्रंथ- 'रामायण' आ 'महाभारत' (श्रीमद्भगवद्गीता समेत) के कथा भी एक तरह से एही लोगन के इर्द-गिर्द घूमेला।

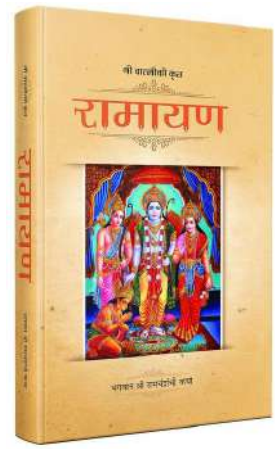

'रामायण' श्रीराम के जीवन पर केन्द्रित एगो ग्रंथ ह। जवना में रामायण शब्द दू शब्दन के सन्धि (राम+अयन = रामायण) से बनल बा। जवना के शाब्दिक अर्थ होला- 'राम के यात्रा' अर्थात राम के जीवन-यात्रा।

'श्रीमद्भगवद्गीता' 'महाभारत' के अन्तर्गत ही आवेला। जब अर्जुन रण-भूमि में युद्ध करे से मना कर देहलें, तब भगवान श्रीकृष्ण, जे समरभूमि में उनकर सारथी भी रहलें। ऊ अर्जुन के गीता के उपदेश देत उनका के जीवन-मरण के रहस्य समझवलें आ आपन कर्म करे खातिर उनका के प्रेरित कइलें। जवना के परिणाम स्वरुप पार्थ युद्ध खातिर तैयार हो गइलें। गीता-ज्ञान के कारण ही 'श्रीमद्भगवद्गीता' के प्रसिद्धि 'रामायण' से तनिको कम नइखे।

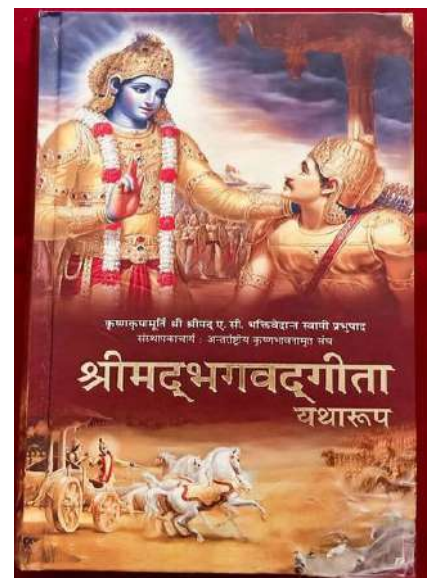

मानल ई जाला कि श्री राम पर चर्चा सबसे पहिले महर्षि वाल्मीकि के 'रामायण' में भइल बा। बाकिर ई बात सत्य ना ह। कारण ई बा कि राम पर चर्चा सबसे पहिले 'रामायण' में नइखे भइल। काहेकि वैदिक ऋचा में भी 'राम' आ 'सीता' शब्द देखे के मिलेला। ऋग्वेद में 'राम' शब्द दू जगह आइल बा। बाकिर ई स्पष्ट नइखे हो पावत कि ऊ दाशरथी राम हउअन कि ना? काहेकि ऋग्वेद में राम नाम के एगो प्रतापी आ धर्मात्मा राजा के उल्लेख बा। ऋग्वेद में राम ही ना सीता के भी उल्लेख बा। हालाँकि 'सीता' कृषि-देवी के रूप में

उहाँ विराजमान बाड़ी। एह से उत्तम कृषि-उत्पादन खातिर आ भूमि-दोहन खातिर उनकर स्तुति कइल गइल बा। ऋग्वेद के 10वाँ मंडल में एगो सूक्त मिलेला जवना के कृषि के देवता लोगन खातिर ही लिखल गइल बा। जवना में कृषि खातिर देवता लोगन से स्तुति कइल गइल बा। एह स्तुति में वायु, इंद्र के साथे सीता के भी स्तुति कइल गइल बा। एकरा साथ ही काठक ग्राह्यसूत्र में भी उत्तम कृषि खातिर यज्ञ विधि देहल गइल बा। जवना में सीता के नाम के उल्लेख भर ही नइखे बल्कि एह में इहो विधान बतावल गइल बा कि खस आदि सुगन्धित घास से सीता देवी के मूर्ति यज्ञ खातिर बनावल जाला।

लोक में ई बात प्रचलित बा कि श्रीराम पर लिखल पहिला ग्रंथ वाल्मीकि कृत 'रामायण' ह। बाकिर ई वास्तविकता ना ह। काहेकि वाल्मीकि से 100 साल पहिले ई अपना बीज रूप में 'दशरथ जातक कथा' में भी मिलेला। जे संभवतः 400 वर्ष ईस्वी पूर्व लिखल गइल रहे। जबकि मानल ई जाला कि 300 वर्ष ईस्वी पूर्व 'वाल्मीकि रामायण' के समय ह। हालाँकि 'वाल्मीकि रामायण' ही सबसे अधिक प्रामाणिक ग्रंथ मानल जाला। काहेकि वाल्मीकि भगवान राम के समकालीन रहलें आ राम द्वारा अपना गर्भवती पत्नी सीता के परित्याग कइला पर उनके आश्रम में सीताजी के शरण मिलल रहे। ओह आश्रम में सीताजी उनका पुत्रीतुल्य रहली आ अपना जुड़वा बच्चन के जन्म भी देहली।

हमनी के अपना संस्कृति में पहिले केहू के अभिवादन करे खातिर प्रणाम चाहे 'राम-राम' कहे के प्रचलन रहल ह। आधुनिकता के चकाचौंध में ई परम्परा हमनी के पाश्चात्य संस्कृति के ओर झुकाव भइला के कारण लगभग विलुप्त हो गइल बा। बाकिर संयोग से गाँव में कहीं-कहीं ई परम्परा अभी भी जीवित बा। आश्चर्य ई बा कि कबो हमनीं के एकरा तह में जाये के कोशिश ना कइनीं कि अपना अभिवादन में हमनी काहे रामजी के नाम दू बेरा लेनी। एक बेरा नाम लेहला से का काम ना चली? वास्तविकता त ई बा कि अपना इहाँ 108 के पूर्ण ब्रह्म के द्योतक मानल जाला। एही से जपे वाला माला के मनका भी 108 ही रहेला। एही से जब हम केहू से 'राम-राम' कहेनी त ऊ पूर्ण ब्रह्म के द्योतक हो जाला। काहेकि हिन्दी वर्णमाला में 'र' 27 वाँ अक्षर ह। 'आ' के मात्रा दूसरा ह। साथ ही 'म' वर्णमाला के 25 वाँ अक्षर ह। एह से एह सबके योग- 27+2+25= 54 भइल। एही से जब हम केहू के 'राम-राम' कहेनी त ऊ- 54+54= 108 हो जाला, जे पूर्ण ब्रह्म के द्योतक ह।

भगवान विष्णु के सब अवतारन में रामावतार आ कृष्णावतार पर विशेष रूप से चर्चा भइल बा। एह से भगवान विष्णुजी के ई दुनु अवतारन के उनका अन्य अवतारन से अधिक प्रसिद्धि भी मिलल बा। एह दुनु अवतार के प्रसिद्धि के सबसे प्रमुख कारण ई बा कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम आ श्रीकृष्ण के जीवन-संघर्ष एक साधारण मानव के जीवन-संघर्ष ही रहे। एह से एह दुनु लोगन के जीवन-चरित्र मानवीय संवेदना के बहुत निकट लागेला।

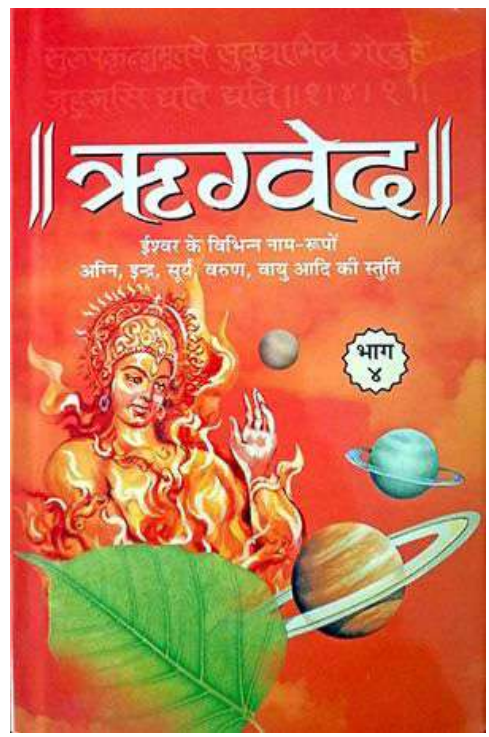

गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार श्रीराम नाम के दुनु अक्षरन में- 'रा' आ 'म' ताली के आवाज के तरह बा, जे आवाज हमनी के संदेह के पंच्छिअन के हमनी से दूर ले जाले। ई हमनी के देवत्व के शक्तियन के प्रति विश्वास से ओत-प्रोत क देले। जबकि पूर्व तापिन्युपनिषद में कहल गइल बा कि वेदांत वैद्य जवना अनन्त सच्चिदानन्द तत्त्व में योगिवृंद रमण करेलें, ओही के परम ब्रह्म श्रीराम कहल जाला-

**"रमन्ते योगिनो अनन्ते नित्यानंदे चिदात्मनि।
इति रामपदेनासौ परंब्रह्मभिधीयते।"**

श्रीराम के जीवन-कथा सनातनी घर के बच्चा-बच्चा जानता। त्रेता युग में अयोध्या के राजा दशरथ पुत्र प्राप्ति के कामना से गुरु वशिष्ठ के परामर्श पर श्रृंगी ऋषि से पुत्रकामेष्टि यज्ञ करववलन। जवना के फलस्वरूप उनका चार पुत्ररत्न के प्राप्ति भइल। जवना में कौशल्या से रामजी, सुमित्रा से लक्ष्मणजी आ शत्रुघ्नजी, कैकेयी से भरतजी भइले। रामजी के जन्म राजा दशरथ के जेष्ठ पुत्र के रूप में चैत्र मास के नवमी तिथि के भइल रहे, जे आज रामनवमी के नाम से प्रसिद्ध बा। रामजी आ लक्ष्मणजी के गुरुकुल से पढ़ के लौटला के बाद ओह दुनु भाई के दशरथजी से विश्वामित्रजी साधु-संत आ यज्ञ के सुरक्षा खातिर माँग के ले गइलें।

मिथिला के धनुष-यज्ञ में विश्वामित्र जी के राजा जनक के ओर से निमंत्रण आइल रहे। एह से ऊ अपना साथे एह दुनु भाई के भी जनकपुर ले गइलें। राजा जनक अपना कन्या जानकी खातिर ई घोषणा कइले रहलें कि जे शिव-धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ा दी, ओकरे साथे ऊ अपना कन्या के पाणिग्रहण करीहें। बाकिर जवना शिव-धनुष के जनक सुता द्वारा नित्य अपना एक हाथ से उठाके दोसरा हाथ से पूजा-स्थल के साफ-सफाई कइल जात रहे। ऊ धनुष सीता-स्वयंवर में उपस्थित रावण सहित तमाम पराक्रमी लोगन से टस से मस ना हो सकल। बाकिर दोसरा ओर उहे शिव-धनुष श्रीराम के स्पर्श मात्र से, दू खण्ड में टूट गइल। एह तरह से विदेह के कन्या बैदेही श्रीराम के वधू आ राजा दशरथ के पुत्र-वधू बनके अयोध्या आ गइली। रामजी के विवाह के साथ ही उनका तीनों भाइयन के सीताजी के तीनों बहिनन के साथे विवाह हो गइल। भरत के माण्डवी से, लक्ष्मण के उर्मिला से आ शत्रुघ्न के श्रुतिकीर्ति से। एह तरह से राजा दशरथ के चारो पुत्रन के विवाह एके साथे हो गइल।

राजा दशरथ अपना जेष्ठ पुत्र श्रीराम के राजा बनावे के चाहत रहलें। एह से ऊ एह बात के घोषणा क देहलें। रानी कैकेयी के ई बात नागवार गुजरल। काहेकि ऊ अपना पुत्र भरत के राजा बनावे के चाहत रहली। एह से ऊ पहिले से वचनबद्ध राजा दशरथ से आपन दुगो वरदान माँग लेहली। जवना में एगो में अपना पुत्र खातिर राजगद्दी मँगली आ दूसरा में रामजी खातिर चौदह बरिस के वनवास। "रघुकुल रीति सदा चली आई, प्राण जाय पर वचन न जाई" के स्मरण करत आ अपना वचन से बँधल राजा दशरथ चाह के भी कैकेयी से कुछ कह ना सकले आ रामजी अपना पत्नी सीता आ छोट भाई लक्ष्मण के साथे वल्कन वस्त्र में वन-गमन खातिर अयोध्या से निकल गइलें।

रामजी अपना वनवास के ग्यारह-साढ़े ग्यारह बरिस के समय चित्रकूट में ही बितवलें। जहाँ ऊ एगो कुटिया बनाके रहत रहलें। भरतजी जब अपना ननिहाल से लौटलें तब उनका अयोध्या के घटना के ठीक-ठीक जानकारी भइल। एह से ऊ रामजी के ससम्मान अयोध्या वापस ले आवे खातिर अपना गुरु, परिवार जन आ अयोध्या के सैनिकन के एक टुकड़ी के साथे चित्रकूट अइलें। इहवें रामजी से अपना भाई भरत से भेंट भइल। भरतजी रामजी से राजा दशरथ के देहावसान के समाचार देहलें आ उनका से आग्रह कइलें कि ऊ अयोध्या वापस चलस। रामजी अपना पिता के मृत्यु से बहुत दुःखी भइलें। बाकिर वचनबद्ध रहलें। एह से वापस लौटला में आपन असमर्थता जतवलन। तब भरतजी रामजी के चरण पादुका लेके अयोध्या वापस लौट गइलें।

लोक में ई बात प्रचलित बा कि श्रीराम पर लिखल पहिला ग्रंथ वाल्मीकि कृत 'रामायण' ह। बाकिर ई वास्तविकता ना ह। काहेकि वाल्मीकि से 100 साल पहिले ई अपना बीज रूप में 'दशरथ जातक कथा' में भी मिलेला। जे संभवतः 400 वर्ष ईस्वी पूर्व लिखल गइल रहे। जबकि मानल ई जाला कि 300 वर्ष ईस्वी पूर्व 'वाल्मीकि रामायण' के समय ह। हालाँकि 'वाल्मीकि रामायण' ही सबसे अधिक प्रामाणिक ग्रंथ मानल जाला। काहेकि वाल्मीकि भगवान राम के समकालीन रहलें आ राम द्वारा अपना गर्भवती पत्नी सीता के परित्याग कइला पर उनके आश्रम में सीताजी के शरण मिलल रहे। ओह आश्रम में सीताजी उनका पुत्रीतुल्य रहली आ अपना जुड़वा बच्चन के जन्म भी देहली।

चित्रकूट के बाद ई लोग पंचवटी आ गइल। पंचवटी में ही लक्ष्मण द्वारा सूर्पनखा के नाक काटल गइल। जवना स्थान पर ई घटना घटल ऊ स्थान आज नासिक के नाम से जानल जाला।

सूर्पनखा अपना अपमान के बदला लेबे खातिर खर आ दूषण नाम के दुगो बलशाली भाइयन के भेजली। ई खर-दूषण नाम के दुगो राक्षस रहलें जे रावण के सौतेला भाई रहलें आ दण्डक वन में रहत रहलें। भगवान राम द्वारा जब एह दुनु भाइयन के वध हो गइल, तब सूर्पनखा अपना तीसर भाई रावण के सीताजी के सौंदर्य के वर्णन से उकसवली। रावण अपना बहिन के अपमान के बदला लेबे खातिर छल से सीता जी के हरण क लेहलस।

रावण अपना पुष्पक विमान से सीता के हरण करके ले जात रहे। जटायु रावण के रोके आ सीताजी के बचावे के बहुत प्रयास कइलन। रावण आ जटायु में लड़ाई भइल। बाकिर अंत में जटायु के हार हो गइल। रावण सीताजी के लंका के अशोक वाटिका में बंदी बनाके रखलस। अशोक वाटिका के कारा से सीता जी के मुक्त करावे खातिर राम-रावण के बीच भीषण युद्ध भइल। जवना में राम द्वारा रावण के वध करके सीता के मुक्त करावल गइल। ओकरा बाद अयोध्या में रामजी के साथे सीताजी के आगमन भइल।

श्री राम के वन गमन के साथ ही उनका व्यक्तित्व में विस्तार भी देखे के मिलेला। हालाँकि ऊ अपना बचपन से ही विनयशील आ तीव्र बुद्धि के रहलें। गोस्वामी तुलसीदास लिखतारें-

"गुरुगृह गए रघुराई, अल्पकाल विद्या सब आई।"

भगवान राम के जवना उद्देश्य खातिर अवतार भइल रहे, ओह उद्देश्य के पूर्ति उनका वन-गमन के साथ ही पूरा हो सकत रहे। जइसन कि हमनी के जानतानी कि पृथ्वी पर उनकर जन्म जग के कल्याण खातिर ही भइल रहे। उनकर मानव रूप में जीवन के मुख्य उद्देश्य रावण जइसन अत्यचारियन के अंत करके एह धरती पर धर्म आ शान्ति के स्थापना कइल रहे। रामजी करुणा, त्याग आ समर्पण के प्रतिपूर्ति रहलें। उनकर जीवन संपूर्ण विश्व में धैर्य आ **मर्यादा** के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करेला। एही से गोस्वामी जी कहतारन-

"राम जनम के हेतु अनेका परम विचित्र एक तें एका।"

चूँकि श्रीराम सूर्यवंशी रहलन आ सूर्य के बारह आ चन्द्र के सोलह कला के मानल जाला। एह से श्रीराम बारह कला के अवतार रहलें जबकि चन्द्रवंशी श्रीकृष्ण सोलह कला के अवतार रहलें। रामजी के व्यक्तित्व निम्नलिखित सोलह गुण से सम्पन्न मानल जाला- 1- गुणवान 2- केहू के निंदा ना करे वाला 3- धर्मज्ञ 4- कृतज्ञ 5- सत्यवादी 6- दृढ़प्रतिज्ञ 7- सदाचारी 8- सब जीव के रक्षक 9- विद्वान 10- सामर्थ्यशाली 11- प्रिय दर्शन 12- जितेन्द्रिय 13- क्रोध पर विजय पावे वाला 14- कांतिमान 15- वीर्यवान 16- युद्ध में क्रोधित भइला पर जेकरा से देवता लोग भी डरें। हालाँकि वाल्मीकि 'रामायण' में रामजी के एकरा अलावें एगो अउर गुण बतावल गइल बा। एह से उनकर कुल मिलाके सत्रह गुण हो गइल। रामजी के व्यक्तित्व के ई सब गुण चेतना के सर्वोत्तम स्तर मानल जाला। एह से एकरा के पुरुषन के उत्तम गुण मानल जाला। अपना एही सब गुणन के कारण रामजी मयार्दा पुरुषोत्तम कहल जालें।

रामगाथा दुनिया भर में बहुत प्रसिद्ध बा। इहाँ तक कि दुनिया के अलग-अलग हिस्सा में 300 से ज्यादा रामकथा प्रचलित बा। एकरा साथ ही 2 से 3 हजार ले लोककथा भी राम जी से जुड़ल मिलेला। भारत के अलावें दुनिया के 9 देशन में रामकथा कवनों ना कवनों रूप में देखल भा गावल जाला। बेल्जियम के मिशनरी प्रोफेसर कामिल बुल्के, जे अपना डिक्शनरी खातिर प्रसिद्ध बाड़ें, ऊ रामकथा पर गहन शोध आ विश्लेषण कइले बाड़ें।

रामकथा पर प्रकाशित उनकर पुस्तक के नाम ह- 'रामकथा : उत्पत्ति और विकास'। हालाँकि रामकथा के कई लोग अपना तरह से लिखे के कोशिश कइले बा, लेकिन तुलसीदास रचित 'रामचरित मानस' ही सबसे अधिक प्रचलित बा आ हिन्दू घरन में एकर नियमित पाठ होला। बाकिर मूलकथा वाल्मीकि कृत 'रामायण' के ही मानल जाला। प्रोफेसर बुल्के अपना पुस्तक 'रामकथाः उत्पत्ति और विकास' में अलग-अलग रामकथा में वर्णित कुछ रोचक तथ्यन के संकलन कइले बाड़ें। उनकर कहनाम बा कि आमतौर पर ई मानल जाला कि 'वाल्मीकि रामायण' ही राम पर रचित पहिला ग्रंथ ह। बाकिर वेद में भी राम के उल्लेख बा।

जइसन कि हमनी के जानतानी कि रामजी के जीवन-चरित्र पर कई लोग कई भाषा में अपना-अपना तरह से लिखले बा। जवना में मौलिक कथा एक भइला पर भी कथा के शैली में ही ना बल्कि कई प्रसंग के चित्रण में भी बहुत अधिक भिन्नता देखे के मिलेला। हर रामायण में हनुमान जी के लंका जाके सीताजी से मिलल, उनका द्वारा अशोक वाटिका के उजाड़ल, लंका दहन के प्रसंग बा। बाकिर प्रसंग के चित्रण में अन्तर बा। 14 वीं शताब्दी में लिखल 'आनन्द रामायण' में उल्लेख बा कि अशोक वाटिका में सीताजी से मिलला के बाद हनुमान जी के भूख लागल त सीताजी अपना हाथ में से आपन कंगन उतार के हनुमान जी के देहली कि ओकरा के बेच के फल खरीद के ऊ आपन भूख मिटा लेस। सीता जी के लगे दुगो आमों रहे जे ओही वाटिका के रहे। ओकरा के भी सीता जी हनुमान जी के भूख मिटावे खातिर उनका के दे देहली। ऊ आम हनुमान जी के बहुत स्वादिष्ट लागल। एह से ऊ कहलें कि ऊ एही वाटिका से फल लेके खइहें।

'रंगनाथ रामायण' के अनुसार लंकापति रावण के भाई विभीषण खातिर हनुमानजी बालूरेत के लंका बनववलन।

'सेरीराम रामायण' समेत कई रामायणन में एगो प्रसंग मिलेला जवना में ई लिखल बा कि विभीषण से क्रोधित रावण उनका के समुद्र में फेंकवा देहलें। ऊ एगो मगरमच्छ के पीठ पर चढ़ गइलें। बाद में हनुमान जी विभीषण के बचवलें आ उनका के रामजी से मिलववलें। विभीषण के साथे रावण के एगो अउर भाई इंद्रजीत आ एगो बेटा चैत्रकुमार भी रामजी के शरण में आ गइल रहलें। रामजी युद्ध से पहिले ही विभीषण के लंका के राजा घोषित क देहलें। 'रंगनाथ रामायण' में ओही प्रसंग में एह तरह से जिक्र बा कि विभीषण के राज्याभिषेक खातिर हनुमानजी बालूरेत के लंका बनवलें, जवना के 'हनुमत्लंका' (सिकतोद्भव लंका) के नाम से भी जानल जाला। महर्षि वाल्मीकि के आदिकवि कहल जाला आ इनका द्वारा रचित श्री राम के गाथा 'रामायण' के 'आदिकाव्य'।

हमनी के अपना संस्कृति में पहिले केहू के अभिवादन करे खातिर प्रणाम चाहे 'राम-राम' कहे के प्रचलन रहल ह। आश्चर्य ई बा कि कबो हमनीं के एकरा तह में जाये के कोशिश ना कइनीं कि अपना अभिवादन में हमनी काहे रामजी के नाम दू बेरा लेनी। एक बेरा नाम लेहला से का काम ना चली? वास्तविकता त ई बा कि अपना इहाँ 108 के पूर्ण ब्रह्म के द्योतक मानल जाला। एही से जपे वाला माला के मनका भी 108 ही रहेला। एही से जब हम केहू से 'राम-राम' कहेनी त ऊ पूर्ण ब्रह्म के द्योतक हो जाला। काहेकि हिन्दी वर्णमाला में 'र' 27 वाँ अक्षर ह। 'आ' के मात्रा दूसरा ह। साथ ही 'म' वर्णमाला के 25 वाँ अक्षर ह। एह से एह सबके योग- 27+2+25= 54 भइल। एही से जब हम केहू के 'राम-राम' कहेनी त ऊ- 54+54= 108 हो जाला, जे पूर्ण ब्रह्म के द्योतक ह।

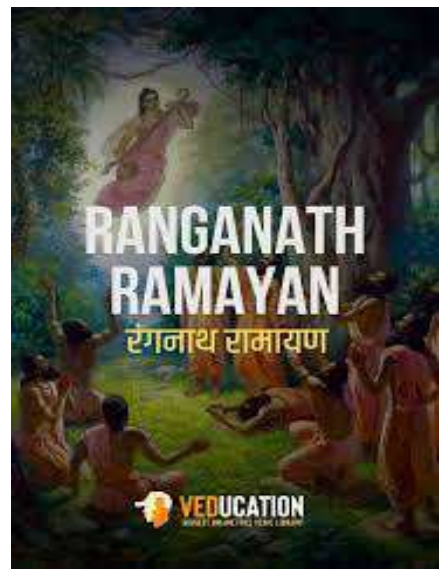

सनातन संस्कृति के प्रसिद्ध ग्रंथ 'रामायण' में सातगो अध्याय बा। जवना के 'काण्ड' के नाम से जानल जाला। मानल ई जाला कि एह ग्रंथ में कुल 24,000 श्लोक बा। एह ग्रंथ के सातवाँ काण्ड 'उत्तरकाण्ड' ह। एह ग्रंथ के एह अंतिम काण्ड के प्रक्षिप्त भी मानल जाला। संस्कृत साहित्य आ अन्य भारतीय भाषा पर एकर बहुत अधिक प्रभाव पड़ल बा। इहाँ तक कि देश-विदेश में रामकथा के लेके अनेक रामायण रचल गइल बा।

महर्षि वाल्मीकि के 'रामायण' से बहुत लोग बहुत प्रभावित भइल। एह 'रामायण' के अध्ययन से महर्षि व्यास एतना प्रभावित भइलें कि रामकथा के अपना शैली में लिखे खातिर दृढ़ संकल्प हो गइलें। एही से प्रायः हर पुराण में प्रत्यक्ष चाहे अप्रत्यक्ष रूप से 'रामायण' के उल्लेख मिलेला। बावजूद एकरा महर्षि व्यास अपना 'ब्रह्माण्ड पुराण' में अपना रामायण के रचना कइलें। जवना के ऊ 'अध्यात्म रामायण' नाम देहलें। राम के ई परम पवित्र गाथा भगवान शंकर द्वारा आदिशक्ति पार्वती के सुनावल गइल। ई कथा 'ब्रह्माण्ड पुराण' के उत्तर खण्ड में आइल बा। एकर रचयिता महर्षि व्यास हउअन। एकरा में परम रसायन चरित्र के वर्णन आ प्रसंगानुसार भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, उपासना, सदाचार सम्बन्धी उपदेश आ आध्यात्म तत्त्व के विवेचन के प्रधानता बा। एह रामायण के विशेषता ई बा कि एह में वर्णित रामकथा से हमनी के हृदय कवनों तरह के दुःख से ना भरे।

श्री राम के कथा सर्वप्रथम भगवान शंकर माता पार्वती के सुनवल। ऊ कथा एगो कौवा सुन लेहलस। ओही कौवा के पुनर्जन्म काकभुशुण्डि के रूप में भइल। काकभुशुण्डि के आपन नया जन्म लेहला के बावजूद उनका अपना पिछला जन्म में भगवान शंकर के श्रीमुख से सुनल रामकथा पूरा के पूरा इयाद रहे। एह से ऊ ओह कथा के अपना शिष्य लोगन के सुनवलें। एह

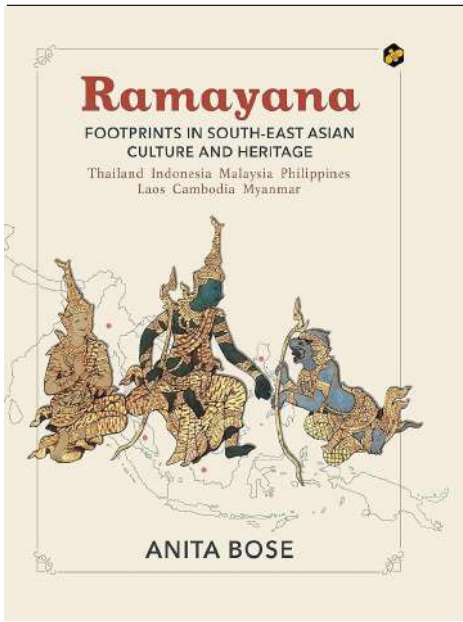

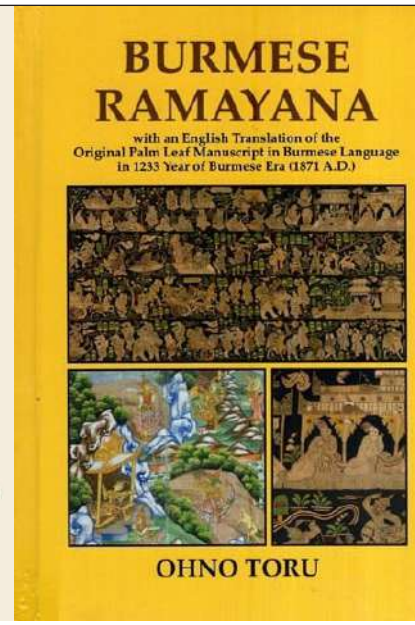

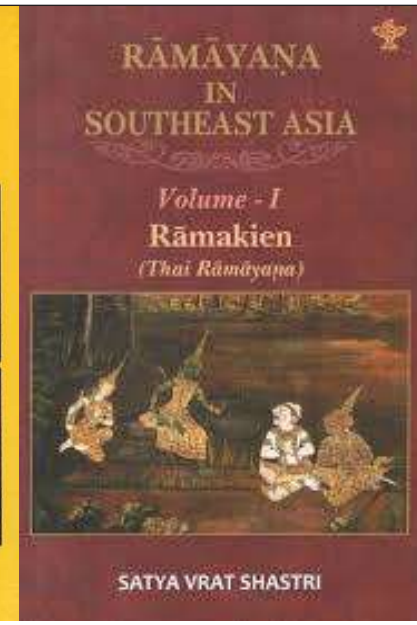

तरह से भगवान श्रीराम के कथा के प्रचार- प्रसार भइल। भगवान शंकर के श्रीमुख से निकलल रामजी के पवित्र कथा 'अध्यात्म रामायण' के नाम से प्रसिद्ध भइल।

जइसन कि हमनी जानतानी कि 'रामायण' के 'आदिकाव्य' कहल जाला। काहेकि एकरा के कहे के पीछे एगो ठोस कारण ई बा कि एह ग्रंथ में वैदिक संस्कृत से भिन्न लौकिक संस्कृत में काव्यधारा के प्रवर्तन कइल गइल बा।

रामकथा लोगन के बीच बहुत ही अधिक लोकप्रिय बा। एहसे केवल संस्कृत में ही सत्रह तरह के छोट-बड़ रामकथा बा। जवना में महर्षि वाल्मीकि, महर्षि व्यास, गुरु वशिष्ठ, अगस्त ऋषि आ कालिदास जइसन ऋषियन आ कवियन के कृति बा। एही तरह उड़िया में, बंगला में, हिन्दी में, मराठी में, तमिल में, तेलुगु में, गुजराती में, मलयालम में, कन्नड़ में, असमिया में, उर्दू में, फारसी में, अरबी में रामकथा पर रचना भइल बा। कवनों-कवनों भाषा में त डेढ़ दर्जन से भी ऊपर रामकथा पर रचना भइल बा। बाकिर सबके रचना के स्रोत वाल्मीकि के 'रामायण' ही बा।

महाकवि कालिदास, भास, भट्ट, प्रवरसेन, क्षेमेन्द्र, भवभूति, राजशेखर, कुमारदास, विश्वनाथ, सोमदेव, गुणादत्त, नारद, लोमेश, मैथिली शरण गुप्त, केशवदास, समर्थ रामदास, संत तुकडोजी महाराज जइसन चार सौ से अधिक कवि आ संत लोग राम पर चाहे रामायण के अन्य पात्रन पर आपन कलम चलवले बा। स्वामी करपात्री जी महाराज अपना 'रामायण मीमांसा' से रामायण के एक वैज्ञानिक आयाम पर आधारित विवेचन प्रस्तुत कइले बाड़न। आज के दौर में तुलसीकृत 'रामचरित मानस' सबसे अधिक लोकप्रिय बा। वाल्मीकि 'रामायण' के महत्त्व त हमेशा से रहल बा। बावजूद एकरा आर्ष रामायण, अद्भुत रामायण, भुशुण्डि रामायण, अध्यात्म रामायण, राधेश्याम रामायण, मन्त्र रामायण, श्रीराघवेन्द्र चरितम्, अभिषेक नाटकम, जानकीहरणम आदि भी प्रसिद्ध बा।

भारत में स्वतंत्र्योत्तर काल में भी संस्कृत में रामकथा पर आधारित अनेक महाकाव्य लिखल गइल बा। जवना में रामकीर्ति, रामाश्वमेधीयम्, श्रीमद्भार्गवराघवीयम्, जानकी जीवनमूल्य, सीताचरितम, रघुकुलकथावल्ली, उर्मिलीयम, सीतास्वयम्बरम, रामरसायण, सीतारामीयम, साकेत सौरभ आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय बा। डॉक्टर भास्कराचार्य त्रिपाठी द्वारा रचित 'साकेत सौरभ' महाकाव्य के अपना रचना शैली आ कथानक खातिर रामकथा पर लिखल ग्रंथन में विशिष्ट स्थान प्राप्त बा। काहेकि एह महाकाव्य में संस्कृत-हिन्दी समानान्तर रूप में बा। जवना के चलते हिन्दी भाषा के जानकार भी एकर पूरा तरह से रसास्वादन के आनन्द ले सकेला।

एतने भर ना रामानन्द सागर द्वारा निर्देशित रामायण दूरदर्शन पर भी प्रसारित भइल बा। जवना के बनावे में पच्चीस से भी अधिक रामायणन पर शोध कइल गइल रहे। ई रामायण एतना लोकप्रिय भइल कि जवना घड़ी ई दूरदर्शन पर प्रसारित होखे, ओह घड़ी सड़क पर भी सन्नाटा छा जात रहे। एह रामायण के कोरोना महामारी के काल में दुबारा प्रसारित कइल गइल। दूसरा बार भी ई वर्ल्ड रिकॉर्ड बनवलस।

रामकथा पर विदेशन में भी खूब रचना भइल बा। जवना में हमार एगो परिचित शोधकर्ता शोध कर रहल बाड़न। एह से उनकर पूरा डेटा त अभी हमरा उपलब्ध ना हो सकल ह। बाकिर उनकर कहनाम बा कि लगभग बीस अलग-अलग देशन में अलग-अलग तरह के रामायण लिखाइल बा। बाकिर अभी ले कवना-कवना देश में कवना- कवना नाम से रामकथा लिखल गइल बा ओकर जे आँकड़ा हमरा उपलब्ध हो सकल ह, ऊ हम रउआ सभन से साझा करतानीं-

नेपाल- भानुभक्तकृत रामायण, सुन्दरानन्द रामायण, आदर्श राघव।
कंबोडिया- रामकर।
तिब्बत- तिब्बती रामायण ।
पूर्वी तुर्किस्तान- खोतानी रामायण।
इंडोनेशिया- ककबिन रामायण।
जावा- सेरतराम, सैरीराम, रामकेलिंग, पातानी रामकथा।
इण्डोचायना- रामकेर्ति (रामकीर्ति), खमेरे रामायण।
बर्मा (म्यांमार)- यूतोकी रामयागन।
थाईलैंड- रामकियेन।

एह सब ग्रंथन में राम के चरित्र पर बखूबी आ व्यापक रूप से चर्चा भइल बा। एकरा अलावें विद्वान लोगन के ई भी मानल बा कि ग्रीस के कवि होमर के प्राचीन काव्य 'इलियड', रोम के कवि नोनस के रचना 'डायोनीशिया' आ रामायण के कथा में अद्भुत समानता बा। कहल त इहाँ तक जाला कि विश्व साहित्य में एतना विशाल आ विस्तृत रूप से विभिन्न देशन में विभिन्न कवियन आ रचनाकारन द्वारा राम के अलावा कवनों दोसरा चरित्र पर एतना श्रद्धा से वर्णन ना देखे के मिलेला।

अब प्रश्न ई उठता कि राम के आविर्भाव त्रेता युग में भइल रहे त आजो ऊ एतना लोकप्रिय आ प्रासंगिक काहे बाड़न? एकर उत्तर ई बा कि राम के चरित्र बहुत मर्यादित रहे। उनकर हर संबंधन के निभावे के तरीका अनुकरणीय रहे। आज के दौर में त राम के जीवन चरित्र अउर भी महत्त्वपूर्ण हो गइल बा। काहेकि हम अपना विकास के झंडा जेतने बुलंद करत जातानी, ओतने मानवता के स्तर पर हम खोखला होत चलल जातानी।

आज अधिकांश लोगन के परिवार एकल परिवार हो गइल बा। बूढ़ा माई-बाप खातिर हमनी के पास समय नइखे। बाकिर अपना बच्चन खातिर सबके लगे समये-समय बा। एतने भर ना चूँकि सबके गिनल-चुनल बच्चा बा। एह से जे फूल बा ऊ महादेव पर ही चढ़े वाली स्थिति बा। काहेकि ज्यादातर लोगन के एके, दूगो बच्चा बा। एह से हर माई-बाप अपना बच्चा के हर इच्छा पूरा करे खातिर तत्पर बा। एकर नतीजा ई बा कि बच्चा कवनों तरह के इनकार चाहे हार व तनाव बर्दाश्त करे के स्थिति में नइखे रह पावत। ओकरा जे पसंद बा ऊ सब ओकरा मुँह से निकलते चाहीं आ ज्यादातर ऊ आपन इच्छा बढ़-चढ़ के पूरा भी करवा लेला। जवना चलते ऊ अपना के सर्वश्रेष्ठ भी समझे लागेला। एकर नतीजा ई भइल बा कि ऊ एक ओर जहाँ बहुत ज्यादा महत्वाकांक्षी हो गइल बा, उहईं दोसरा ओर अंदर से बिलकुल खोखला भी हो गइल बा। स्थिति अइसन हो गइल बा कि आज के बच्चा के अपना विपरीत परिस्थिति से निकले के हुनर एकदमे नइखे मालूम। एही से आज ऊ अपना कौनो तनाव चाहे असफलता के झेल नइखे पावत आ माटी के बर्तन नाहिंन एको जोरदार चोट बर्दाश्त करे के स्थिति में नइखे। एही से तनियो-सा कवनों झटका लागता त टूट के बिखर जाता। एतने भर ना ओकरा जीवन में तनिको ऊँच-नीच भइल त ऊ अपना ओही उमिर में मनोचिकित्सक के पास पहुँच जाता। समाज के अइसन परिस्थिति में राम के चरित्र हमनी के अपने सुने आ गुने के चाहीं आ अपना बच्चन के भी सुनावे के चाहीं। एहसे हमनी सभे के प्रेरणा मिली कि कइसे हम अपना विपरीत परिस्थिति में भी अपना के संयमित रख सकेनीं? काहेकि हम रामकथा में सुनेनी कि राम के राजतिलक के सब तैयारी हो गइल बा। पूरा अयोध्या राज्य में आनन्द के वातावरण बा। शहनाई के मधुर धुन वातावरण में मिश्री घोल रहल बा। अइसन खुशी के वातावरण में राम के राजा दशरथ के बुलावा आवता आ उनका राज्याभिषेक के बदले वन गमन के आदेश मिलता। अपना जीवन में घटल एह घटना से रामजी टूटत नइखन बल्कि ओह विपरीत परिस्थिति में भी ऊ अपना के बहुत मजबूती से सम्भाल ले तारन। एही से जब उनकर माता कौशल्या रामजी के राज्याभिषेक के सूचनामात्र से प्रसन्नचित्त होके अपना पुत्र से पूछतारी कि तहरा के महाराज द्वारा काहे के बुलावल गइल रहल ह? अपना माता के एह प्रश्न पर उत्तर देत ऊ अपना माता से कहतारन-

"पिताँ दीन्ह मोहि कानन राजू,
जहं सब भाँति मोर बड़ काजू।"

श्री राम अपना माता से बिना कवनों दुःख भा क्लेश जतवले कहतारन कि पिताजी हमरा के वन के राजा बना देहनीं।

रामजी के जीवन के प्रत्येक कार्य अनुकरणीय रहे। रामजी संपूर्ण भारतवर्ष के एकता के सूत्र में पिरोवे के काम कइलें। ऊ जाति, नस्ल आदि के संकीर्ण दायरा से ऊपर उठके निषादराज के आपन मित्र बना लेहलें। केवट के भावना के हृदय से सम्मान कइले। भिलनी (शबरी) के जूठा बेर खइलन।

एतने भर ना ऊ मनुष्येतर प्राणीयन से भी आपन प्रेमपूर्ण संबंध बनवलन। गिद्धराज के आपन चाचा मनले आ उनका से प्रेमपूर्ण संबंध जोड़लें। साथ ही, ऊ जटायु के मृत्यु के बाद एगो पुत्र के भाँति उनकर अतिम संस्कार भी कइलें। बलशाली बानर जाति से मित्रता करके पर्वत आ वन के भी एक में जोड़ देहलें।

रामजी के व्यक्तित्व से हमनी के इहो ग्रहण करे के चाहीं कि परिस्थिति कइसनों रहे बाकि हमनी के तनिको विचलित ना होखे के चाहीं। एकरा साथ ही हमेशा हमनी के अहंकार शून्य आ संयमित व्यवहार करे के चाहीं।

बाकिर कभी अपना पौरुष पर से भरोसा ना उठावे के चाहीं। रामजी अपना राज्य से दूर वन में रहलें। उनका पत्नी के रावण जइसन पराक्रमी राजा हरण करके ले गइल। रामजी के पास कवनों सेना ना रहे। बाकिर उनका अपना पौरुष पर एतना विश्वास रहे कि जब मरणासन्न गिद्धराज जटायु उनका से पूछलें कि जब हम स्वर्ग जायेब तब राजा दशरथ उहाँ हमरा से मिलिहें आ तहरा लोगन के बारे में पूछिहें, तब उनका से हम का कहेब? रामजी जटायु से कहलन कि चाचाजी उहाँ गइला पर सीता हरण के बारे में पिताजी से रउआ कुछ कहला के जरूरत नइखे। काहेकि कुटुम्ब सहित दशानन स्वयं जाके ई बात कहिहें-

रामजी के व्यक्तित्व निम्नलिखित सोलह गुण से सम्पन्न मानल जाला- 1-गुणवान 2-केहू के निंदा ना करे वाला 3-धर्मज्ञ 4- कृतज्ञ 5-सत्यवादी 6- दृढ़प्रतिज्ञ 7- सदाचारी 8- सब जीव के रक्षक 9- विद्वान 10- सामर्थ्यशाली 11- प्रिय दर्शन 12- जितेन्द्रिय 13- क्रोध पर विजय पावे वाला 14- कांतिमान 15- वीर्यवान 16- युद्ध में क्रोधित भइला पर जेकरा से देवता लोग भी डरें। हालाँकि वाल्मीकि 'रामायण' में रामजी के एकरा अलावें एगो अउर गुण बतावल गइल बा। एह से उनकर कुल मिलाके सत्रह गुण हो गइल। रामजी के व्यक्तित्व के ई सब गुण चेतना के सर्वोत्तम स्तर मानल जाला। एह से एकरा के पुरुषन के उत्तम गुण मानल जाला। अपना एही सब गुणन के कारण रामजी मर्यादा पुरुषोत्तम कहल जालें।

"सीता हरन तात जनि कहहु पिता सन जाई।
जौं मैं राम त कुल सहित कहिहि दसानन आई।।"

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम सबके एक साथ मिलाके रखे वाला रहलन। ऊ एक आदर्श बेटा रहले। एह से जवना विमाता के कारण उनका वन गमन करे के पड़ल, ओह विमाता के प्रति उनका हृदय में कवनों कलुषित विचार ना रहे। तबे नू जवना विमाता के कारण उनका अपना राज्याभिषेक के बदले वन गमन करे के पड़ल। ओकरा बाद भी जब उनका अपना माता लोगन से भेंट करे के अवसर मिलल त ऊ सबसे पहिले कैकेयी से ही भेंट कइले- "प्रथम राम भेंटी कैकेयी" आ अपना सरल स्वभाव आ भक्ति भाव से उनका ग्लानियुक्त चित्त के शांत करत सब दोष ऊ काल, कर्म आ विधाता के दे देहलें।

रामजी एगो सच्चा पति रहलन। काहेकि जवना घड़ी सीता-हरण भइल, ओह घड़ी रामजी वन में निवास करत रहलें। ऊ वल्कन वस्त्र धारण कइले रहलें। उनका लगे रावण जइसन पराक्रमी राजा से लड़े के कवनों साधन ना रहे। फिर भी जटायु से जब सीताजी के हरणकर्ता रावण के बारे में जानकारी मिलल त ऊ सीताजी के ओकरा बंधन से मुक्त करावे खातिर समुद्र में सेतु बनावे जइसन दुरूह कार्य करे में भी पीछे ना हटलें।

साँच पूछी त रामजी के संपूर्ण व्यक्तित्व ही पारसमणि रहे जेकरा स्पर्श मात्र से लोहा भी सोना बन जात रहे। तबे नू रत्नाकर अइसन डाकू आदिकवि वाल्मीकि बन गइलें। अपना पत्नी के मांसल शरीर में एतना अनुरक्त रहे वाला पति जे ओकर एक दिन के वियोग के बर्दाश्त ना कर पावत रहे आ ओकरा से मिलन खातिर आतुर हो शव आ नौका में भेद भी ना समझ पावत रहे। ओइसन व्यक्ति भी श्री राम के पावन चरित्र के नाम मात्र से एतना प्रभावित भइल कि 'रामचरित मानस' जइसन महान ग्रंथ के रचयिता बन दुनियाभर में प्रसिद्ध हो गइल। साँचो श्रीराम के मानव रूप में अवतार ही भइल रहे मानव मात्र के भलाई खातिर। ऊ मानवीय अस्तित्व के कठिनाई, दुःख-दर्द आ हर तरह के कष्ट व पीड़ा के स्वयं वरण कइले ताकि समाज में सामाजिक आ नैतिक मूल्यन के संरक्षण दिहल जा सके। साथ ही जे दुष्ट बा ओकरा के दण्ड देहल जा सके। एही से मैथिलीशरण गुप्त अपना 'साकेत' में लिखताड़े-

"राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है,
कोई कवि बन जाए सहज सम्भाव्य है।"

(हमनी के अइसन सौभाग्यशाली बानी जे रामलला के टेंट से अपना भव्य मंदिर में स्थापित होखे के साक्षी बनेब। बरिसन प्रतीक्षा आ न्यायिक प्रक्रिया से गुजरला के बाद आज करोड़न रामभक्तन के सपना सुखद आकार ले रहल बा। सदियन से अयोध्या सनातनी लोगन के आस्था के केन्द्र रहल बा आ सनातनी लोगन के आँखन में न जाने केतना बरिसन से एक ही सपना आपन डेरा जमा लिहले रहल ह कि कब रामलला के आपन स्थान मिली? बहुत हर्ष-उल्लास के बात बा कि रामलला के ऊ स्थान प्राप्त हो गइल।)

परिचय - डॉ. ज्योत्स्ना प्रसाद के हिन्दी आ भोजपुरी में कविता, कहानी, उपन्यास आ निबन्ध प्रकाशित बा। प्रसिद्ध यमनी उपन्यास 'अल रहीना' (अरबी) के हिन्दी अनुवाद 'बन्धक' नाम से प्रकाशित बा। अमेरिका, चीन, जार्डन यमन आ भारत में आयोजित अन्तरराष्ट्रीय समारोहन में शोधपत्र प्रस्तुति एवं काव्यपाठ भइल बा। कविता अंग्रेजी, चीनी आ अरबी भाषा में अनूदित बा।

डॉ.संध्या सिन्हा

भोजपुरी लोकगीतन में राम

ललना बाजे लागल अवध बधाव महलिया उठे सोहर हो

भारतीय जन जीवन में राम के समझे आ जाने खातिर भोजपुरी लोकगीत बहुत मजबूत आ दमगर प्लेटफार्म होखी। आपन भिन्न-भिन्न रूपन में भक्ति, सरधा, आचरण, श्रृंगार, प्रेम-उल्लास, जय-पराजय, दुख-सुख आदि सभ के अभिव्यक्ति खातिर राम के अवलम्ब रूप में इयाद करत गीत गवाला। भक्ति, आचरण, मर्यादा आ जीवन मूल्य के स्थापना खातिर राम आम जनता के जनजीवन के अकाट्य आदर्श बनले।

राम भारतीय संस्कृति के आदर्श आधार स्तंभ बाड़न। राम भारतभूमि पर खाली एगो देव, एगो अलौकिक मानव, एगो धर्मग्रंथ के आराध्य भा कवनो कथा परम्परा के नायक नइखन बलुक राम भारतीय संस्कृति में एगो दमदार जीवन दर्शन आ चिंतनभूमि के नांव ह। राम के भक्ति आ काव्य के एगो लमहर परंपरा चलल आ रहल बा। वैदिक काल से आवत, वेदांगन में, उपनिषद, पुराण से होत नाथ-सिद्ध में फइलल। इहे आगे जाके बौद्ध आ खास क के जैन मुनियन के काव्य में खूब फरल फुलाइल। भलहीं ई विवाद के विषय रहल कि वेदन के राम आ बाद के साहित्य के (बाल्मीकि आ तुलसी के) राम एके ना हउँवें...ई भले एगो अलग शोध के मांग कर रहल विषय बा, बाकिर राम के चर्चा आ कथा-परंपरा वेदन से निरंतर चलत आ रहल बा, ई एगो अकाट्य सत्य बा।

संस्कृत आ प्राकृत साहित्य में भी राम के चरित्र खूबे प्रचलित रहल। वाल्मीकि के रामायण एकर ज्वलंत उदाहरण बा। अपभ्रंश काव्य काल में भी राम के भक्ति आ स्तुति काव्य के विस्तृत विकसित परम्परा बा। काव्य रचना के विकास के प्रारंभिक काल से हरमेसे दू धारा में समानांतर साहित्य बढ़ल-शास्त्रीय आ लोक साहित्य। लोक साहित्य जनमानस के प्रतिनिधित्व करेला त अभिजात्य साहित्य, साहित्य के मानक तय करेला।

अगर कवनो देश आ काल के सांस्कृतिक सामाजिक संवेदना के ठीक-ठीक पड़ताल करे के होखे त ओह देश आ काल के संभ्रांत साहित्य से भिन्न लोक साहित्य में डूबे आ रमे के पड़ी।

भारतीय जन जीवन में राम के समझे आ जाने खातिर भोजपुरी लोकगीत बहुत मजबूत आ दमगर प्लेटफार्म होखी। आपन भिन्न-भिन्न रूपन में भक्ति, सरधा, आचरण, श्रृंगार, प्रेम-उल्लास, जय-पराजय, दुख-सुख आदि सभ के अभिव्यक्ति खातिर राम के अवलम्ब रूप में इयाद करत गीत गवाला। भक्ति, आचरण, **मर्यादा** आ जीवन मूल्य के स्थापना खातिर राम आम जनता के जनजीवन के अकाट्य आदर्श बनले।

राम जनमानस में कबो लौकिक रूप में त कबो ईश्वर बन के अलौकिक रूप में बसले आ एहिंग कबो सामान्य सामाजिक बनके त कबो प्राण उद्धारक बन के लोक कंठ में रससिक्त होके गीतन में समा गइलें।

साँच पूछीं त लोकगीत जनता के सच्चा आ मौलिक अनौपचारिक अभिव्यक्ति होला। दुख-सुख, प्रेम-सिंगार, जय-विजय, देश-परदेस, संयोग-वियोग, श्रम-वैभव जइसन सभ परिस्थितियन में जनता के कंठ हार बनेला आ जनमानस के वास्तविक चित्तेरा होला। एही कारणे जब जनजीवन के इतिहास खंगाले के होला त हमनी के लोक गीत आ लोक साहित्य के ओरि बेर-बेर लवटे के पड़ेला। ई पड़ताल इतिहास के किताबन के ओह अध्यायन से एकदम भिन्न होला जे राजा रानी आ ओकर राज काज के महिमामंडन से रंगाइल होला।

आम लोग खातिर राम के काया-माया, लौकिक अलौकिक छाया, **मर्यादा**-विलास सभ उनकर लोकगीत में अभिव्यक्त बा। एह से ई तय बा कि जदि राम जइसन व्यक्तित्व आ अस्तित्व के जाने गुने के बा त लोकगीतन के गुनगुनावे-गावे के पड़ी।

एगो अउर बात... लोकगीतन के छानबीन से राम के ऊ रूप सामने आई जे मंदिरन से बाहर, आम जनता के बीच बसेला, जे ज्ञानी आ पंडितन के शास्त्र के महिमामंडन से मुक्त बा, जे पुरोहित आ यजमानी के कर्मकांड से अछूता बा, जे ज्योतिष आ भविष्यवक्ता के जंजालन से जनमल नइखे... बलुक, आम लोगिन के मानस में रचल बसल मनमोहक, सहज आ सहकारी रूप में बा। संभवतः इहे कारण रहल होखी कि तुलसी दास लोकभाषा अवधी में राम के प्रतिस्थापित करे के पुनरचेष्टा कइले होखब।

भोजपुरी लोकगीतन के एगो लमहर परंपरा रहल बा जे भारतीय सभ्यता के विकास के साथे-साथ चलल आ रहल बा। वैदिक काल, वेदांग, सिद्ध नाथ साहित्य, बौद्ध-जैन काल, अपभ्रंश आदि सभन से होत ई भोजपुरी के कबीर-तुलसी से गुजरत आजुओ ले लोक कंठ में फरत फुलात बा। अतने ना आल्हा, विजयमल भर्तृहरि, सतीकथा, नयका बंजारा, गोपीचंद इत्यादि एह बात के जीवंत प्रमाण बाड़ें। समय के धार से गीतन के रूप रंग आ चमक में थोर बहुत अंतर हो सकेला बाकिर आत्मा के नाश ना होला। भोजपुरी लोकगीतन में शुरू से ही राम के उपस्थिति एह बात के सूचक बा कि भोजपुरी माटी में राम बसेले... अवध के अवधिया आ भोजपुरी के भाषिक आ सांस्कृतिक साम्य एकर प्रमाणिकता बा। लोकगीतन के परंपरा में रामकथा के गुम्फन कवनो नया बात त नइखे बलुक देखीं त इहवां राम बड़ी सहजता, सरलता, सुंदरता, सुकुमारता आ मार्मिकता से रचल बसल बाड़े।

भोजपुरी लोकगीतन में राम के देखे के दू गो दृष्टिकोण हो सकेला

1. भोजपुरी लोकगीतन के विभिन्न प्रकार में राम...जइसे झूमर, खिलौना, विवाह-गीत, संस्कार-गीत, निर्गुण, भजन इत्यादि में राम के छवि।

2. दूसरकी दृष्टि ई हो सकेला कि राम लोकगीतन में कइसन रूप में विराजत बाड़न....जइसे राम के सामाजिक व्यक्तित्व, राम के पारिवारिक व्यक्तित्व, राम के राजनीतिक व्यक्तित्व, राम के दांपत्य, आ राम के ईश्वरीय व्यक्तित्व।

अच्छा ई होखी कि भोजपुरी लोकगीतन में राम के देखे खातिर हम लोकगीतन से आपन यात्रा प्रारंभ करीं। एह तरे लोकगीतन के तासीर में राम के भिन्न-भिन्न छवि मुखरित होखी आ हमनी ओकर रसास्वादन कर सकेब। बाद में ओह राम के विभिन्न व्यक्तित्व छवियन के आलोक में समझे के प्रयास कइल जाई।

भोजपुरी लोकगीतन के परंपरा जतना लमहर बा ओतने पसरलो बा। जिनगी के कवनो क्षेत्र अइसन नइखे जे एह लोकगीतन में समेटल नइखे गइल आ जेकर बारीकियन के गूंथल ना गइल होखे। जन्म से लेके मृत्यु तक के छने छन के लोक भोजपुरी लोकगीतन में बखूबी समेटल आ संवारल गइल बा।

लोकगीत लोकमानस के दर्पण होला...एकदम साफ... चमचम...आ

यथार्थ के झलकावत दर्पण। भोजपुरी लोकगीतन के विभिन्न प्रकार –

1 . संस्कार गीत जइसे सोहर, खेलवना, उपनयन भा जनेऊ, बियाह, सहाना, गवना, नहछू, झूमर, गोदना

2 . ऋतु गीत जइसे कजरी, फगुआ, चइता, बारहमासा, बिरहा

3. जाति संबंधी गीत जइसे धोबी गीत, नेटुआ

4.श्रम गीत जइसे रोपनी, कटनी, सोहनी, जंतसार, पुरबी

5.भक्ति आ परब के पीडिया, छठी माता के गीत, गंगा मइया के गीत, मइया के गीत, संझा–पराती

6.मृत्यु आ लाचारी के गीत जइसे निर्गुण

7. विकास के गीत जइसे कृषि गीत, उद्योग गीत, शिक्षा गीत,

8. देशभक्ति के गीत

9.लोक गाथा जइसे आल्हा, विजयमल्ल, भरथरी

10.समूह गीत जइसे अलाव गीत इत्यादि ।

एह सब प्रकार के गीतन में राम के उपस्थिति आ उनकर व्यक्तित्व के देखल जा सकेला आ तबे ई बूझल आसान होखी कि वास्तव में राम कवना रूप, रंग आ अवतार में आम जनता के मानस में विराजत बाड़न आ उनकर जीवन के हिस्सा बन के उनकर सुख–दुख के साझीदार आ सहाय होख तारे।

भोजपुरी लोकगीत में राम के अलावा कृष्ण आ शिव देवता भी खूब रचल बसल बाड़े। चारगाही संस्कृति के नायक कृष्ण बहुते उन्मुक्त आ उच्श्रृंखल बाड़े। अनगिनत गोपियन संगे नाचत नचावत, बड़ा चुहलबाज आ छलिया रूप में मोरपंखी। ओहिजे शिव वनांचली, अघोरी संस्कृति के मनमौजा, बेहद असामाजिक आ विचित्र रूप में बाड़े, जिनका के बहुत उलाहना भी मिलता, जिनकर रूप बहुत डरावन, जिनका आसपास भूत, परेत, सांप, बिच्छू सभ बा। राम एह दूनो से एकदम भिन्न अनुशासित आ मर्यादित बाड़े। उनकर आदर्श जीवन दर्शन भारतीय सामाजिक मर्यादा के आधारभूमि बा। राम सुदर्शन आ सौम्य बाड़े।

भोजपुरी लोकगीतन में सबसे पहिले संस्कार गीत के बात कइल जाओ त सोहर में जन्म के गीत गवाला। भोजपुरी लोकगीत में सोहर के बहुत सुंदर अजस्र परंपरा बा जवना में जन्म के हुलास, आनंद, लरकोरी के हिरदया के खुशी, ननंद–भउजाई के नोक–झोंक, ओरहन–बयना, गारी, आशीवार्दी, गर्भधारण इत्यादि के लइका के जन्म के वर्णन भी मिलेला। इनके खेले–कूदे के भगवान से आ बड़–बुजुर्ग के दुआ के भी वर्णन मिलेला। राम के जन्म के प्रसंग से ही भोजपुरी सोहर के गायन शुरू होला। राम एगो सुंदर बालक रूप में समूचे अयोध्या में हुलास ले के जनमले। राम के जन्म के वर्णन, सउरी के क्रियाकलाप के वर्णन, भोजपुरी सोहर के मुख्य विषय बा।

धनि धनि अयोध्या रउरो भाग त परम सुहावन हो, ललना कहवां जनमले राम त केकरा ही लछुमन नूँ हो

केकरा जन्मले भरत....उठे सोहर हो
कोसिला के जनमले राम, सुमित्रा के लक्ष्मण हो, ललना केकई के भरत अब त अयोध्या उठे सोहर नूँ हो

जाहि दिन राम जनम लिहले धरती आनंद भाइली हो, ललना ऋषि-मुनि होखेले आनंदित, त फुल बरसावेले हो।

देखी चईत के रामनवमी के साथ ही राम जी के जन्म के जोड़ के सोहर बहुत प्रचलित सोहर–

चइत अंजोरिया के नवमी, त राम जनम लिहले हो, ललना बाजे लागल अवध बधाव, महलिया उठे सोहर हो

सीता के राम जइसन पति लक्ष्मण जइसन देवर मांगे के विषय बहुत प्रचलित बा।

राम के प्रति एगो फेसिनेशन भोजपुरी जनमानस में बहुते गहिर जड़ जमवले बा। सभे अपन लइका राम के रूप में ही पावे के चाहत राखेला आ सीता अइसन कनिया। देखीं राम जइसन बेटा के गर्भधारण आ जनम के जिज्ञासा जनमानस में कइसे बा... एह लोकगीत में मेहरारून पूछतारी–

कवने नक्षत्र मथवा खोले लू हो त कवने नछत्तर मथवा मीसेलू हो, कवना नछत्तर सेजिया डसवलू त राम के दिनवा सुदीन बाड़े हो

एकर अर्थ ई समझे के होई कि राम एगो औरत के कोखि के आदर्श लालसा रूप बाड़े।

राम के जन्म पर दाई आ नोनिया के नेग मांगल एगो सुंदर परंपरा बा। भारतीय समाज के सुंदर सामंजस्य पूर्ण परिवेश के चित्रण करेला। एकरा केंद्र में राम के राख के दाई कइसे एकदम अनौपचारिक होके मांग तारी—

धगडिन मांगेली अंगवा के अंगिया, साहिब जी के पगिआ नु हो, ललना मांगेली दूनों कान के सोनवा, लहसि घरवा जाईब हो

सबसे प्रचलित सोहर--

मचिया बइठल रानी कोसिला, सिंहासन राजा दशरथ हो, मोरे राजा हमरा तिलरिया के साध, तिलरिया हम लेहब हो...

एगो आउर

मुखवा में बसे श्री रामचंदर, हिया बीच लछुमन हो, मोरे ललना नैना में बसले भुवाल, गोविंद नहीं बिसरे ले हो...कवना नछत्तर नहाईलू कवना नछत्तर लट खोलो हो, कवना नछत्तर सेजिया डसवलु, त राम जनम लिहले हो

बिआह के गीत के विषय सामान्यतया कई तरह के नेग, आशीष, इच्छित वर मिले के आकांक्षा, प्यार, नोकझोंक, बेटी के बाप से अरज, दूल्हा के परीछन, बेटी के माई के व्याकुलता, दहेज के दानव, बेटी के बिदाई, कोहबर इत्यादि होले। एह सब प्रकार के भोजपुरी गीतन में राम के बराबर उपस्थिति दिखाई देता। बियाह करे जब राम अइले आ जनक जी बेटी के दान करतारे-

राम जी के आसन रखीह दुआरे, बइठेले दशरथ जाजिम डंसाई जंघिया बइठल राजा रामचंद्र, कचरेले पान/ जांघिया बइठल सीता रे बेटी लट लटकाई, देले राजा जनक जी दुनू कर जोरी

एह में आदर्श वियाह आ कन्यादान के चित्रण बा।

साँच पूछीं त लोकगीत जनता के सच्चा आ मौलिक अनौपचारिक अभिव्यक्ति होला। दुख-सुख, प्रेम-सिंगार, जय-विजय देश-परदेस, संयोग-वियोग, श्रम-वैभव जइसन सभ परिस्थितियन में जनता के कंठ हार बनेला आ जनमानस के वास्तविक चित्तेरा होला। एही कारणे जब जनजीवन के इतिहास खंगाले के होला त हमनी के लोक गीत आ लोक साहित्य के ओरि बेर-बेर लवटे के पड़ेला। ई पड़ताल इतिहास के किताबन के ओह अध्यायन से एकदम भिन्न होला जे राजा रानी आ ओकर राज काज के महिमामंडन से रंगाइल होला।

मिथिला नगरिया के हईं हम डोमिनियां ए मोरे सांवर दूल्हा, हमहूँ चलब तोहरे साथ

एगो गीत में अरे राम लखन वन में अहेरिया खेलतारे आ पियासल बाड़े, सीता पानी पिआवत बाड़ी। दूसर प्रसंग में सीता के सखी लोग सीता से पूछतारी कि कवन वरत कईलू की राम अइसन वर आ अयोध्या अइसन ससुराल मिलल-

सीताजी बियाहन घर में से निकलेली, पांच सखियां मूरुझि बात पूछे ली/ कवन वरत तू कईलू ए सीता पावेलु राम वर आजु हो

भोजपुरी लोकगीत में राम जी के दूल्हा रूप बहुत प्रमुख बा। कई बेर अत्यंत सुकुवार त कई बेर सुदर्शन आ कई बेर अत्यंत प्रखर आ बलिस्ट भी दिखाई पड़ता। बाकी कहीं भी राम छलिया, चुहलबाज, मजाकिया नजर नइखन आवत।

देखीं, दशरथ के दहेज के आग्रह पर राम के कवनो विद्रोही रूप प्रकट नइखे होत बाकिर हर जगहा ई जरूर दिखाई देता कि राम सीता के प्रति सदैव प्रणय नत बाड़े। बियाह के सब नेग बिध कर रहल बाड़े। नउनिया, धंगड़िया सभे के साथे बतिआवत बाड़े, बाकिर, हर जगह शांत, धीर, गंभीर आ विनम्र बाड़े।

झूमर बहुत प्रचलित उत्साह उमंग के गीत होला जेह में हंसी मजाक, नाच गाना, चुहलबाजी, संयोग वियोग सब समय होला। भोजपुरी के असंख्य झूमर बाड़े स, जवना में राम के सुंदर रूप प्रकट भइल बा।

अब राम सीता के विदा करा के अयोध्या लवटत बानी-

रामजी चले ले उत्तरी बनीजिया, सखी सब चले संग जोर

एह गीत के यदि आगे के पंक्ति देखीं त सीता राम के स्वामी मान के पति व्रत के कसम लेत बाड़ी। एही तरह कई गो गीत अइसन बा जवना में राम के सुकुमार देह देख के सीता के चिंता लागता कि स्वयंवर राम कइसे जीतिहें ?

पातर राम धनुष बड़ा भारी, तुरंत बिलम जात होई जी, आरे तोड़वि धनुष करबि नव दंड जानकी बियाहे घरे जाएबि जी

असहीं एगो गीत में जनक जी पूरा दहेज ना दे सकले त सीता के नईहर ना आवे के मिली एकर चित्रण बा। ई भारतीय समाज के बहुत बड़ दर्द बा जे राम सीता के माध्यम से व्यक्त बा। एगो गीत में जनकपुर के डोमिन रामजी संगे जाई के अरज करत बिया—

कहीं वन जाए के दृश्य त कहीं सीता के साथे दांपत्य दृश्य,-

केने से आवेले राम, केने से लक्ष्मण, केने से आवेली सीता सुंदर सखी ना

अयोध्या के लोग राम सीता के नहाय खातिर अयोध्या के घाट छोड़ देता। एह झूमर में भरत जी केकई माता से पूछत बाड़े कि राम कहां बाड़े-

सोने के थारी में जेवना परोसले, जेवना ना जैवे राम, भरत पूछे कैकई से

एह से साफ पता चलता कि सामान्य जनता राम के वनवास से खुस नइखे आ केकई से सवाल कर रहल बा।

एही तरह कई गो झूमर बाटे जवना में राम केवट के वार्ता बा, नाव में सीता द्वारा राम के सेवा के भाव बा। उदाहरण बतावत बा कि राम भोजपुरी लोकमानस में आदर्श के प्रतिरूप के रूप में प्रतिष्ठित बाड़े।

बात कइल जाओ कजरी के!! कजरी एगो ऋतू गीत ह। ई सावन भादो में, बरसात के मौसम में गवाला। कजरी में श्रृंगार आ रोमांस के भाव मुखर होला। राम जी सीता जी के खोजत-खोजत लक्ष्मण से उनकर पता पुछतारे-

लछमन कहवां जानकी होइहें, भादो अन्हरिया ना/ सावन गरजे, भादो गरजे, विकट अन्हरिया ना

एगो अउर कजरी-

अरे रामा शंभू चांप अति भारी, राम तोरी डारी रे हरी/ रावण बाणासुर बलबीर गवने धनुष नवाकर सीस, राम राम तोरी डारी रे हरी

एगो कजरी में सीता जी पार्वती जी के पूज रहल बाड़ी कि राम जइसन वर उनका मिलसु।

चईता पर कुछ बात कइल चाहब। ई प्रेम के उन्मुक्त गीत होला जे में संजोग सिंगार के खास अभिव्यक्ति होला-

चईत के रामनवमी अति मनभावन रे

एही तरे फगुआ भोजपुरिया संस्कृति के बहुत प्रचलित आ उत्साहपूर्ण ऋतु गीत होला, ओतने त्यौहार गीत भी होला। एहमें राम के सबसे पहले ईयाद कइल जाला-

होरी खेले रघुवीरा अवध में/ होरी खेले रघुवीरा/ हिलमिल खेलें लोग लुगाई/ भई संतन की बेला/ अवध में होली खेले रघुवीरा

होली के गीतन में राम लक्ष्मण सीता अयोध्या के लोग लुगाई के उपस्थिति से राम के सामाजिक व्यक्तित्व के रूप उजागर होता।

बिरहा एगो संस्कृति गीत ह जे पढ़े-लिखे के आग्रह ना करे वाला जनता गावेला। राम भाई लक्ष्मण खातिर बहुत मयगर रूप में बाड़े। जब लक्ष्मण के शक्तिवान लागल बा-

शक्ति बनवा लागल लक्ष्मण के लेकर गोदिया में हो राम

कंहरवा भी एही तरह के एगो संस्कृति गीत ह, जे कंहार लोग डोली ढोवत श्रमरत गावत रहे। एह गीतन में भी राजा दशरथ, राम, लक्ष्मण सब उपस्थित बाड़े। एगो गाछ तरे दशरथ के पुत्र राम लक्ष्मण सुस्तात बाड़े-

अरे राजा दशरथ एगो पोखरा खोनवलें/ बहु विधि घाट बनावे रामा/ ओही पोखर दुनूं तपस्वी/ एक लक्ष्मण एक राम

एह गीत में राम लक्ष्मण के तपस्वी रूप प्रकट हो रहल बा।

श्रमगीत भोजपुरी के जनजीवन के गीत होला। जवना में उनकर संकल्प, श्रम, दुख, सुख, भक्ति, राग सँयोग, वियोग सब गूँथल होला। राम इहवां अच्छरे अच्छरे समाइल बाड़े-

धनी धनी हो सिया रउरी भाग/ राम वर पायो/ लिखि नारद मुनि भेजें /विश्वामित्र पठाए

रोपनी के गीत खास करके धान के रोपनी में मेहरारू के झुंड एके साथी गावेले...बहुते झनकार टनकार-

राम लखन दूनों जाना भईया/ बनवा में खेले ले शिकार हो राम / केकरा हाथे तीखा धेनुहिया / केकरा हाथे गुरुदेलिया हो राम

नदिया के तीरे राम गोरुवा चरावे/ बदरिया घिरी आई हो राम

भोजपुरी लोकगीत में पुरबी के आपन खास जगह बा। महेंद्र मिसिर के लिखल अधिकांश पुरबी खूब प्रचलित बा। पुरबी में भी राम सीता के खुल के चर्चा बा। भरत केकई से राम सीता आ लक्ष्मण के बारे में पूछतारे-

कहवाँ गइले लक्ष्मण कहाँ गइली सीता/ भरत पूछे केकई से / अवध भइले सून हो/ वन गइले लछुमन वन गइली सीता/ वन गइले राम / अवध भइले सून

भोजपुरिया संस्कृति में परब-त्यौहार के बहुत महत्त्व बा जेहमें गीत-गवनई के खूबे प्रचलन बा, खासकर के छठ, रामनवमी, तीज, जिउतिया आदि के।

छठ बिहार आ भोजपुरी क्षेत्र के विश्व पटल पर पहचान बनइले बा। एकर गीत विशिष्ट शैली के होला। एह गीतन में भी राम उपस्थित बाड़े-

नदिया के तीरे-तीरे बोलो मैं राई/ राम जी के मिरगा चरिय चरी जाए हे छठी माई

छठ गीत में राम सीता, आदित्यमल, शिवजी इत्यादि के चर्चा बा।

अलचारी के भोजपुरी लोकगीत में समाज के लोग लाचार हो के सब कुछ ईश्वर के समर्पित कर देले। लक्ष्मण के जब शक्ति बान लागल राम लाचार होके बिलखत बाड़े-

मुखवा से बोल लक्ष्मण मोरे भाई / शक्ति बाण लागल लक्ष्मण के/ व्याकुल भइले रघुराई

पूरे गीत में राम के पश्चाताप, हनुमान द्वारा संजीवनी बूटी ले आवे के, राम के कूट के लक्ष्मण के खिआवे आ लछुमन के होश आवे तक के चर्चा बा। सोचे के विषय बा कि एह जगह पर राम के रूप एकदम लौकिक आ सामाजिक बा। भाई के घायल देख के लाचार राम बाड़े।

हनुमान जइसन वानर उनकर रक्षा करत बाड़ें।

भोजपुरिया सनातन परंपरा में संझा-पराती गावल जाला। देवता लोग के आगे नाक रगड़ल जाला। संझा-पराती में भी राम सीता के स्वयंवर के चित्र देखे जोग बा-

सीता रहिहें कुंवारी धनुष नहीं टूटे हो राम

एही तरे वन गमन में सीता पुछतरी-

अवध नगरिया कितनी दूर हो लक्ष्मण भैया हो

एकरा अलावे सामान्य भजन में भी राम सीता लक्ष्मण आदि के बहुते गीत गवाला। सेवरी के इंतजार, तैयारी आ जूठ बेर के भी भक्ति लोकगीत में खूब सहेजल गइल बा। केवट राम के वार्ता, राम के गोड़ धोवावे के जिद सब बहुत मनोरंजक आ आत्मीय ढंग से वर्णित बा। मंदोदरी द्वारा रावण के समझावल कि सीता जइसन नारी से अनेत मत कर राम एकर सजा दीहें। एकरा अलावे निर्गुण के लमहर आ पसरल क्षेत्र बा जवना में राम के सुमिरन वा। निर्गुण दुख पर गावे जाए वाला गीत होला जेमे ईश्वर से मिले, माया के छोड़े आ संसार के नश्वरता के प्रति आग्रह होला। निर्गुण में भी राम के सहायक रूप के पुकार होला। हमनी के लोकगाथा के भी एही क्रम में देखे के चाहीं- जइसे विजयमल, गोपीचंद, नयकवा बंजारा, भरथरी, आल्हा खंड आदि। राम जी कवनो ना कवनो रूप में सब में बाड़े। हालांकि सब में अलग-अलग विषय बा फिर भी देवता चरण, मंगलाचरण में राम के आराधना, आदर्श रूप के पांवलगी होला। "राम' भा 'रामा' के टेक लगभग सब लोकगाथा में आवश्यक रूप से बा। विजय मल/ "राम तब सुमिरो माता के चरण/ राम के सुमिरो गुरुजी के चरण/" अतने ना रामलीला में गाये वाला लगभग सब गीतन में ही रामलला बिराजेले। भोजपुरी लोकगीत में राम के जवन रूप सबसे बेसी प्रबल रहल बा उ ह सामाजिक एवं पारिवारिक रूप। दूल्हा, पति, पुत्र, पाहुन, भाई आदि के भूमिका में खूब बिराजेले। उनका साथे उनकर पिता, माता, भाई लोग सभे घुलल मिलल बा आ सीता सदैव उनकर अर्धांगिनी रूप में बाड़ी। एकरा बाद भी राम सदैव एगो गंभीर आ आदर्श व्यक्तित्व के रूप में चित्रित बाड़न। कहीं भी ऊ अपना आदर्श भूमिका से तिनका भर टकसल नइखन... इहां ले कि सीता के सखी लोग जब पाहुन राम से बतियावत बाड़ी तबो ना!! एकर मतलब साफ बा कि जनमानस राम के आदर्श भूमिका पर ही निछावर बा। दूल्हा, वर, बेटा, पति, पाहुन, स्वामी सब राम जइसन ही चाहीं।

एगो अउर बात कि राम के कबो केहू उलाहना नइखे देत.... सीता, लक्ष्मण, रावण, मंदोदरी, केहू ना। हं.... केवट के आग्रह आ धोबी के सीता के वापस ले आवे के शिकायत मिलल बा जरूर।

ध्यान देवे के बात त इहो बा कि राम सदैव अपना पारिवारिक परिस्थिति में उपस्थित बाड़े। राम के इहे रूप भारत के अलावे जहवां भी भोजपुरिया गइले अपना भोजपुरी लोकगीतन में ले गइले आ ओही रूप में आजुओ ले सहेजले बाड़े। थाईलैंड, मॉरीशस, फिजी एकर बड़हन ज्वलंत उदाहरण बा। थाईलैंड के त जनसंस्कृति में राम समाइल बाड़े। दुख के सहचर बनल राम के व्यक्तित्व कहीं अलौकिक आ सुपर नेचुरल करे के आग्रह नइखे। भारतीय जनमानस आदर्श अलौकिक मानव के सामाजिक आ परिवार सम्मत भूमिका में ही स्वीकार कर रहल बा।

राम के राजा सिंहासनाधीश्वर रूप के चर्चा लगभग कहीं नइखे। काहे नइखे.... ?? सोचे के विषय बा... काहे कि लोक गीत, लोक कंठ में लोक मानस टघरेला... लोकमानस केहू के सहचर, साथी के रूप में खुल के स्वीकारेला। मतलब एकदम साफ बा ....राम के राजनीतिक व्यक्तित्व के पक्ष भोजपुरी लोकगीतन में एकदम गौण बा आ प्रखर बा, उनकर सामाजिक पारिवारिक रूप!!

एही क्रम में एक अउर बात धेयान खींचता कि भोजपुरी लोकगीत में राम के अलावा कृष्ण आ शिव देवता भी खूब रचल बसल बाड़े। चारगाही संस्कृति के नायक कृष्ण बहुते उन्मुक्त आ उच्श्रृंखल बाड़े। अनगिनत गोपियन संगे नाचत नचावत, बड़ा चुहलबाज आ छलिया रूप में मोरपंखी। ओहिजे शिव वनांचली, अघोरी संस्कृति के मनमौजा, बेहद असामाजिक आ विचित्र रूप में बाड़े, जिनका के बहुत उलाहना भी मिलता, जिनकर रूप बहुत डरावन, जिनका आसपास भूत, परेत, सांप, बिच्छू सभ बा। राम एह दूनो से एकदम भिन्न अनुशासित आ मर्यादित बाड़े। उनकर आदर्श जीवन दर्शन भारतीय सामाजिक मयार्दा के आधारभूमि बा। राम सुदर्शन आ सौम्य बाड़े।

एकर मुख्य कारण बा कि राम कृषि संस्कृति के नायक बाड़े, जे पोषण परंपरा के प्रतीक होला, जे नियम-संयम आ कल्याण के मार्ग अपनावेला। अपना साथे अपन समूचा समाज के दुख-दर्द, राग-अनुराग, हर्ष-विषाद, श्रम-विश्रांति लेके चलेला आ लोक कल्याण खातिर पुरुषार्थ कर के जनजीवन के अनुप्राणित करत रहेला। राम भय के देवता ना हउवन, मात्र उल्लास आ प्रेम के रसिया ना हउवन ....राम त संपूर्ण जीवन दर्शन आ जीवन शैली के देव हउवन !! इहे कारण बा कि कृष्ण फगुआ, सोहर आदि के लोकगीतन में खूब रचल बाड़े... बाकी बियाह के गीत में लगभग नदारद बाड़े काहे कि बियाह आ परिवार भारतीय संस्कृति के एगो बहुत महत्वपूर्ण संस्था होला। एही तरे अजन्मा आ अमर्त्य होखे के कारण शिव सोहर खिलौना से नदारद बाड़े। एगो राम के व्यक्तित्व अतना संतुलित आ समाज सम्मत बा, जे सभ प्रकार के भोजपुरी लोकगीतन में बराबर व्याप्त बा.... खास क के बियाह जइसन संस्कार में प्रमुखता से उपस्थित बाड़े। भारतीय संस्कृति में बियाह एगो बहुते गहिर जड़ जमवले संस्था बिया। तबहीं त रामराज्य के आकांक्षा भारतीय समाज के मुख्य आकांक्षा रहल बा। आजादी के नायक गाँधी जी के भी इहे राम के छवि आधारित रामराज्य के आकांक्षा रहे।

परिचय- डॉ. संध्या सिन्हा। सम्पादक 'अँगना', प्राध्यापक, हिंदी विभाग, करीम सिटी कॉलेज, जमशेदपुर। कविता संग्रह-दोहमच (भोजपुरी) आ बोलने दो (हिंदी)। शोध पुस्तक "नागार्जुनः जनकवि होने का अर्थ"।

डॉ.यश्वी मिश्रा

कबीर, तुलसी आ लोक के राम

कबीरदास आ तुलसीदास, ई दूनों कवि लोग रामचरित के वर्णन कइल लोग लेकिन एकहीं जुग में तुलसी आ कबीर दूनों जाने की राम में अन्तर रहे। कबीर के राम निर्गुण निराकार ब्रह्म के स्वरूप रहलें। ऊ कण-कण आ क्षण-क्षण विद्यमान रहलें, बाकिर कतहूँ दिखाई ना देवें। तुलसी के राम अवतारी पुरुष आ राजा दशरथ मईया कोशिला के पुत्र रहलें। ऊ चरित्र प्रधान नायक रहलें आ, उनकर वर्णन शील, समन्वय, मर्यादा आ लोक धर्म के प्रतीक की रूप में भइल बा।

रामचरितमानस हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य हवे। एकर रचना गोस्वामी तुलसीदास संवत 1631 वि० (1574 ई०) में कइले रहनीं। ए महाकाव्य के सात-काण्ड में बाँटल गइल बा आ एकरा सम्बन्ध में ई कहल गइल बा कि एकर कथा काशी अयोध्या आ चित्रकूट तीनों जगह पर लिखाइल बा। एकर कथा दू बरिस आ सात महीना में पूरा भइल।

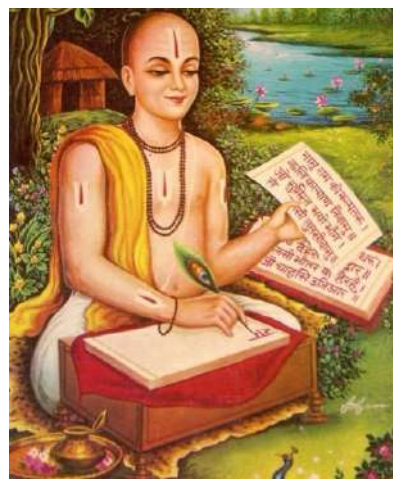

मानस के चरित्र नायक अयोध्या नरेश दशरथ के पुत्र श्रीराम हवें। राम एगो आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श भाई आ आदर्श राजा की रूप में चित्रीत कइल गयल बाड़े। राम **मर्यादा** पुरुषोत्तम रहलें आ उनकर चरित्र मर्यादित रहले के साथ-साथ लोक कल्याणकारी रहे। एही से पूरे भारत में आदर्श पुरुष के तुलना राम से कइल जाला।

मध्यकाल भारत के स्वर्णयुग कहल जाला। ओ समय के सबसे महान आ समाज सुधारक हिन्दी साहित्य में दू जाने कवि लोग के नाम प्रसिद्ध बा, जेईमे एगो कबीरदास आ दूसरका गोस्वामी तुलसीदास। ई दूनों कवि लोग रामचरित के वर्णन कइल लोग लेकिन एकहीं जुग में तुलसी आ कबीर दूनों जाने की राम में अन्तर रहे। कबीर के राम निर्गुण निराकार ब्रह्म के स्वरूप रहलें। ऊ कण-कण आ क्षण-क्षण विद्यमान रहलें, बाकिर कतहूँ दिखाई ना देवें। तुलसी के राम अवतारी पुरुष आ राजा दशरथ मईया कोशिला के पुत्र रहलें। ऊ चरित्र प्रधान नायक रहलें आ, उनकर वर्णन शील, समन्वय, **मर्यादा** आ लोक धर्म के प्रतीक की रूप में भइल बा। राम जब राजा बनलें तब की प्रसंग में तुलसीदास लिखले बानी कि-

सब उदार सब पर उपकारी। विप्र चरन सेवक नर-नारी
एक नारिव्रत रत सब आरी। ते मन वचन क्रम पतु हितकारी

अर्थात रामराज्य के सब स्त्री-पुरुष उदार रहे, ब्राह्मण के सम्मान होखे, महिला लोग पतिव्रता रहे। पशु-पक्षी में आपसी बैर-भाव ना रहे, सब लोग आपस में प्रेमपूर्वक जीवन यापन करत रहे। प्रकृति जन-जीवन के अनुकूल रहे।

कबीर आ तुलसी की बाद लोक संस्कृति में भी राम के चरित्र के वर्णन भइल बा। भगवान श्री राम आ वनवासी लोग के आपसी प्रेम आ आत्मीयता के वर्णन वाल्मीकि रामायण में भी कइल गइल बा। भगवान श्रीराम जनजातीय समाज की बीचे ओतने पूजनीय रहलें जेतना कि अन्य समाज में। विध्यांचल से नीलगिरी भू-भाग में आ आधुनिक सभ्यता से दूर रहे वाले जनजातीय समूह में राम के प्रति अगाध स्नेह देखल जाला, काहे कि चौदह बरिस के वनवास की अवधी में राम के सम्पर्क बहुत जगह पर आ बहुत तरह की वनवासी लोग से भइल आ ए दौरान श्रीराम वनवासी लोग के कल्याण खातिर बहुते काम कइलें। एही से से कहल गइल बा कि कबीर, तुलसी, आ लोक संस्कृति के राम के स्वरूप अपनी आप में बहुत महत्वपूर्ण बा। राम हर परिस्थिति, देशकाल आ वातावरण में श्रेष्ठ आ पूजनीय बाड़े।

आज आपन भारत देश प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कुशल नेतृत्व में 22 जनवरी 2024 के रामलला के जन्मस्थली अयोध्या में रामलला के प्राण-प्रतिष्ठा समारोह मनावता। ए उत्सव में प्रकाण्ड विद्वान, परम तपस्वी आ आम जनता की साथे-साथ झारखण्ड के जनजातीय सन्त लोग के भी बुलावा आइल बा।

राम युग पुरुष हवें ई युगों-युगों तक हमेशा पूजनीय बनल रहिहन। कवनों जाति-धर्म, आ समुदाय से कबो राम के बैर-भाव ना रहे। एही से राम सबकर आपन राम हवें।

परिचय-डॉ. यश्वी मिश्रा, पूर्व शोध छात्रा काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी। सहायक अध्यापिका, प्रयागराज।

आलेख

डॉ. जयकान्त सिंह 'जय'

विशिष्ट विवेचक विप्र जी आ उनकर 'राम काव्य परंपरा में मानस'

'राम काव्य परम्परा में मानस' भोजपुरी में आलोचना के पहिला मानक ग्रन्थ होखी, एह में कवनो सन्देह नइखे। मानस के मरम खाली अवधी लोग नइखे जानत भोजपुरियो लोग जानत बा, ई विप्र जी नीक से जना दिहलीं।

आधुनिक भोजपुरी भाषा आ साहित्य के उन्नयन में डॉ.कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' के योगदान अतुलनीय बा। उहाँ के साहित्य-संसार काफी विस्तार लेले बा। उहाँ के प्रकाशित मौलिक पुस्तकन में प्रमुख बा-वीर बाबू कुंवर सिंह (प्रबंध काव्य), वीर मंगल पाण्डेय (नाटक), किसान के बेटा (नाटक), मधुवन (काव्य संग्रह), हीरा के हार (बाल साहित्य), मोती के घवद आदि। एकरा अलावे उनकर अनगिनत कहानी, निबंध आ ललित निबंध भोजपुरी के अनेक पुस्तकन आ पत्र-पत्रिकन में पावल जाला।

बनारस के पत्र 'अग्रदूत' के सम्पादक विप्र जी बाबू फागू राय के संगे मिल के 'कृषक' पत्र निकालत रहलें। ऊ शिव पूजन सहाय, केदार मिश्र प्रभात, राहुल सांकृत्यायन, पांडेय नर्मदेश्वर सहाय, पं. गणेश चौबे, राम विचार पांडेय, दुगार्शंकर सिंह नाथ, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय आदि का संगे मिल के भोजपुरी लेखन आ आंदोलन के दिसाईं कई एक साहित्यिक कार्यक्रम सब के आयोजन करत रहलें। बाकिर जब कुछ भोजपुरी संस्थन आ उन्हन सब के मठाधीश लोग के महंथी आ मठाधीशी बढ़े लागल त आखिर में आजिज आके ऊ अपना के ओह गोल-गरोह से अलग करके भोजपुरी लेखन तक सीमित कर लिहलें। उनका प्रकाशित रचनन में आयुर्वेद विज्ञान, बक्सर महातीर्थ वर्णन, दुर्गा सप्तशती के भोजपुरी छंदानुवाद, शंकर विवाह (प्रबंध काव्य), राम काव्य परंपरा के मानस आ भारतीय संस्कृति में भगवान शिव आदि त प्रमुख बड़ले बा, उनका अप्रकाशितो रचनन के सूची कम लमहर नइखे; जइसे- नेता जी सुभाष, भुजा के भोरस, परमाथे फलाहार, भोजपुरी भारती, विश्वामित्र के गुफा से, होनहार बिरवान के लहलह पात, आपन अपने से, खैरातु खलीफा, भोजपुरी लोकगीत में सोहर, भगवान शंकर (महाकाव्य), हनुमन्नाटक, शांति पर्व (महाभारत) आ रामचरितमानस के भोजपुरी छंदानुवाद, कालिदास और तुलसीदास के मधु संचय आदि।

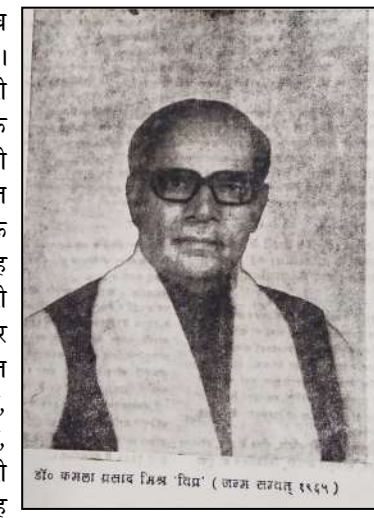
डॉ० कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' (जन्म सम्वत् १९६५)

विप्र जी के अनुसार ऊ 'राम काव्य परंपरा में मानस' जइसन गंभीर समीक्षा ग्रंथ के रचना कविवर केदार मिश्र प्रभात आ अंजोर पत्रिका के संपादक नर्मदेश्वर सहाय के सुझाव पर महाविद्यालय के छात्रन खातिर

कइलें। जवन उनका व्यापक अध्ययन-अनुशीलन के प्रमाण बा आ इनका 'विप्र' उपनाम भा उपाधि के चरितार्थ करऽता। जवन उनका अध्ययन-अनुशीलन आ आचरण के देख के उनका के उनकर गुरुदेव डॉ. सम्पूणार्नंद लिहले रहलें।

मिश्र जी के अनुसार गुरुवर डॉ सम्पूणार्नंद जी का उनका विप्रता के भान विंध्य पर्वत पर भइल रहे आ ऊ मिश्र जी के विप्र उपाधि दिहलें। विप्र एगो स्थिति ह आ ई कवनो वर्ण भा जाति भा कुल के व्यक्ति अर्जित कर सकेला। जे हर तरह के प्रपंच-पाखंड से विलग हो गइल होखे। जे काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ, मस्तर, अहंकार आदि से विलग होके विशेष बन जालें। उहे ज्ञानी-विज्ञानी विप्र कहल जालें। एही से गोस्वामी जी मानस में लिखेलें-'पूजिए बिप्र सकल गुन हीना।' हर गुन-अवगुन से विलग भइल सामान्य स्थिति ना होखे। अइसे शास्त्र कहेला-'वेद पाठी भवेत विप्रः।' भागवत कहता-'वेदा नारायणः साक्षात्स्वयम्भूरिति। (६.१.४०)। कहे के मतलब कि जेकर वेद अर्थात प्रगतिशील ज्ञान परम्परा में पइठ होखे। जेकरा सांस-सांस से वेद के ध्वनि निकले। वेद कहेला कि तूं ही ब्रह्म हव। तत्व हव। स्व आत्मा हव। आनंद हव। विप्र गुनातीत हो जालें। तीनों गुन से ऊपर उठ जालें। राग-द्वेष से विलग हो जालें। उहे पूज्य होलें आ जदि वेद के जानकार होइयो जे एह अवस्था के ना पा सके अउर अपना छूद्र स्वार्थ खातिर समय-समाज का हित के नजरअंदाज करे ऊ पूजनीय ना हो सकेला। ऊ वेद के ज्ञाता होइयो के विप्र के समान पूज्य ना हो सके। संस्कार पाके हर शूद्र द्विज, ब्रह्म के ज्ञाता होके ब्राह्मण, क्षात्र धर्म अपना के क्षत्रिय आ लोक कल्याणकारी व्यवसायी होके वैश्य हो सकेला बाकिर ऊ विप्र के स्थिति ना पा सके। जइसे विप्र मनुष्य के सबसे श्रेष्ठ स्थिति ह ओइसहीं शूद्र सबसे सबसे निम्न स्थिति। ई स्थिति में कवनो कुल-जाति के व्यक्ति पहुँच सकऽता। एही से मानस के अरण्य काण्ड में तुलसीदास जी दूवार्सा ऋषि के संदर्भ में कहत लिखलें-'पूजिए बिप्र सकल गुन हीना। सूद्र न गुन गन बेद प्रबीना।।'

मानस में तुलसीदास जी ब्राह्मण वर्ण से इतर कुल में जनमल ऋषि अगस्त्य, अत्रि, बाल्मीकि, जाबालिक, बामदेव, विश्वामित्र आदि खातिर मान सहित सरधा से विप्र सब्द के प्रयोग कइले बाड़न ; जइसे -

भील जाति करनी कुटिल, धर्म सुना नहीं कान।
सदगुरु के कारन मिला, बिप्र रूप सम्मान।।

भोजपुरी का एह पहिले समीक्षा ग्रंथ के रचके आ प्रकाशित कराके उहां का भोजपुरी भाषा, समाज आ संस्कृति के पताका वैश्विक स्तर पर फहरवले-लहरवले बानी। विजयानंद तिवारी जी का संपादन में प्रकाशित भोजपुरी पत्रिका 'जगरम' के अंक-6 अगस्त-1995 के डा. कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' विशेषांक में कई विद्वान लोग से विप्र जी का व्यक्तित्व आ कृतित्व पर विस्तार से लिखवावल बा। एकरा बावजूद अबहीं ले भोजपुरी का एह उन्नायक पर ढंग से शोधकार्य नइखे भइल।

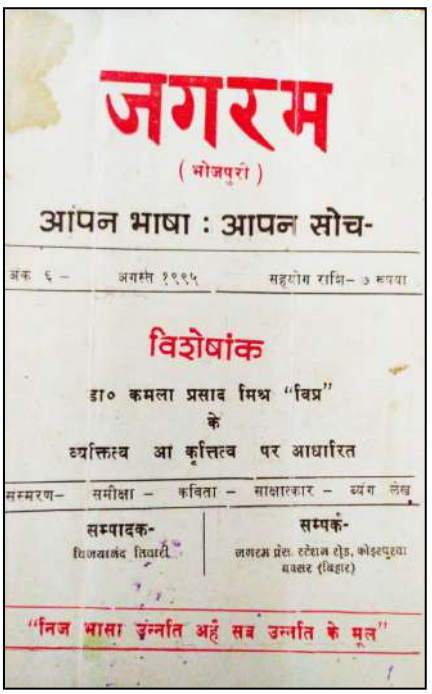
जगरम
(भोजपुरी)
आपन भाषा : आपन सोच-
अंक ६ - अगस्त १९९५ सहयोग राशि- ३ रुपया
विशेषांक
डा० कमला प्रसाद मिश्र "विप्र"
के
व्यक्तित्व आ कृतित्व पर आधारित
सम्मरण- समीक्षा - कविता - साक्षात्कार - व्यंग लेख
सम्पादक-
विजयानंद तिवारी
सम्पर्क-
जगरम प्रेस, स्टेशन रोड, कोइलपुरवा
बक्सर (बिहार)
"निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति के मूल"

चाहे
'मुनि कहूं राम दंडवत कीन्हा।आसीर्वाद बिप्रवर दीन्हा।।'
चाहे
'नाहीं जन्म देगी मोही साईं। बिप्र पढ़ावत पुत्र की नाईं।।'
चाहे
'जहँ तहँ बिप्र बेदधुनि करहीं। बंदी बिरिदावलि उच्चरहीं।।'
आदि आदि।

डॉ. कमला प्रसाद मिश्र विप्र जी त मानस के अगड़धत विद्वान रहले रहीं। उनका देश-दुनिया के हर भासा में लिखल रामकाव्य परम्परा के ज्ञान रहे। जवना के जानकारी उनका कालजयी समीक्षात्मक कृति 'राम काव्य परम्परा में मानस' के अनुशीलन से होता। विप्र जी का एह महान ग्रन्थ के पढ़ला के बाद विप्र जी के अगाध अध्ययन-अनुसंधान आ स्तरीय समीक्षा शैली के त बोध होते बा एकरा संगे-संगे भोजपुरी भासा के अभिव्यंजनो शक्ति के भान हो जाता।

'रचि महेस निज मानस राखा' से लेके 'परम विचित्र एक ते एका' विषय सूची तक के छतिसो समीक्षात्मक आलेख के अध्ययन मिश्र जी का ज्ञान-विज्ञान भंडार आ अभिव्यक्ति क्षमता के बोधक बा। विप्र जी आदि में ही बानी आ ज्ञानी के मतारी सरस्वती के वंदना करत जवन वर मँगले बाड़न ऊ एह ग्रंथ के लेखन में फलवती नजर आव ता। ऊ माई से इसे माँगत बाड़न-

बाल्मीकि वाली माई पंतिया पढ़ाईं,
अपढ़ कबीर अस अच्छरि चिन्हाईं।
सूरदास अइसन अन्हपट हटाईं,
दास तुलसी के माई उकुति बताईं।।
विप्र के विनर माई, काई के छोड़ाईं
बुधिया विमल भाई शारदा बनाईं।।

अद्भुत बा विप्र जी के विमल ज्ञान, बुद्धि आ विवेक। एक ओर त ऊ आपना कथ्य के सिरी गनेस तुलसी के चउपाई से करत बाड़न-'कवि विवेक एक नहि मोरे' आ अंत में एह समीक्षात्मक ग्रंथ लिखे खातिर प्रेरित करेवाला मित्रन के प्रति आभार जतावत निराभिमानी विप्रता के स्थिति दरसावत लिखत बाड़न-

जगत गुरु भारत धन्य, धन्य कथाकारन के
धन्य भोजपुरी, धन्य भोजपुर धाम के।
राम का सनेहिन से पवलीं जे राम तत्व,
सादर समर्पित ई 'राम काव्य' राम के।।

विप्र जी का एह पांतियन के मोताबिक उनका वैश्विक राम काव्य परम्परा के समहर सेसर ज्ञान सत्संग से ही प्राप्त भइल बा। एकरे के मानस में तुलसीदास जी कहलें- 'सुनि आचरज करें जनि कोई, सत्संगत महिमा नहीं गोई।।' आ 'बिनु सत्संग बिबेक न होई । राम कृपा बिनु सुलभ ना सोई।।'

एही से 'रामायन संत कोटि अपारा' के परम्परा में मानस के मरमी विद्वान विप्र जी एह पोथी के आकार साकार कर पवलें।

'राम काव्य परम्परा' मतलब ओह कवि-महाकवि लोग के काव्य-महाकाव्य जवन कवनो ना कवनो रूप से राम चरित्र से जुड़ल होखे। आदि कवि बाल्मीकिकृत 'रामायण' आन समस्त राम काव्य कृतियन के मूल स्त्रोत मानल जाला। राम काव्य परम्परा के तीन मुख्य पाद गिनावल-बतावल बा-
'दक्षिणात्य, गौड़ीय आ पश्चिमोत्तरी। जवना के वेद, उपनिषद, पुराण, बौद्ध जातक कथा, जैन ग्रंथ आदि में विविध भाँति से रामकथा के उल्लेख बा। जवना के चर्चा विप्र जी अपना एह समीक्षा ग्रंथ में विस्तार से कइले बाड़न।

श्री सम्प्रदाय के रंगनाथ मुनि, राम मिश्र, यमुनाचार्य, रामानुजाचार्य आदि, ब्रह्म सम्प्रदाय के मध्वाचार्य, के अलावे विमल सूरि के पउमचरियम, गुणभद्र के उत्तर पुराण, भुवनतुंग के सियारामचरितम, कालिदास के रघुवंशम, भवभूति के उत्तर रामचरित, महावीर चरित, कुमार दास के जानकी हरण, जयदेव के प्रसन्न राघव, राजशेखर के बाद रामायण आदि से लेके तुलसीदास के मानस तक के प्रायः अध्ययन के उपरान्त मानस के स्थान तर्कसंगत ढ़ंग से ऊपर स्थापित कइल विप्र जी जइसन विभूतिये का विवेक-बेंवत के बात बा। शक्ति, शील, सौन्दर्य, शौर्य आदि गुनन से

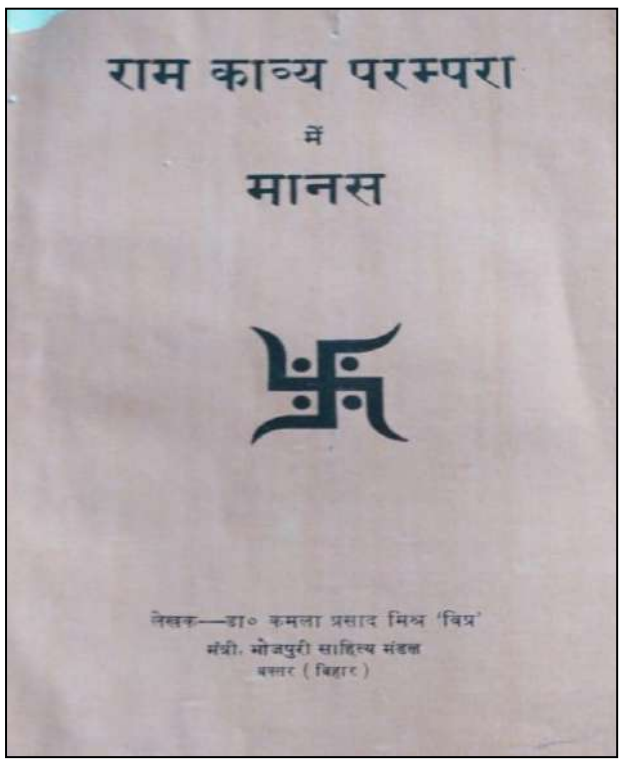

सम्पन्न ज्ञान, कर्म आ भक्ति के बीच समन्वित अनुकरणीय महानायक मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के जीवन धर्म-कर्तव्य आ नैतिक जीवन मूल्य के प्रत्यक्ष प्रतीक आ विभिन्न मतन का बीच के भेद-विवाद मिटाके "मानस" राम काव्य परम्परा के सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य बन गइल बा। जवना के सम्यक सांगोपांग समीक्षा अपना मातृभाषा भोजपुरी में करके विप्र जी बहुत पुनीत काम कइले बानी।

भोजपुरी का एह पहिले समीक्षा ग्रंथ के रचके आ प्रकाशित कराके उहां का भोजपुरी भाषा, समाज आ संस्कृति के पताका वैश्विक स्तर पर फहरवले-लहरवले बानी। विजयानंद तिवारी जी का संपादन में प्रकाशित भोजपुरी पत्रिका 'जगरम' के अंक-6 अगस्त-1995 के डा. कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' विशेषांक में कई विद्वान लोग से विप्र जी का व्यक्तित्व आ कृतित्व पर विस्तार से लिखवावल बा। एकरा बावजूद अबहीं ले भोजपुरी का एह उन्नायक पर ढंग से शोधकार्य नइखे भइल। विप्र जी के समीक्षा ग्रंथ 'राम काव्य परम्परा में मानस' पर आपन मंतव्य देत मुक्तेश्वर तिवारी बेसुध जी ठीके कहले बानी- 'राम काव्य परम्परा में मानस' भोजपुरी में आलोचना के पहिला मानक ग्रन्थ होखी, एह में कवनो सन्देह नइखे। मानस के मरम खाली अवधी लोग नइखे जानत भोजपुरियो लोग जानत बा, ई विप्र जी नीक से जना दिहलीं।'

गुरुदेव डॉ. जितराम पाठक जी के कहनाम अक्षरशः सत्य बा कि 'भोजपुरी भाषा की समर्थता को डॉ. विप्र ने इस रचना के माध्यम से उकेरा है और सिद्ध कर दिया है कि रचनात्मक साहित्य के अलावे आलोचनात्मक साहित्य में भी भोजपुरी पूरी तरह सक्षम एवं समर्थ।

परिचय- प्रो.(डॉ.) जयकान्त सिंह 'जय' विभागाध्यक्ष, भोजपुरी विभाग, लंगट सिंह कालेज, बी. आर. अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार) राष्ट्रीय महामंत्री, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना (बिहार)

आलेख

विनय बिहारी सिंह

रामजी से प्रेम

हमनी के रामजी का ओर एक डेग चलब जा त रामजी हमनी का ओर दस डेग चलिहें। परमहंस योगानंद कहले बाड़ें कि भगवान का लगे सब कुछ बा। खाली एगो चीज नइखे। ऊ का? त ऊ बा ...

संत-महात्मा लोग कहि गइल बा कि भगवान राम के हमनी के जतने आदर आ प्रेम करब जा, ओकरा से कई गुना हमनी का लगे सुरक्षा, समृद्धि, प्रेम, आ सुख के अंबार लागि जाई। काहें से कि हमनी के रामजी का ओर एक डेग चलब जा त रामजी हमनी का ओर दस डेग चलिहें। परमहंस योगानंद कहले बाड़ें कि भगवान का लगे सब कुछ बा। खाली एगो चीज नइखे। ऊ का? त ऊ बा- हमनी के प्रेम। मनुष्य के प्रेम। लोग दुनिया में एतना भुलाइल बा कि भगवान के प्रेम करेके समय नइखे। लइका के प्रेम करेके समय बा, पत्नी के प्रेम करेके समय बा, प्रेमी भा प्रेमिका के प्रेम करेके समय बा, बाकिर भगवान के प्रेम करेके समय नइखे आ इच्छा भी नइखे। एगो संत कहिए गइल बाड़े-

दुःख में सुमिरन सब करे सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे दुःख काहे को होय॥

सहिए बात बा। जब दुख परेला तबे हमनी का रामजी के याद करेनी जा। त भगवान जदि कृपालु ना रहिते, त ऊहो कहि दीते कि तूं त सुख में हमरा के याद ना कइलऽ। संकेता परल बाड़ऽ त मन पारतारऽ। त भोगऽ। हम तोहार मदद ना करब। भगवान ई त कहिए सकत रहले ह। बाकिर ना, भगवान कृपालु हउवन। हमनी का कतनो भगवान के स्वार्थ खातिर याद करीं जा, ऊ हमेशा हमनी के मदद करे खातिर तैयार रहेलें। काहें से कि हमनी का उनकर संतान हईं जा। केहू माता-पिता अपना संतान के दुख में देखि के कइसे छोड़ दी। ऊ त चाही कि कइसे अपना संतान के राहत पहुंचाई। सुख से राखीं। बाकिर हमनी का अपना कर्म से बाज नइखीं जा आवत। चोरी, बेईमानी, दुष्टता, धोखा आ झूठ के आश्रय लेके जे चली ओकरा के भगवान कतना मदद करिहें? जब केहू बार-बार धोखा देता, चोरी करता, चरित्रहीनता करता त भगवान बचावत-बचावत उबिया जालें। कहिहें कि ई संसार हम कर्मप्रधान बनवले बानी। जे जइसन करी, ओइसन भोगी।

बाकिर सब केहू चोर, बेईमान, दुष्ट भा धोखाबाज नइखे। झूठा नइखे। ईमानदारी से जीए वाला आ भगवान के प्रेम करे वाला भी बाड़ें। हं, अइसना लोगन के संख्या कम बा। बाकिर एह तरह के लोग भी संसार में बाड़ें। दुख के पहाड़ आ जाउ, तबो भगवान के पुकार करतारे। भगवान के प्रेम करतारे। प्रेम से राम-राम जपतारे। अइसन लोग भले देखे में कष्ट झेलता, बाकिर ओकरा पर भगवान के कृपा हो जाता आ- "सर्वदुख समाप्ति, सर्वसुख प्राप्ति" हो जाता। त सहिए कहल बा-

जा पर कृपा राम की होई, ता पर कृपा करहिं सब कोई।
जिनके कपट, दंभ नहिं माया, तिनके हृदय बसहु रघुराया।

त दोष हमनिए के बा। भगवान त कृपा बरिसावे खातिर तैयार बाड़ें। बाकिर हमनी के इंद्रिय आसक्ति में एतना मशगूल बानी जा। बाहरी दुनिया में एतना मशगूल बानी जा कि भगवान के प्रेम कइल कठिन लागता। संत लोग कहि गइल बा लोग कि रामजी के पिता दशरथ के अर्थ ह-जे दस इंद्रियन के रथ कंट्रोल करत होखे। यानी पांच गो कर्मेंद्रिय आ पांच गो ज्ञानेंद्रिय के अपना कंट्रोल में राखे वाला राजा दशरथ रामजी के पिता रहले। ईहो कहल बा कि रामजी अपना पिता दशरथ जी से भी आगे रहले। एही से ऊ भगवान रहले। रामजी प्रेम, करुणा आ समृद्धि देबे वाला हउवन। रक्षा करे वाला हउवन। एही से भजन बनल बा-

राम राघव, राम राघव, राम राघव रक्ष माम।
कृष्ण केशव, कृष्ण केशव, कृष्ण केशव त्राहि माम।।

साधु-महात्मा लोग कहि गइल बा कि जे दिल से रामजी के प्रेम क दी, ओकर कुल दुख खतम हो जाई आ ओकरा नियर सुखी केहू ना रही। रामजी से प्रेम करे वाला कभी दुखी ना हो सकेला। कभी अकेला ना पड़ि सकेला, कभी संकेता ना पर सकेला, कभी अनाथ ना हो सकेला। ऊ हमेशा सुखी आ भाग्यशाली रही। जन्म-जन्मांतर तक ऊ सुख, प्रेम, आनंद आ समृद्धि से ओतप्रोत रही। ओकरा नियर सुखी केहू ना रही। त भगवान राम हमनी पर कृपा करसु, हमनी के रक्षा करसु आ हमनी के शांति आ समृद्ध करसु। ईहे कामना बा। ईहो कामना बा कि रामजी हमनी के देश के दुनिया में सबसे श्रेष्ठ बनावसु।

परिचय- टाइम्स ऑफ इंडिया आ इंडियन एक्सप्रेस समूह से लंबा समय तक जुड़ल वरिष्ठ पत्रकार, लेखक आ ज्योतिषाचार्य विनय बिहारी सिंह के बलिया जन्मभूमि ह आ कोलकाता कर्मभूमि।

आलेख

रविनंदन सिंह

भारतीय संस्कृति कऽ आदर्श स्वाभिमानः श्रीराम

भगवान श्रीकृष्ण, शिवजी अउर विष्णुजी भी भारतीय संस्कृति क अत्यंत लोकप्रिय देवता जरूर हउंवन, लेकिन अगर भारतीय संस्कृति क एगो प्रतीक-पुरुष चुनहीं के पड़ी त श्रीराम लला ही एकरा खातिर सर्वथा सुयोग्य पात्र दिखाई पड़त हउंवे। भारतीय संस्कृति में जवन उदात्त तत्त्व हउवे ऊ सब राम क चरित्र में दिखाई पड़त ह। भारतीय संस्कृति आपन उदात्त विचारधारा, सर्वधर्म समभाव अउर आपसी सौहार्द क खातिर ही जानल जाला। इहाँ आर्य अउर द्रविड़, वेदांत अउर तसव्वुफ, सूफीमत अउर संतमत सब आके आपस में घुलमिल जाला। हमार संस्कृति एतना उदार बाटे कि इहाँ हमार तोहार क भाव भी मिट जाला।

इ अध्ययन के आगे बढ़ाके फादर कामिल बुल्के श्रीराम क अस्तित्व पर गहन शोध कइले हउवन अउर पूरा दुनिया में रामायण से जुड़ल सैकड़न प्रतीकन क पहचान कइले हउवन। राम क बारे में एगो दूसर शोध चेन्नई क एगो गैरसरकारी संस्था 'भारत ज्ञान' भी कइले बा। ओकर भी इहे मानना हउवे कि राम ऐतिहासिक व्यक्ति हउवन, जेकर पर्याप्त प्रमाण बा अउर ओकरा अनुसार राम क जन्म 5114 ईस्वी पूर्व भइल रहल। वाल्मीकि रामायण में लिखल गइल नक्षत्रन क स्थिति क जब 'प्लेनेटेरियम' नामक सॉफ्टवेयर से गणना कइल गइल त ओहू से ओही तारीख क पता चलल। ई एगो अइसन सॉफ्टवेयर हउवे जवन आवे वाला सूर्य अउर चंद्र ग्रहण क भविष्यवाणी कर सकत ह।

श्रीरामचन्द्र जी भारतीय संस्कृति क सर्वोच्च प्रतीक पुरुष हउंवन। भगवान श्रीकृष्ण, शिवजी अउर विष्णुजी भी भारतीय संस्कृति क अत्यंत लोकप्रिय देवता जरूर हउंवन, लेकिन अगर भारतीय संस्कृति क एगो प्रतीक-पुरुष चुनहीं के पड़ी त श्रीराम लला ही एकरा खातिर सर्वथा सुयोग्य पात्र दिखाई पड़त हउंवे। भारतीय संस्कृति में जवन उदात्त तत्त्व हउवे ऊ सब राम क चरित्र में दिखाई पड़त ह। भारतीय संस्कृति आपन उदात्त विचारधारा, सर्वधर्म समभाव अउर आपसी सौहार्द क खातिर ही जानल जाला। इहाँ आर्य अउर द्रविड़, वेदांत अउर तसव्वुफ, सूफीमत अउर संतमत सब आके आपस में घुलमिल जाला। हमार संस्कृति एतना उदार बाटे कि इहाँ हमार तोहार क भाव भी मिट जाला। महोपनिषद में एही ओर संकेत कइल गइल बा कि-

अयं निजः परोवेत्ति, गणना लघुचेतसाम
उदरचरितानां तु बसुधैव कुटुम्बकम।।

सच कहल जाय त भारतीय संस्कृति क आदर्श पुरुषोत्तम श्रीरामे हंउए। जंहवां अउर वैदिक देवता लोग परिस्थितिवश कई अवसर पर **मर्यादा** क उल्लंघन करत दिखाई देलन, उंहवां श्रीराम हर परिस्थिति में **मर्यादा** क साथ खड़ा हंउवन। भारत क संस्कृति जवन मूल्यन खातिर जानल जाला, ऊ सब सांस्कृतिक मूल्य श्रीराम क व्यक्तित्व में घुलमिल गइल ह।

उनका जीवन में झांक के देखल जाय त सब उदात्त मूल्य उनका जीवन में दिखाई दे रहल बा। ऊ वैभव क जगह वैराग्य के वरीयता देत हउंवन, साधन क जगह साधना के महत्त्व देत हउंवन अउर ग्रहण क जगह त्याग क चयन करत हउंवन। परिग्रह क विपरीत ऊ अपरिग्रह के साथ खड़ा हउंवन। आपन राज सिंहासन के ऊ तिनका क तरह छोड़ देहलन, मयार्दा खातिर वन-वन भटकत रहलन, निषादराज के गला लगवलन, शबरी क जूठा बेर खइलन, वानर, भालू सबके आपन मित्र बनवलन। विभीषण जयसन शरणागत के शरण देहलन, श्रीलंका के जइसन साम्राज्य जीत के भी त्याग देहलन।

राम ऐतिहासिक हउंवन अथवा काल्पनिक, एह प्रश्न पर अब तक बहुत बहस हो चुकल बा। एक पक्ष मानत ह कि राम ऐतिहासिक व्यक्ति हउवन, जबकि दूसर पक्ष क मान्यता ह कि राम एगो काल्पनिक अउर काव्यात्मक चरित्र हउंवन। पहिला पक्ष क तर्क ह कि राम ऐतिहासिक चरित्र हउंवन आ उनका समय में बनल रामसेतु आदमी क बनावल पुल हउए। अमेरिका क एगो साइंस चैनल हउए, जे भू-गर्भ वैज्ञानिकन, पुरातत्वविदन क अध्ययन रिपोर्ट क आधार पर कहले बा कि भारत अउर श्रीलंका क बीच में रामसेतु क जवन संकेत मिलत बा ऊ मानव निर्मित हउवे। उपग्रह से प्राप्त चित्रन क अध्ययन कइला क बाद ई निष्कर्ष निकलल कि भारत-श्रीलंका क बीच 30 मील क क्षेत्र में बालू क चट्टान ह, जवन पूरी तरह से प्राकृतिक बा, लेकिन ओपर रखल गइल पत्थर कहीं अउर से लाइल

गइल लागत बा। एगो पुरातत्वविद चेल्सीरोज अउर वैज्ञानिक ऐलन लेस्टर क दावा बा कि ई चट्टान करीब सात हजार वर्ष पुरानी हउवे जबकि एपर मौजूद पत्थर करीब चार-पांच हजार वर्ष पुरान ह। ब्रिटिश सरकार क 132 बरीस पुरान दस्तावेज (मैनुअल आफ दी एडमिनिस्ट्रेशन आफ दी मद्रास प्रेसीडेंसी-संस्करण 2 क पृष्ठ क्रमांक 158) क विवरण बतावत ह कि कुछ साल पहिले तक समुद्र क ई हिस्सा उथला रहे । लोग एके पैदले चलके पार कर लेत रहलन। जब एकर निर्माण कइल गइल होई तब ई समुद्र क ऊपरे रहल होई अउर जइसे-जइसे मौसम में बदलाव होत गइल आ समुंदर क तल बढ़त गइल तब रामसेतु क बहुत बड़ हिस्सा ओमे डूब गइल होई। एगो अध्ययन ई बतावत ह कि ज्वालामुखी से निकले वाला एक तरह क लावा 'प्यूमाइस स्टोन' स्पॉन्ज क जइसन काम करेला अउर पानी पर तइरल करेला, काहे कि ओमें अनगिनत छिद्र होला। अइसन अनेक पत्थर रामेश्वरम क तट पर भी मिलल हउवन। एही सब कारन से राम क ऐतिहासिकता क अवधारणा के बहुत बल मिलल ह।

इ अध्ययन के आगे बढ़ाके फादर कामिल बुल्के श्रीराम क अस्तित्व पर गहन शोध कइले हउवन अउर पूरा दुनिया में रामायण से जुड़ल सैकड़न प्रतीकन क पहचान कइले हउवन। राम क बारे में एगो दूसर शोध चेन्नई क एगो गैरसरकारी संस्था 'भारत ज्ञान'

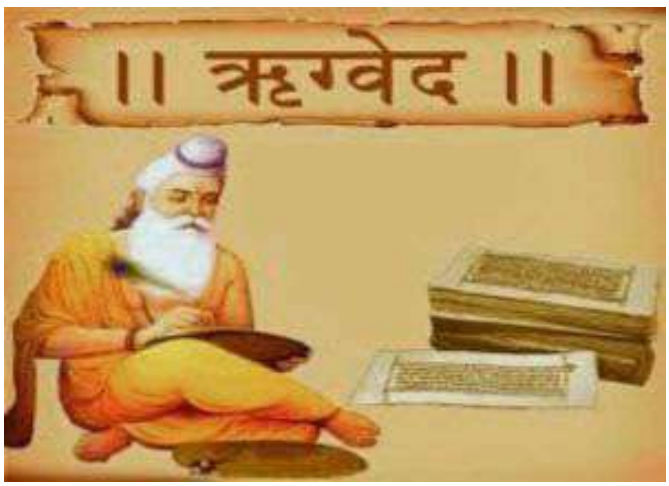

भी कइले बा। ओकर भी इहे मानना हउवे कि राम ऐतिहासिक व्यक्ति हउवन, जेकर पर्याप्त प्रमाण बा अउर ओकरा अनुसार राम क जन्म 5114 ईस्वी पूर्व भइल रहल। वाल्मीकि रामायण में लिखल गइल नक्षत्रन क स्थिति क जब 'प्लेनेटेरियम' नामक सॉफ्टवेयर से गणना कइल गइल त ओहू से ओही तारीख क पता चलल। ई एगो अइसन सॉफ्टवेयर हउवे जवन आवे वाला सूर्य अउर चंद्र ग्रहण क भविष्यवाणी कर सकत ह।

ई अवधारणा क विपरीत बहुत विद्वान, चिंतक अउर इतिहासकार मानेलन कि राम खाली एगो पुराण क या काव्य क चरित्र हउवन, कवनो कवि क सुंदर कल्पना हउवन। उनकर कहनाम ह कि राम पर आधारित जेतना ग्रंथ बानS, उनकर अंतर्कथा में बहुत अंतर हउवे। सब कवि लोग आपन आपन मति क अनुसार श्रीराम क ई कहनी गढ़ले हउवन। ई सब कथा-कहनी कोरा कल्पना क

उपज हउवे। जवन मौलिक कल्पना वाल्मीकि कइले हउवन, ओही कल्पना के दूसर कवि लोग हेर फेर क साथ आगे बढ़वले हउवे।

इहाँ हमार समझ ह कि राम चाहे ऐतिहासिक पात्र होखS चाहे काल्पनिक चरित्र, ऊ हमार संस्कृति क आदर्श प्रतीक हउवन। आज ऊ हमार जीवन क अनिवार्य अंग हउवन, 'लार्जर दैन लाइफ' हउवन। अगर कवनो विदेशी मनई के समझावे के होई कि भारतीय संस्कृति का हउवे त ओके राम क जीवनचरित बता देहला भर से ऊ भारतीय संस्कृति क समझ विकसित कर सकत ह।
वैदिक साहित्य में राम क नाम कई जगहन पर दिखाई त जरूर देला पर ऊ सब जगहन क राम वाल्मीकि क राम से अलग हउवन। फादर कामिल बुल्के क अनुसार -'ऋग्वेद में 'राम' क उल्लेख एक बार भइल ह। उनकर नाम अन्य प्रतापी यजमान लोगन क साथ प्रयुक्त भइला के कारण ई प्रतीत होला कि ऊ (राम) कवनो दुसरे राजा भइल होंइहें:-

प्रतहु:शीमे पृथवाने वेने प्र रामे वोचमसुरे मघवस्तु ।
ये युक्त्वाय पञ्च शतास्मयु पथा विश्राव्येषाम ॥

(ऋग्वेद १०, ९३, १४) अर्थात हम दु:शीम, पृथवान, वैन और राम इन यजमानन क खातिर ई (सूक्त) गउले हईं। ई लोगन पाँच सौ घोड़ा अथवा रथ जोतले ह जवना कारण उनकर अनुग्रह हमरा ऊपर चारों ओर फैल गइल हउवे।"

एही तरह तैत्तिरीय आरण्यक (5-8-13) में राम क उल्लेख पुत्र क अर्थ में भइल ह। ऐतरेय ब्राह्मण (7-27-34) में एगो राम

मागवेय क चर्चा आइल हउवे जवन एगो ब्राह्मण रहलन अउर जनमेजय क समकालीन रहलन। शतपथ ब्राह्मण (4-6-1-7) में राम औपतस्विनी अउर जैमिनीय ब्राह्मण (3-7-3-2) में राम नानुजातेय नामक दू ब्राह्मण आचार्यन क उल्लेख आइल ह। ई नाम अलग-अलग व्यक्तिन खातिर आइल ह। एसे ई त सिद्ध हो जाला कि राम एगो राजा क रूप में ऋग्वेद क समय से ही मौजूद रहलन। संभवतः ऊ बहुत लोकप्रिय और सुयोग्य राजा रहल होइहें एही खातिर वाल्मीकि उनका के आपन काव्यनायक बनवले हउवन।

एही तरह राजा क रूप में दशरथ क नाम भी ऋग्वेद (1-126-4) में एगो दानस्तुति में दूसरे राजा लोगन क साथ आइल ह। ऋग्वेद में एक बार इक्ष्वाकु क नाम भी एगो राजा क रूप में आइल हउवे (10-60-4)। इक्ष्वाकु क नाम अथर्ववेद में भी एक जगह पर आइल ह जवन एगो वीर पुरुष क रूप में हउवे।

वैदिक साहित्य में रामकथा क पात्रन में सबसे ज्यादा उल्लेख सीता क भइल बा। कुछ स्थानन पर खेत में हल क निशान के खातिर, कुछ स्थलन में कृषि क अधिष्ठात्री देवी क खातिर, कहीं सीता सूर्यपुत्री क रूप में, कहीं सीता सावित्री क रूप में उल्लेख में आइल हई। सीता क सर्वाधिक उल्लेख कृषि क अधिष्ठात्री देवी क खातिर आइल ह, इ अर्थ में सबसे पहिले ऋग्वेद (4-4-7) में उल्लेख आइल ह। इहाँ सीता धरती क उर्वरा शक्ति क प्रतीक हई। यजुर्वेद (4-2-5) अउर अथर्ववेद (1-12-17) में भी एही रूप में सीता क उल्लेख आइल ह। एसे ई स्पष्ट हो गइल ह कि रामकथा क महत्त्वपूर्ण पात्रन क संज्ञा वाल्मीकि रामायण क पहिले से ही अस्तित्व में रहल ह, जिनके जोड़के ऋषि वाल्मीकि रामकथा क रचना कइले हउवन।

वाल्मीकि रामायण के वर्तमान प्रचलित स्वरूप में आवे में भी कई सदियन लग गइल होई। ई बात ओकर पाठान्तर आ कथान्तर क आधार पर कहल जा सकत ह। प्रचलित रामायण क तीन पाठ मिलेला-दाक्षिणात्य पाठ, गौड़ीय पाठ आ पश्चिमोत्तरीय पाठ। इ तीन पाठन में अनेक श्लोक अइसन हउवन जवन दू अन्य पाठन में ना मिलेलन। एमें वाल्मीकि रचित आदि रामायण ग्रंथ लंबा समय तक प्रचलित रहल होई। जवन लोग एकर गायन करत रहन उनके कुशीलव (कुश के आधार पर) कहल जात रहल, उनकर भी एगो लंबा परंपरा रहल होई। कुशीलव लोगन क गायन क जब दूसरे प्रदेशन में वाचिक विस्तार भइल, तबे उनका में पाठभेद पैदा भइल होई। लिपिबद्ध करत समय उनका में कई पाठान्तर भी आ गइल होई। समय क साथ वाल्मीकि द्वारा लिखल गइल मूल रामायण में पाठान्तर क साथ ही परिवर्द्धन भी भइल अउर एकर वर्तमान विशद स्वरूप प्राप्त भइल। कई विद्वानन क ई मान्यता ह कि मूल रामायण में अयोध्याकांड से युद्धकाण्ड तक क सामग्री ही रहल, बालकांड तथा उत्तरकांड बाद क प्रक्षिप्त अंश हउवे। युद्धकाण्ड क अंत में जवन फलश्रुति देहल गइल ह, ऊंहवे मूल ग्रंथ समाप्त हो गइल रहे। एही तर्क के प्रक्षिप्त अंश जोड़ला क आधार बनावल गइल ह।

रामायण में बौद्ध आ जैन धर्म अथवा बुद्ध-महावीर क कवनो चर्चा ना आइल हउवे। मगध नरेश अजातशत्रु क उत्तराधिकारी उदयिन

द्वारा पाँचवी शताब्दी ई. पू. में स्थापित पाटलिपुत्र नगर क रामायण में कहीं उल्लेख ना आइल हउवे। एसे एतना त कहल जा सकत ह कि रामायण बौद्ध अउर जैन साहित्य क पहिले क रचना ह अर्थात 6ठवीं सदी ई.पू. क पहिले रचल गइल होई। एगो मत ई ह कि रामायण क रचना में कई वाल्मीकि क हाथ ह अउर ई रचना तीसरी सदी ई.पू. से तीसरी सदी ई. तक भइल रहे।

बहुत बाद में बौद्ध अउर जैन दूनों धर्मन क अनुयायी लोगन द्वारा रामायण से प्रभाव ग्रहण करके आपन-आपन ग्रंथन क रचना कइल गइल ह। कई बौद्ध अउर जैन रामायण लिखल गइल अउर सबके कथानक में हेर फेर भी भइल। अनेक संस्कृत क विद्वान जइसे अश्वघोष, कालिदास, भारवि आदि रामायण से प्रभाव ग्रहण करके आपन ग्रंथ क रचना कइले हउवन।

सही कहल जाय त श्रीराम भारतीय संस्कृति क आदर्श पुरुष हउवन अउर भारतीय संस्कृति क सबसे उदात्त चरित्र हउवन। संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आ भारत क अन्य विभिन्न भाषा में अनेक रामकथा हइं अउर ऊ कथावन में आपन अलग-अलग राम हउवन। सब लोग आपन-आपन राम क अलग-अलग चित्र बनवले ह। लेकिन ऊ सबमें एगो बात समान हउवे अउर ऊ ह राम क उदात्त चेतना। मनुस्मृति में जवन धर्म क दस लक्षण बतावल गइल ह, ऊ सब लक्षण राम में विद्यमान हउवे। ऊ दस लक्षण ई ह-

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेषयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्य मक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम।।

अर्थात धृति (धैर्य), क्षमा (क्षमा करऽ या क्षमा माँगे में संकोच मत करऽ), दम (संयम से धर्म में लगल रहऽ), अस्तेय (चोरी मत करऽ), शौच (भीतर अउर बाहर क पवित्रता), इन्द्रियनिग्रह (इन्द्रियन के हमेशा धर्माचरण में लगावऽ), धी (सत्कर्मन में लगल बुद्धि), विद्या (सत्य ज्ञान), सत्यम (हमेशा सत्य क आचरण करऽ) अउर अक्रोध (क्रोध मत करऽ)। ई धर्म क दस लक्षण हउवन। ई सब लक्षण मनुष्य भइला क भी लक्षण हउवन।

राम क चरित्र और व्यक्तित्व में धर्म क उक्त सब लक्षण विद्यमान हउवे। उनका जीवन में इ सद्गुणन क परिचय अनेक शास्त्रन में, कई स्थलन पर मिलत ह। वाल्मीकि रामायण क बालकांड प्रथम सर्ग क श्लोक 2, 3 एवं 4 में ऋषि वाल्मीकि नारद मुनि से पूछत हउवन कि-

कोन्वस्मिन साम्प्रतं लोके गुणवान कश्चवीर्यवान।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः।। (2)
चारित्रेण च को युक्तः सर्वभूतेषु को हितः।
विद्वान कः कः समर्थश्च कश्चैकप्रियदर्शनः।। 3।।
आत्मवान को जितक्रोधो द्युतिमान कोऽनसूयकः।
कस्य बिभ्यति देवाश्च जातरोषस्य संयुगे।।4।।

ए वर्णन में मनुष्य के मनुष्य बनावे वाला कई सद्गुणन क बात आवत ह, जइसे गुणवान, वीर्यवान, धर्मज्ञ, कृतज्ञता माने वाला, सत्यवादी, दृढ़प्रतिज्ञ, सदाचारी, समस्त प्राणियन क हितसाधक, सामर्थ्यशाली, प्रियदर्शन, मन पर अधिकार रखे वाला, क्रोध के जीते वाला, कांतिमान अउर केहू क निंदा ना करे वाला। ई सद्गुणन के धारण करे वाला व्यक्ति क नाम जब वाल्मीकि पूछलन त नारद मुनि ऊ व्यक्ति क खुलासा करके ईक्ष्वाकुवंशी श्रीराम क नाम लेहलन आ इहो बतवलन कि ई नाम जन जन में व्याप्त हउवे। ऊ श्लोक ई ह-

इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः।
नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान धृतिमान वशी।। 8।।
बुद्धिमान नीतिमान वाग्मी श्रीमाञ्छत्रुनिबर्हणः।
विपुलांसो महाबाहुः कम्बुग्रीवो महाहनुः ।। 9।।

नारद इहाँ श्रीराम क कुछ अन्य सद्गुणन क बखान करत हउवन, जइसे मन के वश में रखे वाला, महाबलशाली, कांतिवान, धैर्यवान, जितेंद्रिय आदि।

अब सवाल ई खड़ा होत ह कि एतना सारा सद्गुणन वाला, अइसन आदर्शवादी व्यक्ति भइल एह संसार में संभव ह का? का राम कवनों ऐतिहासिक पुरुष हउवन? अथवा कवि क मात्र एक उदात्त कल्पना भर हउवन? हमरा विचार से ई सब प्रश्न बेमानी हउवे। हम ई समझत हईं कि राम ऐतिहासिक पात्र होंखऽ अथवा काल्पनिक चरित्र, ऊ हमार संस्कृति क प्रतीक पुरुष अवश्य हउवन, हमार जीवन क आदर्श हउवन, मयार्दा पुरुषोत्तम हउवन। प्रत्येक संस्कृति क खातिर ही नाहीं, बल्कि पूरा मानवता क खातिर अइसन आदर्श चरित्र त होखहिन के चाही। अइसन सांस्कृतिक प्रतीकन के देखके मनुष्य आपन लघुता के ठीक से समझ सकत ह अउर स्वयं क परिष्कार कर सकत ह। एही खातिर राम आज हमार जीवन क परम सत्य हउवन, मनुष्यता के खातिर आवश्यक आदर्श हउवन आ भारत क सर्वोच्च सांस्कृतिक प्रतीक हउवन, भारत क आदर्श स्वाभिमान हउवन।

परिचय- भाषा-साहित्य खातिर अनेक प्रतिष्ठित सम्मान से सम्मानित प्रयागराज के डॉ. रविनंदन सिंह 'सरस्वती' पत्रिका (इंडियन प्रेस, प्रयागराज) के सम्पादक, 'हिन्दुस्तानी' पत्रिका (हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयागराज) के पूर्व संपादक अउर हिंदी-भोजपुरी के दर्जनों पुस्तकन के प्रणेता हईं।

सियाराम पांडेय 'शांत'/ संजय सिंह

रामलीला सार्वदेशिक हो चुकल बा

आज रामलीला सार्वदेशिक हो चुकल बा। भारत के संगे-संगे मॉरीशस, नेपाल अउर इहां तक कि रूसो में रामलीला के मंचन होखे लागल। काशी, अयोध्या, चित्रकूट, प्रयाग, कानपुर, बिठूर के रामलीला त सैकड़न बरिस पुरान हो चुकल बा। एकरा पाछे मूल उद्देश्य भगवान राम के गुणानुवाद अउर उनका आचरण से कुछ बेहतर सीखल ही रहल बा।

भारते ना बलुक दुनिया में कई गो अइसन देश बा जहवां रामलीला के आयोजन हर बरिस होला। भारत त भगवान श्रीराम के आपन भूमि ह एह से इहां के जीवन लीला के गान बहुते स्वाभाविक बा। रामलीला में राम, सीता अउर लक्ष्मण के जीवन वृत्तांत के वर्णन कइल जाला। रामलीला के मंचन देश के विभिन्न क्षेत्र में होखेला। ई देश में अलग-अलग तरीके से मनावल जाला। बंगाल अउर मध्य भारत के अलावा दशहरा पर्व देश के अन्य राज्य में क्षेत्रीय विषमता के बादो एक समान उत्साह अउर शौक से मनावल जाला। उत्तरी भारत में रामलीला के उत्सव दस दिन तक चलत रहेला अउर अश्विन माह के दशमी के समाप्त होखेला, जवन दिन रावण, मेघनाद आ कुंभकर्ण के आकृति पुतला के रूप में जलावल जाला। पहिला रामलीला कब शुरू भइल? के करवलस, ई शोध के विषय हो सकत बा। बाकिर एतना त तय बा कि सबसे पहिला रामलीला भगवान राम के जन्मभूमि अयोध्या में ही आरंभ भइल रहे।

अइसन कहल जाला कि राम वनगमन के बाद अयोध्या के लोग चउदह बरिस ले भगवान राम के बाल लीला करत बितवले रहन। एकरा बाद के इतिहास के अगर छानबीन कइल जाव त रामलीला के आदि प्रवर्तक वाराणसी के कतुआपुर स्थित फुटहे हनुमान के निकट रहे वाला मेघा भगत रहन। अइसन कहाला कि भगवान राम उनका के सपना में दर्शन देके आदेश देले रहन कि ऊ राम जी के लीला सभ के मंचन करावस। एह सपना के बादे ऊ काशी में रामलीला शुरू करवलन। ओहिजा अधिकांश लोग के मत बा कि रामलीला के अभिनय परंपरा के प्रतिस्थापक गोस्वामी तुलसीदास जी बानी। उहें के प्रेरणा से अयोध्या आ काशी के तुलसी घाट प पहिला हाली रामलीला के आयोजन भइल रहे। आज रामलीला सार्वदेशिक हो चुकल बा। भारत के संगे-संगे मॉरीशस, नेपाल अउर इहां तक कि रूसो में रामलीला के मंचन होखे लागल। काशी, अयोध्या, चित्रकूट, प्रयाग, कानपुर, बिठूर के रामलीला त सैकड़न बरिस पुरान हो चुकल बा। एकरा पाछे मूल उद्देश्य भगवान राम के गुणानुवाद अउर उनका आचरण से कुछ बेहतर सीखल ही रहल बा।

राम आ उनकर लीला, लोकजीवन के एगो अंग हवे। इहे कारन ह कि देश के कवनो हिस्सा में जाईं, कवनो भाषा देखीं, राम सगरो बाड़ें अपना मर्यादा के साथे, अपना सनेस के साथे, सकारात्मक ऊर्जा के साथे। तबे नू राम के लीला आजो सगरो लोक के मनोरंजने नइखे करत बलुक प्रेरणा के स्रोत बनल बा।

बहरहाल, देश के अलग-अलग हिस्सा में रामलीला के अलग-अलग प्रकार बा। कर्नाटक में मंदिरन के प्रांगण में यक्षगान शैली में रामायण के विविध प्रसंगन के वर्णन होखेला। बाकिर ई प्रसंग उत्तर भारत के परंपरा से भिन्न होखेला। केरल में कथकली नृत्य-नाट्य शैली में रामकथा के आठ प्रसंगन के प्रदर्शन होला। पश्चिम बंगाल में अउर ओड़ीसा में जात्रा आ छऊ नृत्य के रूप में, गुजरात में भवाई नृत्य के रूप में अउर महाराष्ट्र में ललित स्वरूप में राम कथा के पारंपरिक प्रदर्शन होखेला। थाईलैंड, मलेशिया, कम्बोडिया, बर्मा, लाओस आदि में रामकथा के खूब प्रचार बा। थाईलैंड अउर कम्बोडिया में रामकीर्ति प्रसिद्ध बा। इहवां रामलीला के आयोजन नृत्य-नाटक के रूप में होखेला। इंडोनेशिया के रामलीला के आयोजन रंग-बिरंगा नृत्य के रूप में होखेला। जबकि नेपाल में रामलीला मनोरंजन खातिर ना होला बलुक धार्मिक भावना से कइल जाला। नेपाली भाषा में अनुदित 'भानु

रामायण' प आधारित रामकथा के हर बरिस पंचमी के दिन जानकी मंदिर में अनुप्राणित कइल जाला, काहे कि लोगन में ई विश्वास बा कि इहां सीता-राम के बिआह भइल रहे।

रामनगर के रामलीला

नवरात्रि के दौरान देश के सबसे प्राचीन नगरी कहल जाए वाला वाराणसी में अलगे तरह के अनुभव मिलेला। वाराणसी के रामलीला देश भर में बहुते प्रसिद्ध बा आ एकरा के देखे खातिर दूर-दूर से लोग पहुंचेला। आम रामलीला सभन से अलग ई रामलीला पूरा एक महीना तक चलेला। साल 1783 में रामनगर में रामलीला के शुरूआत काशी नरेश उदित नारायण सिंह कइले रहन। ई रामलीला आजो ओही अंदाज में होखेला अउर इहे एकरा के अउर जगह होखे वाला रामलीला से अलग करेला। एकर मंचन रामचरित मानस के आधार प अवधी भाषा में होखेला। रामनगर के रामलीला पेट्रोमेक्स अउर मशाल के रोशनी में आपन आवाज के दम प होखेला। बीच-बीच में खास घटना सभ के समय आतिशबाजी जरूर देखे के मिलेला। अनंत चतुर्दशी के दिन रामलीला के आरंभ होखेला अउर एकर समापन एक महीना बाद पूर्णमासी के दिन खत्म होखेला। नवरात्रि के दौरान धार्मिक अनुष्ठान के संपूर्ण विधान सहेजे वाला विश्व प्रसिद्ध रामनगर के रामलीला के खास बनारसी अंदाज में दुनिया भर के मेहमान देखे लें। नदी किनारे होखे वाला एह रामलीला के कवनो स्टेज प ना बलुक दूर-दूर तक फइलल घाट आ शहर में आयोजित कइल जाला। 235 साल से चलल आ रहल एह रामलीला में हर एक दृश्य खातिर अलग स्थान के चुनल जाला। जइसे अगर रामलीला में अयोध्या दिखावे के बा त ओकर जगह अलग होई, लंका दिखावे के बा त ओकर स्थान अलग होई। एही प्रकार स्वयंवर अउर युद्धक्षेत्र के सीन भी अलग-अलग जगहो प कइल जाला। एह रामलीला के भव्यता एकरा के बेहद खास बनावेला। 45 दिन तक चले वाला रामनगर के रामलीला के यूनेस्को द्वारा अनोखा वैश्विक सांस्कृतिक धरोहर के रूप में पहचान मिलल बा।

लखनऊ के रामलीला

लखनऊ में 16वीं शताब्दी में गोस्वामी तुलसीदास रामलीला के शुरूआत कइनी। नवाबी काल में नवाब आसिफुद्दौला खुद इहवां रामलीला देखे आवत रहन, उनका रामलीला एतना पसंद आइल कि ऊ ऐशबाग में रामलीला खातिर साढ़े छः एकड़ जमीन दे देलन अउर एगो मिशाल कायम करत अतने जमीन ईदगाहो खातिर दिहलन। नवाबी दौर के बाद अंग्रेज सभ एह आयोजन के रोके के कोशिश कइलन त फिरंगियन के मुंह तोड़ जवाब देवे खातिर हिन्दू अउर मुस्लिम समुदाय मिलके रामलीला क के गंगा-जमुनी तहजीब के नया मिसाल कायम कइलस। लाला किशनदास परिवार से शुरू भइल एह रामलीला समिति के उनकरा बाद कन्हैया लाल प्रागदास जी संभललें। प्रागदास के बाद पुत्र चमनलाल अउर गुलाबचंद मिल के रामलीला के आगे बढ़ावलें। संगे-संगेऊ पंडित केदारनाथ अउर उनका परिवार से भी पूरा सहयोग मिलत रहे। जवना के चलते पंडित केदारनाथ के पुत्र अउर लखनऊ के मेयर डॉ. दिनेश शर्मा रामलीला समिति के मुख्य संरक्षक हो गइलन। रामलीला के नया आयाम देवे खातिर डॉ. दिनेश शर्मा के सहपाठी अउर मित्र पंडित आदित्य द्विवेदी भी उनका संगे एह आयोजन में मंत्री पद के दायित्व निभावत आ रहल बाड़न। लखनऊ के एह अनूठा रामलीला में कुल 270 कलाकार हर साल भाग लेवेलन। जवना में दोसरा राज्य के भी कलाकार होखेलन। एह

कलाकार लोगन में आराध्य के अंश लावे खातिर रामलीला के पहिला दिन एह लोगन के आरती कइल जाला अउर रामलीला के आखिरी दिन तक ओह कलाकारन के पूज्य मानल जाला, जवना के चलते दशहरा के दिने मुख्य अतिथि मंच प एह कलाकारन के आरती करेलन। खास बात ई बा कि भगवान राम के किरदार निभावे वाला कलाकारे रावण के वध करेला।

गोरखपुर के रामलीला

गोरखपुर मंडल के रामलीला साम्प्रदायिक सद्भाव के संदेश देवेला। कहीं सीता के भूमिका युवा शाकिर निभावत नजर आवेलन त कहीं जाहिद अली सरीखा लोग करोड़न कीमत के जमीन रामलीला के मंचन खातिर दान देवे से ना हिचकस। 156 साल पुरान वर्डघाट रामलीला समिति अपना भव्यता खातिर पूर्वांचल में प्रसिद्ध बा। रामलीला में अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार आ बिहार के कलाकार अपना जीवंत अभिनय से लोग के अभिभूत करेलन। वर्डघाट समिति के रामलीला के किरदार आ 100 बरिस पुराना दुर्गा पूजा समिति के मिलन के बादे गोरखपुर के दशहरा पूरा होला। वर्डघाट के रामलीला स्वर्गीय कृष्ण किशोर प्रसाद के प्रयास से बरिस 1862 में स्थानीय कलाकारन के प्रयास से शुरू भइल रहे। संरक्षक सुशील गोयल के कहनाम बा कितब बमुश्किल 100 रुपिया में रामलीला मंचन हो जात रहे। अब बजट 2 लाख के पार पहुंच गइल बा। बरिस 1940 से बंसतपुर चौराहा प राघव-शक्ति मिलन के कार्यक्रम होखत बा। जहवां वर्डघाट में रावण दहन के बाद भगवान राम, सीता, लक्ष्मण के संगे-संगे शहर के सबसे पुरान दुगार्वाड़ी पूजा समिति के दुर्गा प्रतिमा के आरती उतारल जाला। करीब दू दशक पहिले तक विद्या मिश्र अउर उनकर दूगो भाई राम, लक्ष्मण अउर सीता के चरित्र निभावत रहलें। गोरखपुर के दोसर सबसे पुरान रामलीला आर्यनगर के ह। 106 बरिस पुरान रामलीला 1914 में गिरधर दास आ पुरुषोत्तम दास रईस के प्रयासन से शुरू भइल रहे। रामलीला खातिर जमीन गिरधर दास अउर पुरूषोत्तम दास के संगे-संगे जाहिद अली सब्जपोश भी देले रहन। लंबा समय तक रावण के चरित्र निभावे वाला पूर्णमासी बतवलें कि शुरूआत में स्थानीय कलाकार लोगन द्वारा शुरू भइल। रामलीला के मंच के जगतबेला के नंद प्रसाद दुबे विहंगम स्वरूप देलन। कमेटी के अध्यक्ष रेवती रमण दास बतवलन कि 50 साल पहिले 500 रुपिया में रामलीला हो जात रहे, अब ई खर्च 8 लाख से बेसी पहुंच चुकल बा। तीसरका सबसे पुरान रामलीला विष्णु मंदिर के बा। ओहिजा राजेन्द्र नगर अउर धर्मशाला बाजार के रामलीला भी पूरा भव्यता से होखेला।

प्रयागराज के रामलीला

प्रयाग के रामलीला के इतिहास बहुते पुरान बा। अइसन मान्यता बा कि 1913-14 में एह रामलीला के शुरूआत भइल रहे। इहवां के रामलीला के मंचन बहुते अनोखा बा काहे कि एकरा में कलाकार एक

स्थान प ना बलुक पूरा दारागंज इलाका में मंचन करेलन। गंगा किनारे नागवासुकि मंदिर में अगर अयोध्यापुरी बनावल जाला त गंगा किनारे ही मोरी में जनकपुरी बनावल जाला। जवना तरे अयोध्या से जनकपुर खातिर भगवान राम के बारात गइल रहे, ओही तरे के परंपरा के इहवां बखूबी निर्वाह कइल जाला। राम बारात के बाद आगे के सभ लीला के मंचन अलोपीबाग स्थित रामलीला मैदान में एकही मंच प होला। ई मंचन शारदीय नवरात्र के दूसरा दिन शुरू होखेला। रामलीला के एतना बड़ क्षेत्र कहीं अउर देखे के ना मिलेला।

कानपुर के रामलीला

रामलीला मंचन में कानपुर के समृद्धशाली इतिहास बा। 18वीं सदी में इहवां पहिला बेर राम लीला भइल रहे। व्यवस्थित मंचन के बात कइल जाव त परेड के रामलीला दशकन पुरान ह, कैलाश मंदिर के रामलीला के भी अइसने अतीत बा। गोविंद नगर में होखे वाला लीला में संवाद पंजाबी भाषा में होखेला। कानपुर में रामलीला के सूत्रपात 1774 में भइल रहे। सचेंडी के राजा सबसे पहिले जाजमऊ क्षेत्र में धनुष यज्ञ-रामलीला करवले रहे। ओकरे बाद कानपुर में रामलीला के मंचन शुरू भइल। अनवरगंज में होखे वाला रामलीला के जिम्मेदारी महाराज प्रयाग नारायण तिवारी संभललन। राय बहादुर विशम्भरनाथ अग्रवाल, बाबू विक्रमाजीत सिंह आदि सहयोगियन के संगे सन 1876 में परेड रामलीला सोसाइटी गठित क के एकर मंचन परेड के मैदान में शुरू करवलन। धीरे-धीरे ई रामलीला विशिष्ट पहचान बना लेलस। कानपुर के दूसरा ऐतिहासिक रामलीला सन 1849 में शिवली ग्राम के रामशाला मंदिर में शुरू भइल। सरसौल क्षेत्र के पाल्हेपुर के रामलीला के स्थापना 1861 में भइल। इहवां हर वर्ष 20 दिवसीय रामलीला के आयोजन होखत रहे। एह रामलीला के शुरूआत झंडागीत के रचनाकार पद्मश्री श्यामलाल गुप्त पार्षद अउर संस्थापक स्वामी गोविंदाचार्य महाराज जी कइले रहनी। कानपुर के चौथा ख्याति प्राप्त रामलीला कैलाश मंदिर के संस्थापक गुरुप्रसाद शुक्ल जी ओही मंदिर में सन 1880 में शुरू कइले रहनी। एकर खासियत बा कि रामलीला खातिर रामयश दर्पण नाटक के नाम से तीन भाग में पुस्तक लिखल गइल। एकरा में लिखल संवादे पात्र बोलत रहन। दशहरा के भोरे रावण पूजन खातिर इहवां रावण के मंदिरो बनवावल गइल बा।

दिल्ली के विख्यात रामलीला

दिल्ली में रामलीला के इतिहास बहुत पुरान बा। दिल्ली में, सबसे पहिला रामलीला बहादुरशाह जफर के समय पुराना दिल्ली के रामलीला मैदान में भइल रहे। लवकुश रामलीला कमेटी, अशोक विहार रामलीला कमेटी आदि दिल्ली के प्राचीन रामलीला में से बा। इहां के रामलीला में पात्रन के वेशभूषा दर्शनीय बा। एकरा अलावा दिलशाद गार्डन रामलीला, दिल्ली छावनी के रघुनन्दन लीला समिति, मयूर यूथ क्लब, मयूर विहार-1, रामलीला, सूरजमल विहार रामलीला के नाम भी दिल्ली में बहुत चर्चित बा। दिल्ली में रामलीला के शुरूआत अब से कवनो 250 बरिस पहिले भइल रहे। एकर वर्णन 'हफ्त तमाशा' में मिलेला। एह समय रामलीला दलन के संख्या 500 से बेसी बा। दिल्ली के रामलीला सभ में सर्वाधिक विख्यात बा फिरोजशाह कोटला के मैदान में होखे वाला भारतीय कला केन्द्र के रामलीला। ई नृत्य नाटिका ह जवना में श्रीराम के जन्म से लेके राज्याभिषेक के पूरा कथा प्रस्तुत कइल जाला।

रामराज्य के आदर्श

राम खाली एगो राजा आ व्यक्ति ना रहले बलुक एगो व्यवस्था रहले। जीवन के हर आयाम, चाहे ऊ राजनीति होखे, चाहे समाज, चाहे आर्थिक परिप्रेक्ष्य होखे, चाहे न्यायिक परिप्रेक्ष्य, चाहे लोक होखे, चाहे लोक खातिर तंत्र, सबका खातिर राम एगो मर्यादा स्थापित कइलें आ इहे भारत के मर्यादित बनइले रही।

महात्मा गांधी 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत लवटल रहनी। जलदीए देश के स्वतंत्रता संग्राम के कमान उहां के अपना हाथ मे ले लेले रहनी। उहां के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन के उद्देश्य ही बदल गइल रहे। गांधी जी के कमान अपना हाथ में लेवे से पहिले स्वतंत्रता आंदोलन के उद्देश्य खाली आ खाली राजनैतिक स्वतंत्रता रहे। अंग्रेजी शासन से मुक्ति रहे। शासन के बागडोर अंग्रेजन के हाथन से लेके भारतीयन के हाथ में देवे के रहे। बाकिर गांधी जी स्वतंत्रता आंदोलन के उद्देश्य के अधिक व्यापक स्वरूप दे देहनी। उहां के स्वतंत्रता आंदोलन के भारतीय सभ्यता के, भारतीय राज्य व्यवस्था के पुनः प्रतिष्ठा से जोड़ दिहनी। अपना एह उद्देश्य के उहां के पहिले स्वराज्य कहनी। फेरू स्वराज्य के संगे-संगे ओकरा के रामराज्य कहनी। अपना स्वराज्य अउर रामराज्य के व्याख्या करत अंत में उहां के ओकरा के ग्राम स्वराज्य बतवले रहनी। अपना आंदोलन के दौरान गांधी जी निरंतर पूरा देश के परिक्रमा करत रहनी। उहां के देश के कोना-कोना में जाके स्वतंत्रता के, स्वराज्य के, रामराज्य के अलख जगवनी। उहां के आवे से पहिले जवन आंदोलन देश के थोड़ा पढ़ल-लिखल लोगन तक सीमित रहे, ऊ पूरा भारतीय समाज के भागीदारी वाला आंदोलन हो गइल। स्वतंत्रता आंदोलन में पूरा समाज के संकल्प जुड़ गइल। व्यापक भारतीय समाज देश के स्वतंत्रता के, स्वराज्य के, आंदोलन के रामराज्य के रूप में ही पहचानत रहे। एह से महात्मा गांधी के नेतृत्व में जवन देशव्यापी आंदोलन खड़ा भइल, ऊ रामराज्य खातिरे समर्पित रहे।

जब देश के स्वतंत्रता मिलल त स्वतंत्र भारत के राजनैतिक व्यवस्था के निर्णय करे के अवसर आइल। ई ऊ समय रहे जब यूरोप में डेमोक्रेसी स्वरूप लेत रहे। बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में ही ऊ यूरोप के अधिकांश देशन के राजनैतिक व्यवस्था के रूप में स्वीकृत भइल रहे। यूरोपीय विद्वान ओकरा के एगो आदर्श व्यवस्था के रूप में देखत आ देखावत रहन। ओकर विशेषता सभके खूब वर्णन कइल जात रहे। ओकर सबसे महत्वपूर्ण विशेषता ई बतावल जात रहे कि डेमोक्रेसी में जनता के राज्य होला। काहे कि शासन करे वाली सरकार जनता के मत से चुनल जाले। गांधी जी 19वीं शताब्दी के अंतिम दिनन में आपन वकालत के पढ़ाई खातिर ब्रिटेन में रहनी। एह से ओहिजा के डेमोक्रेसी के स्वरूप लेत देखले रहनी। ओकरा के उहां के एगो आदर्श राज्य व्यवस्था माने खातिर तइयार ना रहनी। ओकरा बारे में उहां के आपन मत शुरू में ही स्थिर क लेले रहनी। 1909 में उहां के अपना सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ 'हिंद स्वराज' में लिखले रहनी। अपना एह पुस्तक में उहां के ब्रिटिश डेमोक्रेसी खातिर सबसे कठोर शब्द के उपयोग कइले रहनी। उहां के कहले रहनी कि ब्रिटिश पार्लियामेंट उचित-अनुचित के विवेक क के कानून ना बनावेला। ऊ वेश्या लेखां बा, जवना दल के बहुमत होला ओकरे प्रस्तावित कानून के स्वीकृति दे देला। ब्रिटिश डेमोक्रेसी खातिर एतना कठोर बात उहां के ओह समय के पढ़ल-लिखल भारतीयन के, जे डेमोक्रेसी के विचार से अभिभूत होखत रहे, उनका के ओह विचार से विरत करे खातिर कहले रहनी। बाद में भी गांधी जी निरंतर ई दोहरावत रहनी कि डेमोक्रेसी में राज्य के लगे ही सभ शक्ति केंद्रित हो जाला। ओकरा के जनता के शासन बतावल गलत बा। वोट गिनके जनता के मत नइखे समझल जा सकत। ओकर निर्णय बहुमत से नइखे कइल जा सकत। शुद्ध चित्त से अउर विवेकपूर्वक कवनो एक आदमी के भइल निर्णय भी जनता के मत के सही पहचान हो सकत बा।

अपना आंदोलन के दौरान गांधी जी निरंतर पूरा देश के परिक्रमा करत रहनी। उहां के देश के कोना-कोना में जाके स्वतंत्रता के, स्वराज्य के, रामराज्य के अलख जगवनी। उहां के आवे से पहिले जवन आंदोलन देश के थोड़ा पढ़ल-लिखल लोगन तक सीमित रहे, ऊ पूरा भारतीय समाज के भागीदारी वाला आंदोलन हो गइल। स्वतंत्रता आंदोलन में पूरा समाज के संकल्प जुड़ गइल। व्यापक भारतीय समाज देश के स्वतंत्रता के, स्वराज्य के, आंदोलन के रामराज्य के रूप में ही पहचानत रहे। एह से महात्मा गांधी के नेतृत्व में जवन देशव्यापी आंदोलन खड़ा भइल, ऊ रामराज्य खातिरे समर्पित रहे।

बीसवीं सदी में दुनिया में एतना तेजी से परिवर्तन होखत रहे कि केहू के स्थिर बुद्धि से सोचे, मनन करेके फुर्सत ना रहे। अंग्रेजी शिक्षा के कारण यूरोपीय विचार तेजी से फइलत रहे। ओकरा के एतना तार्किक ढंग से रखल जात रहे कि लोग जल्दी ही उनका प्रभाव में आ जात रहन। एह यूरोपीय प्रभाव के कारण डेमोक्रेसी के एगो अइसन आभा मंडल बन गइल रहे कि ओकरा के नष्ट कइल मुश्किल रहे। गांधी जी राजनीतिज्ञ रहनी। एगो कठिन आंदोलन के नेतृत्व करत रहनी। उनकर सारा समय भारतीय समाज के जगावे, अंग्रेजी कूटनीति के मुकाबला करे अउर आंदोलन के योजना में बीतत रहे। ऊ स्वराज्य भा रामराज्य के ओइसन विस्तृत व्याख्या ना क सकत रहन, जवन यूरोपीय विचारन में डूबत-उतरात लोगन के मोह भंग क सके। ओइसे भी ई काम मनीषियन आ विद्वानन के रहे। गांधी जी के वास्तविक शक्ति व्यापक भारतीय समाज रहे। उहे ओह पूरा आंदोलन के दौरान उहां के संबल बनके मजबूती से उहां के संगे खाड़ भइल रहे। व्यापक भारतीय समाज के संकल्प रामराज्य रहे। अगर ओह समय के पढ़ल-लिखल लोग सांचहूं जनता के महत्व देवे वाला होखतन त ऊ भारतीय जनता के रामराज्य के पक्ष में व्यक्त कइल गइल संकल्प के अपनइते। बाकिर जवाहर लाल नेहरू जइसन नेता त देश के जनता के अंधेरा में पड़ल मानत रहन। ऊ डेमोक्रेसी के ई कह के समर्थन करत रहन कि ओकरा में जनता के शासन होखत रहे। बाकिर ऊ अपना देश के जनता

के मंतव्य के महत्व देवे खातिर तइयार ना भइलन। देश के स्वतंत्रता मिलत समय अंग्रेज सभ शासन के बागडोर उनके हाथ में थमवलन। उहां के अंग्रेजन के समय खाड़ कइल गइल राज्य व्यवस्था के जस के तस स्वीकार क लेहनी। बाद में जवन संविधान बनल, ऊ अधिकांशतः ओही व्यवस्था के स्वीकृति रहे। एह तरह राष्ट्रीय आंदोलन के लक्ष्य उपेक्षित रह गइल। अंग्रेजन के कूटनीति सफल भ गइल।

पिछला सात दशक से हमनी के यूरोप में विकसित डेमोक्रेसी के अपना राज्य व्यवस्था के रूप में लागू कइले बानी जा। आज हमनी के ओकर कमियन के ठीक तरे देख अउर समझ सकत बानी स। बाकिर जब ले एकर कवनो विकल्प हमनी के सामने ना होखे, हमनी के ओकर सही मूल्यांकन नइखी स क सकत। एह से एक बेर फेरू हमनी के स्वतंत्रता आंदोलन के समय पैदा भइल भारतीय समाज के संकल्प के ओर देखे के पड़ी। ऊ संकल्प रामराज्य के बारे में रहे। महात्मा गांधी ओकर साक्षी रहन। रामराज्य के ई आदर्श आज के ना ह, ऊ अत्यंत प्राचीन काल से भारतीय समाज के आदर्श रहल बा। रामराज्य भारत के आत्मा में बसल बा। हर काल में ओकर पुर्नव्याख्या होत रहल बा। आज फेर से हमनी के ओकर पुर्नव्याख्या करे के बा। एह काम में पुरान शास्त्रज्ञ लोगन के त लगावे के चाहीं। ओह आधुनिक पंडितन के भी लगावे के चाहीं, जे यूरोप के राजनैतिक विचारन के गहराई से अध्ययन कइले बा। रामराज्य के पुर्नव्याख्या में आधुनिक पंडितन के भूमिका महत्वपूर्ण ही ना आवश्यक भी बा। रामराज्य के आदर्श के समयानुकूल व्याख्या ओकर यूरोपीय राज्य व्यवस्था से अउर ओकर मूल विचार से तुलना करत ही कइल जा सकत बा। यूरोपीय राजनैतिक विचारन के आ राज्य व्यवस्था के समझे खातिर हमनी के बीसवीं सदी में भइल ओकर महिमा मंडन से पार जाए के पड़ी। यूरोपीय जाति के मूल विचार यूनानी नगर राज्यन के समय ही स्थिर हो गइल रहे। ऊ आजो लगभग ओइसने बा। बाकिर यूरोपीय राज्य व्यवस्था के रूपांतरण होखत बा। ओकर बाहरी स्वरूप बदल रहल बा। ऊ पहिले मध्यकाल में बदलल, फेर आधुनिक काल में।

रामराज्य के जवन स्वरूप लोक-स्मृति में बा, ऊहे शास्त्रीय चिंतनो में बा। जवना राम कथा से एगो आदर्श राज्य व्यवस्था के रूप में रामराज्य के उदय भइल, ओकरा के वैदिक काल से लेके आधुनिक काल तक निरंतर दोहरावल जात रहल बा। भारत के सभ भाषा में पहिला महाकाव्य प्रायः रामकथा प ही लिखल गइल। भारत के सभ प्रमुख भाषा में रामायण के रचना भइल आ ऊ ओहिजा के शास्त्रीय चिंतन अउर लोक-स्मृति के आधार बनल। हिन्दी भाषी क्षेत्र में गोस्वामी तुलसीदास के रामचरितमानस के लोक अउर शास्त्र दूनो जगह महत्व मिलल बा। ओकरा से हमनी के अन्य भाषा में रचित रामायण के महत्व अउर ओकर लोकप्रियता के बारे में जान सकत बानी स। वास्तव में शास्त्रीय चिंतन से निकल के ही रामराज्य संबंधी मान्यता लोक-स्मृति में आइल बा। हमनी के इहां राम कथा के केतना महत्व रहल बा, ई एह बात से भी समझल जा सकत बा कि राम से संबंधित हमनीके तीन गो बड़ उत्सव बा। दीपावली 14 बरिस के वनवास के बाद राम के अयोध्या लौटला के उत्सव ह। ऊ रामराज्य के आरंभ के भी उत्सव ह। रामनवमी राम के जन्म के उत्सव ह अउर ओकरा के पूजा पूर्वक परिवार में मनावल जाला। बाकिर दशहरा सार्वजनिक उत्सव ह। दशहरा आसुरी बाधा सबके समाप्ति के उत्सव ह। राम जी लंका विजय के बाद ओकरा के विभीषण के वापस लौटा देले रहनी। एह से ऊ असुर सत्ता के समाप्ति ना ह। ओकरा के फेर से धर्म के शासन में ले आवल ह। दशहरा हमनी के सबसे पवित्र उत्सव में गिनल गइल बा। ऊ राम के पराक्रम के उत्सव ह। ओह दिन कवनो काम खातिर कवनो मुहूर्त देखे के आवश्यकता नइखे। दशहरा सबसे शुभ दिन मानल गइल बा। ओह समय में कइल गइल कवनो काम मंगलकारी होई। राम के ई त्रिविध छवि बा। उहां के भगवानो हईं, जिनकर जन्मदिन पुण्यदायी बा। उहां के पराक्रमी बानी, जेकरा लंका युद्ध में विजय के सबसे शुभ दिन मानल गइल। उहां के **मर्यादा** पुरुषोत्तम बानी, एही से उहां के एगो आदर्श राज्य के अधिपति के रूप में देखल गइल। एह आदर्श राज्य के आरंभे दीपावली के उत्सव के रूप में मनावल जाला।

भारतीय समाज के एह लोक-स्मृति से हमनी के रामराज्य के तीन गो महत्वपूर्ण विशेषता के पहचान सकत बानी स। रामराज्य धर्म के शासन ह, ओकर आदर्श नैतिक ह, ओकरा में राजा अउर प्रजा दूनो ही धर्म द्वारा शासित होखेले। ओहिजा प्रजा प राजा के भा राज्य के शासन नइखे। रामराज्य के स्थापना खातिर खुद ईश्वरे अवतार लेके पृथ्वी प प्रकट भइल रहन। रामराज्य के दूसर विशेषता ई बा कि ऊ अपराजेय बा। उ अनुलंघनीय बा। ऊ पराक्रम में एतना ऊंचा बा कि केहू ओकरा से युद्ध करे के साहस ना क सके। ऊ नीति में एतना ऊंचा बा कि केहू ओकरा से युद्ध करे के इच्छा ना क सके। अइसन शासन ही ईक्ष्वाकु वंश के संकल्प रहे। ओही में रघु कुल के उदय भइल। ओही रघु कुल के प्रतापी राजा राम रहन। अपना पूर्ववर्ती राजा लोगन के तरे उहो अश्वमेघ यज्ञ कइले रहन। उहो चक्रवर्ती बनल रहन। अइसने राज्य के स्थापना खातिर सूर्यवंशी सभ अपना राजधानी के नाम अयोध्या रखले रहे। अयोध्या जवना से युद्ध कइल संभव ना होखे। रामराज्य के एही आदर्श प भारत के अपराजेय अउर अयोध्या होखे के चाहीं। रामराज्य के तीसरा विशेषता ई बा कि ओकर राजा राम **मर्यादा** पूर्वक रहत रहन। श्रीराम **मर्यादा** पुरुषोत्तम रहनी। उहां के अनुकरण प भारत के सभ राजा लोगन के **मर्यादा** में रहे के प्रेरणा मिलत रहेला। दुनिया में अन्य सभ जगहा राजा के विधि प्रदाता कहल गइल बा। यूरोप में त राजा ही लॉ मानल गइल बा। एह नाते राज्ये लॉ गिवर बा। बाकिर भारत में राज्य विधि प्रदाता ना मानल गइल रहे। विधि निर्माण समाज के काम रहे अउर बा। ओकर बनावल विधि से ही **मर्यादा** निश्चित होखेला। ओह **मर्यादा** सभ के जइसे समाज पालन करेला, वइसे ही राजा भी पालन करेला।

राजा रामचंद्र के त **मर्यादा** के पालन करे वाला लोगन में सबसे उत्तम कहल गइल बा। एकर अर्थ ई बा कि भारत में राजा समाज के अधीन बा। समाज राजा के भा राज्य के अधीन नइखे। ई साधारण बात नइखे। विधि ही शासन के स्वरूप निर्धारित करेला। अगर विधि के निर्माण समाज के विभिन्न भौगोलिक, सामाजिक, व्यावसायिक अउर

हमनी के इहां राम कथा के केतना महत्व रहल बा, ई एह बात से भी समझल जा सकत बा कि राम से संबंधित हमनीके तीन गो बड़ उत्सव बा। दीपावली 14 बरिस के वनवास के बाद राम के अयोध्या लौटला के उत्सव ह। ऊ रामराज्य के आरंभ के भी उत्सव ह। रामनवमी राम के जन्म के उत्सव ह अउर ओकरा के पूजा पूर्वक परिवार में मनावल जाला। बाकिर दशहरा सार्वजनिक उत्सव ह। दशहरा आसुरी बाधा सबके समाप्ति के उत्सव ह।

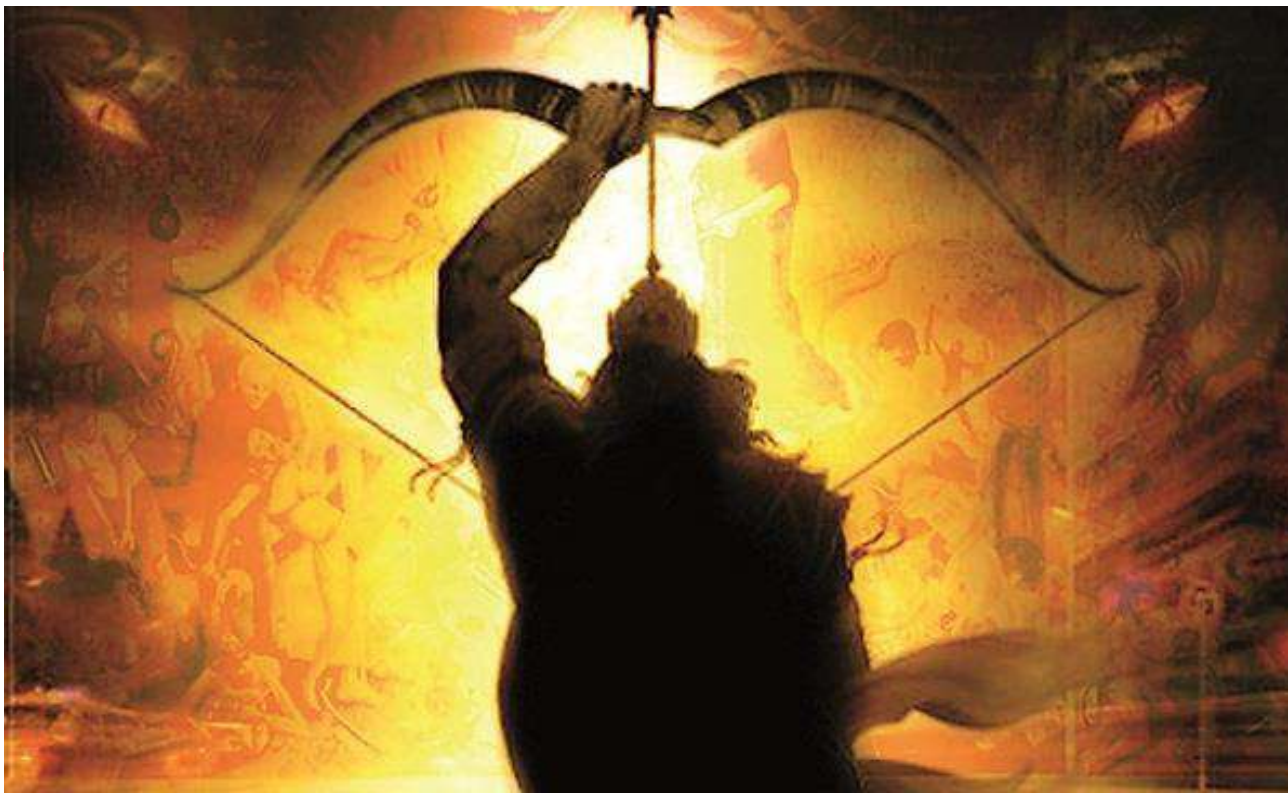

धार्मिक इकाई खुदे क रहल होखे त एह व्यवस्था के स्वशासन के व्यवस्था कहल जाई। स्वराज्य के व्यवस्था कहल जाई। अइसन व्यवस्था ऊ बा, जवना में राज्य सत्ता कवनो एक जगह प केंद्रित नइखे। पूरा समाज में व्याप्त बा। राजा के काम ई व्यवस्था बनावल ना, समाज द्वारा बनावल व्यवस्था के रक्षा कइल ह। ओकर भूमिका नियंत्रण के ना ह, नियामक के ह। उ दंडाधिकारी बा। ओकर काम ओह लोगन के दंडित कइल बा, जे समाज के व्यवस्था के उल्लंघन करेलन। रामराज्य में लोग स्वतंत्र होखेलन। ऊ अपना तंत्र में अनुशासित होखेलन, ई अनुशासन नैतिक अनुशासन ह। ऊ सार्वभौम सिद्धांतन प आधारित बा। ओह सिद्धांतन के बोध एगो लंबा अनुभव से भारतीय समाजो के भइल बा। ओकरा में प्रधानता धर्म बोध के बा, तार्किक विश्लेषण के ना। राजा अउर प्रजा सभ लोग अपना-अपना धर्म के पालन करेलन। जे लोभ-मोह के वशीभूत होके ओह अनुशासन के उल्लंघन करत बा, ऊ लोक आ राज्य द्वारा निंदित आ दंडित होखेलन। ई अनुशासन सवार्नुमति प आधारित बा। ओकरा में पूरा समाज के सहभागिता बा। पूरा समाज के स्वीकृति बा। ओही से समाज समर्थ बनेला। ओकर ई सामर्थ्य राज्यो खातिर शक्ति बनेला। राज्य के मुख्य दायित्व बाहरी शक्तियन से रक्षा कइल ह।

रामराज्य के एही तीनों विशेषता के आधार प हमनी के राज्य के ढाले के बा। राज्य शासन के एगो सिरा बा। ऊ एह अर्थ में महत्वपूर्ण बा कि ओह प समाज के व्यवस्था के रक्षा के भार बा। ओकरा के समाज के आंतरिक अउर बाह्य शक्तियन के अतिक्रमण से बचावल बा। शासन के अन्य सभ सिरा पूरा समाज में फइलल बा। भारत में शासन के स्वरूप पंचायती रहल बा। समाज के सभ इकाई पंचायती विधि-विधान से चलेली स। पंचायतो में सभ निर्णय सवार्नुमति से होखेला। बहुमत के आधार प निर्णय ना कइल जाला। बहुमत संख्या बल से निर्धारित होखेला। ऊ अंततः भीड़ तंत्र के ओर ले जाला। फेर ओकरा से बचे खातिर एकतंत्रीय अउर निरंकुश परंपरा पनपेला। बहुमत से चले वाला व्यवस्था सभ में स्वार्थ हावी हो जाला। ओकरा में नैतिक निर्णयन के गुंजाइश ना रहेला। एह तरह के व्यवस्था में समाज

विभाजित अउर विघटित होखत रहल बा। ओकरा में अधिकारन के छीना-झपटी होखत रहेला। केहूके अपना कर्तव्य के भान ना रहेला। सब लोग जादे से जादे पावे के चाहेला। ओकरा में सदाचार आ संयम के महत्व ना दिहल जाला। रामराज्य में सब लोग ई मानेला कि उनका में जवन भी योग्यता बा आ सामर्थ्य बा, ऊ उनका ईश्वर से मिलल बा। ओकर उपयोग समाज के लाभ पहुंचावे में करे के चाहीं। इहे वर्णाश्रम धर्म के मंतव्य बा। सभ वर्ण समाज के प्रति आपन धर्म के पालन करे में लागे, इहे ओकर अर्थ बा। एही से गांधी जी रामराज्य के स्थापना खातिर वर्णाश्रम धर्म के एतना महत्वपूर्ण आ आवश्यक बतवले रहनी।

रामराज्य में कर्तव्य प्रधान होला, अधिकार ना। गांधी जी कहले रहनी कि सभ अधिकार स्वतः कर्तव्यन के पालन से प्राप्त हो जाला। कर्तव्य समाज द्वारा निर्धारित होखेला, अधिकार राज्यद्वारा।

यूरोप में जवन राज्य व्यवस्था विकसित भइल, ओकरा राज्य के भीतरे सारा शक्ति निहित बा। राज्य के देश के सभ संपत्ति के स्वामी मानल गइल बा। एह से ओकरा टैक्स लगावे के असीमित अधिकार बा। ऊ व्यापक हित के हवाला देके केहू के संपत्ति ले सकत बा। ओकर लोगन के संपत्ति प ही ना, उनका जिनगी प भी पूर्ण अधिकार बा। पहिला महायुद्ध के समय यूरोपीय देशन के सैनिकन के आवश्यकता रहे। एह से ई कानून बना दिहल गइल रहे कि शारीरिक रूप से समर्थ व्यक्ति के सेना में भर्ती होखे के होई। लाखो परिवारन के शारीरिक रूप से समर्थ लोग युद्ध में मारल गइलें। यूरोपीय व्यवस्था में राज्य के ही एकमात्र जीवन लेवे के अधिकार बा। यूरोपीय न्याय प्रणाली में केहू के ओह व्यक्ति के हत्या के अधिकारो नइखे, जे ओकरा संगे जघन्य अपराध कइले होखे भा करे जा रहल होखे। बाकिर राज्य गलत निर्णय द्वारा केहू के मृत्यु-दण्ड दे देव तबो ओकरा प कवनो दोष भा दायित्व ना आवेला। यूरोपीय राज्य के तीसरा विशेषता ई बा कि ओकरा में विधि के अधिकार खाली राज्य के बा। राज्य में बहुमत से बने वाली सरकार एक वर्ग के इच्छा के अनुरूप कानून बनाई, ओकरा प पूरा समाज के अभिमत ना होई। बाकिर ओकरो से बड़ बात ई बा कि राज्य आपन बनावल कानून से ही मय समाज के नियंत्रित करेला। लॉ के उद्देश्य समाज प नियंत्रण होखेला। लॉ कुछ मुट्ठीभर लोग बनावे ला आ ओकरा के पूरा समाज प थोप दिहल जाला। लॉ के आधार नैतिक ना होला। समाज में सभ के हितन के बीच प्रतिस्पर्धा बनल रहेला। हर वर्ग अपने हित के साधे में लागल रहेला।

डेमोक्रेसी के नाम प यूरोपीय राज्य व्यवस्था के तहत अपना के हमनी के राज्य के केंद्रीय शक्ति बना देनी जा। भारत जइसन विशाल देश में एह तरह के केंद्रीय व्यवस्था एक तरे से अराजकता के ही जन्म दे सकत बा। भारत में शासन के मुख्य दायित्व समाज के रहे। समाज के सभ इकाई अपना विवेक अउर अपना आवश्यकता के अनुसार निर्णय करत रहे। हमनी के जवन व्यवस्था बनवले बानी जा, ऊ समाज के सारा दायित्व राज्य के सौंप देले बा। समाज के भूमिका नगण्य भ गइल बा। एह से समाज के क्षरण हो रहल बा। नैतिक **मर्यादा** नष्ट हो रहल बा। अपराध अउर स्वेच्छाचार बढ़त जा रहल बा। राज्य के लगे पूरा समाज के नियंत्रित करे वाला तंत्र नइखे हो सकत। एह से सब जगह अराजकता जइसन स्थिति पनप रहल बा। कानून सभके एक डंडा से हांके के जइसन बा। धीरे-धीरे ओकरो भय समाप्त हो जाला। यूरोपीय विचार स्वच्छंद जीवन शैली के जनम देले बा। सार्वजनिक जीवन के नैतिक नियम प आधारित करे के ई कहत विरोध होखेला कि अइसन कइल मोरल पुलिसिंग होई। स्वच्छंद जीवन के आग्रह के कारण सभ संस्कार नष्ट हो रहल बा। चुनाव सभ गांव-गांव में विग्रह पैदा क देले बा। भारतीय समाज एतना विभाजित आ विखंडित पहिले कबो ना भइल रहे। एह स्थिति के बारे में गंभीर होके सोचे के जरुरत बा। सात दशक पहिले डेमोक्रेसी के लुभावना छवि दिखाई देत रहे, आज ओकर दुष्परिणाम दिखाई देवे लागल बा। एह स्थिति से उबरे खातिर हमनी के अपना आदर्श के ओर लवटे के चाहीं। स्वतंत्रता आंदोलन के समय स्वराज्य, रामराज्य अउर ग्राम स्वराज्य के जवन संकल्प लिहल गइल रहे, ओकरा के फेर से दोहरावे के आवश्यकता बा। हमनी के फेर से रामराज्य के समायानुकूल व्याख्या में लागे के चाहीं।

आलेख

हरेन्द्र पाण्डेय

बंगाल में राम

२०२१ के विधानसभा चुनाव में बंगाल के मुख्यमंत्री ममता बनर्जी चुनावी सभा में जात रहस। रास्ता में कुछ युवक उनके गाड़ी जात देखे खातिर खड़ा रहस। ऊ सब समवेत स्वर में एकबारगी चिल्ला उठलन "जय श्रीराम।" बस ममता के काफिला रूक गइल आ ऊ गाड़ी से उतर के ओ लड़िकन के खदेड़े लगली। बस वोह दिन से बंगाल में "राम" शब्द पर बहस जारी बा। ममता बनर्जी २०२१ के चुनाव जीत गइली जवना के पीछे राम जी के ही हाथ रहे कहल जा सकेला। काहे कि चुनाव में उनकर एकेगो कहनाम रहे "राम वो सब के भगवान हवन; हमनी (बंगाली) के ना । "फेर" बंगाल के आपन लड़की पसंद बा" वाला नारा बंगाली के भरपूर वोट उनका खोयेछा में मिलल। ऊ फेर से मुख्यमंत्री बनली। लेकिन रामजी बंगाल खातिर कतना बाहरी बाड़न एकरा पर खूब चर्चा भइल आ अबो होता।

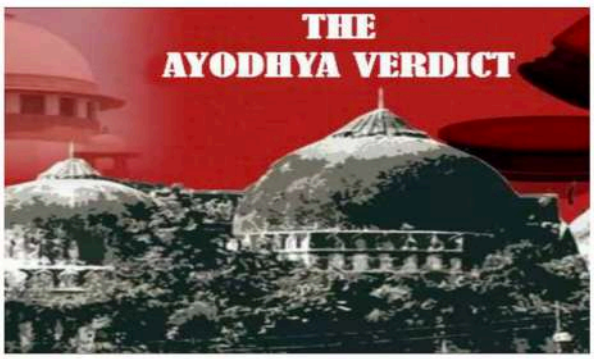

M Siddiq (D)
Thr Lrs
v.
Mahant Suresh
Das & Ors

सुप्रीम कोर्ट में केस दर्ज भइल रहे। २०१० में-सिविल अपील नंबर १०८६६-१०८६७। मो. सिद्दीक बनाम महंथ सुरेश दास। एकरा बाद बहुत सारा व्यक्ति आ धर्मीय संस्था भी वो केस में पार्टी बनल रहे। अयोध्या स्थित १५०० वर्ग गज जमीन पर दखल के लेके ई मोकद्दमा रहे जवना के जनम १-२ साल ना, ५०० साल पहिले भइल रहे। एक पक्ष के दलील रहे उ जमीन हजारो लाखो साल से रामचन्द्र जी महाराज के जन्मस्थली के रूप में प्रतिष्ठित रहे जवना के दोसर पक्ष अपना सैन्य बल के जोर से दखल करके मस्जिद के आकार दे दिहले रहे। लेकिन वो जगह पर हमेशा हिन्दू धर्मावलम्बी आपन अधिकार जाहिर करत रहल बारन। स्वतंत्र भारत में सारा मोकद्दमा १९५० से १९८९ के बीच दायर भइल रहे जवना पर इलाहाबाद हाई कोर्ट ४३०४ पृष्ट में आपन फैसला दिहले रहे। सुप्रीम कोर्ट में वोही फैसला के अपील भइल रहे।

मुद्दा के गर्म होखे का पीछे के घटना ६ दिसम्बर, १९८२ के घटित भइल जे दिन राम भक्त के भीड़ वो विवादित स्थल पर अवस्थित एगो मस्जिदनुमा ढांचा के तुड़ दीहले।

हलाकि मामला कोर्ट में रहे, लेकिन भारत के राजनीति पूरा तरह हिन्दू मुसलमान के इर्द गिर्द केन्द्रित हो गइल। राजनीतिक फायदा उठावे का क्रम में एगो स्वघोषित ईमानदार नेता पिछड़ा जाति के अवधारणा ले अइले आ बुद्धिजीवि वर्ग एगो राजनीतिक प्रवाद रचना कइलन "मंडलवनाम कमंडल" जवना से अयोध्या वाला मामला ठंडा बस्ता में चल गइल। लेकिन २०१४ में भाजपा सरकार अईला के बाद समस्या के स्थायी समाधान करेके प्रक्रिया शुरू हो गइल आ अंततोगत्वा ९ नवम्बर, २०१९ के सुप्रीम कोर्ट आपन फैसला दीहलस। विवादित जमीन के एगो ट्रस्ट के देबे खातिर आदेश भइल आ साथ ही सरकार के आदेश मिलल ५ एकड जमीन मुस्लिम पक्ष के देबे के जवना पर मस्जिद बनावल जा सके।

हिन्दू धर्मावलम्बी खातिर बड़ा ही उत्साहवर्धक समय रहे आ पूरा भारत जइसे राममय हो गइल। उत्साही हिन्दू युवक खातिर "जय श्रीराम" एगो नारा (catchword) तैयार हो गइल जवना के उपयोग विजयी हूंकार के रूप में होखे लागल चाहे होता। २०२१ के विधानसभा चुनाव में बंगाल के मुख्यमंत्री ममता बनर्जी चुनावी सभा में जात रहस। रास्ता में कुछ युवक उनके गाड़ी जात देखे खातिर खड़ा रहस। ऊ सब समवेत स्वर में एकबारगी चिल्ला उठलन "जय श्रीराम।" बस ममता के काफिला रूक गइल आ ऊ गाड़ी से उतर के ओ लड़िकन के खदेड़े लगली। बस वोह दिन से बंगाल में "राम" शब्द पर बहस जारी बा। ममता बनर्जी २०२१ के चुनाव जीत गइली जवना के पीछे राम जी के ही हाथ रहे कहल जा सकेला। काहे कि चुनाव में उनकर एकेगो कहनाम रहे "राम वो सब के भगवान हवन; हमनी (बंगाली) के ना। "फेर" बंगाल के आपन लड़की पसंद बा" वाला नारा बंगाली के भरपूर वोट उनका खोयेछा में मिलल।

सुप्रीम कोर्ट में मुकद्दमा के समय सरकारी हलफनामा पेश कइल रहे जे राम बोलके कुछ ना होला। ऊ एगो काल्पनिक चरित्र ह। एगो नेता राम के जनम प्रमाण पत्र तक मांगे के दुस्साहस दिखा दिहलन। कोशिश में कवनो त्रुटि ना रहल जे वाल्मिकी नामधारी एक कवि रामायण लिखलन जवना के नायक बनवलन अयोध्या राज्य के राजकुमार दसरथ पुत्र राम के। माने अयोध्या, राम, लंका, रावण समेत रामायण के सब पात्र काल्पनिक हवन। कहल अतिशयोक्ति ना होई जे स्वतंत्रता के बाद इतिहासकारन में बंगाली के भागीदारी हमेशा अधिक रहे जे अपना के भारतीय सनातन रूढ़िवाद से सदियों पहिले मुक्त घोषित करे में गर्वित रहे।

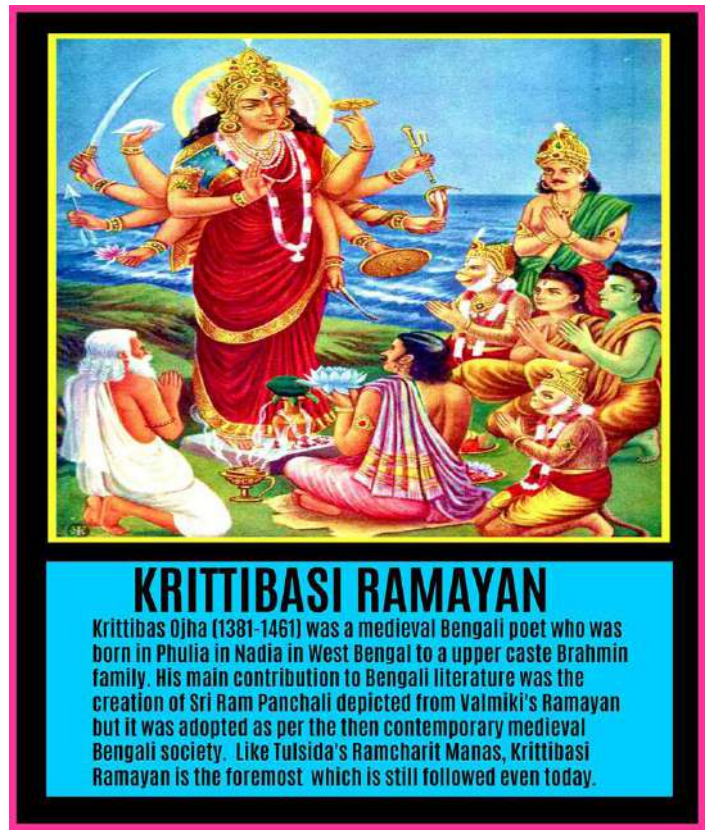

ऊ फेर से मुख्यमंत्री बनली। लेकिन रामजी बंगाल खातिर कतना बाहरी बाड़न एकरा पर खूब चर्चा भइल आ अबो होता। नृसिंह भादुडी जइसन शास्त्र ज्ञाता तक आपन बंगाली झुकाव प्रकाश कर चुकल बारन। उनकर कहनाम बा जे बंगाल के राम बहुत हद तक बालगोपाल जइसन हवन जवना के प्रवेश बंगाल में कृतिवास ओझा के रामायण से भइल बा। कृतिवास ओझा (१३८१-१४६१), १५ वीं शताब्दी के बंगाली कवि रहस जे श्रीराम पांचाली के नाम से रामायण लिखले रहस। स्मरणीय रहो जे कृतिवास ओझा तुलसीदास से १०० साल पहिले के कवि रहस आ तत्कालीन लोकभाषा में रामायण कथा कविता शैली में लिखलन। जदि बंगाली तर्क मानल जाव जे राम आ रामायण हिन्दी भाषी प्रदेश में तुलसीदास के रामचरित मानस से आइल तइयो माने के पड़ी जे बंगाल में रामकथा हिंदी प्रदेश से १०० साल पहिले प्रवेश कर चुकल रहे। स्पस्ट बा जे अइसन तर्क के कुतर्क छोड़ के दोसर कुछ ना कहल जा सकेला। सब मिलाके जइसन राजा ओइसन प्रजा। ममता कहली हुआं-हुआं बंगाली बुद्धिजीवी समवेत स्वर में कहे लगलन हुआं-हुआं-हुआं।

तुलसीदास (१५११-१६२३) के जीवन काल कृतिबास ओझा के करीब १०० साल बाद होता हलाकि दूनो व्यक्ति ओही समय के साझीदार रहस जवना के चरम इस्लाम काल कहल जा सकेला। हाँ, तुलसीदास के समय इस्लाम के कुछ हद तक भारतीयकरण शुरू हो गइल रहे। ओइसे कृतिवासी रामायण के भाषा कहीं से आधुनिक बांग्ला जइसन नइखे। ब्रज भाषा जइसन बा। जे आधुनिक भारतीय भाषा के जानकार बा ऊ ये तथ्य के अस्वीकार ना कर पाई जे सबकर उत्स संस्कृत ही बा आ सब आधुनिक भाषा करीब करीब एकसाथ ही लोकभाषा से निकल के आइल। बांग्ला साहित्य में पहीला कवि चंडीदास (१४वीं सदी) के मानल जाला लेकिन आधुनिक बांग्ला के पितृपुरुष बंकिम चाँद चैटर्जी के मानल जाला जिनकर लिखल पहिला उपन्यास दुर्गेश नंदिनी १८६५

में प्रकाशित भइल। बांग्ला कवनो प्रकार से ना त कवनो प्राचीन भाषा ह ना बंगाली हिन्दू से अलग कवनो धर्म या समाज ह। इतिहास बतावता जे अंग्रेज १६८० में ही बंगाल पर काबिज हो गइल रहस आ १७५७ में फोर्टविलियम बन चुकल रहे। जबकि वो समय हिन्दू शक्ति- जवना के इतिहासकार मराठा शक्ति कह के क्षेत्रीय ताकत बतावता- सम्पूर्ण भारत में सनातन पुनर्जागरण शुरू कर चुकल रहे। ध्यान दीहल जाव अहिल्या बाई होलकर निर्मित मंदिर काशी से लेकर गया तक दीखेला। बंगाल के बांकुरा जिला में मराठा सैनिकन के बनावल सीताराम जी मंदिर (१७वीं सदी) विद्यमान बा आ ई कवनो अकेला उदहारण नइखे। हावड़ा शहर के बीचोबीच राम्प्रराजातला के राममंदिर पूजा आ विसर्जन एगो बड़ा उत्सव जइसन मनेला। लेकिन बंगाली सम्भ्रांत वर्ग में एह बीच अंग्रेजी सीख के, अंग्रेजन के पिछलग्गू बनके "अपना के हम ऊ वाला हिन्दू ना हईं" जइसन मानसिकता गढ़ल गइल। यथाक्रम में मध्य भारतभूमि के जनमानस के पिछड़ा, असभ्य, बर्बर, गोपूजक कहके अपना के विकसित, आधुनिक जाहिर करेके होड़ में मध्य भारत के काऊ बेल्ट (गो-बलय), बीमारू (बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान आ उत्तर प्रदेश) राज्य कहे में बामपंथी साहित्यकार, आ राजनेता लागल रहले। एकरे परिणति रहे कि सुप्रीम कोर्ट में मुकद्दमा के समय सरकारी हलफनामा पेश कइल रहे जे राम बोलके कुछ ना होला। ऊ एगो काल्पनिक चरित्र ह। एगो नेता राम के जनम प्रमाण पत्र तक मांगे के दुस्साहस दिखा दिहलन। कोशिश में कवनो त्रुटि ना रहल जे वाल्मिकी नामधारी एक कवि रामायण लिखलन जवना के नायक बनवलन अयोध्या राज्य के राजकुमार दसरथ पुत्र राम के। माने अयोध्या, राम, लंका, रावण समेत रामायण के सब पात्र काल्पनिक हवन। कहल अतिशयोक्ति ना होई जे स्वतंत्रता के बाद इतिहासकारन में बंगाली के भागीदारी हमेशा अधिक रहे जे अपना के भारतीय सनातन रूढ़िवाद से सदियों पहिले मुक्त घोषित करे में गर्वित रहे।

त बंगाली अपना के मध्यभारत के हिन्दू का साथे कइसे खड़ा करस जबकि उनकर परदादा अंग्रेजी पढले रहस आ ऊ लोग अपना बाप का समय स्कूल के मुंह देखले ह। चर्चा कुछ भारी भइल जाता, जयश्रीराम। एक बार वो समय में चलल जाव जब इक्ष्वाकू वंस के राजा सगर के अश्वमेध यज्ञ के घोड़ा इंद्र चोरी करतारन। चोरावल घोडा ले जाके पाताल में स्थित कपिलमुनि का आश्रम में छोड़ आवातारन। सगर के साठ हजार बेटा लोग उहाँ पहुँचता आ घोडा देख के कपिलमुनि पर टूट पड़ता। मुनि त मुनि, तकले कि साठो हजार जवान खतम। खबर अयोध्या पहुंचल। राजा खुद जात बारन। मुनि के क्रोध शांत होता। लेकिन जवन हो चुकल उ त लवट ना सके। हाँ, आगे मुक्ति खातिर गंगा चाहीं। लेकिन गंगा त बारी हिमालय में। समय के प्रतीक्षा। सगर के पुत्र अन्शुमान प्रयत्न कइले झना। उनकर पुत्र दिलीपझ्र उनको जीवन काल में सफलता नइखे मिळत। उनकर पुत्र भागीरथ-सफल। गंगा हिमालय से उतरतली। भगवान शिव के मदद से धीरे-धीरे विशाल भारत भूमि से चलत-चलत विन्ध्याचल आ राजमहल के दुर्गम पहाड़ी के बेधत कपिलमुनि के आश्रम तक पहुँचत बारी गंगा। उद्धार होता ६० हजार पूर्वज लोग के। गंगा भागीरथ के पुत्री भइली भागीरथी। आजो मकर संक्रांति के दिन भारत के कोना-कोना से लाख लाख श्रधालु कपिलमुनि आश्रम तक पहुँच के अपना पूर्व पुरुष के पराक्रम के गवाही बनेलन।

सौभाग्य से इ लेख लिखतानी संक्रांति के समय। कोलकाता हिन्दू जनमानुष से भरल बा। रास्ता-रास्ता स्थानीय लोग शिविर बनवले बा जहाँ श्रधालु लोग थोड़ा देर बिश्राम ले सकता। कोलकाता से गंगासागर बहुत दूर बा। नदी पार करेके पड़ीं। स्टीमर दिन में चार बार घंटा-घंटा भर बंद रहेला पानी का अभाव में। सालो भर भाड़ा ७ रूपया मेला का समय २५ रूपया। नदीपार होके फेर मारामारी। बसवाला भी भाड़ा बढा देलन। अभी व्यवस्था में कुछ सुधार बा। बाकिर आदत बदले में समय लागेला। कपिलमुनि आश्रम के पंडित सब चढ़ावा लेके उत्तरप्रदेश चल जाता, हमनी का मिलल ढेंगा! इहे बंगाल के मानसिकता बा। आइल बाड़S त कुछ दे के जा, ना ता चिल्लायेब।

राम कहला से का मिली? नेता का वोट मिली का? वोट त मुसलमान दीहन। राम मंदिर में नौकरी मिली का? उ त हिंदी भाषी ले लीहन। भाजपा त उनके पार्टी ह। उ थोड़े हमनी के देखी ! सबसे बड़ बात त यदि कइसहूँ भाजपा बंगाल में आ गइल त माँस-मछली बंद। ना बाबा ना। हमनी के अइसन राज ना चाही। राम ओही सब के रहस। हमनी अपने में ठीक बानी। हनुमान के पूजा हमनी से ना होई। हनुमान सह राम सीता के फ्रेम कइल फोटो पूजा के जगह पर ठीक बा। मने मने पूजा कइला से ही त भगवान प्रसन्न होले। हे प्रभु, लोग के सामने जवन कहतानी तवना खातिर क्षमा प्रार्थना बा। का करी मन के बात मने में राखे के पड़ता।

पंडित कृतिबास लिख गइल बाडन-

"मरा-मरा बोलिते आईलो रामनाम। पाईलो सकल पापे दस्यू परित्राण।।
तुलाराशि (रुई) जेमन अग्निते भष्म हय। एकबार राम नामे सर्ब्ब पाप क्षय।।"

कृतिबास रामायण आदिकांडS

अनुवाद- मरा-मरा बोल के राम नाम सीखलन।
डाकू सकल पाप से मुक्ति पवलन।।
रुई जईसे जरे आग में। सब पाप मिटे रामनाम से।।

सारांश- बंगाल में राम ओइसने बाडन जइसे सम्पूर्ण सनातनधर्मी का ह्रदय में बाड़न। बस अब छद्म धर्मनिरपेक्षता के आखिरी छटपटाहट बा। सनातन कहता धर्म व्यक्तिगत होला लेकिन राष्ट्र सबकर। भारतीय सभ्यता राम से ओइसने जुडल बा जइसे जीवन से साँस। साँस रोक के जीवन के कल्पना कइल जा सकेला का?

परिचय- श्री हरेन्द्र पाण्डेय जी कलकत्ता हाई कोर्ट में अधिवक्ता बानी। अपना विस्तृत जानकारी के सरल भाषा में व्यक्त करे में सिद्धहस्त हरेन्द्र जी भोजपुरी साहित्य में नया आयाम स्थापित कर रहल बानी'

आलेख

एस. डी. ओझा

मा निषाद प्रतिष्ठां शाश्वती समाः

राम-कथा के रचना दुनियाँ के लगभग तीन सौ से अधिके भाषा में भइल बा। ये कथा के नाम रामायण धराइल, जवन राम आ अयन दू गो शब्दन से बनल बा। अयन मतलब कथा होला। मतलब राम के कथा के रामायण कहाइल बा। मुनि व्यास के महाभारत के वन पर्व, द्रोण पर्व आ शांति पर्व में भी राम कथा के संदर्भ मिलत बा।

मुगलकाल के सर्वाधिक महान बादशाह अकबर भी राम कथा के श्रवण करत रहले। ऊ रामायण के अनुवाद फारसी में करवले रहले। कहल जाला कि ओह समय में एकर अनुवाद करे में कुल जमा 1500/- के करीब खर्चा भइल रहे। फारसी अनुवाद के एगो प्रति आजुओ सवाइ मान सिंह द्वितीय के संग्रहालय में मौजूद बा। एह रामायण में 365 पृष्ठ बा। मने रोज एक पन्ना पढीं तऽ साले भर में इ पूरा रामायण पढ़ लिहल जाई। ई ग्रंथ दौलताबादी कागज पर लिखाइल बा। ये पर जहाँगीर के टिप्पणी बा। शाहजहाँ, औरंगजेब के राजसी मुहर लागल बा। ए रामायण में 176 गो चित्र बा। ए चित्रकारन के नाव हऽ- बासवान, केशव, लाल अऊरी मुस्किन।

राम चरित मानस के रचना 1574 ई. में भइल रहे। अब्दुल रहीम खानखाना गोस्वामी तुलसी दास के मित्र रहले। ऊ उनकरा के सलाह दिहले कि रामचरित मानस के रचना अवधी में करसु। अवधी तुलसी के मातृभाषा रहे। मातृभाषा में ऊ आपन उत्कृष्ट कृति दे सकत रहले। लेकिन इ बात बनारसी पण्डी जी लोग के अखरे लागल। ओ लोग के कहनाम रहे कि रामायण एगो धार्मिक ग्रंथ हऽ। इ धार्मिक ग्रंथ के रचना देव वाणी संस्कृत में होखे के चाहीं।

बनारस के पण्डी जी लोग तुलसी के बहुत तंग करे लागल। उनकर राम चरित मानस चोरी हो गइल। उनुकरा दोबारा लिखे के परल। कहल जाला कि अबकी पारी तुलसी आपन इ रचना के महाराज टोडरमल के यहाँ छुपाइ के रख दिहले आ एलानिया कहि दिहले-

माँगि के खइबो
मसीत में सोइबो
लेवौ को एकु
न देवौ को दोऊ

इ कविता उनुकर ग्रंथ कवितावली में मौजूद बा।

रामचरित मानस लोक भाषा में होखे के कारण काफी चर्चित आ मशहूर भइल बा।

महर्षि वाल्मिकि के आदि कवि के उपाधि मिलल रहे। अनजाने में ऊ कविता लिख देले रहले। इ कविता के श्लोक नाम दिहल गइल। दरअसल महर्षि वाल्मिकि ओ दिने अपना शिष्य भारद्वाज के साथे वन में घूमत रहले। अचानक उनुका के एगो क्रौंच पक्षी के जोड़ा लऊकल। ऊ जोड़ा मिथुनरत रहे। तभी कहीं से एगो सनसनात तीर आइल आ एगो पक्षी के शरीर के आर पार हो गइल। दुसरका पक्षी हताश आ अउरी परेशान हो गइल। ऊ ए डाढ़ी से ओ डाढ़ी तक उड़े लागल। वाल्मिकि ऋषि के मुँह से कविता के बोल अचानके प्रस्फुटित होखे लागल-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः
शाश्वती समाः
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधी
काम मोहिताम

(ऐ बहेलिया ! तें इ का कइले। मिथुनरत जोड़ा में से एगो के खत्म क दिहले। जो तोरा कबो प्रतिष्ठा ना मिली।)

वाल्मिकि के इ श्राप उनुकर लिखल रामायण के प्रथम सर्ग में मौजूद बा। इ कविता के लिखला के बाद वाल्मिकि के आदि कवि कहल गइल। उनुका के आदि कवि के दर्जा मिलल। उनुकर लिखल रामायण ग्रंथ के आदि काव्य कहल गइल।

वाल्मिकि के लिखल रामायण संस्कृत में लिखला के कारण ओतना मशहूर ना भइल, लेकिन मूलग्रंथ होखला के कारण इ ग्रंथ हर मायने में श्रेष्ठ आ अप्रतिम बा। बाकी दोसर कुल रामायणी ग्रंथ एकरे नकल बा आ कुछ मायने में मूल कथा से बिचलित होई के लिखल गइल बा।

परिचय- एस डी ओझा। लेखक-विचारक। अवकाश प्राप्त डिप्टी कमांडेंट, भारत तिब्बत सीमा पुलिस।

आलेख

डॉ. मंजरी पाण्डेय

कैकेयी के राम

आज जब प्रभु श्रीराम क, संस्कार के पाठशाला स्वरूप रामचरितमानस, रामायण क चर्चा हमनी के करतानी जा त शक्तिस्वरुपा कैकेयी माता स्वतः उभर कर सामने ठाड़ हो जालीं। जिनकर प्रेरणा अ कृत्य बिना न राम मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु राम होखतं न लिखाइत रामचरितमानस न गाइल जात घर घर गाथा। ई सबकर कारण सशक्त नारी क पर्याय बानी मां कैकेयी जे अपमान क घूंट पीके भी हिम्मत न हरलीं। अपना सोद्देश्य लक्ष्य से किंचित विचलित भइला पर भी डिगलीं नाहीं। अद्भुत धैर्य धरले निन्दा का गरल पान कइ गइलीं पर राम के प्रभु राम बना गइलीं।

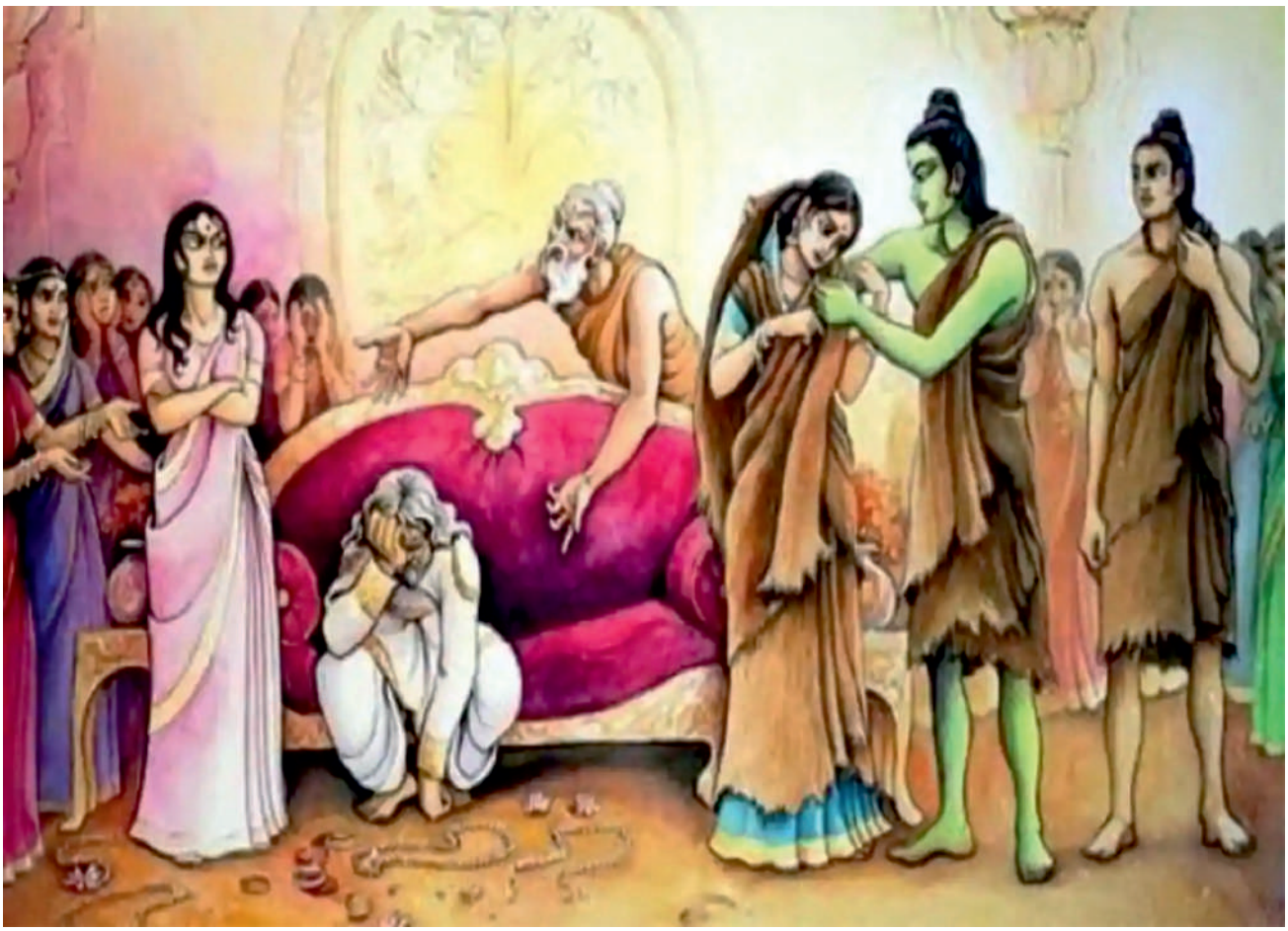

अइसे सबकर आपन-आपन राम हवें। शिव के राम, राम के शिव हवें। राम शिव कृष्ण विष्णु भगवान सब एक ही भगवान के अलग-अलग अवतार अ रूप हवें। आज जब प्रभु श्रीराम क, संस्कार के पाठशाला स्वरूप रामचरितमानस, रामायण क चर्चा हमनी के करतानी जा त शक्तिस्वरुपा कैकेयी माता स्वतः उभर कर सामने ठाड़ हो जालीं। जिनकर प्रेरणा अ कृत्य बिना न राम **मर्यादा** पुरुषोत्तम प्रभु राम होखतं न लिखाइत रामचरितमानस न गाइल जात घर घर गाथा। ई सबकर कारण सशक्त नारी क पर्याय बानी मां कैकेयी जे अपमान क घूंट पीके भी हिम्मत न हरलीं। अपना सोद्देश्य लक्ष्य से किंचित विचलित भइला पर भी डिगलीं नाहीं। अद्भुत धैर्य धरले निन्दा का गरल पान कइ गइलीं पर राम के प्रभु राम बना गइलीं। ई भक्ति के बल रहे। लोगबाग कैकेयी पर आरोप लगावेलें बाकी ई त पूर्वनियोजित कुल्ही रहे। "वाल्मीकि रामायण" में उल्लेख बा-भगवान शिव पार्वती जी के राम क महत्ता पहिले बतवलें -

हरि गुन नाम अपार कथा रूप अगनित अमित।
मैं निज मति अनुसार कहउँ उमा सादर सुनहु। ।। 120 घ

कइगो श्लोक में वर्णन बतवलें। फेरु राम अवतार क सीधा कारन ई दोहा में बतवलें-

असुर मारि थापहिं सुरन्ह राखहिं निज श्रुति सेतु।
जग बिस्तारहिं बिसद जस राम जन्म कर हेतु।। 121 ।।

कि "राक्षसन के मारके देवता लोगिन के स्थापित करे खातिर श्वाँस रूपी वेदन के **मर्यादा** क रक्षा कइले खातिर भगवान राम जग में आपन जस फइलावेलें अ एही श्रीरामचंद्र जी के अवतार लिहला क कारण बा।

रामचरितमानसो में स्पष्ट उल्लेख बाटे राम क राज्याभिषेक क खबर पल में चारुं ओर फइल गइल, लोग बाग जोहे लगलें कब रात खतम होय मंगल घड़ी अभिषेक क आवे, महल नगर सजे लागल। चहुं ओर राग रंग क धूम। परजा जोहे लागल कब राजा अ रानी रूप में सीता मइया अ राम जी बइठस राजगद्दी पर। मनचाहा होखस। एक ओरी अइसन बेकरारी दोसरा ओर देवता कइसे बिघ्न होखी ई मनाव ताने।

"कनक सिंघासन सीय समेता। बैठहिं रामु होइ चित चेता।
सकल कहहिं कब होइहिं कली। बिघन मनावहिं देव कुचाली। ।3।।बा

तिन्हहिं सोहाइ न अवध बधावा। चोरहि चांदिनि राति न भावा।।
सारद बोलि बिनय सुर करहीं। बारहि बार पाय लै परहीं।।

देवता लोग बार-बार बिनती कइके, निहोरा कइके सरस्वती मइया के मनवलें जा। पहिले त सुरसति जी मना कइ दिहलीं। बहुत कहला मनवला पर देवतन के उपकार खातिर मान गइलीं अउर मंदबुद्धि दासी के मती फेर के चलि गइलीं। ओकरा बाद लीला होखे लागल। राम के बन भेजल जरूरी रहे कुल देवकाज, घर समाज के उपकार कइला खातिर। त मंथरा के माध्यम से सुरसति क परवेश कैकेयी में भइल। आगे क हाल सब जनते बा केंहिगा ई संभव भइल कैकेयी के वरदान मंगला से।

सब कैकेयी क अपमान करेला। का का ना कहेला लोग। बाकी जे कुल्ही अपयश अपना माथे ओढ़ के राम के परभू बनावल। ओकर योगदान बिचारीं। कैकेइ क दोष कहवां रहे? कुल त देवलीला होत रहे। बाकी बड़भागी हइ कैकेयी, ओनका अनन्य भक्ती। जवना कारण प्रभू काज में निमित्त बनलीं कैकेयी। केवट नल नील बानर पाथर ऋषी मुनी जे भी सहयोगी भइल ऊ सगरी जीव जन्तु प्राणी बड़ भाग्यवान लोग रहल जिनका पर परभू दृष्टी रहे ऊ निमित्त बनल।

कहै क मतलब परभू क लीला में के के का का भाग लीही ऊ ईश्वरीय प्रेरणा से अलग कइसे हो सकता? .
कैकेयी एही कड़ी क एक पात्र बानी। सामान्य नारी नइखी कैकेयी जिनका प्रभु निमित्त हेतु,संसार के कल्याण खातिर भगवान चयन कइलें।

सशक्त नारी, सहधर्मिणी, ममतामयी मां, सर्वगुणसंपन्न ओह नारी के अंतर पीड़ा से उद्वेलित भइला प्रभु क अनन्य भक्त कैकई के बारे मे सोचीले त कैकेयी क राम कहला से लागल कुछ न्याय भइल।

ई जमाना त एंहिंगा बा। चलती क नाव गाड़ी। परचलित हो गइल कैकेयी जिनका कुमाता, विमाता कुल-द्रोहिणी, कलंकिनी का का ना लोग कहेला। जतना भी निंदनीय शब्द हो सकेला ओसे कैकेयी मइया क संबोधन कइल लोग। बाकी धीरज क सक्षात सरूप कैकई पाथर हो गइलीं। ओनका उद्देश्य बस प्रभू कारज के सफल बनावल आपन धन्य भाग के मनावल रहल। बोलला से काम बिगड़ सकत रहे। एहीसै चुप त चुप।

सब जानेला ई कुल कहानी किस्सा। निमित्त जे भी बनल। ओकर बड़ भाग, पुण्य परताप, प्रारब्ध जे रजको कार कर पावल। बाकी तबहूं केहू न कहेला कि ऊ सत्यनिष्ठ श्रेष्ठ कुलवधू रहे। सज्जी स्त्रियोचित विशेषता भा गुन से युक्त, संगहीं कुशल योद्धा, वीरांगना राजधर्म क कुशल ज्ञाता रहस कैकेयी।

कुलधर्म क रक्षा करला मे भरत खातिर राजगद्दी मंगले रहीं । जेवना बात के महाराज दशरथ विस्मृत कर चुकल रहें। याद करीं कि कैकई के पिताश्री महाराज अश्वपति पुत्री के विवाहे के घड़ी शर्त रखले कि उनका पुत्री से उत्पन्न पुत्र ही राजगद्दी क उत्तराधिकारी होईहें। जबकी ओहि समय राजा के बड़ बेटा के उत्तराधिकारी भइले क नियम रहे। तब दशरथ सशर्त, सहर्ष तैयार हो गइलें अ कैकेयी के बियह के ले अइलें। कारन कि ओ घड़ी तक उनका कवनो संतान ना रहे। अब सोचें सभे की भरत के जगह राम के राजा बनवला से ऊ वचन क का होत?...(रघुकुल रीत सदा चली आई प्राण जाए बरु वचन न जाई...)

ई कुलविशेषोक्ति का **मर्यादा** रहित..? राजा दशरथ के माथे कुल क कलंक नइखे मढ़ा जात ....? कालांतर मे अपना वचन से मुकरला क आरोप ना लगत ?.. । एइजां कैकेयी देवप्रभाव भा कवनो परभाव से महाराज दशरथ के वचन क अउर कुलधर्म क रक्षा कइलीं। जेकर सम्मान होखे के चाहीं।

दूसरे राम का 14 वर्ष वनवास भेजल। इहवां कैकेयी के संविधान क कुशल ज्ञान परिलक्षित होला। त्रेता युग में ई नियम रहे कि जे भी 14 वर्ष तक राज्य से बाहर रही ऊ लवट के अइला पर राजगद्दी क हकदार नइखे हो सकत।

सब कैकेयी क अपमान करेला। का का ना कहेला लोग। बाकी जे कुल्ही अपयश अपना माथे ओढ़ के राम के परभू बनावल। ओकर योगदान बिचारीं। कैकेयी क दोष कहवां रहे ? कुल त देवलीला होत रहे। बाकी बड़भागी हइ कैकेयी, ओनका अनन्य भक्ती। जवना कारण प्रभू काज में निमित्त बनलीं कैकेयी। केवट नल नील बानर पाथर ऋषी मुनी जे भी सहयोगी भइल ऊ सगरी जीव जन्तु प्राणी बड़ भाग्यवान लोग रहल जिनका पर परभू दृष्टी रहे ऊ निमित्त बनल।

दूसरे कैकेयी के ऊ शाप क ध्यान रहे। जे श्रवण कुमार क अंधा बूढ़ मां-बाप शराप दिहले रहे कि हमरहिं खानी तहरो मउत पुत्र वियोग में तड़प-तड़प के होखी। कह के प्राण त्याग दिहले रहें। ऋषि, संत क वाणी विरथा कइसे हो सकत रहे...? कैकेयी के ई घटना क जनकारी रहे। ऊ जानत रहीं की राजा दशरथ क मृत्यु त पुत्र वियोग में होखबे करी। माना की महाराज सबहीं बेटन के स्नेह करें बाकी राम से जइसे हृदय क तार जुड़ल रहे। एही लिये राम क वनगमन उनके मरला क कारन बनल। ई प्रारब्ध घटित भइल। एकरा खातिर कैकेयी पर आरोप सर्वथा अनुचित हवे ।

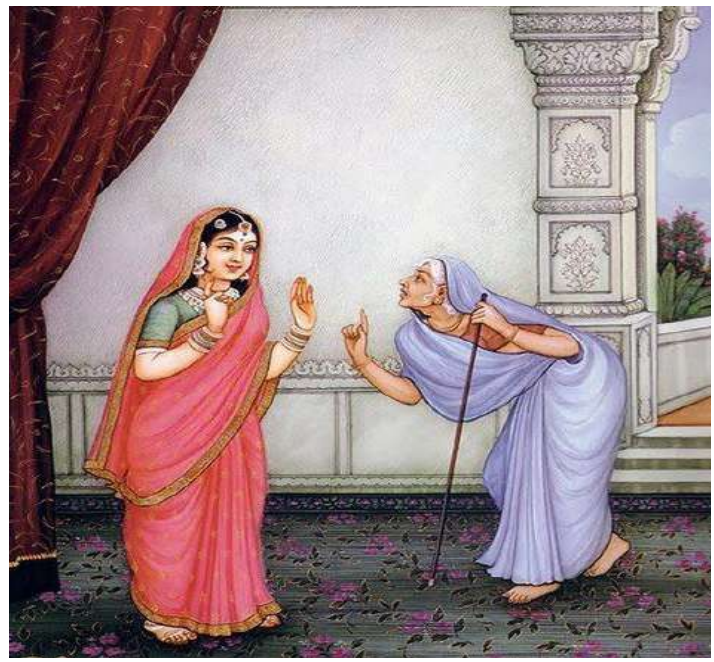

नारी पक्ष से विचार कइला पर कर्तव्यबोध के साथ कैकेयी क विवशता अ छटपटाहट देखके मन द्रवित हो जाला । कैकेयी महाराज दशरथ क परम प्रेयसी प्रिया रानी रहलीं। उनका खातिर ऊ अपने वचन से मुकर भी सकत रहलन। ई कैकेयी खूब बूझत रहीं। ऊ त भावी कार्यसिद्धि खातिर ई समय दुइ वचन मंगले रहीं। कउनो कीमत पर जेसे पलटल ना जा सकत रहे। ईश्वरीय प्रेरणा भी रहबे कइल। एही से कोप भवन में राजा मनवला क लाख कोशिश करें बाकी रानी पास न फटके दे, उनके स्पर्श से बचल करें। कारन कि कहीं ओनकरे धैर्य जवाब न दे जाए। काहे की महाराज के हृदयतल से प्यार जे करत रहनी। परिणाम राम के वियोग में दशरथ क मृत्यु का पता रहे। अपने छोटकई में ऋषी मुनियन क बात भी स्मरण होखे लागल 14 वर्ष के शाप के बारे में- की महाराज दशरथ क कवनो वंश राजगद्दी पर चौदह वर्ष तक नइखे बैठ सकत। गलती से जे हो गइल त ओनकर मृत्यु निश्चित ह। ईहो मन पड़ला अउर बंध गइलीं। जेकरा चलते दृढ़ हो गइली अपने वरदान के प्रति। एह तरे राम के बचवलीं सब पुत्रन का बचवलीं। समय पर परिणाम छोड़के तत्काल राम के बचवली। तिल-तिल कर तड़पत अपना प्रिय महाराज दशरथ के देखके केतना ऊ तड़पल होइहें। एकर अंदाजा कउनो मेहरारुए लगा सकैलै। नारी मन के ई भावुक पक्ष क अनदेखी भइल। महाराज के प्रणय निवेदन आ बाहुपाश से एहीलिये दूर छटकश जेसे कहीं ऊ खुदे कमजोर न पड़ जाए। मन टेघर न जाए। लोगबाग एइके ओनकर क्रूरता क पराकाष्ठा बतावेला जा।

अइसे कहवां ले उदाहरण दीहीं अनेक अवसर ह जहवां नारी बोध के दर्पण से कैकेयी के हृदय में उतरला अ अनुभव कइला क कोशिश करीले त भीतर ले अपनो मन तर बतर हो जाला। आपन भावना अ पहलू के रखे क कोशिश कइले बानीं। शबरी खान भावना क बइर परोसले बानी। प्रभू भेटइहें त चीखबे करिहं। कैकयी खान भक्ती क परसाद मिले। एही आशा से कैकेयी के बार-बार नमन करीले जे परभू भक्ती में मान अपमान क गरल पीके राम के **मर्यादाहीन** राम बना दिहलीं।

जय कैकेयी मइया, जय श्रीराम।

संदर्भ - वाल्मीकि रामायण, रामचरितमानस, प्रतिश्रुत कथा

परिचय- सेवानिवृत्त शिक्षिका (राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त) कवयित्री, लेखिका, रंगकर्मी।

आलेख

डॉ० मन्नू यादव 'कृष्ण'

बिरहा में श्रीराम

गुरु गणेश, गुरु पत्तू, गुरु रमन, गुरु सरयू, गुरु अंबिका महाराज, गुरु अकलू भगत, गुरु शिवचन, गुरु मूसई ... ई सब लोग गुरु बिहारी जी के सिखावल चेला रहलन आउर आठो लोग राम भगवान के सुमिरनी अपने-अपने चेलन के सिखवले रहलन। उहै आज के नवका गायक गायिका भी ओइसही अलाप लगावेलन। कुछ समय के फेरा जरूर बा बाकिर जबान पर राम नाम अवही के बा, ई सच बा। 'सवंरिया हो मोरे राम' ई छोटका सुमिरन बा। सीता राम वन गमन, लक्षमण शक्ति, लंका दहन, अ रावण बधन, मेघनाद बधन, बालि बधन, भरत राम मिलाप, राजतिलक, आउर लव कुश के बारे में भी बिरहा के लोग गावल करेलन।

काशी अ बनारस चाहे 'बन्नार' वरुणा नदी असी नदी क बीच क भाग 'वाराणसी' कहल जाय। बनारस त बनारसै हव। एही बनारस में बिरह राग के कथा गायन क पुरखा जेकरा आदि गुरु बिहारी कहल जाला, करताल बजाइ-बजाइ गवनई करत रहलन। ऊ अपन बिरहा गवनई में भगवान राम क नाम लेयी बिरहा के शुरूआत करत रहलन। अपने चेलन सबके सिखावत रहलन। ए राम, मोरे रामा, अरे मोरे रामा हो, हो राम, सवंरिया हो, भोले बाबा जोगिया हो सियाराम। इ ओनकर सुमिरनी (वंदना) रहल, जेके आजू ओनकर चेला लोग गावेला। रामै रामै नमवा जपत रहली, पंचो रामै नामवा जपत हो गयल बिहान, एक बेरि राम जी फेरि द नजरिया त हमरो बिगरल हो गोसईया बनिजात न हो कुलै काम।

एहि लेखा बिरह में रामायण क कहानी क सुरुआत होखत रहल। ई एहिजा अजुवो देखल जाला।

जयिसे रामा के लडयिआ में नपयिबे रवणवा चाहे केतनो होबे बलवान,
सोनवानी क लंका तोर मटिया में मिलि जाई, तुर दिहं रामजी गुमान।

रामधारी कवि जी तीन अक्षर से राम क सुमिरनी लिखले रहलन देखल जायं-

हमरे रोम रोम में हे राम राम रम रहे,
रम रहे राम रोम में हमरे,
रह रह हेर हेर रम रहरे,
हमरे रोम रोम में हे राम राम रम रहे।

र, म, ह, इहां.खाली तीन अक्षर से ई बिरहा बनल रहल जवने के लोग गावत रहलन, आउर आजुओ गावेलन।

बिरहा के बात रमायन के अगल बगल घुमत सारी रात राम पर ही बिरहा दंगल क परमान पुरनियां आजू देवलन। जयिसे-

राम भयइलन जोगिया लखन बयरगिआ
कि दून्नो भयिया हो गयिले फकीर,
बनवा के चलि देहलन दूनहू विरनवा
बीचवा जानकी बहावत रहली नीर।

एहमे दरद बा कि जवने समय ई बिरहा होखे सुनवयिया के आखि आस चूवए लगै।

राम नगरिया राम की बसल गंग के तीर
तुलसी दास चंदन रगड़े तिलक देंय रघुवीर।

ई बनारस के लोक आउर शास्त्र दूनहू परंपरा में मिलेला बाकिर बिरहा क लोग एकरा जरुर अपन दंगल में गावत रहलन। गुरु गणेश, गुरु पत्तू, गुरु रमन, गुरु सरयू, गुरु अंबिका महाराज, गुरु अकलू भगत, गुरु शिवचन, गुरु मूसई ... ई सब लोग गुरु बिहारी जी के सिखावल चेला रहलन आउर आठो लोग राम भगवान के सुमिरनी अपने-अपने चेलन के सिखवले रहलन। उहै आज के नवका गायक गायिका भी ओइसही अलाप लगावेलन। कुछ समय के फेरा जरूर बा बाकिर जबान पर राम नाम अवही के बा, ई सच बा। 'सवंरिया हो मोरे राम' ई छोटका सुमिरन बा। सीता राम वन गमन, लक्षमण शक्ति, लंका दहन, अ रावण बधन, मेघनाद बधन, बालि बधन, भरत राम मिलाप, राजतिलक, आउर लव कुश के बारे में भी बिरहा के लोग गावल करेलन।

हमार ई बिचार ह कि रोम-रोम मे जवन राम जी हवै, ऊ बिरहा के पुरखन के जेहन में भी ओइसही हउवन। आजू आउर आगहू ई कायम रखल जाव आउर भोजपुरी के साफ सुथरा रखल जाय।

परिचय- लेखक-संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली आउर उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी से सम्मानित।

आलेख

बिनोद सिंह गहरवार

राम मनुज कस रे सठ बंगा

हँसले घरवा बसेला। ओहू घरी संत समाज एह मति के हीन लोग के समझावत रहे कि रामजी के काज में कवनो अरंगा मत लगाव। रामजी के अस्तित्व प सक मत कर२ आ धार्मिक ग्रंथन प टीका-टिप्पणी कइल बंद कर द ना त तोहरा लोग के बड़ा दुर्गति होई।

हमनी के अराध्य भगवान, 'रामजी', दुख मोचन, दीन दयाल, बिना सेवा के दीन-दुखियन प सहाय होखे वाला, सुख के खान अखिल ब्रम्हांड के नायक हईं। एही से बिनय पतिरिका में तुलसी बाबा कहलन-

ऐसो को उदार जग माही
बिन सेवा जे द्रवे दीन पर
राम सरिस कोई नाहीं

ई बात सभे के समझ में ना आवे। कुछ लोग त उनका के काल्पनिक कह के उनकर अस्तित्व प सवाल करेला। ई बात कवनो नया नइखे। परभु श्रीराम के अस्तित्व के नकारे वाला लोग पहिलहुँ रहे आ आजो बा। त्रेता में रावण माई सीता के चोरा के लंका ले गइलन। जब उनका के अंगद जी कहलन कि माई सीता के लवटा द, एही में तोहार भलाई बा, ना त तोहार नास हो जाई। त रावण एकदम अंइठ के, घमंड से मात के कहलन, "जेकर पवन देव अंगना बहारस, सरस्वती-लछमी धान कुटेली, देवता जेकरा से थर-थर कांपेलन उ भला बने-बने मारल फिरे वाला बनरन के मंदारी के भगवान मान लेवो, आ डेरा के सीता के लवटा देवो, भगबऽ कि ना.... ?"

अंगद जी रावण के समुझावे में अपना से उठा ना रखलें-

राम मनुज कस रे सठ बंगा
धन्वि काम नदी पुणि गंगा
पसु सुर धेनु कल्पतरु रूखा
अन्न दान अरु रस पयूसा

बाकि जेकरा मति में भांग घोराइल होखे उ भला केहू के बात मानी? उ भला सांच के पंजरा जाई। ओकरा केहू के नीमन बात नीमन लागी? घीव देत घोर नरियाय! रावण ई कुल्ह सुन के उनका प आउर गरजे लगलन। अंत में अंगद जी थाक-हार के समझावल छोड़ के राम लला के पास आ गइलन। भाई भिभिषनो समुझावे खातिर अपना से उठा ना रखलन। उ त इहाँ तक कहलन **जहाँ सुमति तहाँ संपति ना ना, जहाँ कुमति तहाँ बिपति निदाना।** बाकी रावण खातिर बिपतिये निदान रहे त लोग समझा के का करी।

जाके दैव दारुण दुख दीन्हा, वाके मति पहिले हर लीन्हा। रावण काहे के माने जास। नतिजा सभे के सामने बा।

राम बिमुख अस हाल तुम्हारा,
रहा न कुल कोई रोवन हारा।

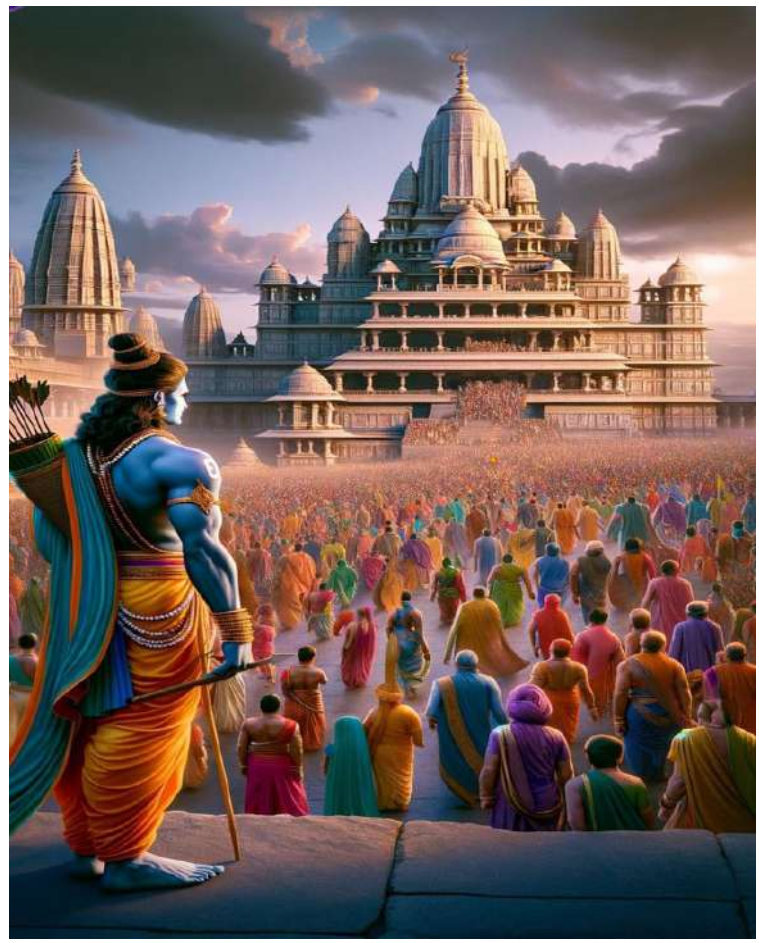

इहे हाल आजो बा। कुछ लोग एगो खास बरग के खुश करे खातिर, आपन राजनीति चमकावे खातिर आ अपना के सबसे अकिलमंद कहाये खातिर नरको में गिरे से बाज नइखन आवत। कहल जाला नू... नावे नाम ना त अकरवले नाम। उ जानबूझ के राम जी के बारे में अलर-बलर बोलत बारन। कबो सनातन धर्म प पींगिल छांट के, त कबो रामायण के बारे में बेलगना के बात बोल के, त कबो राम भक्तन के उभ-चाभ बोल के समाचार पत्रण के पान्ना आ टेलीविजन के मसाला त बन गइलन बाकि जनता के मन से अइसन उतरलन कि अब उ ना घर के रहलन ना घाट के। उनका के केहू पुछहीं वाला नइखे। एही से उ मिडिया में आके लूती लगा दे तारन। कुछ लोग त संउसे भारत के चउगेठ लेलन बाकी कुछो हाथें ना लागल। पाँच गो राज के चुनाव उनका लोग के पानी के थाह लगा देलस। बड़ा राम भक्तन के ठोना देत रहे लोग, "श्री राम लला हम आएँगे। मंदिर वहीं बनाएँगे, पर तारीख नहीं बताएँगे।"

हँसले घरवा बसेला। ओहू घरी संत समाज एह मति के हीन लोग के समझावत रहे कि रामजी के काज में कवनो अरंगा मत लगाव। रामजी के अस्तित्व प सक मत करऽ आ धार्मिक ग्रंथन प टीका-टिप्पणी कइल बंद कर द ना त तोहरा लोग के बड़ा दुर्गति होई। बाकी मिलहीं गुरु बिरंची सम मुरुख हृदय ना चेत। एही से जनता एह लोग के सत्ता से बाहर क के चेता देलख-

राम बिमुख संपति प्रभुताई।
जाई रही पाइ रही पाई बिनु पाई'।।

राम के अस्तित्व प संका करे वाला लोग के चेतावे वाला लोग पहिलहूँ रहन, आ अबहुँओ बारन बाकि राम जी के साधारण मानुष माने वाला, कामदेव के साधारण पुरुख मानेवाला, कामधेनु गाय के साधारण गाय माने वाला, कल्पवृक्ष के साधारण पेड़ समझे वाला, अमृत के साधारण रस समझे वाला आ अन्नदान के साधारण दान समझे वाला के, के समझा सकेला। ऊ त अपना ताकत के घमंड में अतना मदहोश रहेला कि ओकरा अच्छा-खराब के भेदे ना बुझाला।

रावणें के लिहीं ना, कहां ले ऊ अंगदजी आ आपन भाई भीभीषण जी के बात प अमल करतन, उल्टे राम जी से युद्ध करे के हांका भिड़े लगलन। त अंगद जी आपन गोड़ धरती प गाड़ कहलन, 'ए लंकापति पहिले हमरे से फरियालऽ, पाछे हमरा मालिक से लड़े के सपना देखिहऽ'-

जे मम पद एकहुं सठ टारी,
फिरहुँ राम सीता मैं हारी।

त हर जुग में दंभी के, हुड़हेड़न के, गेंगाह के आ धूर से झगरा खोजे वालन के कोई ना कोई समुझावे आला आइल बा, बाकी तुलसी बाबा कहले बारन नु-

'नहिं कोउ अस जनमा जग माही। प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं'

एकरा के मेटाई। एही से आज रामभक्त अयोध्या में अंगद जी लेखा आपन गोड़ धरती प गाड़ देले बारन। अब इ टस से मस ना होई। जेकरा आँख में माड़ा छवले होखे, जेकर मति मारल गइल होखे आ समझियो के नासमझ बनल होखे ऊ रामजी के साधारण मानुष समुझत रहे। चलीं आउर कुछो भइल भा ना भइल बाकि एगो बात जरूर भइल-

मदहोश हो के जे रहत रहे सत्ता के ठाट में
बरिसन से रामजी के राखिके टाट में।
गोली जे बरिसावत रहे रामजी के भक्तन प
आज उहो ठारा बारन नेवता के बाट में।।

परिचय- बिनोद सिंह गहरवार। शिक्षक-पी.जी. टी. अंग्रेजी। कैम्ब्रियन पब्लिक स्कूल, राँची।

आलेख

ऋचा वर्मा

'राम' से भी बढ़ के बा 'राम के नाम'

राम के बारन !

'रमते कणे कणे इति राम'.. जे हर परानी के हिरदय में रमण करेलन उ 'राम' हवन आ जिनका में हम सब रमण करीले, ध्यान लगाइले उ हवन 'राम'।

अंग्रेजी के नामी लेखक शेक्सपियर के कहनाम बा कि नाम में का रखल बा, हमरो देस में कहावत बा, 'आंख के अंधा नाम नयन सुख' जे शेक्सपियर के बात पर मोहर लगावता, लेकिन ई बात अपवाद बा।

हमनी के सनातन चाहे हिन्दू धरम के कुल सोलह संस्कार में नामकरण संस्कार बहुत जरूरी मानल जाला, अउर बूढ़ पुरनिया के कहनाम

बा कि नाम के असर व्यक्ति के जिन्दगी अउर स्वभाव पर जरूर पड़ेला। 'राम' के नाम के बात कइल जाए, त हर हिन्दू आ हम त कहत बानी कि हर भारतवासी के दिल में ई नाम बहुते बात-बिचार एक साथ ले आके खलबली मचावे लागी। साँच कहल जाव त, 'राम' शब्द एक बीज मंत्र जइसन बा, राम के व्यक्तित्व से भी बड़ 'राम' के नाम बा। रत्नाकर डाकू के पाप करम के कारण ओकर होंठ पर 'राम' शब्द आइए न पावत रहे त नारद मुनि ओकरा के 'मरा-मरा' जपे ला कहलन। 'मरा-मरा', 'राम-राम' हो गइल आ रत्नाकर 'राम' के केंद्र में रखके 'रामायण' लिख देलन, अउर आज हमनी के केतना इज्जत से महर्षि वाल्मीकि के नाम लिहिला जा। ओही राम के नाम भजत-भजत तुलसीदास भी 'रामचरितमानस' जइसन महाकाव्य लिख दिहलन।

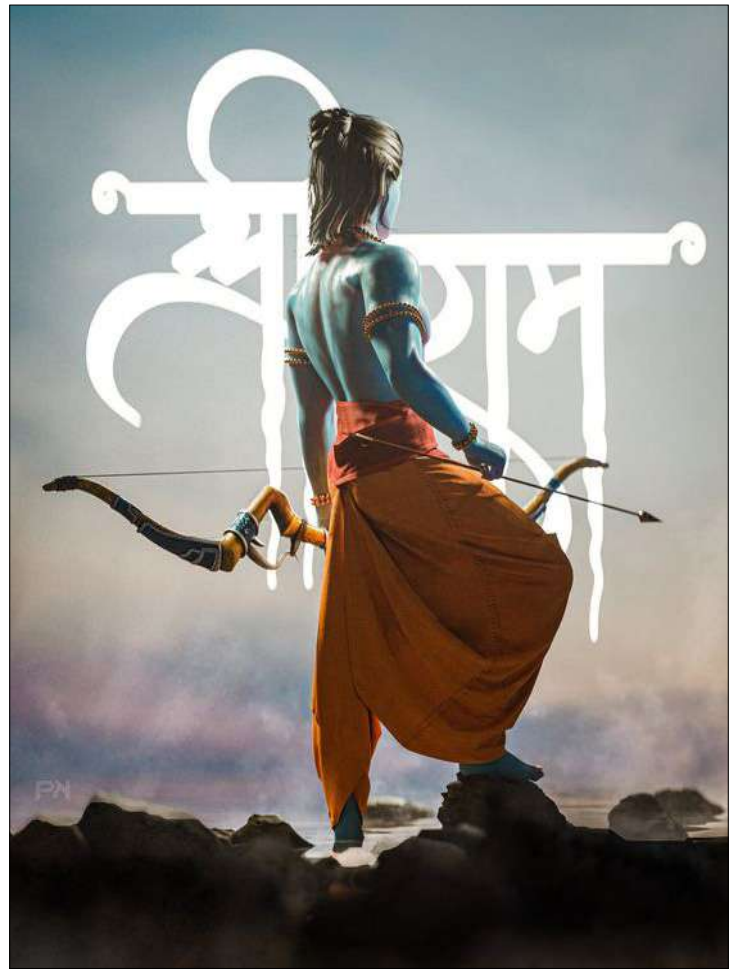

'कवि ना होउं नहिं चतुर कहावउँ, मति अनुरूप राम गुन गावउँ।'

राम हमनी के हृदय से लेके जीभ तक पर विराजेलन। अउर काहे ना लीं हम 'राम' के नाम आ दोसरा ढंग से कहल जाव त कोई भी भगवान के नाम। भगवान के शरण मानवीय चेतना के ऊ चरम बिंदु बा जहाँ पहुंचके प्राणी अपना दुःख से छुटकारा अउर परम शांति के आस करेला। अंग्रेजी भाषा में 'जॉर्ज हर्बर्ट' (George Herbert) के एगो प्रसिद्ध कविता बा 'दी पुली' (The Pulley), जेकर भावार्थ बा कि भगवान इंसान के धन, सुंदरता, बुद्धि, प्रतिष्ठा, आनंद सब कुछ दे दिहलन लेकिन चैन चाहे कह लिंही संतोष, उ अपना भिरीं रख लिहलन कि एही बहाने इंसान भगवान के याद त करी। त हमहूँ लिहिले राम के नाम, प्रनाम पाती करे के होखे तब कहीला हम 'जय राम जी की', जब कवनो गंदगी पर नजर जाला तब मुंह से निकलेला, 'राम-राम'। मरे के समय गांधी जी के आखिरी शब्द रहे, 'हे राम', अउर अगर कोई अपना जिंदगी में एको बार राम के नाम ना लेले होखे तब ओकर अंतिम यात्रा में, मंजिल ले जाए के बेरिया 'राम नाम सत्य है' ओकर कान में ई बीज मंत्र डाल देवल जाला।

हमनी के देश किसिम-किसिम के फूल के गुलदस्ता जइसन बा। किसिम-किसिम के बोली, धर्म, मौसम के साथ किसिम-किसिम के भगवान भी बारन जिनका के हमनी के पूजिले अउर उनकर नाम जपिले। लेकिन तुलसी बाबा के लिखल रामचरितमानस के हम सब सबसे जादे जानिले, पढ़िले, एहीसे हमनी के राम के बारे में सबसे जादे जानिले। जब-जब धरम पर कोई पय लागी त कृष्ण जनमिहन बाकि अगर राम जनम ले लिहन त धरम पर कोई पय ना लागी।

'राम' चाहे 'राम कथा' सांच बा कि वाल्मीकि जी आऊर तुलसी बाबा के गढ़ल किस्सा, ए पर कुछ कहल ना जा सकेला, पर जेतना हमनी के पता बा, राम जी विष्णु भगवान के सातवां अवतार रहलन जे मनुष्य के देह धर के पृथ्वी पर अइलन आउर रावन जइसन अहंकारी और तामसिक शक्ति से ओ समय समाज के मुक्त करवइलन। अगर इ मान भी लेवल जाये कि 'रामायण' बस एक किस्सा कहानी के ग्रंथ बा तब भी एक बात त माने के पड़ी कि जे भी इ ग्रंथ के सोच समझ के पढ़ी, ओकरा जिंदगी जिए के लूर आ जाई। इ ग्रंथ पढ़ला से इ बात समझ में आवेला कि अगर राम जइसन आदमी राजा होइहन त 'रामराज' के स्थापना हो सकेला और अगर रावन जइसन बेबुद्धि वाला अउर अहंकारी राजा हो जाई त ओकर और कुटुंब के नास त होइबे करी, सोना के लंको जर जाई।

'राम' चाहे 'रामचंद्र' के तुलसी एक 'रोल मॉडल', एगो प्रतीक के रूप में हमनी के सामने धइले बारन। जे भी राम के जइसन बने के चाही उ देस दुनिया में पुजाई। राम में धीरज रहे, उनका में दया के भाव रहे, आज्ञाकारी बेटा रहलन, आपन पत्नी सीता के अलावा कोई दूसर औरत के विषय में सोचबो ना कइलन। वइसन 'राम' के नाम के जप व्यवहारिक, आध्यात्मिक, नैतिक, धार्मिक सब तरह से फायदेमंद बा।

परिचय- ऋचा वर्मा जी छपरा आ गाजीपुर से संबंधित बानी। भोजपुरी में ई पहिला प्रयास बा। हिंदुस्तान, प्रभात खबर, सुरभि, हंस, वनमाली आदि पत्र-पत्रिकन में रचना प्रकाशित होत रहल बा।

आलेख

अमित दूबे

हमनी के राम

सब राम साहित्य जइसे विलंका रामायण, सर्वार्थ रामायण, तत्वार्थ रामायण, प्रेम रामायण, संजीवनी रामायण आदि राम जी के एगो महान व्यक्तित्व के छवि तैयार करेली सन। एह से राम जी के जीवन मानवीय मूल्य के मंडप बन जाला। अंत्योदय के कल्याण त उहाँ की हृदय पर विराजेला। राम जी के जीवन सौहार्द की स्याही से लिखल अपनत्व के अनुच्छेद बन जाला, सर्वोदय के संविधान बन जाला। राम जी के जीवन में क्षमा, प्रतिशोध के अभाव, घृणा के अभाव, सर्व समाज के मंगल, राष्ट्रीय भावना, नीति, लोकतांत्रिक मूल्य आदि सब पावल जाला।

भारत देवी देवता के जनम भूमि हवे। ए धरती पर चौरासी करोड़ देवी देवता भइलें। विष्णु भगवान खुदे दस गो मुख्य अवतार लेहलें। दसो अवतार के सनातनी लोग की हृदय में स्थान बा, लेकिन जौन स्थान भगवान श्री राम जी पवले बानी, ऊ स्थान अतुल्य बा। इहो देखे के मिलेला कि जेतना विविधता कथा, संस्करण, प्रकरण आदि रामायण के भारतीय उपमहाद्वीप में और एशियाई देशन में मिलेला ओइसन व्यापकता कौनो और काव्य के ना मिल पावेला।

एकरी पीछे कारण ई बा कि भारत देश के जौन मूल चरित्र हवे, ऊहे चरित्र राम जी के व्यवहार में स्थापित हो गायिल बा। एही से महाकाव्य के नायक राम, "हमनी के राम जी" बन जालें। राम जी के व्यक्तित्व की साथे एगो सहजता ई रहेला कि लेखक के मौलिकता बनल रहेले। राम जी के व्यक्तित्व समाज के ए बात में भी आजादी देला कि सभे अपनी भाषा अउरी संस्कृति के हिसाब से आपन-आपन राम बना ले। ई आजादी कृष्ण जी की साथे नइखे। एही से क्षेत्र और संस्कृति के हिसाब से राम जी के व्यक्तित्व आ कथा उभर के सामने आवेला।

ओ हिसाब से देखल जाव त ऋषि वाल्मीकि जी वाल्मीकि रामायण लिखलें। वाल्मिकी रामायण के राम जी मानव हवें, संसारी हवें, श्रेष्ठ हवें, धीरता गंभीरता, वीरता वाला हवें, लेकिन हवें मानव। बाबा तुलसी राम चरित मानस लिखले, उनकर राम परब्रह्म, तुलसी के हृदयपति हवें। बाबा तुलसी के राम से जुड़ल हर चीज प्यारा बा। बाबा तुलसी के राम श्रेष्ठतम के मानवीय अभिव्यक्ति हवें। एही से तुलसीदास जी लिखलें बानी-

सियराम मय सब जग जानी
करउ प्रनाम जोरि जुग पानी।

बांग्ला के महाकवि कृतिवास ओझा कृतिवास रामायण लिखलें। चूकि बंगाल में दुर्गा पूजा प्रचलित ह, एसे राम जी रावण की साथे युद्ध में विजयी होखे खातिर दुर्गा जी के पूजा कइले बानी। ए प्रसंग के राम के शक्ति पूजा के नाम से जानल जाला।

दक्षिण भारत में नवीं शदी में एगो कम्बन ऋषि रहनी। उहां के कम्ब रामायण लिखली। कम्ब रामायण के राम जी के भ्रातृ प्रेम और जन मानस के साथे वातार्लाप, अन्य राम साहित्य की तुलना में एगो अलगे स्थान रखेला।

सब राम साहित्य जइसे विलंका रामायण, सर्वार्थ रामायण, तत्वार्थ रामायण, प्रेम रामायण, संजीवनी रामायण आदि राम जी के एगो महान व्यक्तित्व के छवि तैयार करेली सन। एह से राम जी के जीवन मानवीय मूल्य के मंडप बन जाला। अंत्योदय के कल्याण त उहाँ की हृदय पर विराजेला। राम जी के जीवन सौहार्द की स्याही से लिखल अपनत्व के अनुच्छेद बन जाला, सर्वोदय के संविधान बन जाला। राम जी के जीवन

में क्षमा, प्रतिशोध के अभाव, घृणा के अभाव, सर्व समाज के मंगल, राष्ट्रीय भावना, नीति, लोकतांत्रिक मूल्य आदि सब पावल जाला।

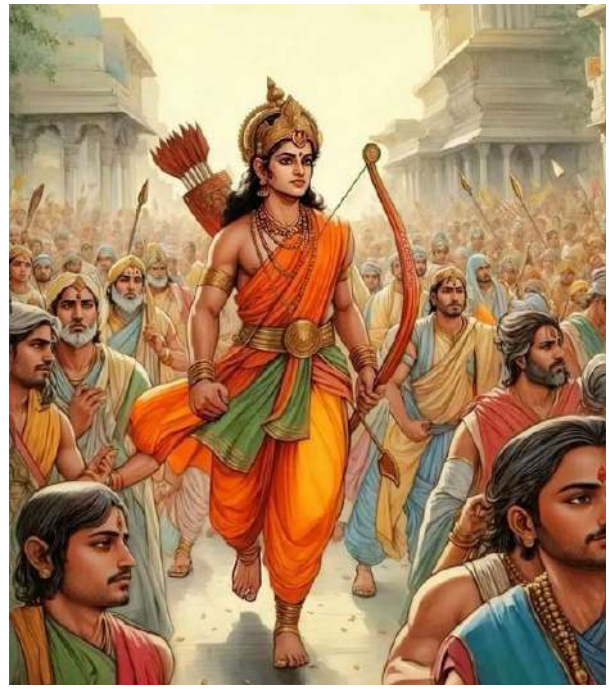

राम जी जब वनवास काट के अयोध्या अइनी, ओ समय रानी कैकेई के लेके जनता में बहुत क्रोध रहे, हालांकि रानी कैकेई के राम जी के कष्ट के बारे में अफसोस रहे। राम जी के ओ बेरा ई अधिकार रहे कि उहाँ का कैकेई के क्षमा ना करतीं, लेकिन उदारमना श्री राम जी आवते कैकेई से कहनी कि हे माता रउवा कारण हमके एतना बात के सीख मिलल कि पिता के प्यार का होला, राजकुमार भरत के गुण का बा, हनुमान जी के पराक्रम कइसन बा, सुग्रीव के मित्रता का ह, राजकुमार लक्ष्मण के भक्ति का ह, सीताजी के पवित्रता का ह, हमार आपन ताकत का ह अउर हमारी शत्रु के शक्ति का ह। क्षमा के दोसर उदाहरण राम अउर रामायण के अलावे कहाँ पावल जा सकेला।

कृतिवास रामायण में एगो प्रसंग आवेला कि अपनी मृत्यु के समय रावण श्री राम जी से ई वरदान मंगलें कि उनकी मृत्यु के बाद भी उनके लोग याद रखे। तब श्री राम जी कहनी कि तहरी देह के जलावे वाला अग्नि के धक धक शब्द सातों द्वीप में हर आदमी के सुनाई देत रही। एह तरे तहके आदमी हमेशा याद रखी। कृतिवास जी एह प्रसंग के हे तरे लिखलें बानी–

देहांते रावनेनापि रामाय याचीवोतरः
वेरन येन लोकानाम, स्मरणम में भविष्यति

अपनी दुश्मन के आशीर्वाद देवे वाला भगवान राम के अलावा के हो सकेला। अइसन उदार चरित वाला नायक ही हमनी के राम जी हईं, जेकरी में प्रतिशोध के भाव के अभाव बा।

जब राम जी के वनवास के राजाज्ञा मिलला पर उहाँ का वन जाए लगनी त अयोध्या के सब नर नारी राम जी से अनुरोध करे लागल लो कि महल लौट चलीं। राम जी ओ बेरा जनमत के बात ना मननी बल्कि नीति के बात मननी। बाबा तुलसी ए मार्मिक चित्र के हे तरे लिखले बानी कि–

कीर के कगार ज्यों, नृप चीर विभूषण उत्पम अंगनी पाई
राजीव लोचन राम चले तजि बाप को राज बटाऊ की नाई।

अइसन त्याग बस "हमनी के राम जी" ही कर सकेनी। कंब रामायण में महर्षि कम्बन जी एगो प्रसंग लिखले बानी कि श्रीराम जी लंका से लौटे के बेरा सुग्रीव, जांबवान, नील अउरी हनुमान आदि वानर समूह के आपन-आपन जगह पर लौट जाए के कहनी। ए बात पर सब लोग दुखी हो गइल आ लागल रोवे। तब सुग्रीव आ अन्य वानर लो कहल कि हमनी का अयोध्या राउर राज्याभिषेक के उत्सव देखल चाहत बानी जा। उत्सव देख के हमनी के थकान दूर हो जाई। राम जी ए बात पर भाव विभोर हो गयिनी। आ सबके साथे लिया अइनी। श्री राम के अपने सहयोगी लोग के प्रति भाव के वर्णन महर्षि कम्बन जी हे तरे कइले बानी–

पार मामादी लयोत्तियि नाय्यिनिन पैंबान
आर मामुदिक कोलमुअ जबियु मलहूंम
शोर्बी लड़ियाड गाणगुरु मलवैयुन दौड़र्दु
पेर वेयरू लनर्न रूललनबू पिड़ीप्पार।

महात्मा गांधी जी श्रीराम जी से बहुत प्रभावित रहनी। उहाँ के ई सपना रहे कि भारत में राम राज्य के स्थापना होखे। तुलसी बाबा कहले बानी कि राम राज्य के अर्थ ह–

बयरू न कर काहू सन कोई
राम प्रताप विषमता खोई।

मतलब कि राम राज्य ऊ जगह ह जहां केहू से केहू के बैर नइखे, और राम जी की प्रताप से कौनों विषमता नइखे। गांधी जी एही भाव के लोक तंत्र में ले आवल चाहत रहनी।

ए कुल उदाहरण से ई बात स्पष्ट होता कि लोक नायक राम जी व्यक्ति ना रहलें, विचार रहलें। वर्ण ना रहलें, संस्कार रहले। विवाद नाही, संवाद हवें। नारा नाही, चेतना हवें। जाति नाही, ज्योत्स्ना हवें। एही से त ऊ हमनी के राम जी हवें। एह से राम जी पर विस्तार पूर्वक सोचला के जरूरत बा।

परिचय– अमित दूबे (देवरिया)। बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश में कार्यरत। भोजपुरी-हिंदी में अनवरत लेखन।

भाषांतर / मगही

राकेश कुमार

रामे समाधान हरिवन

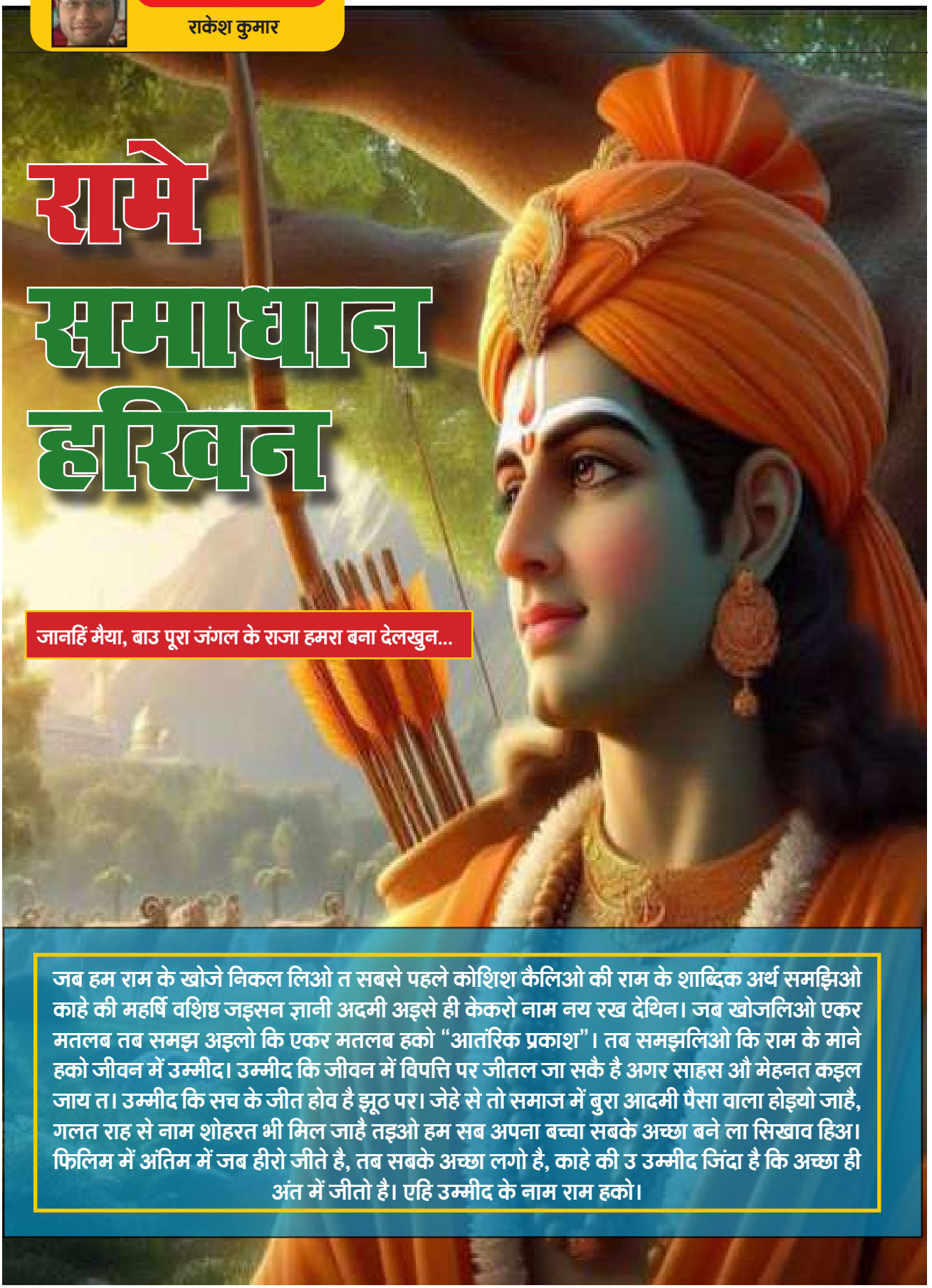

जानहिं मैया, बाउ पूरा जंगल के राजा हमरा बना देलखुन...

जब हम राम के खोजे निकल लिओ त सबसे पहले कोशिश कैलिओ की राम के शाब्दिक अर्थ समझिओ काहे की महर्षि वशिष्ठ जइसन ज्ञानी अदमी अइसे ही केकरो नाम नय रख देथिन। जब खोजलिओ एकर मतलब तब समझ अइलो कि एकर मतलब हको "आतंरिक प्रकाश"। तब समझलिओ कि राम के माने हको जीवन में उम्मीद। उम्मीद कि जीवन में विपत्ति पर जीतल जा सकै है अगर साहस औ मेहनत कइल जाय त। उम्मीद कि सच के जीत होव है झूठ पर। जेहे से तो समाज में बुरा आदमी पैसा वाला होइयो जाहै, गलत राह से नाम शोहरत भी मिल जाहै तइओ हम सब अपना बच्चा सबके अच्छा बने ला सिखाव हिअ। फिलिम में अंतिम में जब हीरो जीते है, तब सबके अच्छा लगो है, काहे की उ उम्मीद जिंदा है कि अच्छा ही अंत में जीतो है। एहि उम्मीद के नाम राम हको।

राम-राम कर हिओ। राम पर ढेर कुछ लिखल गेले हे, ढेर मनी किताब है, व्याख्या है, कहानी है, कविता है, भजन है, लेकिन गौर से समझभो त देखभो कि दू तरह के लिखावट है। एगो जे राम के जीवन के कथा के बारे में, उनकर महिमा के बारे में औ दोसर हको राम के जीवन के घटना से आज के जीवन में सीख, जेकरा की दृष्टांत भी कह सको हो। हमर लेख दोसरा तरह वाला हको, हमर राम सगुन भी हखुन अउ निर्गुण भी। हमर राम नै तो विष्णु जी के अवतार हखुन अउ नै तो शिव जी से बात कर हखुन, हमर राम चमत्कारी नै हखुन। हमर राम मानव राम हखुन, हमर राम रामायण के उ नायक हखुन, जे अपना मेहनत, अपना पुरुषार्थ और अपना कर्त्तव्य निष्ठता से **मर्यादा** पुरुषोत्तम राम बनलखिन, राम राज्य के स्थापना करके राजाराम बनलखिन, इहे से हमर राम आज के समय में भी सब समस्या के समाधान हखुन। रामायण के एक-एक घटना पर किताब लिखल जा सक है, काहे की एतना पात्र हको एकरा में औ हर पात्र से एतना कुछ सिखल जा सक है की जेकर हिसाब नय हको। हम ओकरा में से दू-तीन गो दृष्टान्त लिख रहलिओ है।

जब हम राम के खोजे निकल लिओ त सबसे पहले कोशिश कैलिओ की राम के शाब्दिक अर्थ समझिओ काहे की महर्षि वशिष्ठ जइसन ज्ञानी अदमी अइसे ही केकरो नाम नय रख देथिन। जब खोजलिओ एकर मतलब तब समझ अइलो कि एकर मतलब हको "आतंरिक प्रकाश"। तब समझलिओ कि राम के माने हको जीवन में उम्मीद। उम्मीद कि जीवन में विपत्ति पर जीतल जा सक है, अगर साहस औ मेहनत कइल जाय त। उम्मीद कि सच के जीत होव है झूठ पर। जेहे से तो समाज में बुरा आदमी पैसा वाला होइयो जाहै, गलत राह से नाम शोहरत भी मिल जाहै तइओ हम सब अपना बच्चा सबके अच्छा बने ला सिखाव हिअ। फिलिम में अंतिम में जब हीरो जीते है, तब सबके अच्छा लगो है, काहे की उ उम्मीद जिंदा है कि अच्छा ही अंत में जीतो है। एहि उम्मीद के नाम राम हको। एहि से राम हम सब के अंदर हखुन इ कहल जा है।

विद्यार्थी जीवन के लिए बहुत बड़ा सीख है, राम के जीवन के उ घटना, जब राम राजा बने वाला हलखिन अउ रातो रात जंगल जाए के आदेश आ गेलै। राम उहां भी चौराहा पर खड़ा हखिन कि कौन धर्म के पालन करून। क्षत्रिए धर्म के जे कह है कि अन्याय के खिलाफ लड़े ला चाही अउ की पुत्र धर्म के, जे कह है की माय बाप के आदेश संतान के लिए सबसे ऊपर है, की भाई धर्म के जे कह है की अपना छोटा भाई के खुशी में ही खुशी है, की जे वंश में जनम लेल खिन ओकरा बारे में की जे हो जाए वचन पूरा करे ही पड़तो। राम भी तो घोषित युवराज हलखिन अउ उनकर राज्य अभिषेक के घोसना हो गेले हल, उ भी तो दशरथ जी के वचन ही हलै राम के की तोहि राजा बनभो। अब कौन धर्म निभावल जाए? तब राम समस्या के मूल में जाके कर्त्तव्य पथ निर्धारित कैलखिन की उ राजा एहि से बन रहल खिन हल काहे की उ राजा दशरथ के सबसे बड़ा बेटा हलखिन। त जे अधिकार पिता दे सकै है उ अधिकार छीने के भी हक उ पिता के है। अउ राम जंगल जाए के बात पर कोई उदास नै हखिन, माता कौशल्या के लगलै की पता नय बेटा सायद उदास होतय तो ओकरा हिम्मत दे हिअ लेकिन जब राम एलखिन तो मुस्कुरा के कहलखिन की जानहिं मैया बाउ पूरा जंगल के राजा हमरा बना देलखुन है।

आज जब जमाना में राजा प्रजा वाला बात नय है, ने तो केकरो बाऊ के तीन गो पत्नी है अउ ने तो कोई माय अपना बेटा के जंगल भेज रहले है। जीन्स पेंट पेहेन कर कंप्यूटर अउ मोबाइल चलाबे वाला सब की सीख सक है, राम से? चाहे सतयुग रहको, चाहे कलयुग चाहे बात ईशा पूर्व के हो, चाहे इक्कीसवी शताब्दी के, एक बात आज भी समान हको, मानव जीवन में कि हर जगह जीवन में आदमी चौराहा पर खड़ा है। खासकर के रिश्ता निभावे में। कौन रास्ता सही, कौन गलत कइसे समझल जाए, आगे चलकर कौन रास्ता पर की मिलतो, पता नय, त फिर कइसे चुनल जाए सही राह? एहि सवाल के जबाब हखिन राम। एहि से सब समस्या के समाधान हखिन राम।

विद्यार्थी (कोई भी तरह के विद्या हासिल करे वाला) जीवन के लिए बहुत बड़ा सीख है, राम के जीवन के उ घटना, जब राम राजा बने वाला हलखिन अउ रातो रात जंगल जाए के आदेश आ गेलै। राम उहां भी चौराहा पर खड़ा हखिन कि कौन धर्म के पालन करूँ। क्षत्रिए धर्म के जे कह है कि अन्याय के खिलाफ लड़े ला चाही अउ की पुत्र धर्म के, जे कह है की माय बाप के आदेश संतान के लिए सबसे ऊपर है, की भाई

धर्म के जे कह है की अपना छोटा भाई के खुशी में ही खुशी है, की जे वंश में जनम लेलखिन ओकरा बारे में की जे हो जाए वचन पूरा करे ही पड़तो। राम भी तो घोषित युवराज हलखिन अउ उनकर राज्य अभिषेक के घोसना हो गेले हल, उ भी तो दशरथ जी के वचन ही हलै राम के की तोहि राजा बनभो। अब कौन धर्म निभावल जाए? तब राम समस्या के मूल में जाके कर्त्तव्य पथ निर्धारित कैलखिन की उ राजा एहि से बन रहलखिन हल काहे की उ राजा दशरथ के सबसे बड़ा बेटा हलखिन। त जे अधिकार पिता दे सक है उ अधिकार छीने के भी हक उ पिता के है। अउ राम जंगल जाए के बात पर कोई उदास नै हखिन, माता कौशल्या के लगलै की पता नय बेटा सायद उदास होतय तो ओकरा हिम्मत दे हिअ लेकिन जब राम एलखिन तो मुस्कुरा के कहलखिन की जानहिं मैया बाउ पूरा जंगल के राजा हमरा बना देलखुन है। विद्यार्थी के इहाँ से दू बात सीखे के हको। पहिला कि अगर परिणाम तोर सोच के अनूरुप नय ऐलो तो ज्यादे चिंता के बात नय हको काहेकि सबकुछ तोरे हाथ में नय हको। सोचहो जे राम सारा प्रजा के प्यारा, जे राम बाप माय के आंख के तारा, जे राम भाई सबके आदर्श, जे राम के रहते कोई दुश्मन अयोध्या जीत नय सक है, जंगल जाए वाला रात के एक दिन पहिले तक दूर-दूर तक कोई सोचिए नय सक है की राम राजा नय बनथिन कल, लेकिन अइसन हो गेलै अउ तैयो राम मुस्कुरा रहलखिन है। एहि ने गीता के उ ज्ञान है जे कह है की कर्म करो अउ फल के चिंता मत करो। श्रीकृष्ण के कहे से पहिलही राम इ ज्ञान के समझ गेलखिन। सबके इ समझे के जरूरत है जीवन में खुश रहे के लिए।

विद्यार्थी के इहाँ से दू बात सीखे के हको। पहिला कि अगर परिणाम तोर सोच के अनूरुप नय ऐलो तो ज्यादे चिंता के बात नय हको काहेकि सबकुछ तोरे हाथ में नय हको। सोचहो जे राम सारा प्रजा के प्यारा, जे राम बाप माय के आंख के तारा, जे राम भाई सबके आदर्श, जे राम के रहते कोई दुश्मन अयोध्या जीत नय सक है, जंगल जाए वाला रात के एक दिन पहिले तक दूर-दूर तक कोई सोचिए नय सक है की राम राजा नय बनथिन कल, लेकिन अइसन हो गेलै अउ तैयो राम मुस्कुरा रहलखिन है। एहि ने गीता के उ ज्ञान है जे कह है की कर्म करो अउ फल के चिंता मत करो। श्रीकृष्ण के कहे से पहिलही राम इ ज्ञान के समझ गेलखिन। सबके इ समझे के जरूरत है जीवन में खुश रहे के लिए।

दूसर चीज जे इ घटना से निकल के आवै है, उ ई कि राम के जंगल जाना है, जहाँ राक्षस, शेर, भालू जइसन खूंखार जानवर रह है, उहां कइसे जीयल जा सक है। कोई साधारण आदमी अगर इ फैसला ले भी ले भावना में आके की हम, बाऊ कहलखिन है त इ कर देबै लेकिन फिर सवाल है की जंगल में जी पैतै? राम एहि से मुस्कुरा रहलखिन हल काहे की जब शास्त्र विद्या औ शस्त्र विद्या उनका उनकर बचपन में सिखावल जा रहले हल तब उ खुद के तपा के एतना मेहनत कैलखिन की उनकर सामने कोई राक्षस, कोई जंगली जानवर नै जीत सक है। सही समय

पर मेहनत जीवन में बहुत जरूरी है। अगर जंगल जाए समय उ सीधे मेहनत करथिन हल तबो कोई फायदा नै होते हल काहे की कुछ साधे में मेहनत के साथ समय भी लगो है। जे हे से सब विद्यार्थी के कह है की परीक्षा से एक रात पहिले पढ़कर कोई फायदा थोड़े ने होतो। हम अइसन अनेक आदमी देखलियो है जे विद्या अर्जित करे के समय फांकी मार के समय बर्बाद कर है आ बाद में जीवन भर पछता है की समय रहते नय सीखनु। तोहनियो सब बहुत लोग के जान होत हो।

ऐसे तो दाम्पत्य जीवन के सब सवाल के जवाब हको रामायण। पति के पत्नी के प्रति धरम और पत्नी के पति के प्रति धरम। पति अउ पुत्र धर्म के द्वन्द अउ पत्नी अउ बहु के धर्म के द्वन्द। सब हको एकरा में लेकिन हम पति पत्नी के धरम पे लिख हिओ अउ जे हमरा सबसे ज्यादा पसंद हको उ हको स्वर्ण मृग वाला प्रसंग जेकरा में माता सीता कह हखिन की वनवास के निशानी इ सुन्दर स्वर्ण हिरन के छाल हमरा चाही अउ राम समझाव हखिन की इ कोई साजिश हको, हिरन कहीं सोना के होव है। ऐसे तो इ घटना के बहुत तरह से समझल जा सक है अउ लालच के की परिणाम होव है उ पता चल है लेकिन हम इ घटना के एक अउ तरीका से देखा हिओ। यहाँ भी राम के सामने उनकर दू गो वचन टकरा रहलो है। पहिला की पत्नी के सुरक्षा उनकर धर्म है त छोड़ के कैसे जाऊं और दूसरा की पत्नी के खुश रखें भी उनके धर्म है त कैसे नय जाऊं। समझाबे के कोशिश कर चुकल खिन है। राम के भरोसा लक्ष्मण पर की जब तक लछमन साथै है सुरक्षा के परेशानी नय है। एहि से दूसरा वचन निभावे और माता सीता के लिए स्वर्ण मृग के छाल लावे चल गेलखिन राम। जब राम स्वर्ण मृग बनल राक्षस मारीच के मालखिन त उ बचाओ लक्ष्मण बचाओ लक्ष्मण चिल्लाए लगलै औ इ आवाज लक्ष्मण और सीता दुनो के सुनाई दे रहलो है लेकिन देख हो यहाँ विश्वास के फल। माता सीता और लक्ष्मण दुनो को मालूम है की कितना ताकतवर हखिन राम लेकिन तभीओ माता सीता के विश्वास डगमगा गेलै और उ लक्ष्मण के राम के मदद के लिए भेजे लगलखिन जबकि लक्ष्मन कह रहलखिन है की भैया राम के कोई कुछ नय कर सक है। उनका हराना बहुत मुश्किल बात है। प्यारे में विवश होके लेकिन विश्वास रख नय पइलखिन माता सीता अउ जेकर परिणाम होलय की माता सीता राम से अलग हो गेलखिन। ध्यान से देखभो त एहि कारन से खाली एक साल नय बल्कि अयोध्या लौट के भी राम से अलग होवे पड़लै सदा के लिए। इहे से रिश्ता में विश्वास के सबसे ज्यादा महत्व है। जेहे से कहल जा है की विश्वास चाहे इंसान पे, चाहे भगवान पे, चाहे सच पे, चाहे कर्म पे जेकरा पर भी रहे अटूट रखना बड़ी जरूरी हको अउ एहि घटना में रावण साधू के रूप लेके माता सीता के हरण कर लेल कय जेकरा से इ भी समझ सकला है की सब पर विश्वास भी नय कइल जा है। सुपात्र पर अटूट विश्वास बहुत जरूरी है लेकिन वही समय कोई सुपात्र हको की नय उ भी समझना ओतनै जरूरी है।

एगो अउ उदहारण देके बताव हिओ की केतना जरूरी है जीवन में मेहनत से अपने आप के तपा के लायक बनाना। रामायण में दू गो अइसन घटना है जेकरा में पत्नी के हरण है। एगो बाली अपने छोटा भाई के पत्नी रूमा के हरण कलकै और दोसरा जब राक्षस राज रावण माता सीता के हरण कैल कै। सुग्रीव अपने आप की इ लायक नै बना पइलखिन की बाली के हरा देखिन अउ जे से बहुत साल तक रो-रो के पहाड़ पे जीवन कटलखिन लेकिन एहि दुर्घटना जब राम के साथ होलय तब देखहो त्रिलोक विजयी रावण के घर घुस के मालखिन और बुराई के अंत कैलखिन। सोचोहो की जे रावण से देवता भी डर हलखिन ओकरा राम अइसहीं हरा देलखिन। मने केतना मेहनत करके अपने आप के तपा के उ लायक खुद के बनैलखिन हल।

के हखिन राम ? राम कोई अउ नय हमहि सब हो राम। जे कर्तव्य पथ पर है वही राम है। सीता के हखिन ? सीता लक्ष्मी (हर तरह के सम्पदा) हखिन लेकिन केकरो कैसे मिललखिन, राजा जनक के मिललखिन जब हल चला के मेहनत कैलखिन , राम के मिललखिन जब शिव धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ैलखिन। अब रावण के है? रावण ऊ है, जे बिना मेहनत के लक्ष्मी के धोखा से पावे के कशिश कर है। कथा साफ-साफ बता रहलो है की योग्यता के अनुसार ही लक्ष्मी तोरा पास रहतो अउ जो अयोग्य होवे के बाद भी लक्ष्मी के रखे के कोशिश करभो, बल पूर्वक त अपने नाश कर लेब हो। त सबके योग्य बने के कोशिश करना चाही अउ ओकरे आधार पर जीवन यापन करना चाही। राम विश्वास के नाम हखिन, अंधविश्वास के नय।

राम औ रामायण के सब पात्र पढ़े से ज्यादे सोचे के चीज हखुन। हर घटना पर किताब लिखल जा सक है अउ बहुत कुछ जीवन में सीखल जा सक है। राम के रास्ता कर्तव्य के रास्ता हको। इहे से जीवन जिए के सार हको अउ सब समस्या के समाधान हको। राम नाम के सागर में एक डुबकी अउ लगवाव हिओ। अबरी वाला डुबकी जरी और अंदर।

के हखिन राम? राम कोई अउ नय हमहि सब हो राम। जे कर्तव्य पथ पर है वही राम है। सीता के हखिन? सीता लक्ष्मी (हर तरह के सम्पदा) हखिन लेकिन केकरो कैसे मिल हखिन, राजा जनक के मिललखिन जब हल चला के मेहनत कैलखिन , राम के मिललखिन जब शिव धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ैलखिन। अब रावण के है? रावण ऊ है, जे बिना मेहनत के लक्ष्मी के धोखा से पावे के कशिश कर है। कथा साफ-साफ बता रहलो है की योग्यता के अनुसार ही लक्ष्मी तोरा पास रहतो अउ जो अयोग्य होवे के बाद भी लक्ष्मी के रखे के कोशिश करभो, बल पूर्वक त अपने नाश कर लेब हो। त सबके योग्य बने के कोशिश करना चाही अउ ओकरे आधार पर जीवन यापन करना चाही। राम विश्वास के नाम हखिन, अंधविश्वास के नय, जे बहुत बढ़िया से दोहा में कहलखून है कबीर।

क्या काशी क्या ऊसर मगहर, राम हृदय बस मोरा।
जो काशी तन तजै कबीरा, रामे कौन निहोरा॥

परिचय- नालंदा, बिहार के रहनिहार राकेश कुमार जी बैंगलोर के एगो मल्टी-नेशनल कंपनी में वरिष्ठ पद पर कार्यरत बानी। इहाँ के एगो कवि, एगो लेखक, एगो मोटिवेशनल स्पीकर के साथे राम मर्मज्ञ हईं।

उदय नारायण सिंह

राम में सउनाइल भोजपुरिया बधार

"रामे राम रामे हो राम जी, सीताराम हो रमऊ"- ई उ विलाप ह, जब बिहुला-विसहरी के पाठ में बिहुला अपना विपत से घबड़ा के राम जी के सुमिरतिआ आ ओकर ओह पुकार से देखे-सुने वाला रोवे लागता। "एकिया हो रामा" के टेक लेके सोरठी-बृजाभार, "रामा सुमिरिला राम के चरनिया हो ना" के टेक लेके कुंवर-विजयमल के रात-रात भर होखे वाला पाठो में बिना राम जी के काम ना फरिआय। अइसन ना जाने केतना पारंपरिक गीतन में राम जी समाइल बानीं, सउनाइल बानीं।

"रामे राम रामे हो राम जी, सीताराम हो रमऊ"– ई उ विलाप ह, जब बिहुला–विसहरी के पाठ में बिहुला अपना विपत से घबड़ा के राम जी के सुमिरतिआ आ ओकर ओह पुकार से देखे–सुने वाला रोवे लागता। **"एकिया हो रामा"** के टेक लेके सोरठी–बृजाभार, **"रामा सुमिरिला राम के चरनिया हो ना"** के टेक लेके कुंवर–विजयमल के रात–रात भर होखे वाला पाठो में बिना राम जी के काम ना फरिआय। अइसन ना जाने केतना पारंपरिक गीतन में राम जी समाइल बानीं, सउनाइल बानीं।

एह बधार में जिनगी के खिस्सा राम जी से शुरू होके, रामे जी पर ओरियाला! जब चार गो कान्हा पर लोग रंथी उठा के घाटे ले जाला, तबहुंओ रामे जी संगे रहेनीं। सभे राम जी के नाम के औकात के जानेला आ एही से कहेला - "सिरी राम नाम सत्य है।"

भोरे भोरे दादी–परदादी के मुंहे पराती गावत सुनले बा आदमी– **"सबेरे उठी ल ना सखी, राम जी के नाम हो"**! हमार बाबूजी त केहू से मुंहे पर कह देत रहीं– **"राम–राम रट, ना त सामने से हट।"** भोरे–भोरे **"जय राम जी के"** अभिवादन–परंपरा से शुरू होखे वाला दिनचर्या, रात रात तक राम जी के नाम पर आजो ओरिआला आ हमरा बधार में आजो जिअतार बा। ई उ नाम ह, जवन खिस्सा के– **"पढ़त–पढ़ावत गनिका तरली, तरलें सजन कसाई"**– आजो माई–बाबू लोग अपना अगिला पीढ़ी के सुना–सुना के अपना के धन्य मानेला।

"सांझ हीं राम जी जनमलें त आधी रात लछुमन हे, ए ललना, भोरे रे भरत भुआल कि चारो भैया जनमलें हो" ई सोहर भा खेलवना (एगो गीत शैली) गा–गा के कवनो भोजपुरिया मानुस के जनम लेते बधईया गवाला।

कहवां ही राम जी के जनम भयो हरि झूमरी
अब कहवां जे बाजेला बधाव,
खेलब हरि झूमरी।

तब ई सुनते भा पता लागते कि बबुआ भइल बाड़े, पंवरिया लोग अपना दल–बल के संगे जुट के बधईया गावे के शुरू कर देत रहे लोग–

"कंगन लेबो हो बबुआ के बधईया।
"राम जी जनमलें दसरथ अंगनवा,
सोना के संगे लेबो रुपईया।"

भलहीं सामान्य रुप से एगो लइका जनमो, ओकरा में राम जी के स्वरुप के दरसन होखेला। शायद इहे भाव रहे कि पहिले के स्कूलन में छोट–छोट लइकन के नाम ना लिखात रहे, पाठ पूजवावल जात रहे– **"रामऽ गति, देहु सुमति!"** एकरा बादे ककहरा से कहानी आगे बढ़त रहे। ई परंपरा दुर्भाग्य से ओरिया गइल।

लइका तनीं टंठगर होला आ अपना संघतिअन के संगे जब खेत–बधार घूमे जाला आ चिरई–चुरुंग के कवनो फसल पर दाना खात देखेला त ताली पीट–पीट के अंरचत गावे लागेला–

'राम जी के चिरई, राम जी के खेत; खा ल चिरई, भर भर पेट।'

एह लोकोक्ति में केतना बड़हन दर्शन छुपल बा,समझ सकतानीं रउओ, काहे कि भोजपुरिया बधार पहिलहीं से राम जी के दिव्य रुप से परिचित बा, काहे कि उनका संगे ओकर हीर–हीर जुरल बा। इहे फसल जब कटा के दुअरा पर आवेला आ रास के तरजूई पर तउलाला त पहिलका तऊल **"रामे जी राम"** से गिनाए के सिरी गनेस होला। बात इंहवे तक ना रूके। अगिला गिनती के क्रम भी रामे जी के संगे जुरल रहेला– रामे जी दूई,रामे जी तीन,रामे जी चार––!

लइका भा सेयान तक ही ई बात रहित, तब नूं! लइकियन के भी मन में अपना अपना दूल्हा के लेके जवन सपना होला, ओह में सांवर रुप में रामे जी के चेहरा झलकेला। अरे ओह राम के सपना, जेकरा संगे सीता बन के वनवास काटे के भी अलगे मजा बा। काहे कि एह लइकियन के ओकर महतारी बता चुकल बारी कि अपना सीता जी खातिर राम जी,रावण संगे भिर गइल रहलें आ ओकरा के बरबाद करिए के छोड़लें।

"सखी हे,
राम जी पहुंनवा संगे हमुं जईतीं बनवां,
हमार मनवां कहेला,
रोजे धोअतीं चरनवां, हमार मनवां कहेला।"

'राम चरित मानस' के बाल कांड में जनकपुर के चरचा करत गोस्वामी जी कहतानीं–जब जनवासा में राम जी जेवनार लेतानीं आ संगे संगे अवध से चहुंपल बरतिया लोग भी जेंवता त ओह लोग के चुन चुन के आ नाम ध ध के जनकपुर के मेहरारू लोग बिखाह–बिखाह गारी गा–गा के तार देता लोग–

जेंवत देईत मधुर धुन गारी!
ले ले नाम पुरुष अरु नारी!!

भलहीं घटना जनकपुर में घटल रहे बाकिर भोजपुरिया बधार में आजो हर बरिअतिया के अवध नगरी से ही आवल मानल जाला आ हर दूलहा रामे जी के रुप में होला लोग। ई इंहवा के संस्कृति के आ सामाजिक सौहार्द के विराट बानगी ही ह कि एगो नाईन (हजामिन) राम जी आ लछुमन जी के सांवर आ गोर रुप के साफा लउकत अंतर पर सीधे सवाल पूछ के दसरथ जी के रानी लोग के चरितर पर अंगूरी उठावतिआ–

"हंसी हंसी पूछेली नाईन बचनिया,
बबुआ बोलीं ना,
एक भाई सांवर एगो गोर,
काहे बोलीं ना––!"

वाह रे राम जी! लछुमन जी नाईन के बात सुनते आंख तरेरतारें त राम जी उनका के गुरेर के देखला के बाद चुप रहे के इशारा करतारें आ ओह हजामिन ओरि देख के मुसका देतारें। अईसन संबंध बा राम जी से भोजपुरिया बधार के।

फगुआ गावे के बईठकी होखो त बिना राम जी के गीत गवले फगुआ के पूरा ना मानल जाला। अवध में मनावल जाव फगुआ आ भोजपुरी बधार में एकरा के लेके धूमगज्जर ना होखो, ई कइसे हो सकेला!

"होली खेले रघुवीरा अवध में,
होली खेले रघुवीरा।"

अइसन ढ़ेर सारा गीतन के बाद जब घांटो (चईता) गवाला त ओकर टेक में सबसे पहिले "ए रामा" से ही गवनई के सिरी गनेस होला।

"ए रामा, रामा ए रामा,
रामा सुमिरिला सरधा भवानी,
कंठे सुरवे होखऽ ना सहईया ए रामा,
कंठे सुरवे।"

भलहीं सुरसती जी के गोहराईं भा शंकर भगवान के-बिना राम जी के संगति के एह घांटो के सिरजना ना हो सके। ई आजो जिअतार बा आ तब तक रही, जब तक भोजपुरिया जन मानुस के लहु में राम जी समाइल रहेब।

लईकिअन के कजरी के टेक पर एक हाली धेयान दिआव-

"अरे रामा, कृष्ण बने मनिहारिन पहिन के सारी ए हरि---!"

अब कृष्ण जी के किस्सा में राम जी के डांरी जोड़े के का मतलब? ई पुछबो मत करेब कवनो रचनाकार से। राम जी भा कृष्ण जी के युगल रुप त रग-रग में समाइल बा, सउनाइल बा, एह बधार के हर भोजपुरिया के।

गीत-गवनई से अलगा छटक के तनीं हई रुप देखीं एह राम नाम के।

कहीं कुछ गलती हो जाव, केहू से घृणा के भाव व्यक्त करे के होखो तबहुं राम जी के ही नाम लिआला- **"राम रे राम, छी छी"**

एकरा पाछे के कारन का हो सकेला, हमरा त आज तक ना बुझाइल। कवनो पाप करीं, केहू के माल हड़प लीं, कहे वाला चट्ट से कह दी- **'राम राम जपना,पराया माल अपना।'** ई एह बधार के चर्चित लोकोक्ति ह।

जेतना ले गिनवाएब हम राम जी के कथा, कम बुझाई। रउरो भकुआ जाएब कि बाप रे बाप, एह नाम के अइसन भी रुप बा। साफा मान के चलीं कि एह बधार में जिनगी के खिस्सा राम जी से शुरू होके, रामे जी पर ओरियाला! जब चार गो कान्हा पर लोग रंथी उठा के घाटे ले जाला, तबहुंओ रामे जी संगे रहेनीं। सभे राम जी के नाम के औकात के जानेला आ एही से कहेला - **"सिरी राम नाम सत्य है।"**

परिचय- शास्त्रीय संगीत से रिसर्च कइला के बाद लोक संगीत के प्रति समर्पण आ खोजी प्रकृति के जिनिस। अभी हाल ही में संगीत प्राध्यापक के पद से अवकाश पा के रिविलगंज,छपरा में भोजपुरी लोकसंगीत पर शोधात्मक रचनाशीलता में व्यस्त।

मनोज भावुक

मर्यादा पुरुषोत्तम से आदिपुरुष ले ... फिल्मी राम

कोरोना काल में सबसे जादा कवनो टीवी सीरियल टीआरपी बटोरलस त ऊ बा रामायण आ महाभारत। 30-35 साल पहिले जब ई दुनों सीरियल आइल तब सबसे जादा टीवी बिकाइल। हमरा ईयाद बा चौथा-पांचवा में पढ़त रहनी। रोड प सन्नाटा छा जाव ए भाई जइसे लॉकडाउन में सन्नाटा छा जाला। 22 जनवरी के अयोध्या में रामलला के प्राण प्रतिष्ठा होई। एकरा के लेके पूरा देश में उत्साह के माहौल बा। त मन भइल ह तनी सिनेमो में राम के देखल-समझल जाय। त आईं देखल जाए मर्यादा पुरुषोत्तम से आदिपुरुष ले ... फिल्मी राम के।

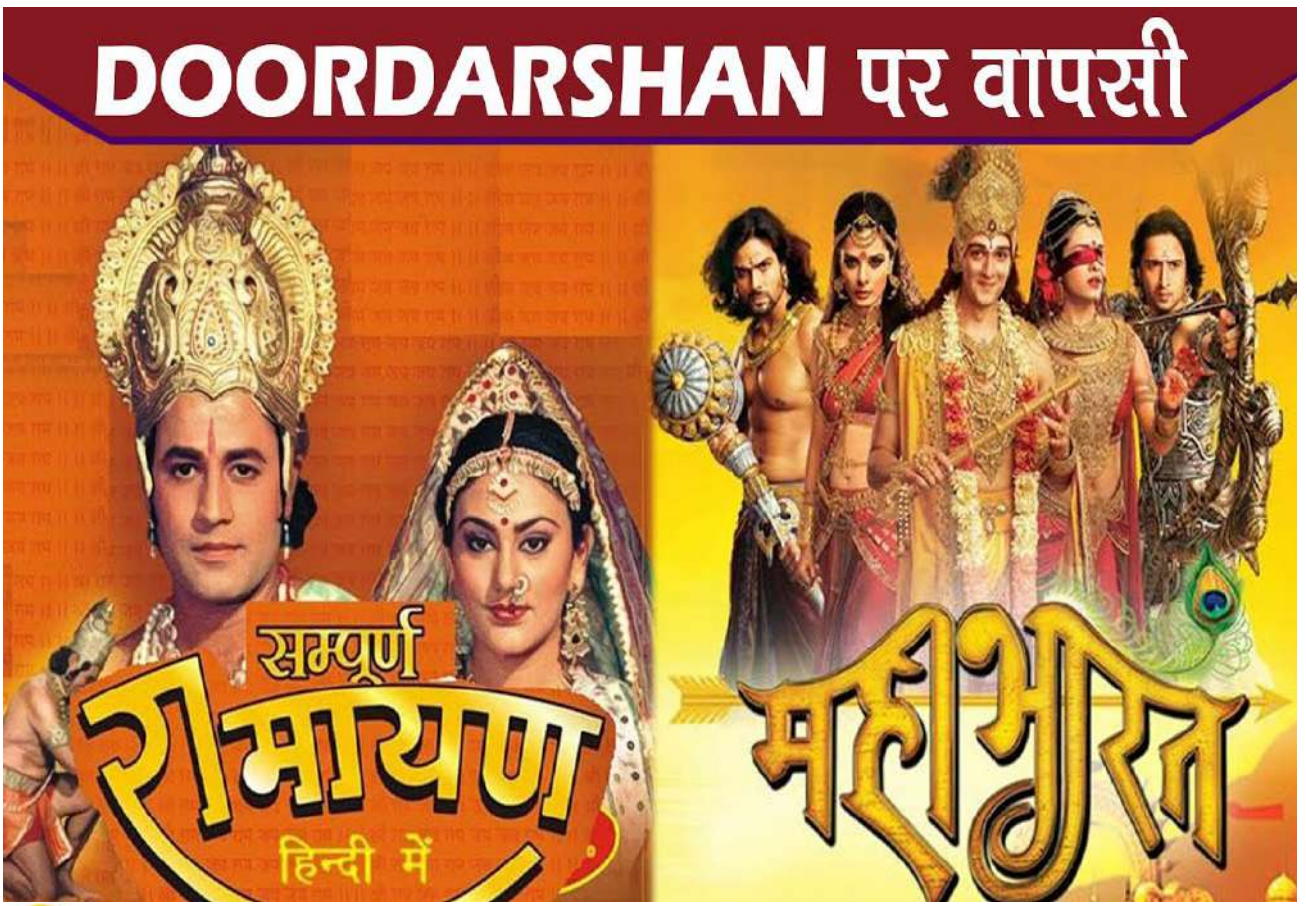

कोरोना काल में सबसे जादा कवनो टीवी सीरियल टीआरपी बटोरलस त ऊ बा रामायण आ महाभारत। 30-35 साल पहिले जब ई दुनों सीरियल आइल तब सबसे जादा टीवी बिकाइल। हमरा ईयाद बा चौथा-पांचवा में पढ़त रहनी। रोड प सन्नाटा छा जाव ए भाई जइसे लॉकडाउन में सन्नाटा छा जाला। 22 जनवरी के अयोध्या में रामलला के प्राण प्रतिष्ठा होई। एकरा के लेके पूरा देश में उत्साह के माहौल बा। त मन भइल ह तनी सिनेमो में राम के देखल-समझल जाय।

राम पर 1917 में बनल पहिलका फिलिम 'लंका दहन'

दादा साहेब फालके के नाम के नइखे जानत। राम पर पहिलका फिल्म उहे बनवले 1917 में। फिलिम के नाम बा 'लंका दहन'। ई एगो मूक फिल्म ह। माने राम जी गूंग बाड़े .. आ मजेदार बात ई बा कि एह में राम आ सीता के रोल एकही आदमी अन्ना सालुंके कइले बाड़न। फिल्म के जानकार लोग बतावेला कि भारतीय सिनेमा के पहिला डबल रोल फिलिम 'लंका दहन' में ही निभावल गइल बा।

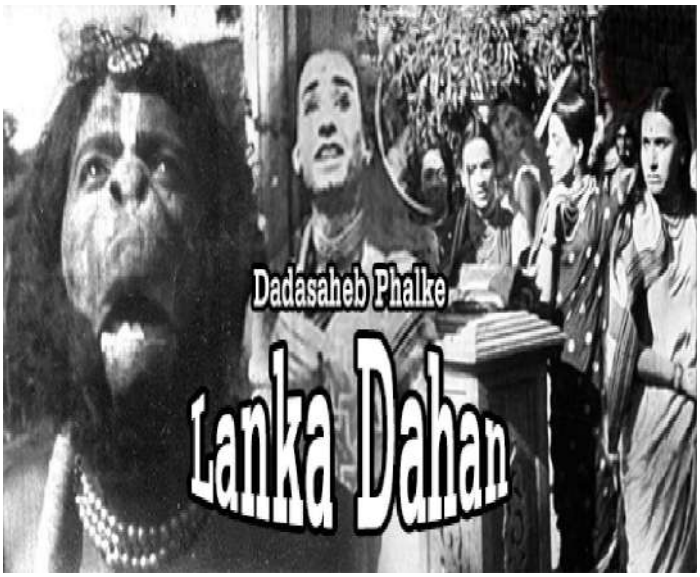

'चंद्रसेना' 1931 में मराठी में आ 1935 में हिंदी में रिलीज भइल

1931 में प्रभात फिल्म्स मराठी भाषा में एगो फिलिम बनवलस 'चंद्रसेना'। चंद्रसेना महिरावण के पत्नी रहली। महिरावण अउरी अहिरावण के मदद से रावण के बेटा इंद्रजीत राम लक्ष्मण के अपहरण करवा लेहलस। चंद्रसेना राम जी के भक्त रहली, एही से उ हनुमान जी के मदद कइली राम लक्ष्मण के पाताल लोक से निकलवावे में। एह फिलिम के वी शांताराम निर्देशित कइले। एह फिल्म में बढ़िया स्पेशल इफेक्ट के प्रयोग भइल बा, प्रोडक्शन कंपनी प्रभात फिल्म्स ओह बेरा नया तकनीक से फिल्म बनावे खातिर जानल जाव। 1935 में इहे फिल्म हिंदी में भी रिलीज भइल, ओही नाम से।

विजय भट्ट राम जी पर 12 साल में चार गो फिलिम बनवलें (1942-1954)

विजय भट्ट नाम के **निर्माता**-निर्देशक राम के ऊपर रचित वाल्मीकि रामायण से एतना प्रभावित भइलें कि उ चार गो फिल्म राम कथा के ऊपर बना देहले। उनके पहिला तीन गो फिल्म ट्रायोलॉजी में आइल। पहिला फिल्म रहे 'भरत मिलाप' जवन 1942 में आइल। एह में राम के रोल में प्रेम अदीब रहले आ सीता के रोल में शोभना समर्थ रहली। फिल्म के खूब लोकप्रियता मिलल। विजय भट्ट के फिल्मन के अबतक के राम पर बनल सिनेमा में सबसे उत्कृष्ट सिनेमा मानल जाला। विजय भट्ट के पोता विक्रम भट्ट आज के टाइम के मशहूर फिल्म निर्देशक बाड़ें। भरत मिलाप में राम के तीसरा भाई भरत के कहानी रहे जे राम के अनन्य भक्त रहलें आ राम के वनवास चल गइला के बाद उनसे एक बार मिले आइल रहलें।

भरत मिलाप के बाद फिल्म आइल 1943 में राम राज्य। जइसन कि नामे से पता लागत बा, ई फिल्म राम जी के आदर्श राज के इर्द गिर्द बनल रहे। फिल्म ओह साल के तीसरा सबसे ज्यादा कमाई करे वाला फिल्म बनल।

फेर साल 1946 में आइल, फिल्म राम बाण। रामबाण भी सफल भइल बाकिर ओकरा कुछ फिल्म-आलोचक लोग से कड़ा रिव्यू भी मिलल। फिल्म में राम के किरदार निभावे वाला कलाकार के डील डौल पर आ सीता के किरदार निभावे वाली अभिनेत्री के शारीरिक स्थिति पर प्रसिद्ध फिल्म आलोचक बाबूराव पटेल सवाल उठवलें आ ई सवाल ओह बेरा के मिडिया में खूब उछलल।

फेर लगभग 8 साल बाद आइल फिल्म रामायण (1954), जे में राम सीता के किरदार उहे अभिनेता निभवलें जे पिछला तीन गो में निभा चुकल रहलें मतलब राम के रोल में प्रेम अदीब आ सीता के रोल में शोभना समर्थ। ओह घरी ई जोड़ी ओइसहीं हिट भइल रहे जइसे

अरुण गोविल आ दीपिका चिखलिया के जोड़ी रामानंद सागर के सुपर डुपर शो रामायण में राम सीता के रूप में हिट भइल रहे। इ फिल्म उत्तर रामायण काण्ड पर केंद्रित बा जवना में रामजी वनवास बिता के अयोध्या में अइनी आ जनता के दबाव में अपना गर्भवती पत्नी सीता के जंगल में भेज देहनी। ओही जी लव कुश के जन्म भइल आ पूरा कहानी ओही लोग पर केंद्रित बा।

एन टी रामा राव बनलें राम त फिल्म भइल सिल्वर जुबली (1958)

साल 1958 में तमिल भाषा में राम के सम्पूर्ण जीवन पर फिल्म बनल 'सम्पूर्ण रामायण'। एह फिल्म में राम के रोल निभवलें साउथ के मेगा स्टार अउरी आंध्र प्रदेश के तीन बार के मुख्यमंत्री रहल एन टी रामा राव जिनके एन टी आर नाम से जानल जाला। ई फिल्म सिल्वर जुबली भइल आ 264 दिन ले पर्दा से उतरबे ना कइल। ई फिल्म 1960 में एही नाम से हिन्दी में डब भइल आ उत्तर भारत में खूब देखल गइल।

दक्षिण भारतीय भाषा में राम जी पर खूब फिल्म बनल

तमिल भाषा के 'सम्पूर्ण रामायण' के बाद साल 1971 में तेलुगु भाषा में भी सम्पूर्ण रामायण नाम से ही फिल्म बनल जवन भगवान राम के जीवन गाथा देखवलस। एह फिल्म में राम के किरदार शोभन बाबू निभवलें। एकर निर्देशक बापू रहलें। बापू के ही निर्देशन में साल 2011 में फिल्म बनल श्री राम राज्यम। एह फिल्म में नन्दमूरी बालकृष्ण राम के रोल निभवले बाड़ें, उ तेलुगु के सुपरस्टार हवें। फिल्म में सीता के रोल में नयनतारा बाड़ी जे दक्षिण के मशहूर हिरोइन हई। एह फिल्म के कहानी उत्तर रामायण कांड पर आधारित बा।

राम पर बनल मल्टीस्टारर फिल्म 'आदिपुरुष'

16 जून 2023 के एगो मल्टीस्टारर अउरी बड़ा बजट के फिल्म रिलीज भइल 'आदिपुरुष'। एह फिल्म के निर्देशक बाड़ें ओम राउत, जे 2020 में मराठा योद्धा पर आधारित सुपरहिट फिल्म ताना जी बना चुकल बाड़ें। फिल्म आदिपुरुष में भगवान राम के किरदार में बाड़े प्रभास आ सीता के रोल कीर्ति सैनन कइले बाड़ी। रावण के रोल में सैफ अली खान बाड़ें।

फिल्म से ज्यादा चर्चा एकरा निर्देशक ओम राउत आ संवाद लेखक मनोज मुंतशिर के भइल। सिनेमाई छूट होला। बाकिर प्रयोग के नाम पर राम के छवि बिगाड़े के काम भइल ए फिल्म में। संवाद अइसन कि मनोज मुंतशिर के खूब फजीहत भइल। राम के सौम्यता ही गायब बा ए फिल्म से। गीत-संगीत आ संवाद 'आदिपुरुष' के कहानी कहे में विफल बा। फिल्म में ग्राफिक्स आ स्पेशल इफेक्ट्स भरल पड़ल बा, बस ऊ राम नइखन जवन बचपन से पढ़त-सुनत-देखत आइल बानी जा।

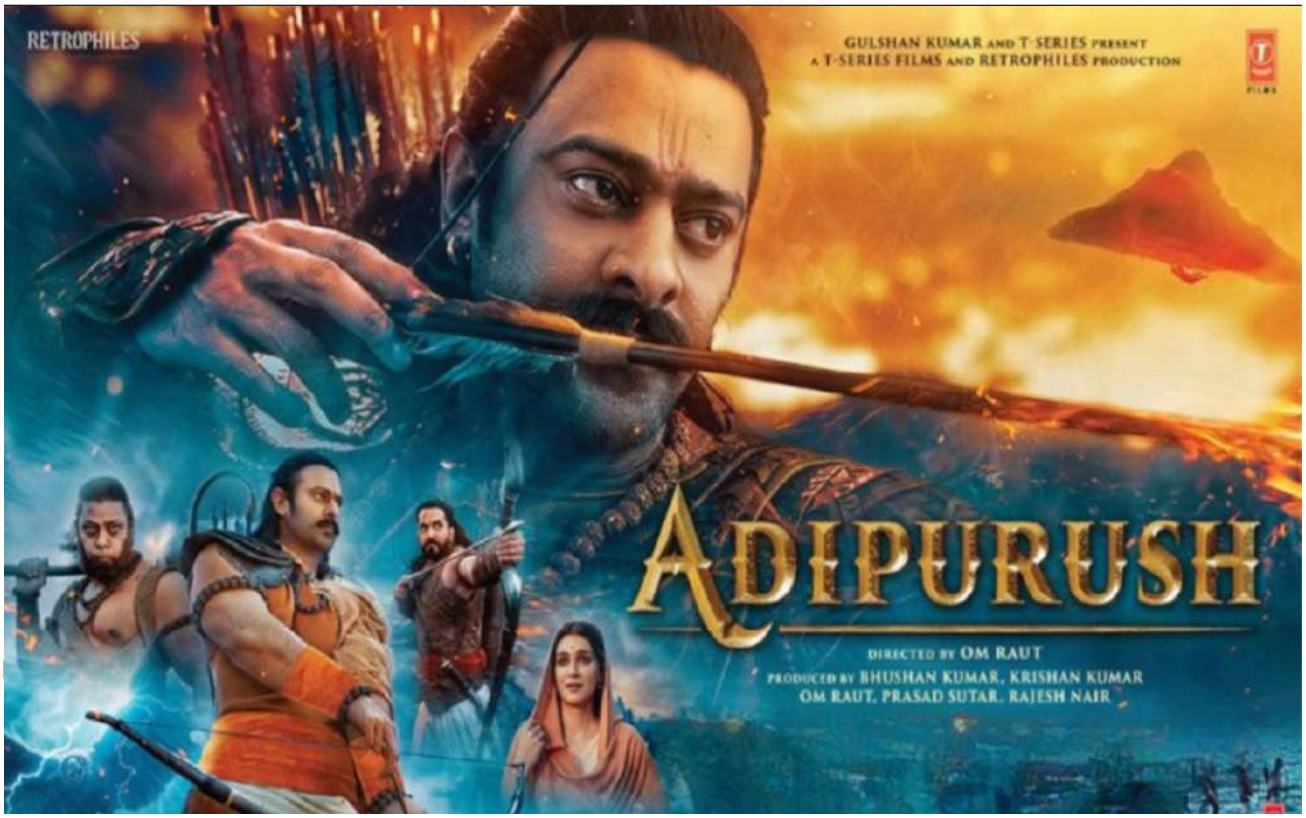

कृति सैनन सीता लागते नइखीं। उहे हाल प्रभास के बा। हिंदी में शरद केलकर के आवाज पर रिवर्ब लगाके ऊ राम जइसन आभास त करावत बाड़े बाकिर उनका में ना त राम जइसन ओज बा, ना राम जइसन तेज। पूरा फिल्म में ऊ 'बाहुबली' के तीसरा संस्करण जइसन लागत बाड़न।

एह फिल्म में सब बा बाकिर रामानंद सागर वाला बात नइखे। तब लोग भावविह्वल होके राम आ सीता बनल अरुण गोविल आ दीपिका चिखलिया के गोड़ छूये दउड़ जाय आ एह में ... ? संवाद-गीत-टेक्नोलॉजी-अभिनय सब फेल बा राम के राम बनावे में।

रामकथा प आधारित बनल फिलिमन के एगो संक्षिप्त सूची -

1. लंका दहन (1917)
2. चंद्रसेना (1931)
3. रामायण (1954)
4. संपूर्ण रामायण (1958)
5. राम राज्य (1967)
6. संपूर्ण रामायण (1971)
7. सीता कल्याण (1976)
8. बजरंगबली (1976)
9. दसावतार
10. महिरावण
11. रावण (1984)
12. रामायणम (1996)
13. भरत मिलाप (1942)
14. राम राज्य (1943)
15. राम बाण (1946)
16. ब्रह्मर्षि विश्वामित्र
17. हनुमान पाताल विजय
18. हनुमान विजय
19. इंद्रजीत (सती सुलोचना)
20. कंचन सीता
21. लव-कुश
22. पादुका पट्टाभिशेखम
23. रामजन्म
24. राम पादुका पूजन
25. रामायणी
26. रुद्राक्ष
27. संपूर्ण रामायण (तीन खंड)
28. सती अहिल्या
29. सीता-राम जन्म
30. सीता राम कल्याण
31. श्रीहनुमान चलिसा
32. श्रीराम भक्त हनुमान
33. श्रीराम राज्यम

संभव बा कुछ फिलिम के नाम छूटलो होई। रउरा सभे मन परायेब त अगिला अंक में जोड़ा जाई।

मनोज भावुक

कहानी के प्लॉट

अयोध्या के राम मंदिर में 22 जनवरी के रामलला के प्राण प्रतिष्ठा होता। 32 साल पहिले इहवें 6 दिसंबर 1992 के बाबरी मस्जिद ध्वस्त भइल। 500 साल पहिले एही जगह राम मंदिर ध्वस्त भइल। एह ध्वस्त भइला में अउरो बहुत कुछ ध्वस्त होला। लाश गिरेला, खून बहेला आ जेल होला। कुछ लोग के दुनिया उजड़ जाला। 6 दिसंबर 1992 के बाबरी ढाँचा ध्वस्त भइला के बाद कुछ अइसने भइल ...

पटना के कालिदास रंगालय आ प्रेमचंद रंगशाला में 'कहानी के प्लॉट' के 'जिनिगिया तोहार' के नाम से मंचन के एगो दृश्य में अभिनेता-निर्देशक जहाँगीर खान अउर अभिनेत्री पूजा भारती।

हमरा अटैची से सामान निकालत में भउजी के हाथ पर एगो तिलचट्टा रेंगल। ऊ अकबका के अतना जोर से आपन हाथ झटकली कि हमार अटैची दूर फेंका गइल आ ओमें राखल सब सामान एने-ओने छितरा गइल। भउजी सब सामान बटोरे लगली। तलहीं उनकर नजर हमरा ओह प्रेम-पत्र पर गइल, जवन विज्ञान के किताब के जिल्द फार के बहरी झांकत रहे। भउजी पहिले सब सामान सहेज के रख दिहली। फेर ओह चिट्ठी में डूब गइली-

"प्रिय हमराही,

"हमरा जिनिगी के सब सुख तोहरे प अर्पित। अचानके चिट्ठी के माध्यम से हमरा होठ के स्पर्श पाके तऽ चौंक गइल होखबऽ। बा नू ई बात। तोहरा का पता, कवना तरे हमार ई होठ पांच बरिस से आपन जुबान बन्द कइले तड़फड़ात बाड़न स। लाख-लाख शुक्र बा भगवान के जे ऊ हमरा के हिमालिनी से मिलववले। हं-हं, उहे हिमालिनी जेकर नेह, प्यार आ सान्निध्य तोहरा दू बरिस ले रस्तोगी फिजिक्स सेंटर, पटना में मिलत रहल बा। ई चिट्ठियो हम उनहीं के हाथे भेज रहल बानी। काहे कि तू त हमरा के आपन पतो-ठेकाना देवे लायक ना समझलऽ।

"राहुल, हमरा दिल के धड़कन.....अइसन कवन कसूर हो गइल हमरा से कि तूं हमरा के बीच मझधार में छोड़ के लापता हो गइलऽ? ....जवाब द.....चुप काहे बाड़ऽ! बोलऽ ना राहुल, तू अतना कठोर कइसे हो गइलऽ। आज हमार दिल हमरा से रो-रो के पूछत बा कि का तोहार राहुल अबहियों उहे राहुल होइहें जवन एशिया के सबसे बड़ महाविद्यालय बी. एन. एस. ड़ी. कॉलेज, कानपुर के छात्रनेता रहले, जे समाज सुधारक संघ के अध्यक्ष रहले। जेकरा अभिनय पर, जेकरा आवाज पर हजार ताली एके बेर गड़गड़ा उठे। जेकरा एक इशारा पर पल भर में सड़क जाम हो जाय भा कॉलेज के लइकन-लइकियन के बीचे नेता भा डी॰ एम॰ घिर जास।

"का तू अबहियों उहे राहुल बाड़ऽ, जेकरा के हमार सखी लोग "श्वेता के प्रिन्स" कहके पुकारे? का तू अबहियों उहे राहुल बाड़ऽ जे जेठ के दुपहरिया होखे भा माघ के कड़क ठंढ, मोती-झील के किनारे बइठ के घंटन हमरा से बतियावऽ?

"तू कइसे भुला गइलऽ ओह पहिला मुलाकात के, जब "विवेकानन्द भारत परिक्रमा" कार्यक्रम के दौरान तू हमरा के फूल के गुलदस्ता भेंट कइले रहलऽ, भा जब हमार अंगुरी, तहरा अंगुरी से छुआ गइल रहे त कहले रहलऽ कि "अब तो कयामत तक भी इस क्षण से मुक्त नहीं हो सकेंगी ये उंगलियां।" आ सालो ना बीतल, तू हमरा के छोड़ के लापता हो गइलऽ, ई कयामत अतना जल्दी कइसे आ गइल, राहुल!

"यकीन नइखे होत। तू अइसन हो जइबऽ। का गलती रहे हमार, कवन गुनाह कइले रहनी हम, जे तू हमरा से बिना मिलले, बिना

"तू कइसे भुला गइलऽ ओह पहिला मुलाकात के, जब "विवेकानन्द भारत परिक्रमा" कार्यक्रम के दौरान तू हमरा के फूल के गुलदस्ता भेंट कइले रहलऽ, भा जब हमार अंगुरी, तहरा अंगुरी से छुआ गइल रहे त कहले रहलऽ कि "अब तो कयामत तक भी इस क्षण से मुक्त नहीं हो सकेंगी ये उंगलियां।" आ सालो ना बीतल, तू हमरा के छोड़ के लापता हो गइलऽ, ई कयामत अतना जल्दी कइसे आ गइल, राहुल!

बतियवले चुप-चाप हमेशा-हमेशा खातिर कानपुर छोड़ दिहलऽ। हम मानत बानी 6 दिसम्बर 92 के ऊ रात, जब बाबरी मस्जिद ध्वस्त भइल, तहरा खातिर खतरनाक रहे। एगो छात्र नेता खातिर भयावह रहे। तू चारो तरफ से मुसलमानन से घिरल रहलऽ। मउवत तहरा सर पर मंडरात रहे आ परमपिता परमेश्वर के असीम कृपा (जवना के हम अपना सुहाग के सौभाग्यो मानऽ तानी) कि तू सकुशल इहां से बच निकललऽ आ अपना घरे चल गइलऽ।

"मालूम बा, हम ओह दिन रात भर रोअत रहनी, छटपटात रहनी, भगवान से गोहरावत रहनी कि हे भगवान! हमरा राहुल के रक्षा करिहऽ। हम अपना के कोसत रहनी कि तू हमरे वजह से सात थाना के मुसलमानन से दुश्मनी ले लिहलऽ। पूरा कॉलेज एक तरफ आ तू अकेले, अपना छात्रावास के कुछ साथियन के संगे गरजत रहलऽ। ई सब तू हमरे खातिर कइलऽ। एकर मतलब, जरूर तहरा हमरा से प्यार बा। तू हमरा के बहुत चाहेलऽ।

"सबेरे प्रिन्सिपल साहब से मिल के तहरा बारे में पूछे के चहनी बाकी सात दिन ले कर्फ्यू लागल रहल आ हम तड़पत रहनी, छटपटात रहनी, तहरा खातिर। आठवां दिने कॉलेज पहुंचनी त पता चलल कि तू हॉस्टल छोड़ के बिहार चल गइलऽ। हमरा बहुत खुशी भइल कि हमार राहुल सकुशल अपना घरे चल गइले। बाकी हमरा ई का पता रहे कि ऊ कानपुर के साथे-साथे हमरो के सदा खातिर छोड़ गइले। जब कबो डाकिया आवे, हम दउड़ के ओकरा पास पहुंची। ई सोच के कि तोहार चिट्ठी आइल होई। बाकिर अइसन कबो ना भइल। हम पांच बरिस ले दउड़त रहनी, अइसन अवसर कबो ना आइल।

"तहरा मालूम बा कि हम तहरा के केतना चाहत रहनी। तहरे का? पूरा कॉलेज, कॉलेज के हर स्टाफ आ तहरा-हमरा के जाने वाला लगभग हर कोई ई जानत रहे कि श्वेता आ राहुल एकही शरीर के दू गो नांव हऽ। आज स्थिति ई बा कि हमनी दुनू नदी के दू किनारा बनिके जिनिगी जी रहल बानी। ऊ त ईश्वर के किरिपा बा कि हमरा हिमालिनी मिल गइली। विश्वास करऽ राहुल, ई ईश्वर के मंजूरे नइखे कि हमनी दूनो जुदा रहीं। एही से ऊ फेर से हमनी के मिलववले हँ। चिट्ठी देत खां हिमालिनी त सब बतावते होइहें। तबो हमार जीव नइखे मानत। मन करऽता कि तहरा से जी भर के बतिआईं।

"जानत बाड़ऽ, जब तहरा चिट्ठी के इन्तजार करत-करत एक साल बीत गइल त हम ऊ सब कुछ करे लगनी, जवन तू करत रहलऽ। हमरा ठीक से भोजपुरी ना आवत रहे, तबो हम भोजपुरी में कविता लिखल शुरू कइनी। हमरा अभिनय ना आवत रहे, तबो हम अभिनय कइल शुरू कइनी आ अभिनय में, लेखन में, दूनू में तोहार छवि निहारत रहनी, तहरा के ईयाद करत रहनी। धीरे-धीरे एह दूनू क्षेत्रन में हमरा सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार मिलल।

"यकीन नइखे होत। तू अइसन हो जइबऽ। का गलती रहे हमार, कवन गुनाह कइले रहनी हम, जे तू हमरा से बिना मिलले, बिना बतियवले चुप-चाप हमेशा-हमेशा खातिर कानपुर छोड़ दिहलऽ। हम मानत बानी 6 दिसम्बर 92 के ऊ रात, जब बाबरी मस्जिद ध्वस्त भइल, तहरा खातिर खतरनाक रहे। एगो छात्र नेता खातिर भयावह रहे। तू चारो तरफ से मुसलमानन से घिरल रहलऽ। मउवत तहरा सर पर मंडरात रहे आ परमपिता परमेश्वर के असीम कृपा (जवना के हम अपना सुहाग के सौभाग्यो मानऽ तानी) कि तू सकुशल इहां से बच निकललऽ आ अपना घरे चल गइलऽ।

"तू चल गइलऽ। फेर ब्वायेज हॉस्टल आ कॉलेज खातिर छात्रनेता के चुनाव भइल। नवीन नाम के एगो लइका छात्रनेता चुनाइल। हम गर्ल्स हॉस्टल आ कॉलेज के छात्रनेता पद त्याग दिहनी आ अपना भाषण में बोलनी कि "राहुल बिना श्वेता ना''..... जब राहुल छात्रनेता नइखन त श्वेता भी एह पद के त्यागत बाड़ी। ओकरा बाद हम तहरा प्रतिभा आ टैलेन्ट के ईयाद क-क के पढ़े लगनी। तू मेधावी छात्र रहल बाड़ऽ। ई सोचि-सोचि के हमहूं मेहनत करे लगनी कि हम तोहरा साथे खड़ा हो सकी भा तहरा लायक बन सकी। भगवान हमार सुन लेले। उत्तरप्रदेश के मेडिकल परीक्षा (CPMT) के मेधा सूची में हमरा स्थान मिलल आ हम किंग जार्ज मेडिकल कॉलेज, लखनऊ में मेडिकल के पढ़ाई करे चल अइनी। सौभाग्य देखऽ, ईश्वर के विधान देखऽ कि एही कॉलेज में तहार एगो दोस्त, रस्तोगी फिजिक्स सेंटर, पटना के सहपाठी हिमालिनी भी पहुंचली। बाते बात में, एकदिन ऊ आपन एलबम देखइली। ओमें तहार फोटो देख के हम अवाक रह गइनी। हमरा लागल कि इहो लइकी तोहरा के चाहेले। तबो हम अपना के रोक ना सकनी। हम रो पड़नी आ हिमालिनी के जिद कइला पर आपन सब बात बतावे के पड़ल। बाकी हम ई ना जान सकनी कि हिमालिनी तहार कइसन दोस्त हई। जाने के कोशिशो ना कइनी। जानहूं के नइखीं चाहत। हम नइखीं चाहत कि हमार राहुल केहू दोसरा के होखस। हमार जइसन होखस, जवना हाल में होखस, हमरा राहुल चाहीं।

पटना के कालिदास रंगालय आ प्रेमचंद रंगशाला में 'कहानी के प्लॉट' के 'जिनिगिया तोहार' के नाम से मंचन के एगो दृश्य में अभिनेता-निर्देशक जहाँगीर खान अउर अभिनेत्री पूजा भारती।

"एने कॉलेज में एगो ब्यूटी कम्पिटीशन भइल रहल हऽ। हम ओहू में टॉप कइनी हं। हम बहुत खुश बानी। सांचो जब भगवान देलें त छप्पर फाड़ के देलें। ऊ हमरा के सब देलें। हर तरह के सफलता.....हर खुशी। बाबूजी एगो आई॰ ए॰ एस॰ अधिकारी, माई डॉक्टर.....सब कुछ। बस, कमी बा, त खाली तहरे। देखऽ तहरा मालूम बा कि हम अपना माई-बाप के अकेले बानी।

"बुढ़ापा के लाठी। आंखिन के पुतरी। ऊ हमार बात कबो ना टलिहें। हमार माई हमरा के बहुत चाहेले। माई के ख्याल करऽ। माई शब्द से तूहूं परिचित बाड़ऽ। तहरो माई बाड़ी। ईयाद करऽ- बिड़ला मन्दिर में देवी के मूर्ति के सामने तू कहले रहलऽ कि श्वेता हमार माईयो एही देवी लेखां बिया। बिल्कुल देवी। हम अपना माई से तहरा के एक दिन जरूर मिलाइब, बाकिर अइसे ना.... एतना कह के तू हमार दुपट्टा के घूंघट में बदल देलऽ आ मुस्कुरा के कहलऽ कि अइसे.... का-का सपना देखइले रहलऽ... का सपना सपने रह जाई? बोलऽ कब मिलवावत बाड़ऽ माई से?... ओह देवी से जेकरा आशीष खातिर हमार रोम-रोम कलप रहल बा।

"राहुल! "दुपट्टा में हथियार" वाली घटना ईयाद बा तहरा? जवना के बाद तू बड़ी मजाकिया मूड में हमरा से कहले रहऽ कि "वर मांगो बालिके... दिल खोल के मांगो... राहुल बाबा आज तुम पर बहुत खुश है... जो मांगोगी, बाबा वो देगा।" तब हम जवाब देहले रहीं कि "राहुल बाबा रहने भी दो। इतनी जल्दी क्या है? जरूरत पड़ने पर मांग लूंगी।" आज वर मांगे के जरूरत आ गइल बा राहुल। तू हमार प्यार लौटा दऽ-तू फेर उहे राहुल बन जा....पांच बरिस पहिले वाला राहुल, श्वेता के राहुल।

"हिमालिनी कहत रहली कि उहां फेयरवेल के दिन तू क्लास में आपन एगो रचना सुनइले रहलऽ कि "क्या हुआ जो अक्सर मै मौन रहता हूं, कह नहीं पाता कि तुमसे प्यार करता हूं।" अगर ई कविता हमरा खातिर रहे त तू आ जा। हम तहरा से कहत बानी कि हंऽ "हम तहरे से प्यार करीले। सिर्फ तहरे से। तहरे खातिर जीयत बानी आ तहरे खातिर मरब।" हमरा सुन्दरता आ टैलेन्ट पर पूरा मेडिकल कॉलेज लट्टू बा आ हम तहरा पर। तहरा हमरा पर गर्व होखे के चाहीं, पर ना होत होई। बा नू ई बात। काहे कि भारतीय मरदन के ई आदत होला कि ऊ अपना प्रेमिका भा पत्नी के अपना से नीचे रखे के चाहेलन। हम मेडिकल कॉलेज में बानी आ तू कॉलेज के बाहर। जदि तू अइसन सोचत होखऽ त सिर्फ एकबार आके कह दऽ कि श्वेता हम तोहार साथ देवे के वादा करत बानी त हम तहरा पर आपन मेडिकल कैरियर भी न्यौछावर क देब, हमरा नइखे बनेके डॉक्टर। हमार सब मेहनत खाली तहरे खातिर रहे। मेडिकल में प्रवेश भी तहरे खातिर। तू मिल जा। हम समझब कि हमार सब तपस्या सफल हो गइल... तहार श्वेता... सिर्फ तहार... तहरे।

"अरे, एगो राज के बात त बतइबे ना कइनी। राजे ना, भगवान के महान कृपा। तहार बाबूजी रामराज पार्टी के नेता हउवन नू। रेणुकूट (उ.प्र.) में बिड़ला के फैक्टरी मात्र एके बेर बन्द भइल रहे आ ओकरा के बन्द करावे के श्रेय तहरा बाबूजिए के बा नू। जानतारऽ, ई सब हमरा कइसे पता चलल। एक दिन तहार ऊ फोटो जवना में तू अपना बाबूजी के साथे बाड़ऽ, हमरा बाबूजी के हाथे लाग गइल। बाबूजी फोटो देखते कहले कि अरे ई त कृष्णदेव भाई के फोटो हऽ। ओकरा बाद ऊ हमरा से फोटो के बारे में पूछलन त हम बता दिहनी कि हमरा एगो बहुत बढ़िया दोस्त के हऽ। तब तक हमार बाबूजी अपना अतीत में खो चुकल रहले। ऊ बतावे लगले कि "हम आ कृष्णदेव भाई दूनो आदमी एके साथे जे॰पी॰ आन्दोलन में जेल में रहनी जा।" रिहन्द बांध के एगो ममिला में जब हमरा बाबूजी के फँसा दिहल गइल रहे त पता ना के तरे-के तरे तहरे बाबूजी हमरा बाबूजी के जान बचवले। हमार आ तहार बाबूजी बहुत अच्छा दोस्त रहे लोग, जेकरा एक-दूसरा से मिलले आज 20-24 बरिस हो गइल। भगवान बड़ा कारसाज हउवन। ऊ आदमी के कब, कहां आ कइसे मिलवा दीहें, एकर कवनो पता नइखे। राहुल, हमनी दूनू के मिलन दू गो बूढ़ दोस्तन के दोस्ती के रिश्तेदारी में बदल दी। तू हं कह द। हम बाबूजी से बतिया लेब। देखऽ, हम होली में तहार इन्तजार करब। तू ना अइबऽ त बहुत पछतइबऽ.....देखऽ, बसन्त आ रहल बा..... तूही त हमरा जीवन के बसन्त हउवऽ। तूहूं आ जा। अगर तू ना अइबऽ त जिनिगी भर अपना के माफ ना कर सकब। हम जेतना तड़पल बानी, जेतना रोवल बानी.... हमार आह तहरा के जीवन भर चैन से जीये ना दी....तू जरूर अइबऽ राहुल..... जरूर अइबऽ। हमार विश्वास अमर बा। जे अमर बा, ओकर मौत ना होखे। तहरा आवहीं के पड़ी। हम इन्तजार करब, होली के अन्तिम क्षण तक। जदि तू ना अइबऽ त समझ जा कि ऊ हमरा दिल के धड़कन के अन्तिम क्षण होई।

- तोहरे श्वेता..... अपना राहुल के श्वेता.... श्वेता राहुल।"

x-x-x-x-x-x-x-x

"सबेरे प्रिन्सिपल साहब से मिल के तहरा बारे में पूछे के चहनी बाकी सात दिन ले कर्फ्यू लागल रहल आ हम तड़पत रहनी, छटपटात रहनी, तहरा खातिर। आठवां दिने कॉलेज पहुंचनी त पता चलल कि तू हॉस्टल छोड़ के बिहार चल गइलऽ। हमरा बहुत खुशी भइल कि हमार राहुल सकुशल अपना घरे चल गइले। बाकी हमरा ई का पता रहे कि ऊ कानपुर के साथे-साथे हमरो के सदा खातिर छोड़ गइले।

घरे बड़ चचेरा भाई के बियाह रहे। एही में सभे बहरा से आइल रहे। भइया आ भउजी रेणुकूट से आ हम पटना से पहुंचल रहनी। घर हीत-नात से खचाखच भरल रहे। एह भीड़-भाड़ में भउजी के टाइम ना मिल पावल कि ऊ हमरा से बइठ के अस्थिर बतियावस। बाकिर एह चहल-पहल के बीच जब-जब उनकर नजर हमरा पर पड़ो त ऊ मुस्किया देस। ओह घरी हमरा कुछुओ बुझात ना रहे कि ऊ हमरा के देख-देख हंसत काहे बाड़ी। सोचनी, होई कवनो बात। हमरा पूछे के फुर्सतो त ना रहे। काम में बाझल रहीं आ घर में बइठला पर बड़का भइया के डांटो सुने के त डर रहे कि सब साला घरघुसना हो गइलन सन। काम बा त जाके चुल्ही में बइठल बाड़न स।

बियाह बीत गइल आ हम पटना वापस लवटे खातिर तइयार हो गइनी। गांव से अतना जल्दी आवे के त मन ना करत रहे बाकिर दूइये दिन बाद एम॰ एस॰ सी॰ के परीक्षा रहे। एह से आवलो जरूरिए रहे।

चले के बेर भउजी बोलली,"ए जी, रउआ त बड़ लबजा बानी। हम कई बेर कहले होखब कि कवनो ओइसन बात होई त हमरा से जरूर कहब....छिपाइब मत। ...आ "त ना भउजी, हम तहरा से छिपाइब भला।".... आ सब बात गंगा जी लेखां पचा के रखले बानी।"

"कवन बात भउजी"- हम चिहात पूछली। अभी भउजी कुछ बोलती कि माई दही-पूड़ी लेले आ गइल आ हम दूइये चार कवर खइले होखब कि भइया चिचियाये लगले-"राहुल जल्दी करऽ, बस छूट जाई।"

हम सभकर गोड़ छू के घर से निकल गइनी।

x-x-x-x-x-x-x

पटना के कालिदास रंगालय आ प्रेमचंद रंगशाला में 'कहानी के प्लॉट' के 'जिनिगिया तोहार' के नाम से मंचन के एगो दृश्य में अभिनेता-निर्देशक जहाँगीर खान अउर अभिनेत्री पूजा भारती।

धीरे-धीरे समय बीतल। ई चिट्ठी वाली बात सभका मालूम चल गइल। मालूम चलित कइसे ना.... मेहरारूअन का पेट में त कवनो बात ना पचे। खैर, चिन्ता के असल बात ई ना रहे.... असल बात त रहे भइया के चिट्ठी। भइया लिखले रहले कि "राहुल तोहार सब बात हमरा मालूम चल गइल बा। हमरे ना, माई, बाबूजी, मउसा-मउसी, बड़-छोट, लइका-जवान सभका पता चल गइल बा। एह में लजाये-**शर्मायें** वाली कवनो बात नइखे। ई जिनिगी के सहज आ स्वाभाविक प्रक्रिया हऽ। एहसे तू श्वेता के बारे में विस्तार से लिखऽ आ अगर उनकर कवनो फोटो होखे त भेज द। आगे के कार्रवाई हमनी के सहर्ष पूरा करब जा। पत्रोत्तर के इन्तजार में, तोहार भइया- मुकेश।"

दिल में प्यार के बीया बोआ जब गइल।
प्रीत के तब फसल, लहलहइबे करी।
जब दिले तोहार, उनकर घर बन गइल।
तब भइया के चिट्ठी त अइबे करी।

ईयाद करऽ- बिड़ला मन्दिर में देवी के मूर्ति के सामने तू कहले रहलऽ कि श्वेता हमार माईयो एही देवी लेखां बिया। बिल्कुल देवी। हम अपना माई से तहरा के एक दिन जरूर मिलाइब, बाकिर अइसे ना.... एतना कह के तू हमार दुपट्टा के घूंघट में बदल देलऽ आ मुस्कुरा के कहलऽ कि अइसे...

"धत मर्दे, त एहमें चिन्ता के कवन बात बा। बजवा ना दऽ बाजा, एही साल। गजब बाड़ऽ भाई। अरे भइया के चिट्ठी पढ़के त तहरा छव फीट धरती से ऊपर कूद जाये के चाहीं आ तू बाड़ऽ कि तहरा चिट्ठी पढ़के खुशी ना भइल, अचरज भइल।"

"ना ए मनोज भाई, भइया के चिट्ठी पढ़के हमरा कवनो अचरज ना भइल काहे कि हम अपना घर के खुला माहौल से वाकिफ रहनी। बाकिर का जवाब लिखीं भइया के। इहे चिन्ता लेस दीहलस। का ऊ आगे के प्रक्रिया.... आगे के कार्रवाई सांचहूं पूरा कर पइहें? ... का हमार माई ई बर्दास्त कर पाई कि ओकर बहू हिन्दू ना मुसलमान लड़की हऽ जेकर असली नाम शबाना ह। आ अगर ऊ बर्दास्त कइयो ली, अपना बेटा खातिर, त का बेटा के इहे फरज ह कि ऊ अपना स्वार्थ खातिर अपना महतारी के एह बुढ़ापा में अइसन आत्मिक कष्ट देवे जवना में ऊ रूढ़िवादी समाज से टकरात टकरात दम तूड़ देव। ना-ना ई हमरा से ना हो सकी। हम सच्चाई ना उगिल सकब। हम भइया के लिख देब कि भइया तू जवन जानत बाड़ऽ, ऊ सब झूठ हऽ आ भउजी के जवन चिट्ठी हमरा अटैची में मिलल ऊ त एगो "कहानी के प्लॉट" ह। देखिहऽ, कुछ दिन में कहानी छप के आ जाई।

"ठीक बा, भइया के त झूठ बोल के समुझा देब कि ऊ कहानी ह। बाकिर अपना मन के कइसे समझाइब। हम कइसे भुला पायेब शबाना के ऊ वादा कि "राहुल, देखऽ हमार माई एगो डॉक्टर होइयो के बड़ी कड़ियल आ कट्टर धार्मिक भावना वाली महिला हियऽ। तू हमरा घर में राहुल बनके त ना चल सकेलऽ। एह से तू हमरा खातिर आपन एगो आउर नाम रख लऽ।" आ फेर उहे अपना पसन्द से हमरा खातिर एगो नया नाम चुनली- मुहम्मद सरफराज खां। ओही घरी चट से हमहूं उनका के एगो नया नाम दे दिहनी- श्वेता।

एकरा बाद हम सरफराज बनिके उनका घरे जाईं आ ऊ श्वेता बनके हमरा से मिलस। एकरा चलते बहुते मुसलमान हमार दुश्मनो बनि गइले जवना के परिणाम ई भइल कि हमरा अपना सुरक्षा खातिर बरोबरे अवैध हथियार राखे के पड़े।

एकदिन अचानके पास के थाना के गाड़ी आ गइल, कॉलेज में

भारतीय मरदन के ई आदत होला कि ऊ अपना प्रेमिका भा पत्नी के अपना से नीचे रखे के चाहेलन। हम मेडिकल कॉलेज में बानी आ तू कॉलेज के बाहर। जदि तू अइसन सोचत होखऽ त सिर्फ एकबार आके कह दऽ कि श्वेता हम तोहार साथ देवे के वादा करत बानी त हम तहरा पर आपन मेडिकल कैरियर भी न्यौछावर क देब, हमरा नइखे बनेके डॉक्टर। हमार सब मेहनत खाली तहरे खातिर रहे। मेडिकल में प्रवेश भी तहरे खातिर।

इन्सपेक्शन खातिर। ओह घरी हम क्लास रूम में रहनी आ श्वेता कॉलेज के लाइब्रेरी से किताब इसु करवा के आवत रहली। तले उनकर नजर हमरा क्लास रूम के ओर आवत पुलिस के समूह पर पड़ल। ऊ कांप उठली आगे के घटना के कल्पना पर। बाकिर चेतना शून्य ना भइली। उनकर विवेक उनका के हिम्मत देलस आ बड़ी तेजी से हमरा पास अइली आ दुपट्टा फइला के फुसफुसा के बोललीं- ''राहुल दुपट्टा में हथियार डाल द, बाहर पुलिस''। हम दुपट्टा में हथियार डाल देनी आ ऊ धीरे से अपना जगहा पर जाके बइठ गइली।

पुलिस के दल सभ लइकन के चेक करे लागल। हमार दुश्मन मुस्की काटे लगलें। सोचलें, आज त सब हीरोबाजी निकलिये जाई, बाकिर ओह गदहन के का पता कि प्यार में केतना ताकत होला। अइसन-अइसन छोट जुर्म त दुपट्टे में लुका जाला..... पुलिस हमरा पॉकेट में हाथ डललस। कुछ ना भेंटाइल। ऊ निराश होके आगे बढ़ गइल। हमार नजर श्वेता पर गइल। ऊ कनखी मार देली।

पटना के कालिदास रंगालय आ प्रेमचंद रंगशाला में 'कहानी के प्लॉट' के 'जिनिगिया तोहार' के नाम से मंचन के एगो दृश्य में अभिनेता-निर्देशक जहाँगीर खान अउर अभिनेत्री पूजा भारती।

x-x-x-x-x-x-x-x-x

प्यार आउर गहरा गइल..... दिल के नदी में बाढ़ आ गइल बाकिर **मर्यादा** के बांध ना टूटल।

हमनी दूनो जानत रहनी कि हमनी केतनो नजदीक आ जाईं, एक ना हो पाइब। एक होखे के मतलब बा, दू गो परिवार के विनाश आ प्यार के काम विनाश कइल ना ह...तूड़ल ना ह। निर्माण कइल ह.... जोड़ल ह। एकरा खातिर ऊ भले टूट जाव। प्यार करे वाला भले बर्बाद हो जाव.....एही से शुरूए से हमनी दूनों सचेत रहनी, एगो सीमा के भीतर। एह जवानी के दहलीज पर भी हमनी कबो बहकली ना। कानपुर छोड़ला के बाद त हम एगो चिट्ठियो ना लिखनी, उनका के भुला जाये के कोशिश में। बाकिर अचानके पांच बरिस के बाद मिलल उनकर चिट्ठी हमरा के फेर से बेचैन क देलस। हम फेर ओही आग में धधके लगनी, जवना में पांच बरिस पहिले धधकत रहीं। एक-एक दृश्य दिमाग में नाचे लागल। दिमाग के नस-नस फाटे लागल। मन जिनगी के बीतल पन्ना उलटे लागल।

सावन के सोमार .... सांझ के बेरा आ टिप-टिप बरखा। हॉस्टल के सब लइका सिनेमा देखे गइल रहलन स। एगो हमहीं बांच गइल रहनी। सोचनी कि आज डट के पढ़ाई करब, बाकिर ओकनी के गइला के बाद, का जाने काहे हमार मन कइसन-कइसन दो होखे लागल। भीतर बहुत अशान्ति बुझाइल त बिड़ला मन्दिर चल देहनी, उहां पहुंचनी त देखनी कि मन्दिर लइकियन आ मेहरारूअन से खचाखच भरल बा। हमरा ई ना बुझात रहे कि आज मेहरारूअन के अतना भीड़ काहे बा? तलहीं हमार नजर हरियर साड़ी पेन्हले आ हरियरे बिन्दी लगवले,....

गजब के चुम्बकीय आकर्षण वाली एगो दिव्यांगना पर गइल.... अरे ई त शबाना हई। माने कि हमार श्वेता। ऊ मन्दिर से पूजा क के निकलत रहली। हम धीरे से उनका पीछा हो गइनी आ पीछे पीछे चले लगनी, ऊ बहरा पानी के झरना के पास के घास के मैदान पर बइठ के अपना सखियन के इन्तजार करे लगली। हम नजर बचा के धीरे से उनका पीछा बइठ गइनी आ फेर अपना दूनो हथेली से उनकर आंख मूद देली। छन भर खातिर ऊ चिहुंकली आ फेर बोले लगली- "ए सखी छोड़ऽ ना...ए गीता छोड़ऽ, ए सावित्री देखऽ ठीक ना होई....तू बड़ी तंग करेलू..अब लड़ाई हो जाई।"

"हो ना जाव लड़ाई, ए सखी! शुरू करऽ वार..." बोलत हम आपन हाथ हटा लेहनी। ऊ हमरा के देख के अवाक रह गइली। लाजे नजर झुक गइल। धीरे से होठ काटत बोललीं- "धत छलिया कहीं का।" आ फेर प्यार के बतकही शुरू हो गइल। सखी लोग उनका के हमरा संगे देख के टरक गइल।

ऊ बोलली, हम सखी लोग का साथे सोमारी करे आइल रहनी हं। हमार माथा ठनकल...शबाना आ सोमारी। हम कहनी- सोमारी त हिन्दू लोग में होला। उनकर चेहरा तन गइल आ आंख हमरा आंख पर गड़ गइल। ऊ बोलली, प्यार करे वाला ना हिन्दू होला ना मुसलमान। आ दोसर बात ई तू काहे भुला जालऽ कि अगर हमार जनम देवे वाली माई हमरा के शबनम कह के बोलावेले त जिनिगी देवे वाला एगो दोस्त श्वेता कहके भी बोलावेला। हम मने मन कहनी, श्वेता! हमरा प्रति तोहार जे भाव बा, भगवान हमरा के ओह लायक बनावस।

अन्हार बढ़े लागल। हम बोलनी, श्वेता, घरे चलऽ, अन्हार बढ़ल जाता। थोड़े देर ऊ चुप रहली। आस-पास नजर दउड़वली आ फेर हमरा आंख में आंख डाल के बोलली, अन्हार बढ़ल जाता ओसे का। अंजोर त हमरा साथे बा। श्वेता के जिनिगी के अन्हरिया काटे खातिर राहुल के दिव्य प्रकाश कम नइखे।

तलहीं हमरा कमरा के बिजली गुल हो गइल। हमार ध्यान टूटल। हम वर्तमान में वापस लवट अइनी, मन पागल लेखां हो गइल। अनायासे कादो कादो बके लागल....हं...हं श्वेता....बिल्कुल ठीक.... राहुल के दिव्य प्रकाश... देखऽ, अन्हार हो गइल। चिराग तले अन्धेरा.... आग लागल बा, हमरा देह में.... हम धधकत बानी ... ओही से प्रकाश निकलत बा.... दिव्य प्रकाश।

हम उनका से मिले खातिर व्यग्र हो गइनी। चिट्ठी में ऊ हमरा के होली पर बोलवले रहली। हम समझ गइनी, ई होली ना ईद पर के बोलावा हऽ। ई कुल्हि हमनी के कोड वर्ड ह।

ऊ बतावे लगले कि "हम आ कृष्णदेव भाई दूनो आदमी एके साथे जे॰पी॰ आन्दोलन में जेल में रहनी जा।" रिहन्द बांध के एगो ममिला में जब हमरा बाबूजी के फँसा दिहल गइल रहे त पता ना के तरे-के तरे तहरे बाबूजी हमरा बाबूजी के जान बचवले। हमार आ तहार बाबूजी बहुत अच्छा दोस्त रहे लोग, जेकरा एक-दूसरा से मिलले आज 20-24 बरिस हो गइल। भगवान बड़ा कारसाज हउवन। ऊ आदमी के कब, कहां आ कइसे मिलवा दीहें, एकर कवनो पता नइखे। राहुल, हमनी दूनू के मिलन दू गो बूढ़ दोस्तन के दोस्ती के रिश्तेदारी में बदल दी। तू हाँ कह द। हम बाबूजी से बतिया लेब।

ईद में हम कानपुर गइबो कइनी बाकी उनका घरे ना गइनी। फोन क के उनका के मोतीझील में बोला लिहनी। जब ऊ अइली त हम पूछनी, "का हो, हमार बाबूजी त तहरा बाबूजी के लंगोटिया इयार हउवन।" पहिले त उ हंसली आ फेर फफक के रो पड़ली। बोललीं- "ना, इ झूठ ह... हमार कल्पना ह। तोहरा कठोर दिल के पिघलावे खातिर.... अइसन कठोर जे पांच बरिस ले पातियो ना लिखल, ओकरे के झकझोरे खातिर, एह झूठ के सहारा लेके, चिट्ठी के मार्मिक बनवली कि एहू से तू आ जा।"

"तब, तू बाजी त मार लिहलू। तोहार योजना त सफल हो गइल। हम हंसत बोलनी। तहरा हमेशा मजाके लागल रहेला। जिनिगी के कबो गम्भीरता से ना सोचे लऽ", ऊ रीझ के कहली।

आ हम फेर साचहूं गम्भीर हो गइनी। हमरा गम्भीरता के तूड़त ऊ बोलली- "खिसिया गइलऽ का। हम त अइसहीं कहनी हं।" हम कुछुओ ना बोलनी त ऊ फेर बोलली- "घरे ना चलबऽ?"

"सरफराज खां बनिके कि राहुल बनिके"- हमरा मुंह से अनायासे निकल गइल। ऊ कुछ ना बोलली, चुप। उहो चुप, हमहूं चुप....चुप्पी.... सन्नाटा... सांय-सांय जइसे हवा बहत-बहत रुक गइल होखे। कवनो पतई हिलत ना रहे।

हमहीं पहल क के चुप्पी तुड़नी- "काहे हो?"

ऊ भरि-भरि आंखि लोर लेले बोललीं- "राहुल, दुनिया में बहुते अइसन अद्भुत आ आकर्षक चीज बा, जवना के निर्माण खाली देखे खातिर भइल बा, ओकरा के अपनावल नइखे जा सकत। हर "प्रिय" आपन ना हो पावे आ जे आपन ना हो पावे आ प्रिय होखे...ऊ "पूज्य" हो जाला....उहे ललक हमरा के विवश कइलस चिट्ठी लिखे खातिर-अइसन चिट्ठी जवन तोहरा के विवश कइलस इहवां आवे खातिर.....आखिर हमार साध पूरा हो गइल। तोहार दर्शन हो गइल। हमरा ओरि देखऽ। हम तोहरा के जी भरके देखे के चाहत बानी। जवना चीज के अपनावल नइखे जा सकत, ओकरा के जी भर के देखहीं के पड़ेला..... हम केकर दोष दीं....ए रूढ़िवादी समाज के.... अपना दुर्भाग्य के... आ कि माई खातिर बेटी के कर्तव्य के... हं राहुल हं...हमार माई त कहिये से सरफराज के आपन दामाद मान चुकल बिया। जब ओकरा ई पता चलल रहे कि सरफराज हमेशा खातिर कानपुर छोड़ देले बाड़न आ उनकर कवनो पता ठेकान हमरा पास नइखे, त ऊ बड़ा दुखी भइल।

"बाकिर उहे माई जब ई जानी कि ओकर दामाद मुसलमान ना...हिन्दू हउवन त ओकरा प का गुजरी। ऊ हिन्दू के त फूटलो आंखि ना देख सकेले आ जब से बाबरी मस्जिद ढहल, तब से त आउरो ना। एमें

रिश्ता के बात सोचल त..."

"श्वेता, हम तोहार स्थिति समझत बानी। तू रोअ मत। देखऽ आजु ले हमनी दोस्त बनके रहल बानी आ जिनिगी भर रहब। एमें बियाह के सवाले कहां उठत बा। आवऽ हमनी के किरिया खा लेवे के कि दोसरा के होइयो के हमनी के बीच के डोर कबहूं टूटी ना।"- हम उनका कन्धा पर हाथ ध के बोलनी।

ऊ हमरा से लिपट के सुसुके लगली। उनका दिल के दरद आंख का राहे छलछला के हमरा छाती पर टपकल आ हमरा सीना में लागल आग के ताप से भाप बनके उड़ गइल.... दिल में जोर से एगो तूफान उठल। आग लहोक ले लेलस। बुझाइल जे सामाजिक रूढ़िवादिता के महल जर के राख हो गइल आ हमनी एक हो गइनी। तलहीं ओह राख में दू गो परिवार के ढेर लोग के लाश लउकल। हम ठंढा पड़ गइनी आ पटना वापस लवट अइनी।

एह तरी मिले जुले के, फोन पर बात करे के आ चिट्ठी लिखे के सिलसिला फेर शुरू हो गइल। बाकिर बीच में जवन बियाह के प्रश्न त्रिशंकु लेखां लटकल रहत रहे, ऊ हमेशा खातिर खतम हो गइल रहे। हम एह प्रश्न से मुक्त हो गइल रहनी। बाकिर भइया के चिट्ठी पढ़ के हम भावुक ना भइनी, बलुक पहिले से ज्यादा कठोर बन गइनी।

जिनिगी के दुख-सुख के थपेड़न के सहे खातिर कठोर त बनहीं के पड़ी। यथार्थ कठोर बा, धरती कठोर बिया, त दिल के कठोर त बनावहीं के पड़ी, ना त भावुक बनि के एह कठोर जिनिगी के सफर कय घरी तय कइल जा सकेला?

त ठीक बा। हम भइया के चिट्ठी के जवाब लिख देब कि भइया हमरा अटैची के चिट्ठी, जवन भउजी के मिलल, उ हकीकत ना ह...एगो कहानी के प्लॉट हऽ।

x-x-x-x-x-x-x-x

बोलत बोलत राहुल के गला रूंध गइल। उनकर आवाज बन्द होखे लागल। नाड़ी के गति धीरे-धीरे शून्य का ओर बढ़े लागल। फेर निष्प्राण होके केने दो लापता हो गइल।

अरे, ई पलक झपकते का हो गइल? इहां त केहू नइखे। फेर हम बतियावत केकरा से रहनी हं? ...भूत से...देवाल से... ना-ना...फेर केकरा से? कहीं अपनहीं से त ना? तब ई राहुल के हऽ? आ हमहीं के हईं? हमार दिमाग चक्कर काटे लागल। धरती आकाश सब घूमे लागल। बुझाइल जे राहुल केहू दोसर ना, हमरे आत्मा के दोसर नाम हऽ। हमरे छाया, हमरे प्राण के प्रतिरूप....जे हमरा बीतला जिनिगी के व्यथा कथा सुनावत बा। हम ध्यान से सुने लगनी। आत्मा के धड़कन। धड़कन के स्वर। एकदम रोआइन....फेर ठठा के हंसे के आवाज, आ ओह हंसी में कुछ व्यंग भरल प्रश्न। बुझाइल जइसे केहू पूछत होखे, का हो मनोज कहानी के प्लॉट ह कि हकीकत के पोस्टमार्टम?

रामजी पर प्रकाशित भोजपुरी किताब

प्रस्तुत बा रामजी पर प्रकाशित भोजपुरी किताबन के आवरण पृष्ठ। एह में से अधिकांश अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. ब्रजभूषण मिश्र जी के सौजन्य से प्राप्त भइल बा। एकरा बाद कनक किशोर जी आ डॉ. शंकरमुनि राय गड़बड़ जी के सौजन्य से भी कुछ किताबन के आवरण पृष्ठ भेंटाइल बा। भोजपुरी में रामजी पर भा रामायण के पात्र लोग पर बहुत किताब बा। एह विशेषांक में भी अनेक किताबन के जिक्र बा लेकिन ऊ किताब हमनी के पास उपलब्ध नइखे।

निहोरा बा कि रामजी भा रामायण के पात्र लोग पर प्रकाशित किताबन (एह किताबन के अलावा) के आवरण पृष्ठ (कभर पेज) के फोटो भेजीं सभे। भोजपुरी जंक्शन के अगिलो अंक रामेजी पर केंद्रित बा (राम कवितवाली)। ओह अंक में राउर भेजल आवरण पृष्ठ प्रकाशित कइल जाई। - संपादक

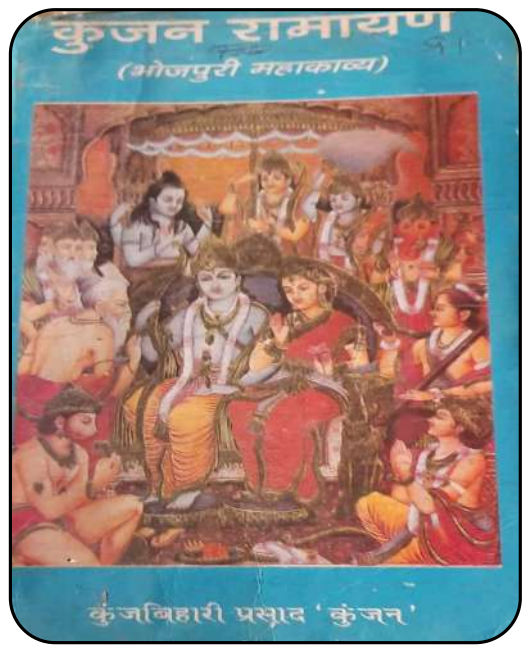

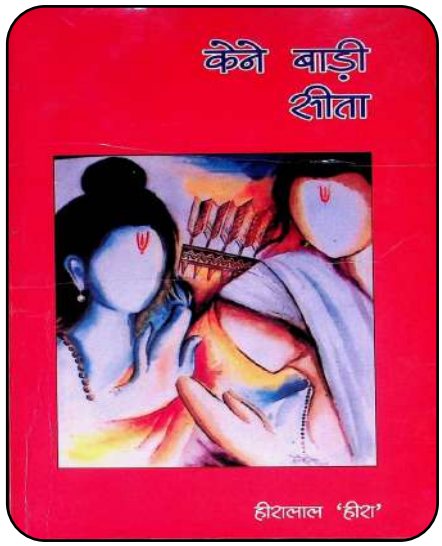
केने बाड़ी
सीता
हीरालाल 'हीरा'

कौशिकायन
अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

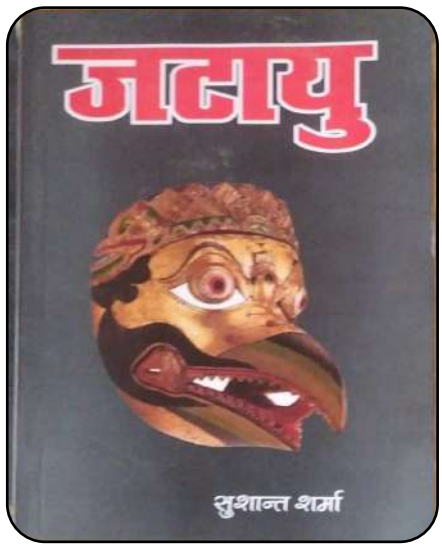
जटायु
सुशान्त शर्मा

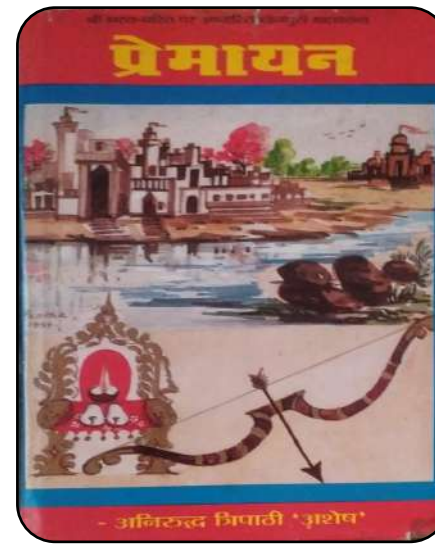
प्रेमायन
- अनिरुद्ध त्रिपाठी 'अशेष'

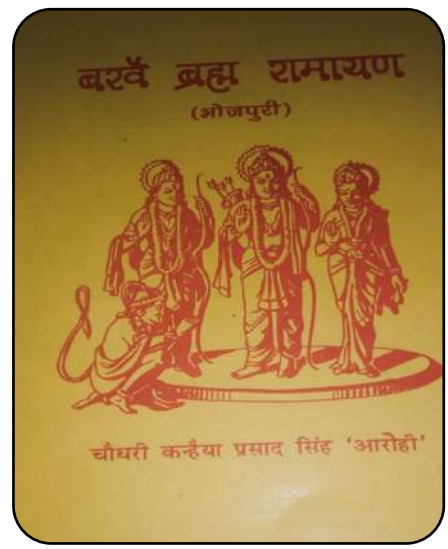
बरवै ब्रह्म रामायण
(भोजपुरी)
चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह 'आरोही'

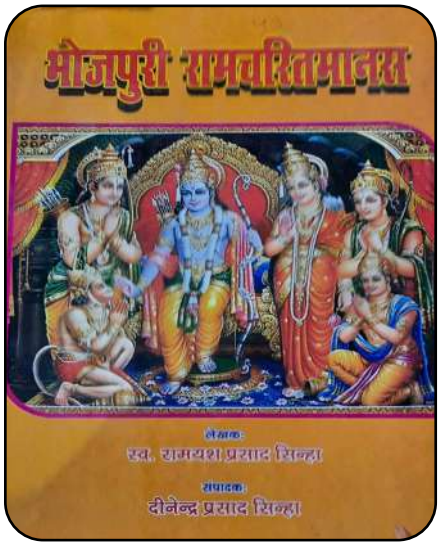
भोजपुरी रामचरितमानस
लेखक
स्व. रामयश प्रसाद सिन्हा
संपादक
दीनेन्द्र प्रसाद सिन्हा

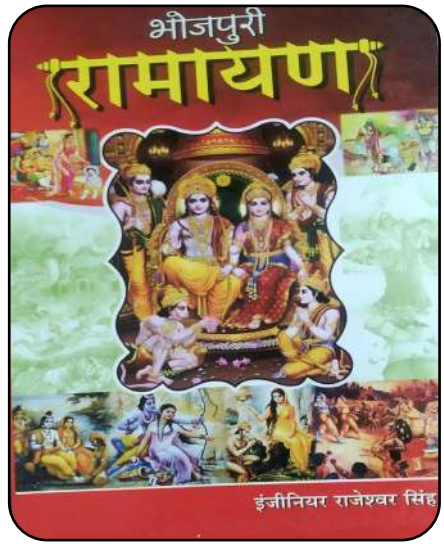
भोजपुरी
रामायण
इंजीनियर राजेश्वर सिंह

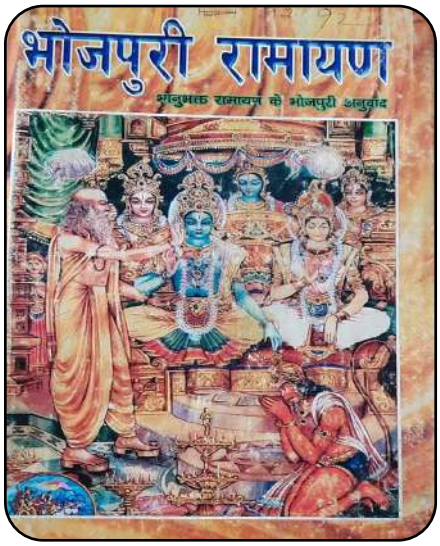
भोजपुरी रामायण
भानुभक्त रामायण के भोजपुरी अनुवाद

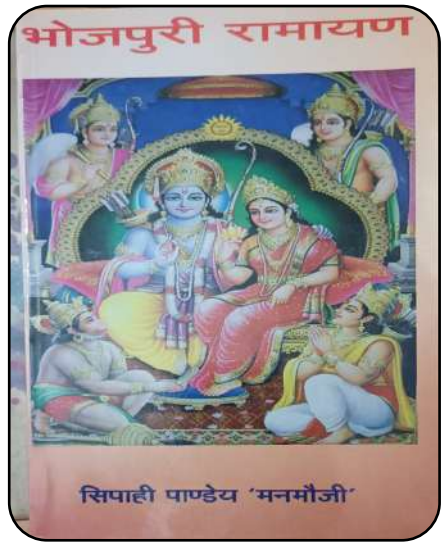
भोजपुरी रामायण
सिपाही पाण्डेय 'मनमौजी'

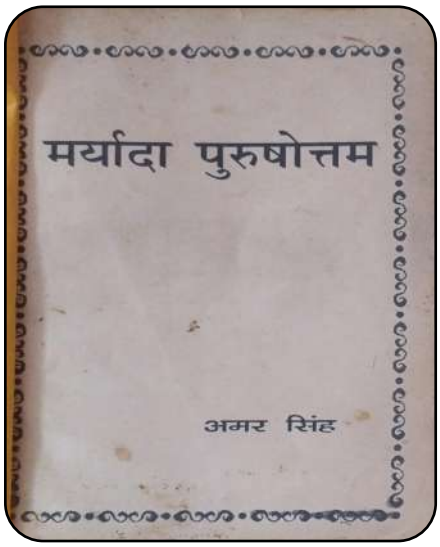
मर्यादा पुरुषोत्तम
अमर सिंह

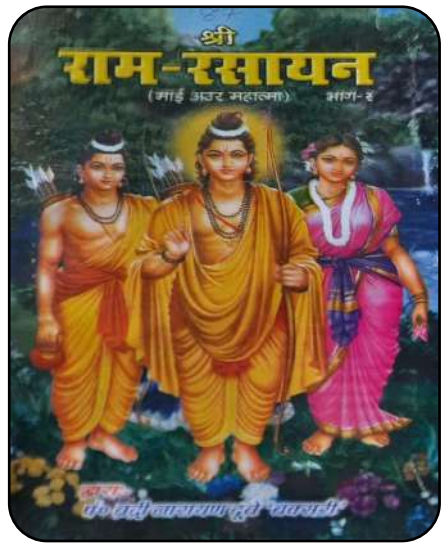
श्री
राम-रसायन
(माई अउर महात्मा) भाग-१

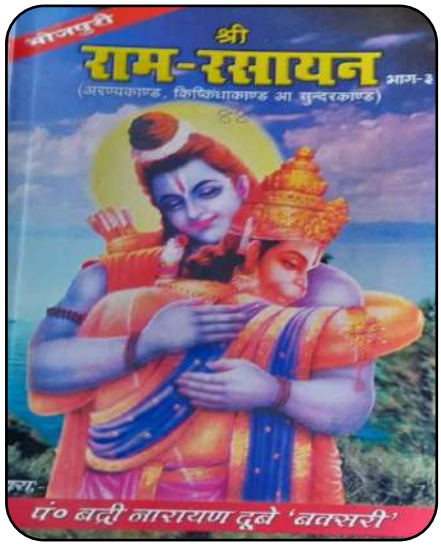
भोजपुरी
श्री
राम-रसायन
भाग-३
(अरण्यकाण्ड, किष्किंधाकाण्ड आ सुन्दरकाण्ड)
पं० बद्री नारायण दूबे 'बक्सरी'

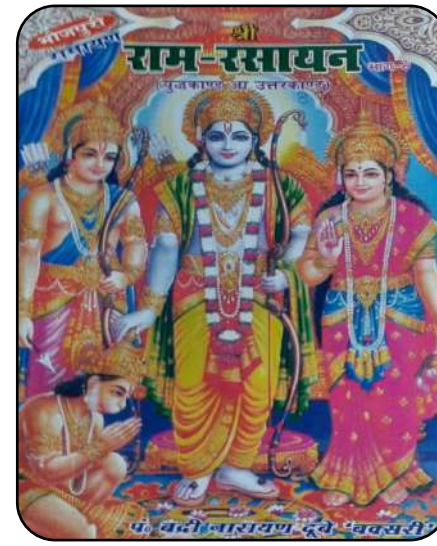
श्री
राम-रसायन

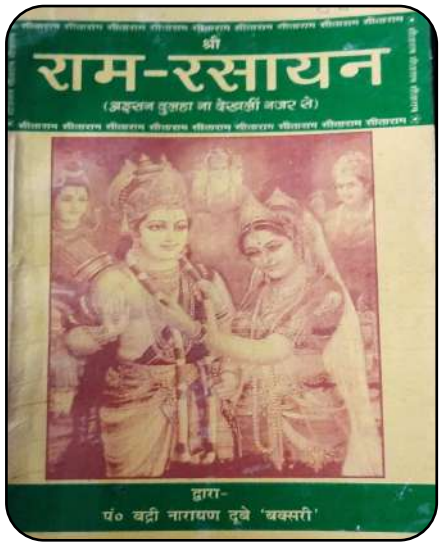
श्री
राम-रसायन
द्वारा-
पं० बद्री नारायण दूबे 'बक्सरी'

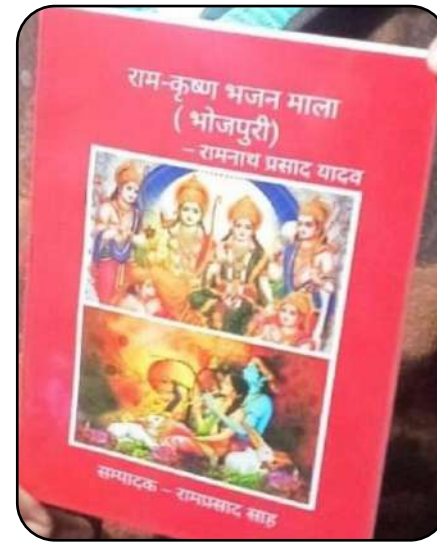
राम-कृष्ण भजन माला
(भोजपुरी)
– रामनाथ प्रसाद यादव
सम्पादक – रामप्रसाद साहु

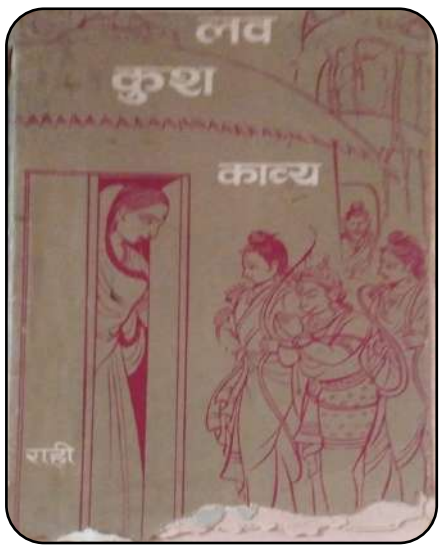
लव
कुश
काव्य
राही

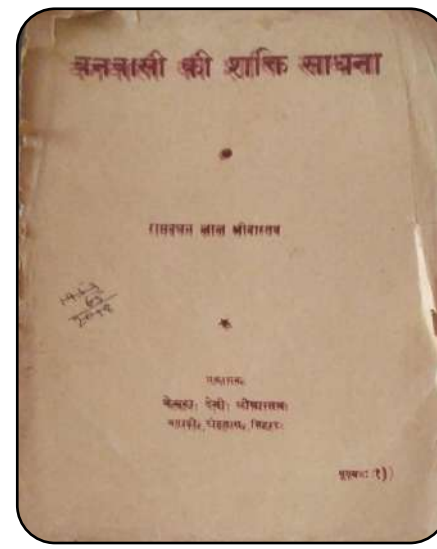
वनवासी की शक्ति साधना

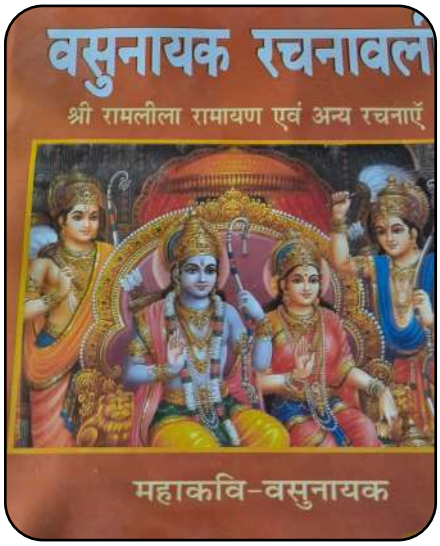
वसुनायक रचनावली
श्री रामलीला रामायण एवं अन्य रचनाएँ
महाकवि-वसुनायक

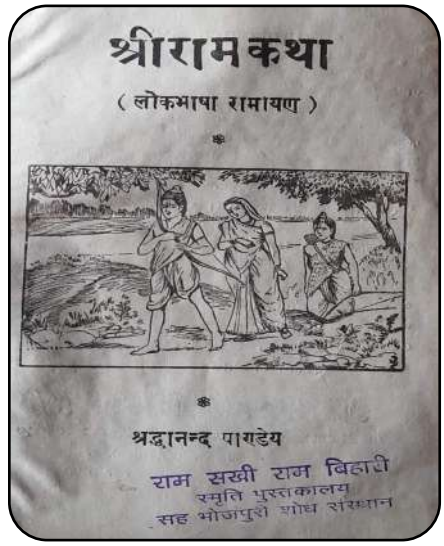
श्रीरामकथा
(लोकभाषा रामायण)
श्रद्धानन्द पाण्डेय
राम सखी राम बिहारी
स्मृति पुस्तकालय
सह भोजपुरी शोध संस्थान

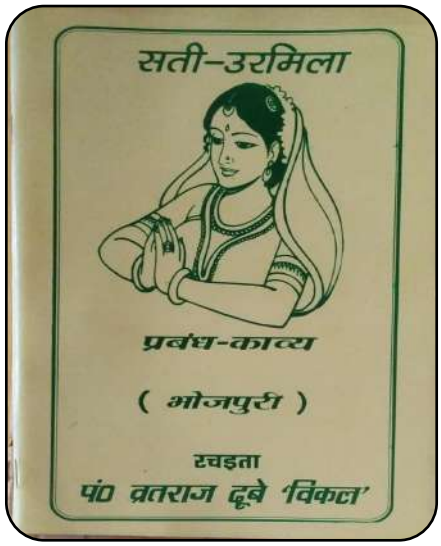
सती-उरमिला
प्रबंध-काव्य
(भोजपुरी)
रचइता
पं० व्रतराज दूबे 'विकल'

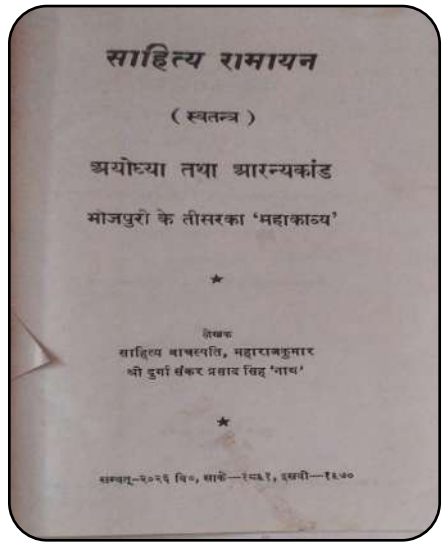
साहित्य रामायन
(स्वतन्त्र)
अयोध्या तथा आरन्यकांड
भोजपुरी के तीसरका 'महाकाव्य'
लेखक
साहित्य वाचस्पति, महाराजकुमार
श्री दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ'

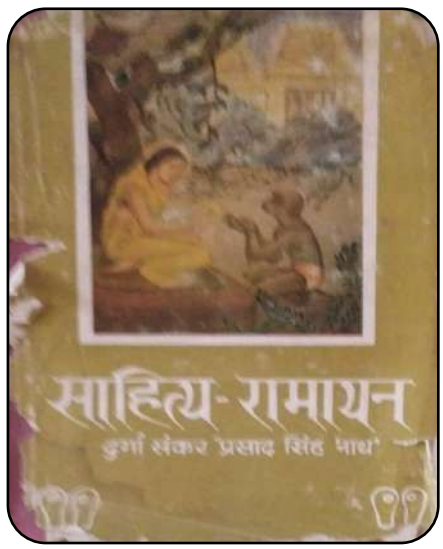
साहित्य-रामायन
दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ'

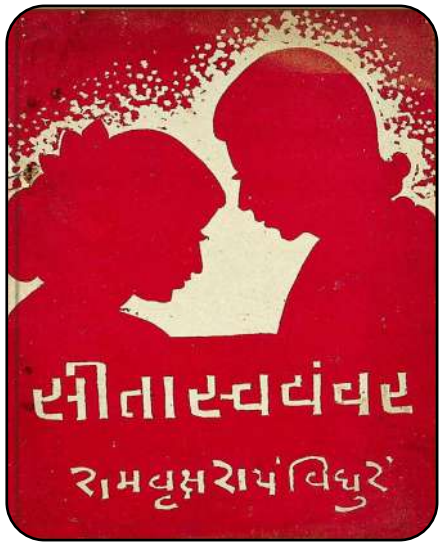
सीतास्वयंवर
रामवृक्षरायविधुर

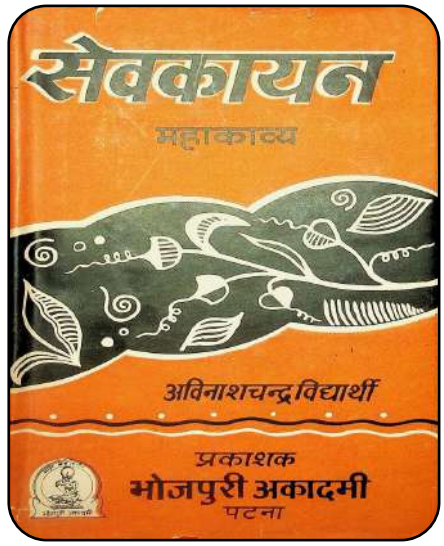
सेवकायन
महाकाव्य
अविनाशचन्द्र विद्यार्थी
प्रकाशक
भोजपुरी अकादमी
पटना

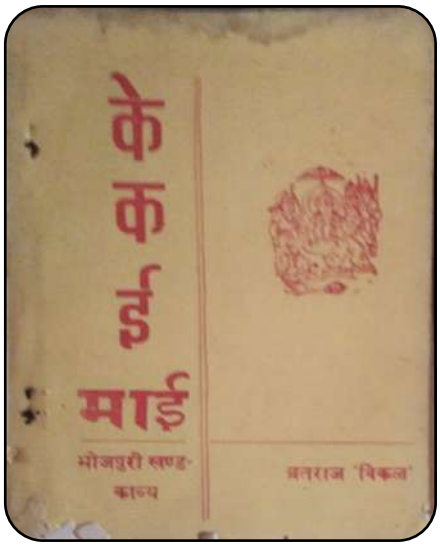
केकई माई
भोजपुरी खण्ड-काव्य
प्रतराज 'विकल'

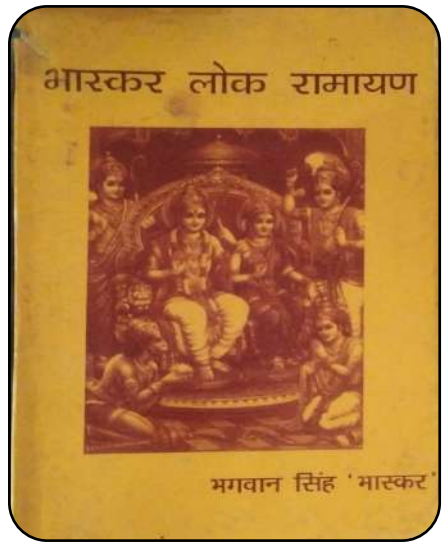
भास्कर लोक रामायण
भगवान सिंह 'भास्कर'

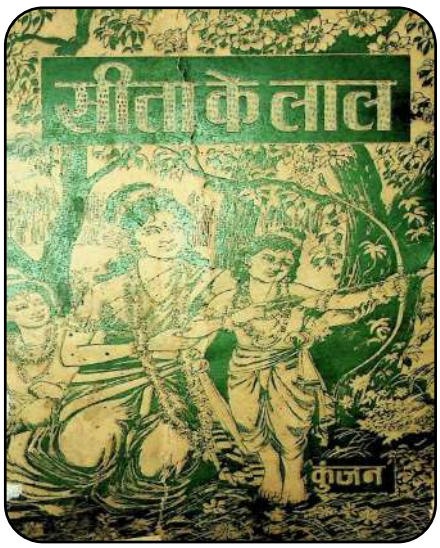
सीता के लाल
कुंजन

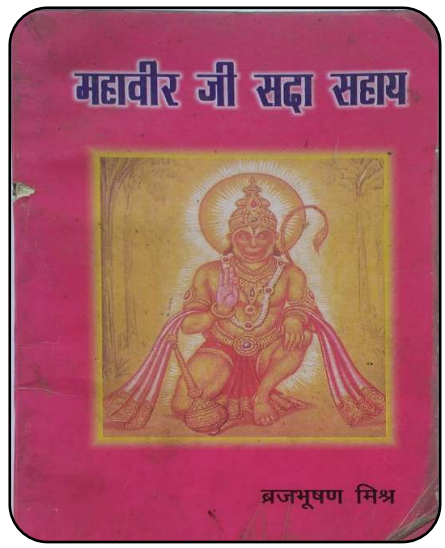
महावीर जी सदा सहाय
ब्रजभूषण मिश्र

हम भोजपुरिआ के सफर

पढ़ीं भोजपुरी

लिखीं भोजपुरी

बोलीं भोजपुरी

हम भोजपुरिआ के सफर

पढ़ीं भोजपुरी

लिखीं भोजपुरी

बोलीं भोजपुरी

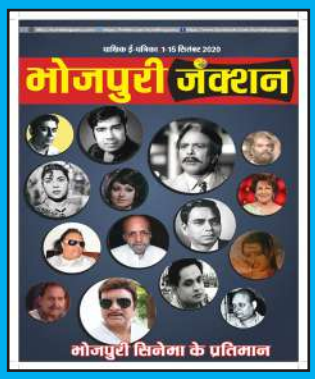
भोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी सिनेमा के प्रतिमान

भोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी सिनेमा के कलाकार

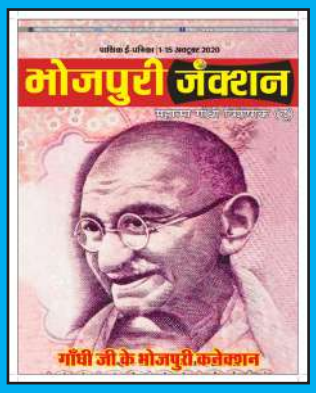
भोजपुरी जंक्शन
गाँधी जी के भोजपुरी कनेक्शन

भोजपुरी जंक्शन
लोक परंपरा में माई

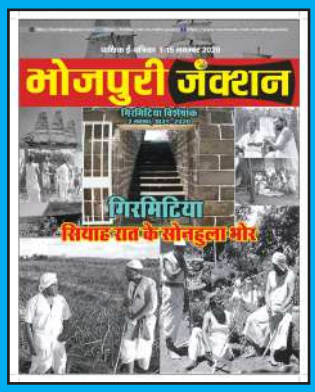
भोजपुरी जंक्शन
गिरमिटिया
सियाह रात के सोनहुला भोर

भोजपुरी जंक्शन
दिवरी-बाती अउर छठ विशेषांक
उगी हे दीनानाथ...

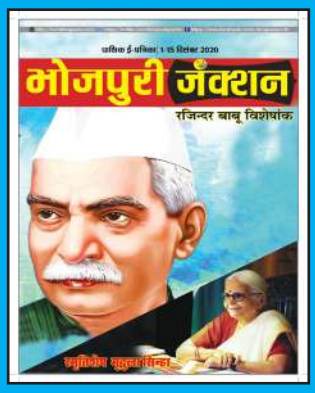
भोजपुरी जंक्शन
रजिन्दर बाबू विशेषांक

2021
भोजपुरी जंक्शन
मईया के मुँह से फूटे संगीत
भउजी के कंगना से खनके ताल
अखिल विश्व में सभे रहे खुशहाल
शुभ हो, मंगलमय हो नयका साल

भोजपुरी जंक्शन
गाँव से खिचड़ी लाइव

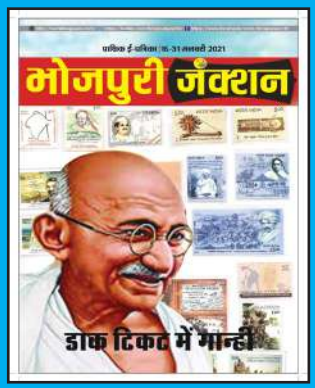
भोजपुरी जंक्शन
डाक टिकट में गान्ही

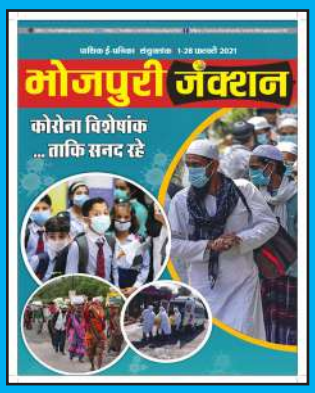
पाक्षिक ई-पत्रिका | संयुक्तांक 1-28 फरवरी 2021
भोजपुरी जँक्शन
कोरोना विशेषांक
... ताकि सनद रहे

पाक्षिक ई-पत्रिका 1-15 मार्च 2021
भोजपुरी जँक्शन
कोरोना कवितावली
एगो कोरोना रहे...

पाक्षिक ई-पत्रिका | 16 मार्च-15 अप्रैल 2021
भोजपुरी जँक्शन
होली विशेषांक
फगुनाहट हऽ कि कोरोनाहट

पाक्षिक ई-पत्रिका | 16-30 अप्रैल 2021
भोजपुरी जँक्शन
चइता विशेषांक
हम काटब गेहूं
गोरी कटिहऽ तू मुसुकी

पाक्षिक ई-पत्रिका | 1-15 मई 2021
भोजपुरी जँक्शन
कोरोना काल
का आदमी के आदमी बना सकी?

पाक्षिक ई-पत्रिका | 16-31 मई 2021
भोजपुरी जँक्शन
कोविंग से बेसी
'सोविंग' के जरूरत बा

पाक्षिक ई-पत्रिका | संयुक्तांक | 1-30 जून 2021
भोजपुरी जँक्शन
माई-बाबूजी विशेषांक
पानी प पानी लिखे के कोशिश

पाक्षिक ई-पत्रिका | संयुक्तांक | 1-31 जुलाई 2021
भोजपुरी जँक्शन
काहे खातिर फादर्स डे
काहे खातिर मदर्स डे

पाक्षिक-पत्रिका | संयुक्तांक | 1-31 अगस्त 2021
भोजपुरी जँक्शन
देशभक्ति विशेषांक
सुंदर सुभूमि भइया भारत के देसवा से

Title Code – DELBIH00811
पाक्षिक पत्रिका | 1-30 सितंबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जँक्शन
सुनीं सभे
विशेषांक
समसामयिक मुद्दन पर
विचार मंथन

पाक्षिक पत्रिका | 1-15 अक्टूबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
प्रेमे इलाज बा तनाव के

पाक्षिक पत्रिका | 16-31 अक्टूबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
मन के रिचार्ज करीं

पाक्षिक पत्रिका | 1-30 नवंबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
संस्मरण विशेषांक
अनुभव के अँटिया ह संस्मरण

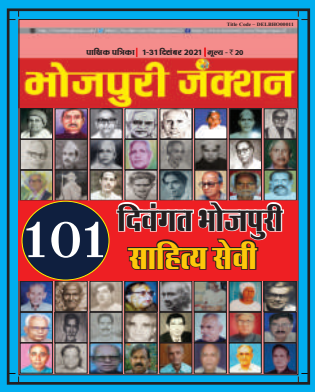
पाक्षिक पत्रिका | 1-31 दिसंबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
101
स्वर्गीय भोजपुरी
साहित्य सेवी

पाक्षिक पत्रिका | 1-15 जनवरी 2022 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
जिनगी संभावना ह, समस्या ना

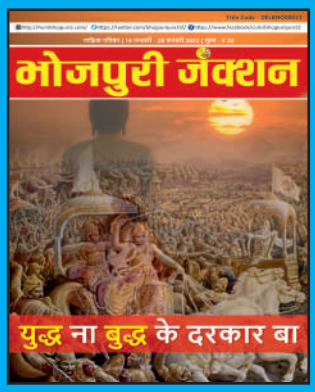
भोजपुरी जंक्शन
युद्ध ना बुद्ध के दरकार बा

भोजपुरी जंक्शन
रूस-यूक्रेन युद्ध विशेषांक
'कोई किसी का नहीं ये झूठे नाते हैं... 'NATO' का वास्ता'
जिंदगी युद्ध ना उत्सव ह

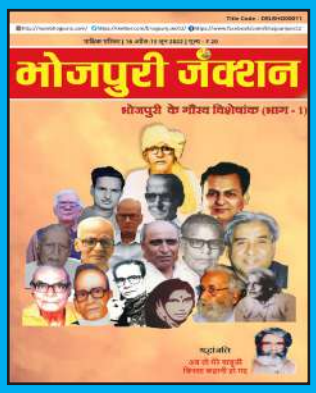
भोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी के गौरव विशेषांक (भाग - 1)

भोजपुरी जंक्शन
संपादकीय विशेषांक
ए हो रामा !
हम भोजपुरिआ | भोजपुरी जंक्शन | 62 अंक

भोजपुरी जंक्शन
जन्म-मृत्यु विशेषांक
(भाग -1)
कवनो
ठगवा
नगरिया
लूटल हो
- कबीर

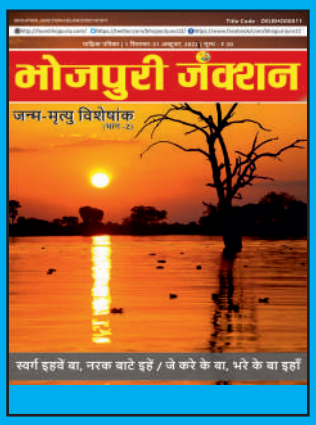
भोजपुरी जंक्शन
जन्म-मृत्यु विशेषांक
स्वर्ग इहवें बा, नरक बाटे इहें / जे करे के बा, भरे के बा इहाँ

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग -1)
ऑपरेशन थियेटर में भोजपुरी लेखन
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-2)
रोज रात समीक्षा, रोज सुबह उत्सव
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-3)
समीक्षा रचना के पुनर्सृजन ह
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जंक्शन
किसान कवितावली
(भाग-1)
62 कवि
62 कविता
कब होई किसान बनला पर छाती उतान ?

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-4)
बूझेली चिलम जेकरा पर चढ़ेला अँगारी
भोजपुरी सिनेमा के संसार

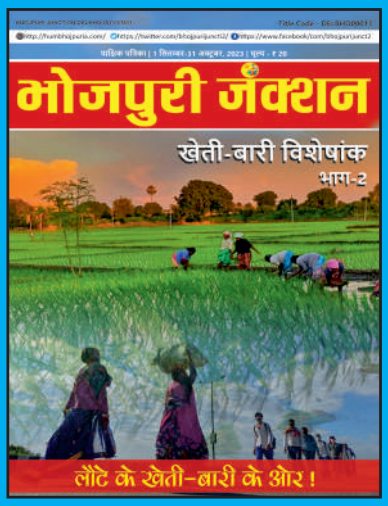
भोजपुरी जंक्शन
खेती-बारी विशेषांक
भाग-2
लौटे के खेती-बारी के ओर !

भोजपुरी जंक्शन
खेती-बारी विशेषांक
भाग-3
छठी मइया के अर्पित खेती-बारी अंक

भोजपुरी जंक्शन
खेती-बारी विशेषांक
भाग-4
MILLETS
संजीवनी बूटी ह
मोटका अनाज
आबाद रहे हरदी-धान

"2nd Grand Felicitation Ceremony Of UPSC-CAPF-2022-जयघोष"

दिल्ली विश्वविद्यालय के 'हंसराज कॉलेज' में सम्मान-समारोह:

2 जनवरी 2024, दिल्ली विश्वविद्यालय के 'हंसराज कॉलेज' के सभागार में **UPSC-CAPF** के चयनित असिस्टेंट कमांडेंट लोग के सम्मान समारोह भइल। दूरदर्शी कमांडेंट आ कर्मयोगी व्यक्तित्व राकेश निखज कृत जयघोष में लगभग 60 गो असिस्टेंट कमांडेंट के सम्मानित-प्रोत्साहित करे खातिर देश के अनेक क्षेत्रन के लीजेंड्स- सांसद-अभिनेता मनोज तिवारी, पद्मश्री जीतेन्द्र सिंह शंटी, हंसराज कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. रमा, **AICTE** के उपनिदेशक डॉ. निखिल कांत, प्रतियोगिता दर्पण के वीपी अतुल कपूर, हेलमेट मैन ऑफ इंडिया राघवेंद्र जी, रेसलिंग के क्षेत्र में 'द्रोणाचार्य पुरस्कार' से सम्मानित रामफल मान, सुषमा स्वराज जी के बेटी बांसुरी स्वराज, गणित के संदीप शर्मा सर, अंग्रेजी के धर्मेन्द्र सर, भोजपुरी गायिका निशा उपाध्याय आ हेमा पांडेय, एंकर गौरव सिंह आदि शिरकत कइले रहलें।

पाँच घंटा तक चलल एह कार्यक्रम में देश के सुरक्षा आ आम आदमी के जिम्मेदारी पर जमके विमर्श भइल। कार्यक्रम के समापन 'हंसराज कॉलेज' के मुख्य द्वार पर 'भोजपुरी जंक्शन' के संपादक-कवि मनोज भावुक के जन्मदिन सेलिब्रेट करके भइल।

"समानांतर सिनेमा, क्षेत्रीय सिनेमा, भोजपुरी सिनेमा"

दिल्ली विश्वविद्यालय के 'रामानुजन कॉलेज' में व्याख्यान:

7 जनवरी 2024, दिल्ली विश्वविद्यालय के 'रामानुजन कॉलेज' में सिनेमा के पढ़ाई करे वाला स्टूडेंट्स लोग खातिर "समानांतर सिनेमा, क्षेत्रीय सिनेमा, विशेष रूप से भोजपुरी सिनेमा" पर व्याख्यान आयोजित भइल जवना में एक्सपर्ट के रूप में भोजपुरी सिनेमा के इतिहासकार मनोज भावुक के आमंत्रित कइल गइल रहे। लेकिन सिनेमा के एह शोधार्थी लोग के जिज्ञासु मन के शांत करे खातिर मनोज भावुक के 129 बरिस के सिनेमाई सफर-1895 में बनल पहिला फिल्म 'अरायव्हल ऑफ द ट्रेन' से लेके कई देशन के सिनेमा पर बात करत राजा हरिश्चंद्र (पहिला मूक भारतीय फिल्म), आलम आरा (पहिला बोलती भारतीय फिल्म), किसान कन्या (पहिला रंगीन भारतीय फिल्म) होत...यथार्थवादी फिल्म यथा- पाथेर पांचाली, भुवनसोम, दो आँखे बारह हाथ, दो बीघा जमीन, मदर इंडिया, कागज के फूल आदि आ फेर क्षेत्रीय सिनेमा में बंगाली, मराठी, उड़िया, कर्नाटक के फिल्मन के कहानी कहत...हिंदी सिनेमा के मात देवे वाला क्षेत्रीय फिल्मन बाहुबली, पुष्पा, आर आर आर, केजीएफ, कांतारा ...आदि के मेकिंग आ इफेक्ट्स पर बात करे के पड़ल। भोजपुरी सिनेमा पर त स्पेशल चर्चा भइबे कइल। भावुक जी के बनावल भोजपुरी सिनेमा के सफर पर डॉक्यूमेंट्री भी देखावल गइल।

'रामानुजन कॉलेज' के मास मीडिया के संयोजक प्रोफेसर (डॉ.) आलोक रंजन पांडेय जी स्वागत आ धन्यवाद ज्ञापन करत भोजपुरी सिनेमा खातिर मनोज भावुक के योगदान पर सारगर्भित चर्चा कइनी।

विद्यया ऽमृतमश्नुते
KNOWLEDGE IS THE ESSENCE OF THE LIFE

THE INDIAN PUBLIC SCHOOL
विद्यया ऽमृतमश्नुते
PERSEVERANCE EXCELLENCE INTEGRITY

THE INDIAN PUBLIC SCHOOL

Affiliated to the CBSE Board | Co-Educational & fully Residential School

ADMISSIONS OPEN

2024-25

+91 9568012778 | +91 9568012776

www.indianpublicschool.com

Mrityunjaydham, Rajawala, Via Premnagar, Uttarakhand - 248007

ACFL माइक्रो फाइनेंस

विकास आपका - साथ हमारा

भारतीय रिज़र्व बैंक से मान्यता प्राप्त

बिहार की पहली माइक्रोफाइनेंस

3 राज्य || 46 जिला || 87 शाखाएं || 2.5 लाख+ ग्राहक सेवित || 850 करोड़+ ऋण संवितरित

हमारी ऋण सेवाएँ

- आय वृद्धि
- स्वच्छ घर
- शिक्षा
- परिवार कल्याण
- गृह सम्मुनती

महिला सशक्तिकरण की तरफ एक प्रयास

सहेली ऐप

सभी ग्राहकों के लिए ऋण से संबंधित संपूर्ण जानकारी

ई-क्लिनिक

सभी शाखाओं पर मुफ्त परामर्श और जरुरी दवाएं उपलब्ध